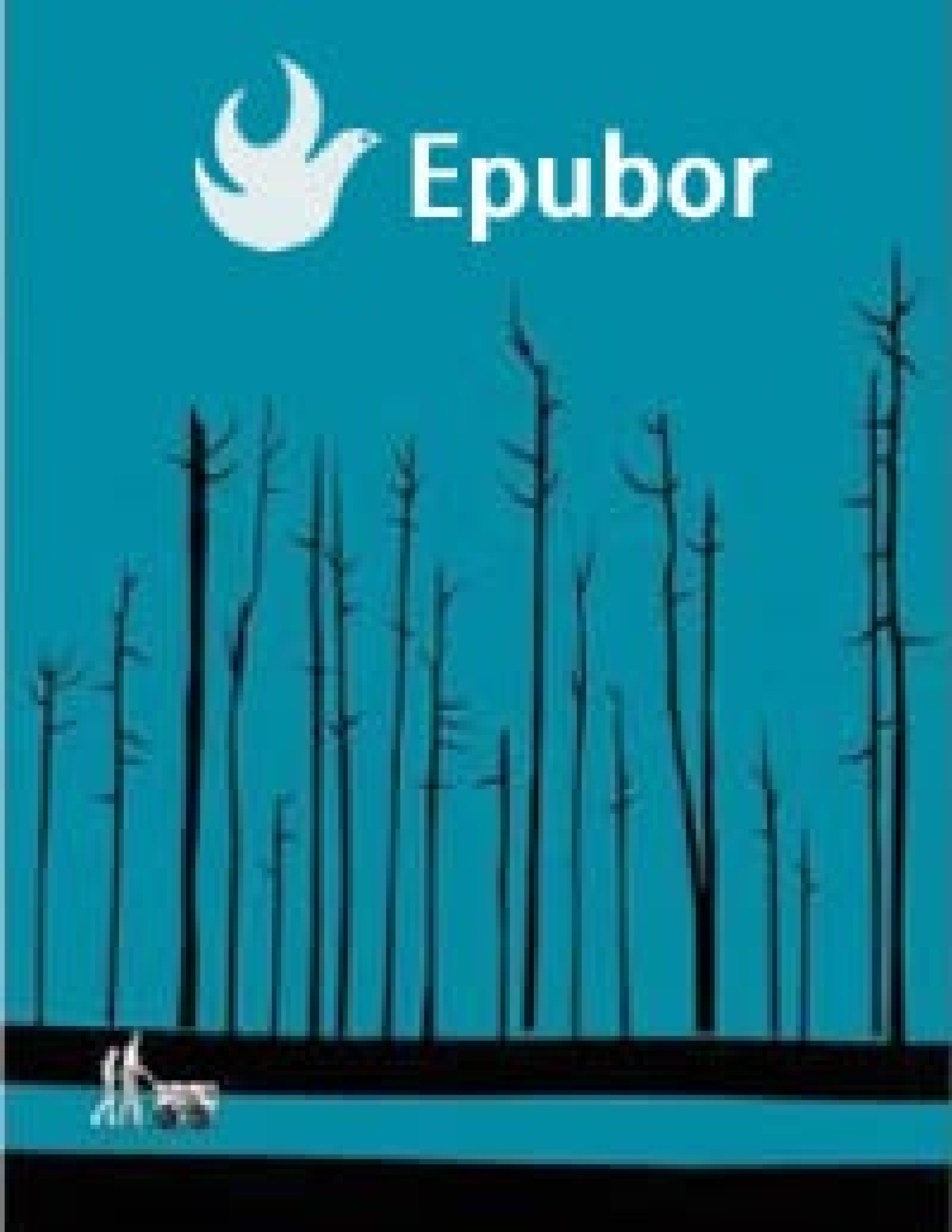
Epubor

VISIT…

आशीष चौधरी

आशीष चौधरी लिखते हैं, क्योंकि कुछ और आता नहीं, कहीं और मन रमता भी नहीं। जब आसपास वालों को लगने लगा कि लड़का हाथ से निकल गया तभी इन्होंने यह काम हाथ में ले लिया। कभी मैनेजमेंट पढ़ा तो कभी ब्रॉडकास्ट जर्नलिज्म। कई साल टीवी प्रोड्यूसरगीरी करते रहे, फ़िल्म बनाने के सपने देखते रहे। अभी बीबीसी में सीनियर क्रिएटीव राइटर के तौर पर चिपके हुए हैं। टीवी, रेडियो, नाटकों और विज्ञापन फ़िल्मों के बीच झूल रहे हैं।

राजस्थान के कई शहरों में भटके हैं। कोई एक शहर नहीं है जहाँ का ख़ुद को बता सकें। फिर भी नागौर, जोधपुर, उदयपुर और जयपुर में काफ़ी टिके हैं। अभी दिल्ली में हैं। घुमक्कड़ क़िस्म के हैं, पाँवों में चक्कर है। यह इनका पहला नॉवेल है। युवाओं में ख़ासे लोकप्रिय हैं। फ़ेसबुक दूसरा ठिकाना है, ढूँढेंगे तो मिल जाएँगे।

कुल्फी एंड कैपुचिनो

आशीष चौधरी

ISBN: 978-93-81394-81-6

प्रकाशक:
हिन्द-युग्म
1, जिया सराय, हौज ख़ास, नई दिल्ली – 110016
मो. – 9873734046, 9968755908

कला-निर्देशन : विजेंद्र एस विज | www.vijendrasvij.com

पहला संस्करण : 2014
दूसरा संस्करण : 2015

© आशीष चौधरी

Kulfi And Cappuccino
(Novel by Ashish Chaudhary)

Published By
Hind Yugm
1, Jia Sarai, Hauz Khas, New Delhi – 110016
Mob: 9873734046, 9968755908
Email: sampadak@hindyugm.com
Website – www.hindyugm.com

First Edition: 2014
Second Edition: 2015

विषय-सूची

शुरू पढ़ना

जनाब! कहानी कहने का एक सलीक़ा होता है, अपना-अपना तरीक़ा होता है। जब यह कहानी मेरी है तो तरीक़े भी मेरे ही होंगे। तो, इससे पहले कि आप अगले पन्ने से कहानी के पात्रों से मिलने लगें, ख़ुद को कहानी की घटनाओं से जोड़ने लगें, मैं आपको सचेत कर देना चाहता हूँ। कहानी को आप सिर्फ़ कहानी मत समझिएगा। सच्चा क़िस्सा है। कह रहा हूँ क्योंकि कहानी सुनाने की लत है। पर कहानी सुनाने से पहले कुछ बातें साफ़ कर देना चाहता हूँ, मसलन-

मैं नहीं मानता कि वही लव-कहानी महान है जिसमें प्रेमी-प्रेमिका का मिलन नहीं होता हो। किसी एक को मरना पड़े या उसके माँ-बाप से लड़ना पड़े। प्रेम प्रेम होता है, जो करे सो जाने। हर इंसान की अपनी प्रेम कहानी उसके लिए सबसे महान है। जैसे कि मेरे लिए मेरी।

लव-कहानियों में तर्क नहीं होते। जहाँ तर्क होते हैं, वहाँ प्रेम नहीं होता। हालाँकि मेरा यह दूसरा वाक्य स्वयं एक तर्क है। पर कहानी भी तो मेरी है।

लव में मैंने आजतक किसी को भारी-भरकम बातें करते नहीं देखा-सुना। भई कम-से-कम मैंने तो नहीं की! दो टूक बात कहता था। कोई बड़े क़स्मे-वादे टाइप प्यार नहीं होता। प्यार से सिंपल तो कोई चीज़ नहीं। फिर साली कहानी में प्यार कॉम्पलेक्स क्यों हो!

दूसरे के प्यार को समझने के लिए ख़ुद प्यार में होना ज़रूरी है वर्ना सब बकवास नज़र आता है।

अंत में एक चीज़, लव में साहित्य का क्या काम! साहित्य तो लिखा जाता है, सुनाया नहीं। मैं तो कहानी सुना रहा हूँ। ऐसे में किसी गूढ़ की लालसा रखना, स्वयं को छलावे में रखने जैसा है।

मैंने अपना मत क्लियर कर दिया, कल को सुनने के बाद कहो कि पहले बताया नहीं। ख़ैर, आगे बढ़िए। बता दूँ, इस कहानी की सारी घटनाएँ सन् 2005 के आस-पास की हैं। फेसबुक तब था नहीं, मोबाइल नया-नया आया था। जिनके पास मोबाइल थे, नये-नये ही थे। वैसे कहानी तो बहुत लंबी है। मैं बस उसका एक हिस्सा सुना रहा हूँ। उन छः से सात महीनों के बीच जो घटा वो ज़िंदगी बदल देने के लिए काफ़ी था। कहानी शुरू होती है ग्रेजुएशन के रिजल्ट आने के ठीक सात दिन बाद से...

घर की रसोई से छनकर आ रही आवाज़ों से सुबह का अंदाज़ा हो गया था। अब तक मैं रज़ाई की सुरक्षा-दीवार में अपने को सुरक्षित मानकर किसी ऐसे राजा की तरह आराम फ़रमा रहा था जिसने एक दिन पहले ही कोई जंग जीती हो। पर हर बार इस सुरक्षा दीवार में सेंध लगती रही थी। सो, इस बार भी मम्मी ने इसे ढहाते हुए मुझे झकझोरा। मैं इसके लिए तैयार नहीं था। मम्मी की तैयारी पूरी थी।

"वक़्त का कुछ अंदाज़ा भी है तुम्हें?" मम्मी ने रजाई हटाते हुए कहा। मैंने कुछ ख़ास प्रतिक्रिया नहीं दी। हाँ, अब ठंड ज़रूर लग रही थी। सो, अपने-आपको सिकोड़कर मैं आठ के अंक-सा बन गया।

"ज़रा घड़ी की ओर देख, आठ बजे हैं।" यह मम्मी का दूसरा अस्त्र था।

मैं समझ गया कि अभी साढ़े सात ही बजे होंगे। मम्मी रोज़ सुबह सही समय से आधा घंटा बढ़ाकर ही बताती थीं। पता नहीं उन्हें सुबह-सुबह झूठ बोलकर क्या हासिल होता था। मुझे बड़े लोगों का यही डबल स्टैंडर्ड पसंद नहीं। बचपन से कहते आए कि झूठ बोलना पाप है। अब बड़े होकर वो यह पाप हर रोज़ ख़ुद ही करते हैं। शायद वे सोचते हैं कि चाहे जितने पाप कर लो, आख़िर तीन सौ अस्सी रुपये में सारे पाप धुल जाते हैं। मेरे शहर उदयपुर से हरिद्वार का किराया तीन सौ अस्सी रुपये ही है। बस, वहा जाओ। गंगा नहाओ। सर्फ़ एक्सल के विज्ञापन की तरह धोया, भिगोया और हो गया।

माँ जानती थीं कि रजाई हटाने के बाद मैं सो नहीं पाता। सो, वो बेफ़िक्र होकर चली गईं। यह बड़े लोग कभी-कभी कितने निर्दयी हो जाते हैं! मैं भी लुटी हुई सल्तनत के नवाब की तरह बिस्तर से उठा। घड़ी की ओर नज़र डाली। मन-ही-मन कहा कि चलो अभी तो वक़्त है। दस बजे की बस से मुझे जयपुर जाना था।

पिछले सप्ताह ग्रेजुएशन का रिजल्ट आ गया था। अब पापा चाहते थे कि मैं एमबीए करूँ। एमबीए यानी मास्टर ऑफ़ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन। फिर शर्मा जी और वर्मा जी के लड़कों की तरह ऊँचे पैकेज पर किसी एमएनसी में काम करूँ। वो समझाते थे कि यह पैकेज का दौर है। हर दौर का अपना एक गुड़ होता है, जिसके आस-पास उस दौर की मक्खियों को मँडराना होता है। पैकेज इस दौर का गुड़ है और तुम मक्खी। आख़िर वो भी दस जनों के बीच गर्व से कहना चाहते थे कि उनका बेटा कंपनी में ऊँचा ओहदेदार है। और जब कंपनी के ख़र्चे पर हवाई जहाज़ से आऊँ, तो मोहल्ले भर में टिकट दिखाकर बता सकें कि उनका बेटा हवाई जहाज़ से आया है। तो कुल मिलाकर, मामला यह था कि उन्होंने फ़रमान जारी कर दिया था, मुझे जयपुर जाकर किसी कोचिंग इंस्टीट्यूट को जॉइन करना होगा। उनका फ़ैसला आख़िरी फ़ैसला होता था। सो, उनके प्रोग्राम के अनुसार आज मुझे जयपुर जाना था। तब ज़्यादा कोचिंग इंस्टीट्यूट नहीं थे। जो कुछ थे, वो सौ प्रतिशत सेलेक्शन की गारंटी साथ में दिया करते थे। अख़बार में उन दिनों ऐसा ही एक इंस्टीट्यूट अपने विज्ञापनों के कारण चर्चा में था। यह तय हो चुका था कि मुझे वहाँ कोचिंग लेनी है।

मैं जल्दी से नहा-धोकर तैयार हुआ। सारा सामान मम्मी ने रात को ही पैक कर दिया था। कितनी जल्दी थी उन्हें अपने बेटे को शर्मा जी के बेटे की तरह बनाने की! खाने की मेज़ पर

पापा मेरा इंतज़ार कर रहे थे। पापा रोज़ डाइनिंग टेबल पर ही खाना खाते थे और मैं अपने कमरे में। इतनी जल्दी मैंने कभी खाना नहीं खाया था। लेकिन आज तो खाना ही था। सो, मैं भी पापा के सामने वाली कुर्सी पर जाकर बैठ गया।

"सारी पैकिंग हो गई?" पापा का यह आज का पहला सवाल था। जो अपेक्षाकृत आसान था। वर्ना पापा के सवाल 'कौन बनेगा करोड़पति' के सवालों से नहीं होते।

"हाँ।" मैंने बस इतना ही कहा। मैं थाली को ग़ौर से देखे जा रहा था। थाली में रखी रोटी मेरा मुँह चिढ़ा रही थी। उस स्थिति का वर्णन कोई साहित्यकार करता तो कहता कि मैं रोटी को ऐसे घूर रहा था, मानो उसे खा जाऊँगा। हालाँकि यह ग़लत होता। क्योंकि मुझे भूख नहीं थी।

"आज कहाँ रुकोगे?" पापा का अगला सवाल। मेरे पास न तो कोई लाइफ़लाइन थी और न ही ऑप्शन। मैंने रोटी से ध्यान हटाया।

"देखता हूँ। अभी तय नहीं किया।" और क्या कहता? सच में, इस बारे में मैंने कुछ तय ही नहीं किया था।

"आज तो तुम सोमदेव जी के यहाँ रुक जाना।" पापा ने मेरी बात पूरी होने से पहले ही कहा। मुझे समझ में नहीं आता कि ये बड़े लोग वो सवाल क्यों पूछते हैं जिनके जवाब इन्होंने पहले से तय कर रखे होते हैं।

"जी।" मैंने बस इतना ही कहा।

"कल तक कोई रूम ढूँढ़ लेना। किसी अच्छे पढ़ने वाले लड़के को अपना रूम-मेट बना लेना। अकेले कमरा लोगे तो बहुत महँगा पड़ेगा।" पापा की बातें मैं चुपचाप सुने जा रहा था। प्लेट में रोटी अब तक मेरे सामने पड़ी थी। तभी मम्मी ने एक और रोटी लाकर रख दी। "तू यूँ रोटी को देख क्या रहा है? इसे खा भी।" मम्मी ने कहा, "जाने वहाँ तेरा क्या होगा! सामने रखी रोटी तक तो खाई नहीं जाती। वहाँ कौन लाकर देगा? खाने-पीने में कोई कोताही मत बरतना। शरीर स्वस्थ रहेगा तभी पढ़ाई हो पाएगी।" मम्मी ने भी अपनी चिंता व्यक्त कर दी। जाने इन लोगों को चिंता क्यों होती है! दूसरे शहर मैं जा रहा हूँ। टेंशन मुझे होना चाहिए और यहाँ तो...।

"मैंने तुम्हारी मम्मी को पैसे दे दिए हैं। उनसे ले लेना।" पापा ने हाथ धोते हुए कहा। पापा खाना खा चुके थे। मैंने जैसे-तैसे बे-मन से दो रोटियों को मुँह में ठूँसा। इससे पहले कि मम्मी तीसरी रोटी लाकर, अपनी ममता का वास्ता देकर मुझे खाने को मजबूर करतीं, मैं टेबल से उठ गया। वॉश-बेसिन तक पहुँचा। तब तक मम्मी रोटी लेकर आ चुकी थीं।

"अरे यह क्या, दो रोटी ही तो खाई है?" मम्मी की बात पूरी होने तक मैं हाथ धो चुका था। मन-ही-मन अपनी योजना के सफल होने पर ख़ुश हुआ। मम्मी कुढ़ती हुईं अंदर चली गईं।

पापा के ऑफ़िस जाने का वक़्त हो गया था।

"वहाँ पहुँचते ही फ़ोन कर देना।" पापा ने कहा।

"जी।" इस बार भी मेरे मुँह से इतना ही फूटा।

“सोमदेव जी का पता है तुम्हारे पास?” पापा ने पूछा।

“नहीं।” मैंने कहा। पापा के सामने मेरे मुँह से हाँ-ना के सिवा मुश्किल से ही कुछ निकलता था।

“तो फिर उनके पास कैसे जाओगे?” पापा की आवाज़ में तल्ख़ी थी। “वो तो मैंने पूछ लिया वर्ना तुम तो ऐसे ही निकल लेते। अब यह लापरवाही छोड़ दो।” इतना कहकर पापा अपने कमरे में गए और वहाँ से एक काग़ज़ पर पता लिखकर ले आए।

“यह लो।” पापा ने काग़ज़ आगे बढ़ाया। मैंने वो काग़ज़ हाथ में पकड़ लिया। एक नज़र उस पते पर डाली। पापा की हैंड-राइटिंग तो सुभानअल्लाह! एक बार मैंने एक लेटर पर इसी तरह की हैंड-राइटिंग में एड्रैस लिख दिया था।

“कैसे अक्षर लिखते हो! तुमसे तो तीसरी कक्षा का लड़का भी अच्छा लिखता होगा। तुम्हारा लिखा पढ़ेगा कौन?” और जाने क्या-क्या नहीं कहा था पापा ने। पर मुझपर कुछ ख़ास असर नहीं हुआ था। अगर आज यही सब मैं अपने पापा को कह देता तो! पर क्या करें। जिस तरह से यह युनिवर्सल ट्रुथ है कि सूरज पूरब से उगता है। उसी तरह मेरे पापा के लिए भी एक ऐसा ही सत्य यह है कि बड़े कभी ग़लत नहीं होते।

मैंने पापा के पाँव छुए।

“मन लगाकर पढ़ना।” पापा ने इतना कहा और बुलंद भारत की बुलंद तस्वीर के सपने दिखाकर अपने बजाज प्रिया पर सवार हो, वे ऑफ़िस के लिए चल दिए।

मैंने घड़ी की ओर देखा। नौ बज गए थे। मेरे जाने का भी वक़्त हो रहा था। मैंने जाने से पहले एक बार अपना बैग चेक करना ज़रूरी समझा। हालाँकि इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं था कि मुझे मम्मी द्वारा किए गए कार्य पर अविश्वास था। ख़ैर, जैसे ही बैग खोला, ऊपर पाँच नयी जोड़ी अंडरवियर-बनियान की रखी हुई थी और दो पुरानी। चार जोड़ी सॉक्स साइड के खाने में रखे हुए थे। मुझे समझ नहीं आया कि मैं इतने जोड़ी अंडर-गारमेंट का करूँगा क्या? कहीं पापा-मम्मी यह तो नहीं सोच रहे कि वहाँ जाकर मैं सिर्फ़ और सिर्फ़ यही पहनने वाला हूँ। या जयपुर में अंडरगारमेंट मिलते नहीं हैं, जो मैं साल भर का स्टॉक यहीं से ले जाऊँ। या फिर यह भी हो सकता है कि ये मुझे सुपरमैन बनाना चाहते हों। सो, पैंट के ऊपर मैं हर रोज़ यही अंडरवियर पहनूँ। सचमुच माँ-बाप को समझना मुश्किल है। और उससे भी ज़्यादा मुश्किल है, उनको कोई बात समझाना।

“मम्मी मेरी काली जींस इसमें क्यों नहीं है?” अपनी पसंदीदा जींस को बैग में ना पाकर मैं चिल्लाया।

“बेटा वो तो फट रही है जगह-जगह से।”

“वो तो फ़ैशन है मम्मी।” मैंने मम्मी को समझाने के लिहाज़ से कहा।

“उसका तो मैंने पोंछा बना लिया। भला फटे हुए कपड़े पहनने का भी कोई फ़ैशन होता है!” मम्मी ने सफ़ाई दी कि सफ़ाई की ख़ातिर मेरी पसंदीदा पैंट पोंछा बन चुकी थी।

मैंने कहा था ना माँ-बाप को समझाना मुश्किल होता है। वो कभी हमारी बात सुनना ही नहीं चाहते। और सुन भी ली तो समझना नहीं चाहते।

मम्मी को जो रुपये पापा देकर गए थे, मम्मी ने लाकर मुझे दे दिए। मैं सारे रुपये जेब में डालने लगा तो मम्मी ने टोका, “सारे जेब में मत रख। आधे इस बैग में रख दे। अगर चोरी हो जाएँ तो भी आधे तो रहेंगे ही।” मैंने मम्मी की ओर देखा जिसे कि लगभग घूरना ही कहते हैं। फिर जैसा मम्मी ने कहा वैसा ही किया। पर अभी मम्मी के सुरक्षा उपाय पूरे कहाँ हुए थे! “बेटा तू रुपयों को एक ही जेब में मत रख। आधे आगे वाली जेब में रख और आधे पीछे वाली में। अगर एक जेब कट भी जाए तो कम-से-कम दूसरी जेब में रखे रुपये तो बचेंगे।” मुझे माँ के इन सुरक्षा उपायों पर हैरत हुई। माँ को अगर देश का रक्षामंत्री बना दिया जाए तो वो देश में हो रही आतंकवादी गतिविधियों पर लगाम लगा सकती हैं। या फिर रॉ का चीफ बना दें तो आईएसआई को नेस्तोनाबूद कर दें। फ़िलहाल, माँ का यह छुपा हुआ टैलेंट मेरे पैसों को सुरक्षित जयपुर तक पहुँचाने में मदद कर रहा था।

अभी मैंने मम्मी के सुरक्षा उपायों का निर्वाह किया ही था कि मम्मी अंदर से कुछ और रुपये लेकर आईं।

“बेटा ले यह और रख ले।” मम्मी ने मेरी और पैसे बढ़ाते हुए कहा।

“नहीं मम्मी, मुझे और नहीं चाहिए।” मैंने कहा।

“रख ले खाने-पीने के काम आएँगे। ये अलग हैं। तेरे पापा को नहीं पता।” कहते हुए मम्मी ने ज़बरदस्ती मेरे हाथ में पकड़ा दिए।

मैंने कहा था ना कि माँ-बाप को समझना सच में मुश्किल है।

मेरे जाने का वक़्त हो गया था। मम्मी की नम आँखों को देखकर मुझे अंदाज़ा हो गया। उस वक़्त मेरे पास कहने को कुछ नहीं था। मम्मी ने सिर पे हाथ फेरा। कुछ सौ हिदायतें और ढेर सारा प्यार। जैसे कि जाते ही फ़ोन कर देना और खाने-पीने का ख़्याल रखना। मम्मी ने फिर गुड़ खिलाया। मम्मी के पाँव छूकर मैं अपना बैग लिए चल दिया। मम्मी तब तक दरवाज़े पर खड़ी रहीं जब तक कि मैं आँखों से ओझल न हो गया। हालाँकि मैंने मुड़कर देखा नहीं पर मेरा विश्वास है, ऐसा ही हुआ होगा।

बस में बैठने के कुछ ही देर बाद मेरी आँख लग गई थी। घर से दूर जा रहा था। पर घर याद नहीं आ रहा था। अच्छी-सी फ़ीलिंग आ रही थी। अब न पापा के सवाल, न मम्मी का खाने के लिए बवाल। आज़ाद। एकदम आज़ाद। नींद में था या ऐसे ख़्यालों में, कहना मुश्किल है। फिर भी मेरा तो मानना यही है कि एक बेफ़िक्र नींद मुझे घेरे हुए थी। बस में शायद किसी ने घर से लाया खाने का डिब्बा खोल लिया था। सो, खाने की गंध बस में तैरने लगी थी। तभी बस के ब्रेक लगने पर आँख खुली। पता नहीं कौन-सा शहर था। वैसे भी यह जानने में मेरी कोई ख़ास रुचि तो थी नहीं। सो, वापस अपनी आँखें बंद कर ली। अचानक नाक ने महसूस

किया कि एक तेज़ परफ्यूम की गंध उसकी ओर ही आ रही थी, जिसने आने के साथ ही खाने की उस नापसंद गंध को बस-निकाला दे दिया था। जब वो गंध एकदम पास आई तो मेरी आँख खुली।

"एक्सक्यूज मी!" यह उस गंध की आवाज़ थी। मेरा मतलब वो एक लड़की थी। शायद मेरे पास वाली ख़ाली सीट पर बैठना चाहती थी। मैंने अपनी टाँगों को सिकोड़कर उसे जाने का रास्ता दे दिया। वो खिड़की के पास वाली सीट पर जाकर बैठ गई। आने-जाने के रास्ते में ही उसने अपना बड़ा-सा बैग रख दिया था। यह बिल्कुल वैसा था, जैसे बरसात के दिनों में पहाड़ी रास्तों पर कोई चट्टान फिसलकर गिर जाती है और पूरा रास्ता जाम हो जाता है। कंडक्टर ने आकर कहा कि इस बैग को ऊपर रख दो। इतना कहकर कंडक्टर चला गया। लड़की ने मेरी ओर देखा, उसकी आँखों में रिक्वेस्ट थी। मैं तुरंत समझ गया और ऐसे मामलों में तो समझने में देर करनी भी नहीं चाहिए। मैंने बैग को उठाकर ऊपर रख दिया। बैग भारी था। उसने मुझे दो बार थैंक्स कहा। अगर बैग हल्का होता तो शायद एक ही बार कहती। मैंने मन-ही-मन सोचा कि काश! बैग थोड़ा और भारी होता। तब शायद रास्ते भर वो मुझे थैंक्स कहती जाती। इसी बहाने कम-से-कम उसके चेहरे की ओर तो देख ही सकता था। भाई, कोई जब आपको थैंक्स कह रहा हो तो उसकी आँखों में देखना ही सभ्य लोगों की निशानी है। ख़ैर, उसके थैंक्स के जवाब में मैंने भी वेलकम कह दिया और साथ-ही-साथ हल्का-सा मुस्कुरा भी दिया। हालाँकि मेरे मुस्कुराने तक वो अपना चेहरा घुमा चुकी थी। हो सकता है उसने सभ्यता वाला वो लेसन न पढ़ा हो। बट इट्स ओके।

उसके नैन-नक़्श तीखे थे। चेहरे पर कुछ मुँहासों के निशान थे। पर वो मुझे उसे सुंदर कहने से रोक नहीं पा रहे थे। बालों का रंग काला था या भूरा, मेरे लिए कह पाना मुश्किल था। पर जैसा भी था उसके चेहरे पर ख़ूब फ़ब रहा था। मेरी रुचि बालों के रंग के बजाय उसके बारे में जानने में थी। पर वो खिड़की की ओर मुँह किए बैठी थी। काश! कि मैं खिड़की की ओर बैठा होता और तब यदि वह खिड़की की ओर देखती तो कम-से-कम मुझे यह ग़लतफ़हमी तो हो ही सकती थी कि वो मेरी ओर देख रही है। लोग ग़लतफ़हमी के सहारे तमाम उम्र गुज़ार देते हैं। मैं कम-से-कम यह सफ़र तो आराम से गुज़ार ही सकता था। ख़ैर, उसके कपड़ों से गुज़र कर आ रही हवा के साथ परफ्यूम की गंध मुझे पागल किए जा रही थी। मैं उससे बातचीत का कोई तरीक़ा खोजने में लगा था। तभी वह कंडक्टर दुबारा आया। मेरा टिकट तो वो पहले ही चेक कर चुका था। अब बारी उस लड़की की थी। लड़की ने अपने बड़े-से पर्स से एक छोटा-सा पर्स निकाला और उसमें से निकाला एक सौ का नोट।

"एक जयपुर।" लड़की ने कंडक्टर को रुपये देते हुऐ कहा।

"वाउ!" मेरे मुँह से अचानक निकल पड़ा। थैंक गॉड कि मेरे सिवा उसे किसी और ने नहीं सुना। तो यह जयपुर तक मेरे साथ जाएगी। भगवान तू है, तुझ पर मेरा विश्वास आज और गहरा हो गया। अब एक नई समस्या उभरी। मुझे तो मालूम हो चुका था कि वो जयपुर तक जाएगी। मन उतावला हुआ जा रहा था उसे बताने को कि मैं भी वहीं जा रहा हूँ। पर कैसे? और इसमें नई बात क्या थी। इस बस में बहुत-सी सवारियाँ होंगी जो जयपुर जा रही

होंगी। यह सोचकर मेरे उत्साह के झाग कम हुए ही थे कि मन में ख़्याल आया कि सब सवारियाँ जो जयपुर जा रही हैं वो उस लड़की के पास वाली सीट पर तो नहीं बैठी हैं और न ही सबने उसका भारी-भरकम बैग उठाया। और-तो-और सब का नाम अनुराग भी तो नहीं है, अनुराग मेहता। यह सोचते ही उत्साह के झाग से मेरे मन का टब भर गया और मुझे उस कंडक्टर में छिपा हुआ देवदूत नज़र आने लगा। मैंने कंडक्टर से बोला, "मेरे पास टिकट है। दिखाऊँ?" मेरा अनुमान था कि कंडक्टर बोलेगा कि मालूम है, जयपुर जाओगे। और मेरा काम हो जाएगा। आप जैसा सोचें वैसा हो जाए तो फिर आप ख़ुदा। पर मैं तो था मामूली इंसान। मेरी बात सुनकर कंडक्टर ने हिक़ारत भरी नज़रों से ऐसे देखा मानो कह रहा हो कि मुझे और भी बहुत से काम हैं। मेरा देवदूत मेरे सपनों को तोड़कर आगे चल दिया। मेरा आइडिया फेल हो गया। बट आइ नो...एन आइडिया कैन चेंज योर लाइफ़....आइ मीन..... माय लाइफ़। सो, मेरे दिमाग़ में आइडिया की नयी फ़सल उग आई। जो मेरी लाइफ़ को चेंज कर देना चाहती थी।

मैंने कंडेक्टर से पूछ ही लिया, "भाईसाहेब, यह जयपुर और कितनी दूर है, मतलब कितना टाइम लगेगा?"

"पहली बार जा रहे हो? जब आ जाएगा तब बता देंगे। चिंता न करो। उससे आगे नहीं ले जाएँगे।" कंडेक्टर का इतना कहना था कि आस-पास बैठे दो यात्री भी मुस्कुरा दिए। मैं झेंप गया। कंडक्टर मुस्कुराते हुए चल दिया। उसकी मुस्कान कुटिल थी। यक़ीनन, वो मेरी मंशा भाँप गया था। पर कुछ भी हो, मैं अपने मक़सद में कामयाब तो हो ही गया था। अगर उसने अपने कान खुले रखे हों, तो वो समझ ही गई होगी कि मैं और वो दोनों एक ही जगह जा रहे हैं। तो अब तक उसने पूछा क्यों नहीं कि आप भी जयपुर जा रहे हैं? या फिर वो चाहे तो बातचीत शुरू करने के लिए मौसम का सहारा भी ले सकती है। मुझसे कह सकती है कि आज गर्मी बहुत है ना! पर अब तक वो चुपचाप-सी खिड़की की ओर देखे जा रही थी।

मैंने नज़रें तिरछी करते हुए उसकी ओर देखा। मेरा ध्यान उसके कपड़ों पर गया। उसने गुलाबी रंग का सलवार-कुर्ता पहन रखा था। अब मुझे लड़कियों के कपड़ों के बारे में ख़ास समझ तो थी नहीं पर वैसा सूट मैंने किसी फ़िल्म में एक हीरोइन को पहने हुए देखा था। शायद, रानी मुखर्जी। काश! कि उस वक़्त वो भी मेरे कपड़ों के बारे में ऐसा ही सोच रही होती। हालाँकि उस वक़्त मुझे बस की उस खिड़की पर ग़ुस्सा भी आ रहा था। अगर बस में एक भी खिड़की न होती तो? तब तो बोरियत से बचने के लिए उसे मुझसे बात करनी ही होती। पर मैं आसानी से हार नहीं मान सकता था।

मैंने बातचीत का तरीक़ा खोज ही निकाला। जयपुर आने ही वाला था। पापा के दिए एड्रेस के अनुसार सोमदेव अंकल का घर वैशाली नगर में था।

"आप जानती हैं, जयपुर में वैशाली नगर कहाँ हैं? आख़िर मैंने हिम्मत करके पूछ ही लिया। मेरी बात सुन उसने मेरी ओर देखा। इससे पहले कि वो कुछ कहती एक आवाज़ आई, "पुराने चुंगी नाका पर उतर जाना। वहाँ से पास ही है।" पास ही से निकल रहे कंडक्टर ने मेरी बात सुनकर जवाब दिया था।

एक बार फिर मेरी कोशिश विफल रही। वो देवदूत अब यमदूत जैसा लग रहा था। कितनी हिम्मत जुटाकर मैंने यह पूछा था! अब मेरे पास उससे बातचीत का कोई और बहाना भी नहीं था। सो, मैं निराश होकर आँखें मूँदकर बैठ गया। इस पूरे घटनाक्रम पर उसकी प्रतिक्रिया देखने की मेरी हिम्मत नहीं थी।

"आपको भी वैशाली नगर जाना है?"

यह आवाज़ सुन मैंने आँखें खोलीं। मुझे विश्वास नहीं हुआ कि उस लड़की ने मुझसे पूछा था। मुझसे! अनुराग मेहता से! पर यह सच था।

"हाँ।" मैंने उसकी ओर देखकर इतना ही कहा और अपनी भावनाओं को दबा गया। अपने चेहरे पर अपनी ख़ुशी को नहीं आने दिया। मैंने ऐसे जवाब दिया, मानो उसने यह पूछकर मुझे नींद से उठा दिया हो। पर उसने पूछा कि क्या आप भी वैशाली नगर जा रहे हैं? इसका मतलब कि वो भी वैशाली नगर जा रही है। और वो मुझे यह बात बताना चाह रही थी।

"मैं भी वहीं जा रही हूँ।" एक बार फिर यह उस लड़की की आवाज़ थी। मेरा प्रिडिक्शन सही था। हालाँकि, उसने मुझे पूरा समय दिया कि अभी-अभी जो उसने कहा वो मैं ही उससे पूछता। जिसके जवाब में वो भी हाँ कह देती। पर वक़्त निकलता देख उसने ही घोषणा कर दी। अब मेरी बारी थी।

"मैं पहली बार जा रहा हूँ। आप तो वहीं रहती होंगी?" मैंने बात आगे बढ़ाई।

"हाँ। वैशाली नगर में मेरा घर है। आप किनके पास जा रहे हैं?"

"मेरे अंकल रहते हैं। पापा के दोस्त, उन्हीं के पास।"

"घूमने आए हो? टुरिस्ट!" उसने अंदाज़ा लगाया।

"नहीं, पढ़ने। जयपुर में नया हूँ ना, तो एक-दो दिन उनके यहाँ रहूँगा और फिर किराये पर रूम लेकर रहूँगा। एक्च्युली मैं कैट की प्रिपरेशन के लिए आया हूँ।" मुझे लगा कैट के बारे में बताना लड़की को इंप्रेस कर सकता है।

"ओके।" उसने सिर्फ़ यही कहा। कैट ने अपना असर नहीं छोड़ा था।

"वैशाली नगर आएगा तब बता दूँगी। मेरे साथ ही आप उतर जाइएगा।" यह भी उसी की आवाज़ थी। जयपुर आने से पहले, यह उसके आख़िरी शब्द थे।

इसके बाद हम दोनों फिर अपनी-अपनी दुनिया में चल दिए। मैंने आँखें मूँद लीं और वो खिड़की के बाहर देखने लगी।

थोड़ी देर बाद जयपुर आ गया। दूसरे स्टेशन पर उसने कहा कि यहीं पर उतरना होगा। कंडक्टर भी बोल पड़ा कि यहीं पर उतर जाइए। मैंने अपना बैग उठाया और नीचे उतर गया। कंडक्टर ने उसका बैग नीचे उतरवाया। हम दोनों को वहाँ उतारकर बस चल दी। मैंने अपना बैग कंधे पर टाँग लिया। उसका बैग अभी ज़मीन पर ही पड़ा था।

मैंने अपनी जेब से पते वाला काग़ज़ निकाला। पहले तो सोचा कि उसे दे दूँ, ख़ुद ही पढ़ के बता देगी। पर अगर उसने पूछ लिया कि यह हेंड राइटिंग किसकी है, तो, मैं तो नहीं बता पाऊँगा कि यह पापा की है। अगर बता दिया तो कितना ग़लत इंप्रेशन पड़ेगा। सो, काफ़ी

सोचने-विचारने के बाद मैंने उसे ख़ुद ही पढ़ने का फैसला किया।

“यह बी 47 किधर पड़ेगा?” मुझे लगता है कि कभी-कभी मैं बहुत सही डिसीज़न लेता हूँ। आइ मीन आइ हैव स्ट्रॉन्ग डिसीज़न मेकिंग पावर।

वो मेरी तरफ़ देख कर मुस्कुराई। मुझे नहीं लगा कि मैंने कोई मुस्कुराने वाली बात कही थी।

“आपको क्या सचमुच बी 47 जाना है?”

“आपको लगता है कि एक अनजान शहर में मैं वो पता पूछूँगा जहाँ मुझे नहीं जाना हो? और पते पूछना मेरी हॉबी भी नहीं है।” मेरा सैंस ऑफ़ ह्युमर थोड़ा डार्क है। तभी ऐसी बात कह गया।

“अरे नहीं, मेरा मतलब है कि...दरअसल मैं बी 48 में रहती हूँ।” कहकर वो मुस्कुरा दी।

“वाउ!” एक बार फिर मेरे मुँह से अचानक निकल पड़ा। अगेन थैंक गॉड, उसने नहीं सुना।

“सच!” मैंने आश्चर्य को चेहरे पर लाते हुए पूछा।

“नहीं। मुझे हर अजनबी को, जो पहली बार जयपुर आया हो, अपने घर का पता बताना अच्छा लगता है। वो भी ग़लत पता।” इतना कहकर उसने मेरी आँखों में देखा। फिर हम दोनों हँस पड़े।

“मेरा नाम अनुराग है, अनुराग मेहता।” हँसी ख़त्म होते ही मैंने अपना परिचय दिया।

“नेहा। सिर्फ़ नेहा।” कहते हुए नेहा ने मेरी ओर हाथ बढ़ा दिया। मुझे अंदाज़ा नहीं था कि यह सब होगा। मैंने पहले किसी लड़की से हाथ नहीं मिलाया था। सो, हाथ मिलाने में हिचक हो रही थी। पर यह सुनहरा मौक़ा मैं गँवा देता तो इतिहास मुझपर थू-थू करता। मैंने भी अपना हाथ तुरंत उसकी ओर बढ़ा दिया। हम दोनों मुस्कुराए।

“क्या हमें रिक्शा करना होगा?” मैंने सहज होते हुए पूछा।

“नहीं, बस पास ही में है। आप चाहें तो पैदल ही चल सकते हैं।”

मैं तो यही चाहता था। रिक्शेवाला तो कमबख़्त जल्दी से पहुँचा देता। हम लोग पैदल चल दिए। उसका बैग भारी था। सो, बैग का एक छोर मैंने पकड़ा और एक उसने।

“तो आप एमबीए करना चाहते हैं?” नेहा ने पूछा। इसका मतलब मेरा यह कहना कि कैट की प्रिपरेशन के लिए आया हूँ, उसे याद रहा।

“हाँ, एमबीए।” यह कहते हुए मेरी आवाज़ में ख़ास उत्साह नहीं था।

“अपने बारे में तो मैं बहुत कुछ बता चुका। आप अपने बारे में बताइये?” मैंने नेहा की ज़िंदगी में इंटरेस्ट दिखाते हुए कहा।

“मैं तो एनीमेशन का कोर्स कर रही हूँ।”

“यह तो बहुत इंटरेस्टिंग है। सच में बहुत मज़ा आता होगा ना?” मैंने उसकी बातों में रुचि लेते हुए कहा। हाल ही में ‘हाउ टु विन फ्रेंड्स एंड इंफ्लुएंस पीपल’ जो पढ़ी थी। थैंक्स डेल कार्नेगी। वैसे भी, क्या पता लड़की को मेरी कौन-सी बात पसंद आ जाए।

“हाँ सो तो है। मैं बचपन में जब मोगली देखा करती थी, तभी सोच लिया था कि

एनीमेशन करना है। आपने भी बचपन में ही तय कर लिया होगा ना कि एमबीए करना है?”

“हाँ, मैं जब कक्षा चार मैं था, तभी तय कर लिया था कि एमबीए ही करूँगा।” और ख़त्म करने के साथ ही ज़ोर से हँस दिया। सच्चाई तो मैं ही जानता था। अचानक मेरी आँखों के आगे पापा तैरने लगे। घर अंदाज़े से ज़्यादा पास में था या बातों-बातों में पता ही नहीं चला। जो भी हो, कुछ देर में हम बी 47 के सामने खड़े थे।

“यह रहा बी 47।” नेहा बोली। मैंने एक नज़र घर की ओर देखा और फिर नेहा की ओर। फिर चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान लाया और गहरी साँस छोड़ते हुए बोला, “हम्म, थैंक्स।” इसके अलावा कहने को मुझे कुछ नहीं सूझा।

“किस बात के लिए?” नेहा ने कहकर मेरे चेहरे से नज़रें नहीं हटाईं। मैं झेंप गया।

“आपने एक अजनबी को, एक अजनबी शहर में रास्ता बताया, इसलिए।” मैंने कहा।

नेहा एक बार फिर मुस्कुराई। पता नहीं इस बार मैंने मुस्कुराने जैसी कौन-सी बात कह दी।

“ओके बाय।” नेहा बोली।

“बाय।” यह मेरी आवाज़ थी। नेहा चल दी। मैंने सोचा ऐसे तो मैंने फिर मिलने के तमाम रास्ते बंद कर दिए। कुछ तो सोच अनुराग! और तभी मैं बोल पड़ा, “नेहा।” नेहा रुकी और पीछे मुड़कर देखा। उसी वक़्त मुझे रेपिडेक्स इंग्लिश स्पीकिंग बुक की एक लाइन याद आई जो मैं बिना वक़्त गँवाए बोल पड़ा, “इट वाज नाइस मीटिंग यू। होप टु सी यू अगेन।” नेहा एक बार फिर मुस्कुराई और चल दी। मैंने भी सामान उठाया और चल दिया।

सोमदेव अंकल घर पर ही थे। मुझे बताया गया कि वो मेरा ही इंतज़ार कर रहे थे। स्वागत-सत्कार के बाद सोमदेव अंकल के सवालों का सिलसिला शुरू हुआ। और, कैसे आए? वहाँ से कब बैठे? रास्ता कैसे मिला? पापा के सवालों की कमी मुझे महसूस नहीं हुई। उनके सवालों को सुनकर मुझे अहसास हुआ कि वो पापा के कितने गहरे दोस्त हैं। बात-ही-बात में उन्होंने बताया कि मेरे आने से पहले पापा का दो बार फ़ोन आ चुका है। आंटी ने तीन बार पूछा कि खाने में क्या पसंद है? हर बार मैंने यही कहा कि जो भी घर में बनता है। चौथी बार पूछने पर जब मैंने अपनी पसंद बतानी चाही तो अंकल ने तुरंत मुझे काटते हुए कहा, “अरे, अपनी पंसद का तो उदयपुर में रोज़ खाता ही होगा। आज हमारी पसंद का भी खाए। पता तो चले कि इसकी आंटी कितना अच्छा खाना बनाती हैं! वो तो कोमल नहीं है यहाँ, वर्ना वो तुम्हें बाहर खाना खिलाने ले जाती।” कोमल का नाम सुनकर मेरी आँखों में चमक आई। कोमल से मेरी मुलाक़ात आख़िरी बार तब हुई थी जब मैं आठ साल का था। सोमदेव अंकल सपरिवार उदयपुर घूमने आए थे। हमारे यहाँ ही रुके थे।

“कोमल से तो इसकी बहुत बनती थी।” आंटी बोलीं। मुझे समझ नहीं आया कि आंटी की इस बात पर किस प्रकार की प्रतिक्रिया देनी चाहिए। मैं सिर्फ़ मुस्कुराया जिसे काफ़ी हद तक शर्माना भी कहा जा सकता है।

आंटी की बात अभी ख़त्म नहीं हुई थी, “याद है, हम माउंटआबू घूमने गए थे और होटल के गार्डन में जब हम डिनर कर रहे थे तब कोमल ने कहा था कि मम्मी टॉयलेट जाना है। डर लग रहा है। मैं अनुराग को साथ ले जाऊँ क्या?”

मैं यह सुनकर बुरी तरह झेंप गया। अचानक मुझे मेरे पापा अच्छे लगने लगे।

ख़ैर, मैंने उन्हें नहीं बताया कि उनके ही पड़ोस में रहने वाली लड़की ने मुझे रास्ता बताया था। मुझे ऊपर के गेस्टरूम में ठहराया गया। अगले दिन सुबह जल्दी उठना था ताकि कोचिंग इंस्टीट्यूट पहुँचकर अपने बैच का पता कर सकूँ। सो, रात को खाना खाकर जल्दी ही सो गया।

सुबह दस बजे मैं अपने कोचिंग इंस्टीट्यूट के सामने खड़ा था। ‘टोटल सक्सेस’। यही नाम था उसका। मैंने पता किया, मेरा बैच सुबह आठ बजे से था। इसे शुरू हुए पाँच दिन हो गए थे। अगर मैं इसे जॉइन नहीं करता तो मुझे एक महीने का इंतज़ार करना होता, जब तक कि नया बैच शुरू नहीं हो जाता। सो, मैंने इसे ही जॉइन करना ठीक समझा। बता दिया गया था कि फ़ीस एक साथ जमा करनी है। तभी सौ फ़ीसदी सलेक्शन गांरटी वाली स्कीम लागू होगी। मेरी तरह ही काफ़ी लड़के बाहर से आए हुए थे। तब जयपुर के अलावा दूसरे शहरों में कैट की कोचिंग की सुविधा नहीं थी। फ़ीस जमा करने के लिए मुझे लाइन में लगना था। लाइन लंबी थी। मैं लाइन में लगे सब लोगों को देखने लगा। लाइन में काफ़ी लड़कियाँ भी थीं, जो फ़ैशनेबल कपड़े पहने हुए थीं। कुछ को देखकर लगा कि वो यहाँ पढ़ने नहीं बल्कि किसी मॉडलिंग असाइनमेंट के लिए आई हुई हैं। पर कुछ ऐसी भी थीं जिन्हें देखकर यही लगा कि वो सिर्फ़ और सिर्फ़ पढ़ने ही आई हैं। इसके अलावा कुछ नहीं।

लाइन में मेरे पीछे एक लड़का गर्दन नीचे झुकाए खड़ा था।

“तुम कहाँ से हो?” मैंने बात शुरू करने के लिहाज़ से कहा।

वो फिर भी गर्दन झुकाए खड़ा रहा। शायद इतने लोगों को देख नर्वस हो रहा होगा। इतने में मेरा भी नंबर आ गया। कहा जाता है दुनिया में सबसे मुश्किल काम है किसी की जेब से पैसे निकलवाना। सो, इस दुश्कर कार्य को आसान बनाने के लिए काउंटर पर एक सुंदर-सी लड़की को बैठा रखा था। जिन लोगों को पहली ही नज़र में प्यार करने की हॉबी होती है, उनके लिए वह उपयुक्त थी। सर्वोपयुक्त। ख़ैर, मैंने अपना फ़ॉर्म जमा करवाया और फ़ीस दे दी। उसने फ़ॉर्म अपने पास रखा और पैसे पास ही बैठे एक लड़के को पकड़ा दिए। लड़के ने

चश्मा लगा रखा था और बालों को ठीक बीच में से ऐसे बाँट रखा था मानो देश भर के पटवारियों ने मिलकर किसी के खेत का बँटवारा किया हो। वो नोटों को ऐसे गिन रहा था जैसे कसाई किसी बकरे को काटता है। जब तक उसने नोट गिने मैं वहीं खड़ा रहा। सोचा लड़की मुस्कुराएगी। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। मैं फ़ीस जमा करवा के इंस्टीट्यूट से बाहर की ओर चल दिया।

अब मुझे एक रूम की तलाश थी जहाँ मुझे रुकना था। वैसे तो मैं चाह रहा था कि एक दिन और सोमदेव अंकल के यहाँ रुक जाऊँ। शायद नेहा से मुलाक़ात हो जाए। पर वहाँ रहा तो पापा फ़ोन कर-कर के परेशान कर देंगे। सो, मैंने आज ही रूम लेने की ठानी। मैं इसी सोच में डूबा इंस्टीट्यूट के बाहर खड़ा था तभी मेरी नज़र एक लड़के पर पड़ी। उसके हाथ में एक तख़्ती थी। जिस पर लिखा था, "डु यू नीड ए रूम? रूममेट फ्री!" मैंने उसे ऊपर से नीचे तक देखा। देखने से तो ठीक ही जान पड़ता था। जींस और टी शर्ट पहने हुए वो खेत में खड़े बिजुका की तरह लगा। मैं उसके पास जाकर बोला, "आइ नीड ए रूम।"

उसने सुनते ही उस तख़्ती को नीचे कर दिया और अपना हाथ आगे बढ़ाते हुए बोला,

"हाय, आइ एम प्रतीक।"

"अनुराग।" मैंने हाथ मिलाते हुए जवाब दिया।

"कैट प्रिपरेशन, राइट?" प्रतीक ने अनुमान लगाया।

"हाँ, और तुम?"

"सेम।"

"कहाँ से?" यह परिचय की प्रक्रिया का अगला पड़ाव था।

"जोधपुर।" प्रतीक ने जवाब दिया।

"उदयपुर।" मैंने बिना पूछे ही बता दिया। अब हम दोनों एक-दूसरे के बारे में बराबर-बराबर जानते थे। बस हो गया परिचय। लड़कों को परिचय करने में क्या टाइम लगता है! फिर दोनों एक साथ एक ही समान लंबाई-चौड़ाई के मुस्कुरा दिए। मानो मुस्कुराने से पहले हमारे अंदर समय, लंबाई, चौड़ाई सेट की गई हो।

फिर प्रतीक मुझे कई गलियों से होते हुए एक बिल्डिंग के सामने ले गया।

"यही हमारा हॉस्टल है। पहले कभी यह होटल हुआ करता था। अब इसे हॉस्टल में कन्वर्ट कर दिया गया है। पर नाम अभी भी वही है, डिवाइन पैलेस।" प्रतीक बोला।

हम मेन गेट से एंटर कर अंदर के बरामदे में पहुँचे। वहाँ एक टीवी लगा हुआ था। उसी के पास एक फ़ोन भी रखा हुआ था। टीवी के सामने एक सफ़ेद बालों वाला आदमी बैठा था। उसकी पीठ हमारी ओर थी। टीवी पर क्रिकेट मैच चल रहा था।

"अंकल।" प्रतीक ने सफ़ेद बालों वाले आदमी से कहा।

उस आदमी ने पलटकर देखा। वो अपने बालों से भी ज़्यादा बूढ़ा नज़र आता था। चेहरे पर झुर्रियाँ थीं। उसने सफ़ेद बनियान और सफ़ेद ढीला-ढाला पायजामा पहन रखा था। यक़ीनन, उसमें मुझ जैसे तीन अनुराग आसानी से समा सकते थे।

"अंकल, यह अनुराग है।" प्रतीक ने मेरा परिचय कराया। उसने मेरी ओर देखा। मैंने

नमस्ते किया। उसने जवाब में गर्दन हिला दी।

“यह मेरा रूममेट है। एमबीए की प्रिपरेशन के लिया आया है।” प्रतीक बोला।

“कहाँ से हो?” यह उस बूढ़े की आवाज़ थी।

“जी, उदयपुर।” मैंने उसे पूरा सम्मान देते हुए कहा।

फिर उसने पास ही पड़े टेबल पर रखा रजिस्टर हाथ में लिया और मेरे आगे बढ़ाते हुए बोला, “इसमें अपना नाम, पता और टेलिफ़ोन नंबर लिख दो।” मैंने प्रतीक की ओर देखा। उसने अपनी पलकें झुकाईं। पर वो नाम पता क्यों लिखवा रहा था? शायद उसे डर था कि मैं कहीं भाग न जाऊँ। मैंने उस रजिस्टर में अपना नाम, पता और टेलिफ़ोन नंबर भर दिया। मैंने पूरी कोशिश की कि हेंडराइटिंग पापा से बेहतर हो।

“किराया तो बता दिया ना?” बूढ़े ने पूछा। शायद सब बड़े लोगों को सवाल पूछने में मज़ा आता है या फिर यह कोई बीमारी भी हो सकती है जो चालीस की उम्र के बाद हर इंसान को चपेटे में ले लेती है। यह मैंने किसी से कहा नहीं बस मन में आए विचार थे, जो मन में ही रह गए। वो मेरे जवाब का इंतज़ार कर रहा था। मेरी असहजता भाँप कर प्रतीक ने ही जवाब दे दिया।

“हाँ बता दिया।” प्रतीक बोला। प्रतीक ने मुझे किराया बता दिया था। महीने का पूरा किराया 2400 रुपये था और मुझे 1200 रुपये देने थे। उसकी ऊपरी मंज़िल पर हम लोगों के रहने के लिए कमरे थे। जहाँ हमारे अलावा भी कई स्टूडेंट्स रहते थे। वहाँ जाने के लिए डिवाइन पैलेस के पीछे की ओर सीढ़ियाँ थीं। यानी हम अगर न चाहें तो उस बूढ़े का चेहरा देखना ज़रूरी नहीं था। हमारे कमरे में दो बेड लगे हुए थे और दो स्टडी टेबल। कमरे में एक खिड़की थी जिस पर एक पुराना-सा पर्दा टँगा था। दीवार में एक अलमारी बनी हुई थी जिसमें प्रतीक ने अपना सामान रखा हुआ था। कुल मिलाकर, एक ठीक-ठाक कमरा था। मेरा सामान सोमदेव अंकल के यहाँ रखा था। सो, मैं वहाँ सामान लाने चल दिया। प्रतीक ने कहा कि अगर सामान ज़्यादा हो तो वो भी साथ में चल सकता है। पर मैंने मना कर दिया। अभी तक प्रतीक से मेरी ज़्यादा बातचीत नहीं हुई थी। सिर्फ़ उतनी ही जितनी जान-पहचान के लिए ज़रूरी होती है।

मैं सोमदेव अंकल के यहाँ पहुँचा। अंकल तो घर पर नहीं थे, सिर्फ़ आंटी ही थीं। मेरे हॉस्टल से वैशाली नगर काफ़ी दूर था। मुझे दो सिटी बसें बदलनी पड़ीं। आंटी को जब पता चला कि मैंने कमरा किराये पर ले लिया है, काफ़ी नाराज़ हुई। तुरंत अंकल को फ़ोन लगा दिया। अंकल से दस मिनट की बात के बाद उन्हें राज़ी कर पाया। आंटी ने तो फिर भी कहा कि एक-दो दिन और रुक जाओ पर मैं फ़ोन पर पापा के सवालों के जवाब देने को तैयार नहीं था। मन में आए फ़ोन के विचार से याद आया कि अब तक मैंने पापा-मम्मी को फ़ोन नहीं किया था। और यह ख़्याल मन में आना ही था कि माथे पर पसीना अपनी उपस्थिति दर्ज़ कराने लगा। मन में घबराहट और डर के भाव एक साथ पनपने लगे। उन्होंने कितना ज़ोर देकर कहा था कि पहुँचते ही फ़ोन करना। सो, यह तो तय था कि पापा से बात होते ही वो मुझे सर्वप्रथम लापरवाह की उपाधि से ज़रूर नवाज़ेंगे। पर अभी तो सिर्फ़ मम्मी ही घर

पर होंगी। सो, इस वक़्त फ़ोन करना फ़ायदेमंद रहेगा। मैं आंटी से किसी काम का बहाना बनाकर बाहर निकल गया। उनके घर से दो सौ मीटर की दूरी पर छोटा-सा मार्केट था। जैसा कि आमतौर पर कॉलोनी में होता है। मुझे एसटीडी की दुकान का पीला बोर्ड दूर से ही दिख गया। मैंने फ़ोन किया। पर उस तरफ़ से पापा की आवाज़! मैं चकरा गया। ऐसा कैसे हो सकता है? मैंने दिमाग़ पर ज़ोर डाला। ओह माय गॉड, मैं यह कैसे भूल सकता हूँ। आज तो संडे है। पापा को तो घर पर ही होना था। अब जब फ़ोन लग ही गया था तो उनसे बात तो होनी ही थी। मन का डर उछलकर ज़बान पर बैठ गया था। बस इतंज़ार था पापा के भड़कने का। पर पापा ने ऐसा कुछ नहीं कहा, जिसकी आशंका के मारे मैं मरे जा रहा था। उन्होंने बस हाल-चाल पूछा। थोड़ा मेरा और थोड़ा सोमदेव अंकल का। मुझे लगा शायद मम्मी ने मना कर दिया होगा कि बेटे को ज़्यादा कुछ मत कहना। भूल गया होगा फ़ोन करना। पहली बार ही तो बाहर गया है। वो भी अजनबी शहर में। शायद ऐसा ही हुआ होगा। मुझे मम्मी पर पूरा विश्वास था। सच में पापा-मम्मी को समझना कितना मुश्किल है। पापा ने मुझसे हॉस्टल का एड्रेस माँगा। मैंने पापा को अपना एड्रेस दे दिया। पापा ने फिर हॉस्टल के फ़ोन नंबर माँगे।

मैंने कह दिया कि वो तो अभी मेरे पास नहीं है।

“सबसे पहले तुम्हें वहाँ का नंबर ही लेना चाहिए था। इतनी लापरवाही ठीक नहीं, और तुम्हारा रूममेट कौन है? कहाँ का है? उसके पापा क्या करते है?” पापा प्रतीक के बारे में वो सारी जानकारी जुटा लेना चाहते थे, जो मेरे पास नहीं थी।

“तुम इतने लापरवाह कैसे हो सकते हो! जिसे तुम अपना रूममेट बना रहे हो उसकी फ़ैमिली तक के बारे में नहीं पता। तुम कब सुधरोगे?”

मैंने फ़ोन रख दिया। मेरा मूड ख़राब हो गया। पापा को भी सोचना चाहिए, आख़िर फ़ोन पर ऐसे बात की जाती है भला। शायद मम्मी ने उन्हें कुछ नहीं कहा होगा और कहा भी होगा तो पापा भूल गए होंगे। मैंने कहा था ना, माँ-बाप को समझना सच में मुश्किल है।

मैं उस मार्केट से निकल आया। पर अभी अंकल के यहाँ जाने की इच्छा नहीं हो रही थी। यक़ीनन, पापा वहाँ ज़रूर फ़ोन करेंगे। सो, मैं वहीं पास ही की दुकान पर एक थम्स अप लेकर खड़ा हो गया। तभी एक लड़की एक मोटी औरत के साथ वहाँ से गुज़री। मैंने ध्यान से देखा। वो नेहा ही थी। यक़ीनन, उसके साथ उसकी माँ ही होंगी। पर नेहा को देखकर नहीं लगा कि वो उसकी माँ होंगी। ख़ैर, नेहा ने पता नहीं मुझे देखा कि नहीं और मैंने भी आवाज़ लगाना उचित नहीं समझा। उसके बाद मैं वहाँ से सोमदेव अंकल के यहाँ गया। मेरा सारा समान पैक था।

“बेटा तुम्हारे पापा का फ़ोन आया था।” आंटी बोलीं।

“जी, मेरी बात हो गई थी।”

“हाँ, बता रहे थे। पर शायद फ़ोन बीच में ही कट गया था। वो तुम्हारे हॉस्टल का फ़ोन नंबर माँग रहे थे।”

“जी, अभी तो मेरे पास नहीं है। हॉस्टल से नंबर लेकर फ़ोन कर दूँगा।”

उसके बाद आंटी ने एक बार और आज वहीं रुकने के लिए कहा और मैंने एक बार फिर मना किया। सारी औपचारिकाताएँ निभाई गईं। फिर मैंने वहाँ से सामान उठाया और अपने हॉस्टल की ओर चल दिया। जाते-जाते आंटी ने कहा कि बेटे कभी-कभी आते रहना। अगले हफ़्ते कोमल भी आ जाएगी। मैंने हल्की-सी मुस्कुराहट के साथ गर्दन हिलाई और वहाँ से चल दिया। हाँ, जाते समय ज़रूर बी-48 की ओर एक नज़र डाली थी।

सुबह दस बजे से हमारी क्लास थी। मैं और प्रतीक एक ही बैच में थे। पहली क्लास लॉजिकल रीजनिंग की थी। एक इंटरेस्टिंग सब्जेक्ट। रीजनिंग की क्लास कुट्टी सर लेने वाले थे। फ्रेंच कट, पिचके हुए गाल। दूर से कोई भी उन्हें अब्राहम लिंकन कह सकता था। उन्हें देखकर ही लगता था कि उनको ज़मीन पर भेजने के पीछे भगवान के पास कोई बड़ा-सा तर्क रहा होगा।

“सारे टमाटर लाल हैं। तो क्या सारे लाल टमाटर है?” सर का सवाल था। बहुत ही सिंपल सवाल। मैंने भी हाथ ऊपर किया। पर मुझसे नहीं पूछा। पता नहीं इन मास्टरों को कैसे पता चल जाता है कि मैंने हाथ खड़ा किया है तो मुझे यक़ीनन सही जवाब ही पता होगा। और वो जिससे पूछते हैं, भले ही उसने हाथ खड़ा किया हो, पर वो ग़लत जवाब देता है। उन्होंने एक लड़के को पूछा जो सबसे पीछे की बैंच पर बैठा था।

“जी नहीं, सारे लाल टमाटर नहीं हैं।” उस लड़के ने जवाब दिया। जवाब तो सही था, पर ऐसे तो मेरा मास्टरों पर लगाया गया इल्ज़ाम ग़लत साबित हो जाता।

“इसके पीछे का तर्क बताओ।” सर ने कहा।

“सर, सारे लाल टमाटर कैसे हो सकते हैं? एक लाल तो लाल बहादुर शास्त्री हैं।” लड़के ने हिचकिचाते हुए जवाब दिया।

इतना कहते ही क्लास ठहाकों से गूँज गई। मेरी भी हँसी उस हँसी में शामिल थी। सर तमतमाए। “अब आया ना मज़ा, मुझसे पूछने में तो नानी मर रही थी।” मैंने मन-ही-मन कहा। तमतमाए कुट्टी सर जाते-जाते ढेर सारा असाइनमेंट दे गए। दो क्लास के बीच में आधे घंटे का गैप था। इस आधे घंटे में हम हर आने-जाने वाली लड़की को ग़ौर से देखते रहे। पर किसी ने हमारी ओर नहीं देखा। प्रतीक तो देखने में भी स्मार्ट था। अच्छा-खासा क़द, स्ट्रेट हेयर। ध्यान से देखने पर उसके मसल्स भी दिखाई देते थे। हालाँकि दिखने में मैं भी कम नहीं था। पर ऐसा तो हर कोई अपने बारे में सोचता है। ख़ुद के सिवा किसी ने यह बात मुझसे कही नहीं थी। उस दिन की सारी क्लास अटेंड करने के बाद हमारे पास बहुत सारा असाइंनमेंट था। और अगर आज इसे पूरा नहीं करते, तो कल इतना ही और मिलना था। आख़िर हम कैट की तैयारी जो कर रहे थे। सो, सारा दिन हमने असाइनमेंट करने में

निकाला। अजीब-अजीब तरह के सवाल। जवाब भी उतने ही अजीब।

हॉस्टल में हमारे पास वाले कमरों में अंकुर और इरशाद रहते थे। उनसे बात कम ही होती थी। वो भी हॉस्टल में सिर्फ़ सोने के लिए ही आते थे। सामने वाले कमरे में भूपी रहता था। उसका असली नाम तो भूपेंद्र था पर सब उसे भूपी कहते थे।

आमने-सामने कमरा होने की वजह से बातचीत होती रहती थी। वो अक्सर कोई सवाल पूछने आ ही जाता था। हम दो विद्वानों के साये में वो अपने को सुरक्षित मानता था। कुछ ही दिनों में हम तीनों का एक ग्रुप बन गया। जिसमें किसी बाहर वाले की एंट्री बंद थी।

प्रतीक ने एक दिन साफ़ तौर पर कहा, "इस रीजनिंग की किताब पर हाथ रखकर क़सम खाओ कि हमारे ग्रुप में किसी और की एंट्री कभी नहीं होगी। यदि कोई नया आदमी इसमें शामिल होना चाहे तो उसे हम तीनों की परमिशन लेनी होगी।" यह उसका भावुकता वश दिया गया बयान था। जिसे हम दोनों ने बहुत ही सीरियसली लिया। इस अलिखित घोषणा-पत्र पर हमने अदृश्य सिग्नेचर कर दिए। जवानी के इस दौर में दोस्ती बहुत बड़ी चीज़ लगने लगती है।

हम तीनों सुबह-शाम साथ ही रहने लगे। एक साथ इंस्टीट्यूट जाते। एक साथ वहाँ की लड़कियों को घूरते। कोई लड़की हमारी दोस्ती में दीवार न बन जाए, सो हमने कलर के हिसाब से लड़कियों को बाँट लिया था।

"लाल रंग के कपड़े जो पहन के आए वो मेरी होगी।" प्रतीक ने सर्वप्रथम अपनी च्वॉइस रख दी। लाल रंग भूपी को भी पसंद था पर अपने अघोषित ओर अनिर्वाचित नेता की बात को वो कैसे काट सकता था! प्रतीक की स्मार्टनेस देख के हमने यह तय भी किया था कि लड़कियों के मामले में जब भी विकल्प की बात आए तो पहला विकल्प चुनने का अधिकार उसी का होगा।

भूपी ने मेरून कलर पर मुहर लगाई और मैंने ब्लैक। अधिकतर लड़कियाँ इसी कलर के कपड़े पहनती थीं, और कोई जो इनसे हटकर कलर पहन लेती उसे हम आपसी समझ-बूझ से बाँट लेते। सो, हमारी अपनी सूझ-बूझ भरी नीति की वजह से कभी हमारी दोस्ती में दरार नहीं आई। हमारी इस तरह की नीति से हमें भोग-विलासी या स्त्री-विरोधी नहीं समझा जाना चाहिए। यह बातें युवा होते कुछ नादान बच्चों की बकैती का हिस्सा भर थीं, इससे ज़्यादा कुछ नहीं।

नेहा से अब तक मेरी दूसरी मुलाक़ात नहीं हुई थी। इतने दिन मैंने अपने को पढ़ाई में ऐसे घोल दिया था कि मेरा अपना अस्तित्व रीजनिंग और मैथ्स के सिवा कुछ नहीं था। प्रतीक से मैंने कई बार उसके घर के बारे में जानना चाहा। पर वो किसी-न-किसी तरह से बात को टाल जाता। वो सच में स्मार्ट था।

घर पर बात किए काफ़ी दिन हो गए थे। आज मैंने घर पर बात करने की ठानी।

प्रतीक मेरे साथ ही था। भूपी अपने कमरे में बैठा था। किताब तो खोल रखी थी पर पढ़ रहा था या नहीं यह कहना मुश्किल था। "भूपी चल बाहर चलते हैं। अनुराग को फ़ोन करना है।" प्रतीक ने भूपी की किताब हटाते हुए कहा।

मुझे समझ नहीं आया कि जब फ़ोन मुझे करना है तो भूपी साथ चलकर क्या करेगा? प्रतीक को हमने लीडर बनाया था। बट आइ हेट दिस लीडरगीरी। प्रतीक की बात भूपी नहीं टाल सकता था। वो एक वफ़ादार सिपाही की तरह किताब को साइड में रखकर हमारे साथ हो लिया। चलने से पहले मैंने यह कंफर्म कर लिया कि आज संडे तो नहीं है। फ़ोन मम्मी ने उठाया।

"हैलो।"

"मम्मी मैं अनुराग।"

"बेटा, अब याद आई है मेरी। इतने दिन फ़ोन क्यों नहीं किया?"

"पढ़ाई में बिज़ी था।" ज़रूर प्रतीक ने सोचा होगा कि मैं घर वालों से झूठ बोल रहा हूँ। पर वो मेरी परेशानी क्या समझे। उसे भी तो मैंने कभी घर पर बात करते न देखा, न सुना। भूपी समझदार सिपाही की भाँति एकदम सीधा खड़ा था। मैं फ़ोन पर नहीं होता तो हँस देता।

"इतना भी क्या बिज़ी कि मुझसे बात तक करने की फ़ुर्सत नहीं!" यह मम्मी की आवाज़ थी। उनकी आवाज़ से लग रहा था कि यक़ीनन उनकी आँखों में आँसू थे।

"पैसे तो हैं ना तेरे पास? तू कंजूसी मत करना। तेरे पापा ने सोमदेव जी के पते पर पैसे पहुँचा दिए हैं। वहाँ जाकर ले लेना।"

"हाँ, ले लूँगा।" क्या मैंने इसीलिए फ़ोन किया था? पता नहीं।

"तू खाना तो टाइम पर खाता है ना?"

"हाँ मम्मी।"

"ज़्यादा बाहर का चटपटा मत खाना।"

"ठीक है।"

फिर मैंने अपने हॉस्टल का फ़ोन नंबर दे दिया और फ़ोन रख दिया। बात हो चुकी थी पर इतनी जल्दी डिवाइन पैलेस जाने के मूड में कोई नहीं था। सो, एक मीटिंग हुई, वहीं पास ही की चाय की दुकान पर। सत्तु की दुकान। जो हमारा अड्डा बन गई थी। डिवाइन पैलेस के पास में होने की वजह से सब भविष्य के एमबीए वहीं चाय पीने आते थे। सत्तु एमबीए का जोड़-तोड़ अपने हिसाब से करता था। उसकी नज़र में हम एमबीए करने वाले थे। यानी कि मास्टर ऑफ़ बीए। उसने भी बीए किया था और उसके अनुसार उसके पास सुविधाएँ होतीं तो वो भी मास्टर ऑफ़ बीए करता। हम जानते थे कि वो एमए की बात कर रहा है।

ख़ैर, उस मीटिंग में हम सर्वसम्मति से यह तय नहीं कर पाए कि हमें कहाँ चलना चाहिए। सो, जब भी ऐसा होता था तो हमने एक जगह तय कर रखी थी। डिवाइन पैलेस। आइ हेट दिस प्लेस। आप अपनी ज़िंदगी में इससे बोर जगह नहीं ढूँढ़ सकते। शर्त लगा लो।

क्लास के बाद मुझे सोमदेव अंकल के यहाँ जाना था। पापा के भेजे हुए रुपये लाने थे। मैं प्रतीक को साथ नहीं ले जाना चाहता था। अगर उसे कहता तो वो ज़रूर भूपी को ऑर्डर करता और वो बेचारा अपने लीडर की बात को मना नहीं कर पाता। मुझे सचमुच कभी-कभी उस पर तरस आता था। सोमदेव अंकल यानी वैशाली नगर यानी बी 47। एंड वाट अबाउट बी 48? सोचते ही मेरे चेहरे पर मुस्कान आ गई। पर अब तक तो वो भूल गई होगी। उदयपुर में मैंने भी जाने कितनों को रास्ता बताया है, पर उनमें से एक की भी शक्ल याद नहीं।

कभी-कभी मैं अपने-आपको कहता था, "अनुराग शुभ-शुभ सोच। शुभ-शुभ सोच अनुराग।"

अंकल के घर में घुसने से पहले एक नज़र बी 48 पर डाली। पता नहीं मैं ऐसा क्यों करता था! ख़ाली दीवारों को देखकर जाने क्या मिलता था। पर मुझे वो कहानी याद थी जिसमें एक चींटी दस बार दीवार से फिसली पर ग्याहरवीं बार उसने चढ़ने में सफलता पा ही ली। मेरे तो दस चांस अभी बाक़ी थे।

"बेटा बहुत दिनों बाद आए।" आंटी के पाँव छूने के बाद जब सोफ़े पर बैठने लगा तब आंटी बोलीं।

"आंटी, वक़्त ही नहीं मिलता।" एक औपचारिक सवाल का औपचारिक जवाब।

"अंकल तो ऑफ़िस में ही होंगे?" मैंने अंकल को घर पर न देखकर कहा।

"हाँ, वो तो शाम तक ही आएँगे।" आंटी बोलीं।

"थैंक गॉड!" अचानक एक बार फिर कुछ ऐसा मेरे मुँह से निकल पड़ा जिसका आंटी के कानों में न पड़ना ही अच्छा था। पर इन होंठों का क्या, यह तो हिले थे। जिन्हें आंटी ने देख लिया।

"क्या, कुछ कहा तुमने?" आंटी बोलीं।

"जी, वो पहले पता होता तो शाम को ही आता। अंकल से भी मिलना हो जाता।" मैंने बात को संभालते हुए कहा।

"तो आज रात यहीं रुक जाओ, सुबह चले जाना। तुम्हारा अपना घर है।" आंटी ने ज़ोर देते हुए कहा।

"अपना है, तभी तो आता हूँ।"

आंटी फिर चाय बनाने के लिए अंदर चली गईं। मैं दीवार पर टँगी कोमल की तस्वीरें देखता रहा। एक बात है, लड़कियों की फ़ोटो देखने में वक़्त कब निकल जाता है, पता ही नहीं चलता।

"कोमल की फ़ोटो है।" आंटी कब आईं पता ही नहीं चला। फिर एक-एक करके आंटी ने हर फ़ोटो के खींचे जाने के पीछे के इतिहास की जानकारी घटना और काल के साथ दी। चाय ख़त्म हुई तो मुझे काम याद आया।

"आंटी वो पापा ने..."

"हाँ, भाईसाब ने एक डीडी भेजा है। तुम्हारे अंकल के नाम पर है। एक काम करो, इसे तो अंकल के अकाउंट में जमा करा दो और यह चेक लो। इसे वहीं से कैश करा लेना।" आंटी

ने ड्राफ्ट और चेक दोनों एक साथ देते हुए कहा।

मैं आंटी से बैंक का रास्ता पूछ घर से निकला। हालाँकि आंटी ने रास्ता बताने के बाद कहा था कि कोमल होती तो तुम्हें ख़ुद बैंक ले जाती। और यह सुनकर मैं एक बार फिर मुस्कुरा दिया था।

मुझे बैंक से नफ़रत है। पाँच मिनट का काम आधे घंटे में होता है। चेक दो, फिर इंतज़ार करो। अपना ही पैसा लेने के लिए लाइन में लगो। अरे ख़ुद के पैसे लेने जाते हैं, कोई उधार थोड़े ही न माँगते हैं। आइ रियली हेट बैंक्स।

मैं चेक लेकर घर से बाहर निकल आया और फिर जाते-जाते एक नज़र बी 48 पर। पर अभी तो दूसरा ही चांस था। मैं अपने ग्याहरवें चांस तक इंतज़ार करने को तैयार था। वहाँ से बैंक कोई ज़्यादा दूर नहीं था। यही कोई आधा किलोमीटर। मैं जाते ही लाइन में लग गया। टाइम पास करने के लिए मैंने अपनी नज़रें बैंक में दौड़ानी शुरू कीं। दीवारों पर बैंक के सेविंग प्लान्स लगे हुए थे। उनमें मेरी रुचि नहीं थी। अब तक मेरे आगे सिर्फ़ दो ही आदमी खड़े थे। पर जब तक मेरा नंबर आता काउंटर पर लंच ब्रेक का बोर्ड लग चुका था। आइ रियली हेट बैंक्स।

आधे घंटे का समय था और वो वक़्त मुझे बैंक में ही गुज़ारना था। मैं वहीं एक बेंच पर बैठा इंतज़ार करते हुए अपनी नज़रों को स्थिर नहीं होने दे रहा था।

“ओह! शी हैज नाइस फ़िगर।” यह मेरी ही आवाज़ थी। बहुत हल्की, बहुत धीमी, मेरे मन की। जिसे सिर्फ़ मैं ही सुन सकता था। पास ही की बेंच पर बैठी एक लड़की को देखने के बाद यह मेरी प्रतिक्रिया थी। उसका मुँह मेरी ओर नहीं था। उसने जींस ओर कुर्ता पहन रखा था। तभी वो हल्की-सी मुड़ी।

“ओह माय गॉड! यह तो नेहा है।” यस वो नेहा ही थी। मैं उछल पड़ा। मेरी क़िस्मत यक़ीनन उस चींटी से अच्छी थी।

शायद नेहा भी लंच ब्रेक के ख़त्म होने का इंतज़ार कर रही थी। अब उससे बात कैसे शुरू की जाए। हमेशा की तरह मैंने अपने दिमाग़ के घोड़े दौड़ाने शुरू किए। पर सारे घोड़े जल्द ही थक-हार के वापस लौट आए।

मैंने मन-ही-मन भगवान से कहा, “माय गॉड, आइ नीड एन आइडिया।” और अगले ही क्षण आइडिया मेरे दिमाग़ में था। काश! कि मैं भगवान से आईआईएम में एडमिशन ही माँग लेता। मैंने एक बात नोट की है कि भगवान हमारी तभी सुनता है जब हम उससे बहुत ही मामूली चीज़ माँगते हैं। कोई बड़ी चीज़ माँग के देखो, भगवान अपने कान में रूई ठूँस लेता है। ख़ैर, गॉड थैंक्स ए लॉट।

“एक्सक्युज मी, यह लंच ब्रेक कितने बजे ख़त्म होगा।” मैंने नेहा से पूछा।

“यही कोई आधे घंटे में।” नेहा ने मेरी ओर देखते हुए कहा और फिर अपना चेहरा फेर लिया।

हर आइडिया आपकी लाइफ़ नहीं बदल सकता, कम-से-कम मेरी तो नहीं।

आख़िर उसकी भी क्या ग़लती। दो महीने हो गए। मेरी पर्सनैलिटी भी तो ऐसी नहीं कि

एक बार जो मिल ले मुझे भूले ही ना। ख़ैर, मैंने वापस अपनी निगाहें बैंक की सेविंग स्कीम पर लगा दीं।

"अनुराग...आप अनुराग ही हैं ना?" यह नेहा की आवाज़ थी। मैंने अपनी पर्सनैलिटी के बारे में जो भी कहा वो शब्द वापस लेता हूँ।

मैंने उसे ऐसे देखा मानो पहचान ही नहीं पा रहा था और फिर ललाट पर सलवट डालते हुए नाटकीय अंदाज़ में उसे देखा। और थोड़ा ग़ौर से देखा। फिर बोला, "नेहा....राइट?"

"हाऊ आर यू?" नेहा ने पूछा।

"फ़ाइन, एंड यू?"

"एब्सोल्युटली फ़ाइन।"

"तो कैसी चल रही है, आपकी कैट की कोचिंग?" नेहा ने कहा।

हाय! नेहा को अब तक याद है।

"एब्सोल्युटली फ़ाइन।" मैंने उसके ही शब्द रिपीट कर दिए। मुझे ऐसे मौक़े पर नये शब्द कम ही सूझते हैं।

अब पूछने की बारी मेरी थी। उसने बताया तो था कि वो क्या कर रही है। यस, याद आ गया...

"और आप तो एनीमेशन...मोगली सोगली..."

"यस।" उसने मुस्कुराते हुए कहा। इसमें मुस्कुराने वाली क्या बात थी, राम जाने।

"अभी तो लंच ब्रेक ख़त्म होने में आधा घंटा लगेगा।" नेहा ने इतना कहा और फिर मेरे चेहरे पर निगाहें डाल दीं।

ऐसे मामलों में समझने में देर नहीं करनी चाहिए। मैं अपनी बात पर अब भी कायम हूँ।

"क्यों ना तब तक एक-एक कप कॉफ़ी हो जाए?" मैंने कहा। पर यह कहने की हिम्मत कैसे जुटाई, यह मैं ही जानता हूँ।

"ठीक है, पर यहाँ पास में कहीं बरिस्ता नहीं है।" नेहा शिकायत के लहज़े में बोली। मैंने उसी वक़्त तय किया, अगर एमबीए के बाद मैं बरिस्ता में मैंनेजर बन गया तो सबसे पहले बरिस्ता की एक ब्रांच उसके मोहल्ले में ही खुलवाऊँगा। काश! कि वो मेरे मन की बात सुन लेती।

"पर पास वाले कोने पर एक कॉफ़ी शॉप है। हम वहाँ ट्राय कर सकते हैं।" उसने हल्की-सी मुस्कुराहट के साथ एक नया ऑप्शन दिया और हम कॉफ़ी शाप की ओर चल दिए।

यू नो, एक्च्युली आइ लव बैंक्स। स्पेश्यली लंच ब्रेक्स।

नेहा के पास स्कूटी थी। उसने मुझे चलाने को कहा और मैं मना नहीं कर सका। वो मेरे पीछे बहुत ही कम्फ़र्ट होके बैठी थी। पर मेरे हाथ काँप रहे थे। पहली बार किसी लड़की को बैठाकर मैं स्कूटी चला रहा था। नेहा मुझे रास्ता बताते जा रही थी और मैं कहे अनुसार चलाए जा रहा था। मुझे स्पीड ब्रेकर दूर से ही दिखाई दे गया। मैंने रेस कम कर दी ताकि स्पीड ब्रेकर पर आकर मुझे अचानक ब्रेक न लगाना पड़े और मैं ऐसा करता तो नेहा कहीं मुझे ग़लत न समझ ले। अगले पाँच मिनट बाद हम कॉफ़ी शॉप में बैठे थे। एकदम आमने-

सामने। कैन यू बिलीव, एकदम आमने-सामने।

“आइ वुड लाइक टु हेव...कैपुचिनो।” नेहा ने कहा। मुझे लगा कि हम कॉफ़ी पीने आए थे। ख़ैर, जो उसे पसंद। वेटर ऑर्डर लेने के लिए खड़ा था।

“एंड यू?” नेहा ने पूछा।

“सेम।” मैंने कहा। आइ हैड नो ऑप्शन। बीकॉज़ शी लाइक्स कैपुचिनो एंड वन डे शी विल लाइक मी। अब इतना भी ना सोचूँ तो लड़की के साथ कॉफ़ी पीने का क्या मतलब?

“तो आज इधर का रुख कैसे किया जनाब ने, मेरी याद आ गई?” कहकर वो फिर हँसने लगी। मैं झेंप गया। पता नहीं लड़कियाँ बेमतलब की हँसी कैसे हँस लेती हैं!

इतनी देर में वेटर आ गया और दोनों कप टेबल पर रख गया।

हमने कप उठाए। जैसे ही कप को होंठों से लगाया मुझे झटका लगा। अरे! यह तो कॉफ़ी ही है। वेयर इज द कैपुचिनो! मैंने मन-ही-मन कहा। नेहा ने चुस्की ली और कप टेबल पर रखा। मेरा मन हुआ कि वेटर को बुलाकर कहूँ कि शायद किसी और का ऑर्डर हमें दे गया है। पर नेहा को इत्मीनान से पीते देख मैं चुप रहा।

“मैंने आपको उसके अगले दिन देखा था।”

“कहाँ?”

“आपके घर के पास वाले मार्केट में। आपके साथ कोई लेडी थीं।” अच्छा हुआ मैंने उस औरत को मोटी नहीं कहा।

“ओह! वो....वो मेरी बुआ थीं।”

“इसीलिए मैंने आपको आवाज़ नहीं दी।”

“अच्छा किया। अगर बुआ मुझे आपसे बात करते हुए देख लेतीं तो...” नेहा इतना कहकर चेहरे पर ऐसे भाव लाई मानो उसकी बुआ मायावती हों और मैं मुलायम सिंह। पर इस घटना से एक बात तो साफ़ हो गई थी कि मैंने सही समय पर सही निर्णय लिया।

“मैं यहाँ अपनी बुआ के साथ ही रहती हूँ। शी इज वेरी स्ट्रिक्ट टु मी।” नेहा ने अपनी बात पूरी की।

“रीयली! आइ मीन वाय? क्या आप पर विश्वास नहीं उनको?”

“नहीं, ऐसी तो बात नहीं। बट शी इज स्ट्रिक्ट।”

“और आपके मम्मी-पापा? वो कहाँ रहते हैं?”

“अजमेर। मैं एनीमेशन का कोर्स करना चाहती थी और मुझे जयपुर में एडमिशन मिल गया था। दरअसल, जाना तो नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ डिजाइन में था। पर पापा मुझे अहमदाबाद नहीं भेजना चाहते थे। सो, मैं जयपुर आ गई। बुआ के पास।” नेहा ने अपनी पूरी कहानी मुझे सुना दी।

हमारी कॉफ़ी ख़त्म हो चुकी थी और शायद बैंक का लंच ब्रेक भी। आइ हेट बैंक्स। क्या वो अपना लंच ब्रेक एक घंटे का नहीं कर सकते!

नेहा ने बिल पे करने के लिए पर्स निकाला पर मैंने उसका हाथ पकड़ लिया। यह सब इतना जल्दी हुआ कि मैं सोच ही नहीं पाया। यह हाथ पकड़ना वैसा नहीं था जैसा आप सोच

रहे हैं। बस हल्के से यू नो...मतलब रोकने के लिए। पर उसने ऐसा कुछ भी रिएक्ट नहीं किया कि उसे बुरा लगा हो या जो मैंने किया वो शिष्टाचार के विरुध्द हो। मैंने बिल पे कर दिया। 40 रुपये। मेरी जेब में सौ का पत्ता था। अगर बिल सौ से ऊपर चला जाता तो यक़ीनन यह मेरी नेहा के साथ आख़िरी मुलाक़ात होती या फिर मैं नेहा का हाथ नहीं पकड़ता।

हम दोनों एक बार फिर स्कूटी पर थे और एक बार फिर वही स्पीड ब्रेकर। मेरे हाथ पहले की अपेक्षा कम ही काँप रहे थे। हालाँकि स्पीड ब्रेकर से पहले ही मैंने स्पीड धीमी कर ली। मुझे लगा शायद वो मेरी मनोस्थिति जान गई थी। बैंक का काम करने के बाद हम दोनों को एक ही जगह जाना था। वैशाली नगर।

“तुम्हारा कोई फ़ोन नंबर?” नेहा ने पूछा। नेहा ने पहली बार मुझे आप के बजाय तू से शुरू होने वाले संबोधनों का प्रयोग किया था।

“248754।” मैंने डिवाइन पेलेस का नंबर दे दिया।

कैसा लड़का हूँ मैं! लड़की नंबर पूछ रही है और मैंने अब तक नहीं पूछा। हिम्मत कर, हिम्मत कर अनुराग।

“आपका नंबर?” मैं अभी भी आप पर ही टिका हुआ था।

“नहीं, मेरे घर पर तुम फ़ोन नहीं कर सकते। यू नो...।”

“यस आइ नो...यॉर बुआ इज स्ट्रिक्ट।” मैंने उसकी बात काटते हुए कहा। वो मुस्कुरा दी।

“चलो फिर मिलते हैं।” उसने पार्किंग की ओर आते हुए कहा।

फिर हम वहाँ से चल दिए। वो स्कूटी पर और मैं पैदल।

———————

अंकल के घर पहुँच कर आंटी को बता दिया कि बैंक का काम हो गया है। फिर कुछ देर और बातें हुईं और फिर हुआ मेरे जाने का वक़्त।

“बेटा खाना खाते जाते।”

“नही आंटी, फिर रात को बस नहीं मिलेगी। फिर किसी दिन।”

और फिर मैं वहाँ से चला आया।

———————

मैं डिवाइन पैलेस में था। नेहा के बारे में मैंने किसी को नहीं बताया था। बताने लायक़ कुछ था भी नहीं। सिवाय उन दो मुलाक़ातों के, जिसमें एक में कंडक्टर ने मुझे ज़लील किया और दूसरी जिसमें मैं कैपुचिनो का वेट कर रहा था। कल का असाइनमेंट अभी बाक़ी था। सो, थके होने के बावजूद जाते ही मुझे जुटना पड़ा।

आइ रियली हेट लॉजिकल रीजनिंग।

इफ़ नेहा इज माय फ्रेंड एंड आइ एम प्रतीक्स फ्रेंड। देन हाऊ कुड नेहा बीकम प्रतीक्स फ्रेंड। दिस लॉजिकल रीजनिंग इज टोटली अनलॉजिकल।

अगला एक सप्ताह डिवाइन पैलेस और इंस्टीट्यूट के बीच का रहा। सप्ताह भर तक कैट हमें अपने पंजों से घायल करती रही। सोमवार का दिन था। मैं अपने कमरे में था। तभी नीचे से किसी ने मुझे पुकारा।

“अनुराग।” नीचे खड़े बूढ़े मालिक ने कहा। आज इतने दिनों बाद उसकी शक्ल देखी थी। आज भी वही ढीला-ढाला पायजामा पहन रखा था। कोई एक जैसे पायजामे कैसे सिलवा सकता है? ख़ैर, मुझे क्या! मेरी तरफ़ से कोई प्रतिक्रिया न आती देख अपनी कँपकँपाती आवाज़ में बूढ़े मालिक ने फिर से आवाज़ लगाई, “अनुराग, फ़ोन।”

“मेरा फ़ोन! ज़रूर नेहा का होगा।” मैंने मन-ही-मन कहा। मैं तेज़ी से नीचे की ओर दौड़ा और तपाक से फ़ोन उठाया। कहीं नेहा फ़ोन काट ना दे। मेरे पास तो उसका नंबर भी नहीं।

“हैलो।” मैंने हाँफते हुए कहा।

“बेटा कैसे हो?” उधर से पापा की आवाज़ आई।

मेरे ऊपर जैसे कई सौ लीटर पानी एक साथ गिरा हो। वो भी ठंडा।

“जी अच्छा हूँ।” मैंने जवाब दिया।

फिर काफ़ी देर तक वो मुझसे पढ़ाई को लेकर सवाल करते रहे। पूरे छः मिनट बात करने के बाद उन्होंने फ़ोन रखा।

शायद वो इस बार पूछना भूल गए थे कि प्रतीक के पापा क्या करते हैं। मैंने सोचा अगर उन्हें अब भी याद आ गया तो वो वापस फ़ोन करने से गुरेज़ नहीं करेगे। सो, मैं दो मिनट वहीं खड़ा रहा। बूढ़ा मेरी ओर देखे जा रहा था।

“जी शायद वापस फ़ोन आ जाए।” मैंने उसकी मन की बात को समझते हुए कहा। वो पत्थर-सा खड़ा रहा।

शायद पापा को याद नहीं आया होगा। मैंने मन-ही-मन भगवान का शुक्रिया कर अभी अपना क़दम बढ़ाया ही था कि फ़ोन की घंटी बज उठी। मन तो किया भगवान से अपना शुक्रिया वापस ले लूँ। मैंने फ़ोन उठाया और बोला,

“पापा।”

“जी अनुराग से बात करवा देंगे?” उधर से आवाज़ आई।

“हाँ बोल रहा हूँ।”

“अनुराग मेहता से।”

“हाँ, मैं अनुराग मेहता ही बोल रहा हूँ।” बूढ़ा अभी भी मुझे घूरे जा रहा था।

“फ़ोन के पास ही बैठे रहते हो क्या?” मैं पहचान गया। यह नेहा ही थी।

“आप कौन बोल रही हैं?” मैंने अपनी तमाम ख़ुशी को होंठों पर रोककर पूछा।

“भूल गए?”

“नॉट पॉसिबल।” थैंक गॉड उसने मेरी आवाज़ नहीं सुनी।

“एक मिनट...आवाज़ तो सुनी-सुनाई लगती है। एक बार फिर से बोलो।” नाटकबाज़ मैं भी कम नहीं था। थोड़ा भाव खाना तो बनता था।

“तो जनाब सच में भूल ही गए।”

“आपको लगता है कि मैं आपको भूल सकता हूँ? मिस नेहा।”

“यू नॉटी!”

“यस आइ एम। बचपन से। मम्मी भी यही कहती हैं। तो आज वक़्त मिल गया!” मैंने शिकायती लहज़े में कहा।

“यू नो...पॉसिबल नहीं होता फ़ोन करना...बीकॉज़...,” बीकॉज़ हर बुआ इज वेरी स्ट्रिक्ट। मुझे पता था यही बोलने वाली थी नेहा और उसने बोल दिया।

“बीकॉज़....माय बुआ इज वेरी स्ट्रिक्ट।” इस बात को जाने कितनी बार मुझे बता चुकी थी। शायद उसके कानों में वन्स मोर वन्स मोर बजता रहता होगा। पीजे।

“अभी कहाँ से बोल रही हो?” मैंने बुआ को रास्ते से हटाते हुए कहा।

“घर से। सब बाहर गए हैं, सो...”

“क्या हम साथ में कॉफ़ी पी सकते हैं? आइ मीन कैपुचिनो!” मैंने मिलने की इच्छा को साकार करने के लिए कहा।

वो हँसने लगी। बट मैंने तो हँसने वाली कोई बात नहीं कही।

“हूँ...” वो सोचने लगी। फिर बोली, “ठीक है। कल राजमंदिर के सामने बरिस्ता में मिलते है। दो बजे।”

“ओके, पक्का। ठीक दो बजे।”

“चलो रखती हूँ। दरवाज़े पर घंटी बजी है। बाय बाय बाय...” और फटाक से उसने फ़ोन रख दिया। मुझे अब भी विश्वास नहीं हो रहा था। फ़ोन हाथ में लिए मैं मुस्कुरा रहा था। दूसरी ओर से आ रही बीप की आवाज़ भी मधुर लग रही थी। तभी बूढ़े मालिक के बारे में सोचकर मैंने फ़ोन रखा। दूसरी ओर नज़र डाली।

बूढ़ा अपनी जगह नहीं था। वो पास में पड़े सोफ़े पर सो रहा था। मैं वहाँ से बिना थैंक्स बोले चला आया।

शाम को सत्तु चाय वाले के यहाँ चाय की चुस्की लेते हुए प्रतीक से पूछा, “यार तुम कभी बरिस्ता गए हो?” प्रतीक ने एक मिनट के लिए मुझे घूरा।

“आर यू श्योर कि तू उसी बरिस्ता के बारे में पूछ रहा है, जहाँ लोग कॉफ़ी पीने जाते हैं?” उसने लगभग घूरते हुए कहा। उसके चेहरे पर गंभीरता थी। पता नहीं वो गंभीर क्यों

था। मैंने उससे बरिस्ता के बारे में ही पूछा था ना कि...।

"हाँ भाई।" मैंने पूरे आत्मविश्वास के साथ कहा।

"हाँ गया हूँ।" प्रतीक ने भी उतने ही आत्मविश्वास के साथ कहा।

"सच में!" यह वास्तव में मूर्खतापूर्ण सवाल था। उसने फिर एक बार मुझे घूरा।

"मेरा मतलब, किसके साथ?" मैं अपने मूर्खतापूर्ण सवालों की संख्या में लगातार इज़ाफ़ा किए जा रहा था।

"थी कोई...पर तुम यह जान लो वहाँ की कॉफ़ी सत्तु की चाय से बेहतर नहीं होती।" प्रतीक बोला। सत्तु हमारी बात सुन रहा था। उसके चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई।

"वहाँ कॉफ़ी कितने की आती है?" यह एक मिडिल क्लास लड़के का सवाल था। मैं धीरे-धीरे मुद्दे पर आ रहा था।

"साठ रुपये।"

"एक कॉफ़ी!" मैंने आँखें और मुँह एक साथ फाड़ते हुए कहा। प्रतीक ने चाय की आख़िरी चुस्की ली और फिर इत्मीनान से बोला, "तुम सत्तु की चाय पीयो, और इसी में ख़ुश रहो।"

मैं झेंप गया। पर वो क्या जाने कि मैं कल बरिस्ता जा रहा हूँ! मैं मन-ही-मन मुस्कुराया।

भूपी शुरू से आख़िर तक एक ही मुद्रा में बैठा रहा। उसका होना न होना एक समान था।

रात मेरी बजट बनाने में चली गई। दो कॉफ़ी यानी एक सौ बीस रुपये। अरे सिर्फ़ कॉफ़ी ही थोड़ी पिएँगे। कुछ खाएँगे भी। पर ज़रूरी थोड़ी है कि वहीं खाया जाए। कहीं दूसरी जगह भी तो जाकर खाया जा सकता है। कुल मिलाकर मेरी गणित ने मुझे बताया कि तीन सौ रुपये से कम का ख़र्चा नहीं है। अभी डर की कोई बात नहीं थी। मेरे पास पैसे थे। पर अचानक आए इस ख़र्चे से मेरा बजट डाँवाडोल हो सकता था। पर मम्मी के दिए कुछ एक्सट्रा रुपये मेरे पास थे। जो शायद इसी काम के लिए थे। मेरे चेहरे पर मुस्कान आ गई। पर पूरी रात नींद नहीं आई।

इंस्टीट्यूट में पहली क्लास दस बजे थी। जिसे गुप्ता सर लेते थे। वेरी इंपोर्टेंट क्लास। इंस्टीट्यूट जाने पर पता चला कि गुप्ता सर किसी वजह से दस बजे नहीं आ पाएँगे। सो, क्लास को दो बजे लेंगे। यह सब हमें नोटिस बोर्ड पर लगे नोटिस को पढ़कर पता चला। ये नोटिस बोर्ड, नोटिस बोर्ड न होकर सरप्राइज बोर्ड होते हैं।

दो बजे नेहा से मिलना है और दो बजे ही गुप्ता सर की क्लास। दोनों ही बेहद ज़रूरी। भगवान ने मुझे धर्मसंकट की स्थिति में डाल दिया। भले ही इस स्थिति के आगे धर्म लगा हो पर यह बेहद ही सेक्युलर स्थिति होती है। ख़ैर, अगर मैं क्लास छोड़ता हूँ तो प्रतीक और

भूपी ज़रूर पूछेंगे कि आख़िर मैं क्लास क्यों बंक कर रहा हूँ। और मैं उन्हें बताना नहीं चाहता। मेरे पास सोचने के लिए थे, सिर्फ़ चार घंटे।

हम तीनों लायब्रेरी चले गए। मैं एक मोटिवेशनल बुक हाथ में लेकर पन्ने पलटने लगा। प्रतीक पास में बैठा एक अंग्रेज़ी मैगज़ीन में नज़रें गड़ाए हुए था। भूपी एज युज़अल मैथ्स की प्रॉब्लम सॉल्व कर रहा था।

मेरा मन पढ़ने में नहीं लग रहा था। मैं अपने-आपको समझा रहा था। हम एमबीए बनकर क्या करेंगे? किसी कंपनी का बजट बनाएँगे। मिनिमम रिसोर्सेज में मैक्सिमम आउटपुट देंगे। आज यही काम करने का मौक़ा मुझे मिलने जा रहा है। कल मैंने बजट बनाया। आज उस पर अमल करने का दिन है। आइ हैव मिनिमम रिसोर्जेज, जस्ट 300 बग्स एंड आइ हैव टु गिव मैक्सिमम आउटपुट। बरिस्ता में कॉफ़ी और खाना-पीना। अपनी मैनेजिरियल स्किल्स दिखाने का यही सही समय है। पर यहाँ क्लास मेरे बीच आ रही है। यहाँ का तो सिस्टम ही ख़राब है। प्रैक्टिकल स्टडी की तो वेल्यू ही नहीं है, बाई गॉड। इतनी कोशिश के बाद भी मैं अपने को समझा नहीं पाया था।

अगले तीन घंटे तक कोई क्लास नहीं थी। “यार मेरा सिर कुछ चकरा रहा है।” मैंने प्रतीक से कहा। यह एक सोचा-समझा झूठ था। जिसे सोचा मैंने और समझा प्रतीक ने।

“आइ थिंक यू नीड रेस्ट। कल रात भर तुम मैथ्स की प्रॉब्लम्स सॉल्व कर रहे थे।” वो सही था। कल रात सच में मैंने बहुत बड़ी प्रॉब्लम सॉल्व की थी।

प्रतीक का कहना जारी था, “एक काम करते हैं। पहले चल कर कुछ खा लेते हैं और फिर क्लास अटेंड करने के बाद तुम डिवाइन पैलेस जाकर सो जाना।” आइ हेट हिज आइडियाज। यह कभी मेरे पक्ष में नहीं होते।

भूपी से किसी आइडिया की अपेक्षा करना बेमानी था। वो तो प्रतीक की बात पर अपना सिर हिला देता। इस बार भी उस का सिर हिल रहा था।

फिर कुछ ही देर में हम कलेक्ट्रेट सर्किल पर आ गए। आस-पास इससे बेहतर जगह नहीं थी, जहाँ फ़ास्ट फूड मिलता हो। मैंने मसाला डोसा ऑर्डर किया और प्रतीक ने पाव-भाजी। भूपी ने कुछ भी खाने से मना कर दिया।

“यार कुछ तो ले ले।” प्रतीक ने एक बार फिर पूछा।

“नहीं, भूख नहीं हैं।”

ख़ैर, हमने तो हमारी पेट पूजा की। वो हमें देखता रहा जैसा कि वो हर बार करता था।

“यार अनुराग, तुझे नहीं लगता कि हमारी लाइफ़ में एंटरटेनमेट नहीं है।” प्रतीक ने एक पाव और माँगते हुए कहा।

मैं मन-ही-मन हँसा। भूपी अपना सिर हिला रहा था। हो-ना-हो उसकी गर्दन में स्प्रिंग थी, लिखवा लो।

प्रतीक ने अपनी बात पूरी की, “मेरा मतलब हमारी लाइफ़ में लड़की नहीं है। इंस्टीट्यूट में भी देख ले। कितने ही पेयर हैं। पर हम...ठन ठन गोपाल।”

“सो तो है। यार हमने कभी वैसे सोचा ही नहीं। वर्ना हम अभी एक-दूजे के बजाय

किसी-न-किसी लड़की के साथ डोसा खा रहे होते।" मैंने सांभर से कढ़ी पत्ता बाहर निकालते हुए कहा। वैसे, अपने-आपको दिलासा देने का इससे बेहतर तरीक़ा नहीं हो सकता था। पर मेरी दिक़्क़त अभी भी वहीं थी। इस मसले पर प्रतीक की राय लेने के इरादे से मैंने कहा, "यार सोच कि तेरी गर्लफ्रेंड होती और वो तुझे मिलने के लिए क्लास छोड़ने को कहती। तो क्या तू क्लास छोड़ देता?" शायद मुझे अपनी समझदारी से ज़्यादा प्रतीक की समझदारी पर विश्वास था।

"मैं यह इंस्टीट्यूट ही छोड़ देता। वो एक बार कहे तो सही।" प्रतीक हँसते हुए बोला।

मुझे मेरा जवाब मिल गया था। प्रतीक ने ज़िद की कि खाने के पैसे वो देगा। मैं भला क्यों मना करता। आख़िर मेरे बजट का सवाल था। पैसे देते समय भूपी किसी गंभीर सोच में गुम था। पता नहीं क्या। मैंने नहीं पूछा।

"भई मुझे लगता है, आराम करना चाहिए। कहीं ज़्यादा तबीयत न ख़राब हो जाए। ये गुप्ता सर वाली क्लास तो अटैंड नहीं हो पाएगी।" मैंने माहौल बनाते हुए प्रतीक से कहा, "जो भी वो पढ़ाएँ तुम मुझे रात को समझा देना।" वो दोनों मेरी बात से सहमत थे। मैं डिवाइन पैलेस आ गया और वो दोनों इंस्टीट्यूट चले गए।

———————

अब तक बारह बज चुके थे। दो घंटे बाक़ी थे। यह मेरी पहली डेट थी। शायद इसी को ही तो डेट कहते है। "पहली डेट... पहली डेट..." मैंने दो तीन बार इसे दोहराया। यह शब्द मेरे कान में मिश्री घोल रहे थे।

"पहली डेट का पहला वेट...", बरबस ही मेरे मुँह से निकल गया। ओह माय गॉड, मैं तो शायर हो गया।

अपने कपड़े मैं बैग में ही रखता था और बैग को बेड के नीचे। कमरे में जाते ही मैंने सबसे पहले अपना बैग निकाला। ऊपर पड़ी अंडरवियर की नयी जोड़ी ने घर की याद दिला दी।

फिर मैंने काली पैंट ओर नीली शर्ट पहनी। "लुकिंग स्मार्ट।" मैंने अपने-आपको शीशे में देखते हुए कहा।

शर्ट में थोड़ी सलवटें थीं जो बैग में पड़े रहने की वजह से आ गई थीं। कोई दूसरा चारा भी नहीं था।

"चलेगी यार।" मैंने मन-ही-मन कहा। उसके बाद प्रतीक की अलमारी में से एक डिओ निकाला। प्रतीक के पास डिओ का अच्छा कलेक्शन था। डिओ से अपने तन को महकाकर, ठीक उसी जगह पर, उसी अवस्था में रखा। जहाँ से उठाया था। जो कभी हॉस्टल में रहे हैं वो जानते हैं कि ऐसा क्यों किया जाता है। अब मैं जाने के लिए तैयार था। पर अभी तो एक ही बजे थे। अभी भी एक घंटा बाक़ी। डिवाइन पैलेस से राजमंदिर तक जाने में बीस मिनट लगते थे। सो, मेरे पास चालीस मिनट बचे थे।

क्यों ना मैथ्स की कुछ प्रॉब्लम सॉल्व कर ली जाए। वक़्त ख़राब नहीं करना चाहिए। मैंने

क्वांटिटिव एप्टीट्युड की बुक में से सवाल पढ़ा।

“इफ़ अ नंबर इज डिवाइडेड बाय थ्री, इट गिव्ज रिमाइंडर सेवन एंड इफ़ 300 ऐडेड इन दिस नंबर, देन इट गिव्ज रिमाइंडर ज़ीरो। वाट इज़ द नंबर?”

“ओह माय गॉड! तीन सौ। मैं रुपये तो लेने भूल ही गया।” मुझे सवाल के तीन सौ पढ़कर याद आया। थैंक गॉड! मैंने अपनी जींस, जिसे अभी खोलकर दरवाज़े के पीछे लटकाया था, की जेब से अपना पर्स निकाला। उसमें 64 रुपये थे। तुरंत बैग में से पाँच सौ का नोट निकालकर पर्स में डाला। जैसे ही नोट पर्स में गया जाने कहाँ से ढेर सारा कॉन्फीडेंस मेरे अंदर आ गया। इट मीन्स मनी गिव्ज कॉन्फीडेंस।

मैंने सोचा अब मुझे चलना चाहिए। पाँच-दस मिनट जल्दी भी पहुँच गए तो कोई बात नहीं। मैंने सुना था कि लड़कियों को पंक्चुअल लड़के बहुत पसंद आते हैं।

मैं रूम पर ताला लगा ही रहा था कि नीचे से आवाज़ आई।

“अनुराग, तुम्हारा फ़ोन।”

मैं नीचे की ओर गया। “पर इस वक़्त किस का फ़ोन होगा। कहीं नेहा का तो नहीं। कहीं ऐसा न कह दे कि मैं नहीं आ सकती। बीकॉज़ माय बुआ इज वेरी स्ट्रिक्ट। शुभ-शुभ सोच अनुराग।” मैंने मन-ही-मन कहा।

पर इस वक़्त तो मैं रोज़ इंस्टीट्यूट में होता हूँ। यह बात तो बूढ़े को पता है। फिर उसने मुझे आवाज़ कैसे लगाई? शायद उसने मुझे आते हुए देख लिया होगा। यह सब सोचता हुआ मैं नीचे फ़ोन के पास पहुँचा।

“हैलो!”

“अनुराग बेटा।” बेटा? यह पापा की आवाज़ तो नहीं थी। फिर कौन?

“जी आप कौन?”

“बेटा, मैं सोमदेव अंकल बोल रहा हूँ।”

“ओह! नमस्ते अंकल।”

“तुम अभी कहाँ हो बेटा?” सोमदेव अंकल ने पूछा। वेरी फनी क्वेश्चन। फ़ोन हॉस्टल में लगाया तो वहीं होऊँगा ना। चालीस पार के सब एक जैसे। जवाब तो देना ही था।

“जी, हॉस्टल में हूँ अंकल।”

“बेटा, हम लोग इधर से गुजर रहे थे। सोचा तुमसे मिलते चलें।”

पक्का झूठ बोल रहे होंगे। जब भी कोई यह कहे, इसका मतलब वो जान-बूझकर तुमसे मिलने आ रहा है।

“तुम वहीं रहना हम अभी पहुँच रहे है।” अंकल ने आख़िरी बम छोड़ा। मैं कुछ बोलता उससे पहले ही उन्होंने फ़ोन रख दिया।

मुझ पर एक बार फिर कई गैलन पानी एक साथ गिर गया। इस बार कुछ ज़्यादा ही ठंडा। मेरा चेहरा उतर गया। बूढ़ा वहीं खड़ा था। मैंने ध्यान नहीं दिया।

“तुम्हारे अंकल थे ना?” बूढ़े ने पूछा। मैंने सिर हिला दिया।

“यहाँ तुमसे मिलने आना चाह रहे हैं ना!” बूढ़े ने फिर पूछा।

“आपको कैसे पता?” मैंने आश्चर्य से पूछा।

“मुझसे पता पूछ रहे थे यहाँ का, मैंने रास्ता बता दिया। एकदम शॉर्टकट।” बूढ़ा शायद मेरे थैंक्यू का इंतज़ार कर रहा था। मैंने उसे घूरा। मन तो किया कि उसे शॉर्टकट से ऊपर भेज दूँ। मैं वहाँ से चला आया।

अपने कमरे में आकर धम्म से अपने बिस्तर पर बैठा। दो-तीन गहरी-गहरी साँस ली। डेढ़ बज चुके थे। सिर्फ़ आधा घंटा बाक़ी और इनको भी अभी आना था। ज़रूर पापा ही ने कहा होगा कि उसे संभाल लिया करो। मैं क्या छोटा बच्चा हूँ! अब आएँगे तो आधे घंटे से पहले तो क्या ही जाएँगे। और उसके बाद मैं जाने लायक़ नहीं रहूँगा। तभी दरवाज़े पर दस्तक हुई। मैंने दरवाज़ा खोला। सामने सोमदेव अंकल खड़े थे। वो मुस्कुराए। मैंने पाँव छुए। “कैसे हो बेटा?” दरवाज़े पर ही खड़े-खड़े उन्होंने पूछा।

“अच्छा हूँ।” मैंने कहा। अब तक मैं दरवाज़े पर ही खड़ा था। दिमाग़ साथ नहीं दे रहा था। मैंने सोचा चलो अकेले हैं तो जल्दी ही चले जाएँगे। तभी उन्होंने आवाज़ लगाई, “सुनो, आ जाओ। यही कमरा है।”

फिर वो कमरे के अंदर आ गए। पीछे-पीछे आंटी और एक लड़की। मैंने आंटी के पाँव छुए। लड़की ने नपी-तुली हँसी के साथ मुझे हैलो कहा। मैंने भी हल्के से उसे हैलो कह दिया। आई होप कि उसने मेरी आवाज़ सुनी हो।

सलवार-कुर्ता पहनी हुई वह लड़की सुंदर लग रही थी। एक पल के लिए मेरे मन में ख़्याल आया, “इज शी बेटर देन नेहा?”

मन ने ही तुरंत जवाब दिया, “नो!” मन जिस बात का जल्दी से जवाब दे दे, उस पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

फिर वो लोग वहीं बिस्तर पर बैठ गए। अंकल मुझसे पढ़ाई के बारे में सवाल करते रहे। मैंने एक बार पानी के लिए पूछा पर वो मना कर गए।

“हम लोग आज शहर में घूमने जा रहे हैं। तुम भी चलो ना।” अंकल ने प्रस्ताव दिया। सिर्फ़ पंद्रह मिनट बचे थे।

“नहीं अंकल, क्लास है। फिर किसी दिन।”

“कितने बजे है क्लास?”

“जी, दो बजे।” मैंने कहा।

“हम्म, लो मैंने तुम्हारा परिचय तो करवाया ही नहीं। यह कोमल है।” अंकल ने उस लड़की की ओर इशारा करते हुए कहा।

“कोमल यानी सॉफ्ट... रियली...” मैंने मन-ही-मन कहा। थैंक गॉड! किसी ने नहीं सुना। मैं उसे देखकर मुस्कुराया।

“अभी बीएससी किया है। तुम आए तब अपने चाचा के यहाँ गई हुई थी।” अंकल ने कोमल का परिचय आगे बढ़ाया। मैं एक बार फिर मुस्कुरा दिया। मेरे मुस्कुराने को आंटी ने मेरा शर्माना समझ लिया।

“अभी शर्मा रहा है। बचपन में तो तुम दोनों की ख़ूब पटती थी। याद है जब माऊँट आबू

गए थे और...", आंटी फिर वही टॉयलेट वाला क़िस्सा सुनाने वाली थीं कि अंकल बीच में बोल पड़े, "अरे अब आना-जाना लगा रहेगा तो दोनों की फिर से पटने लगेगी।" मुझे समझ नहीं आ रहा था कि इस वक़्त कैसी प्रतिक्रिया दी जानी चाहिए। मैं एक बार फिर मुस्कुरा दिया।

"तुम तो घर आते ही नहीं हो।" एक बार फिर आंटी बोलीं।

"आंटी फ़ुर्सत ही कहाँ मिलती है!"

"जब भी फ़ुर्सत मिले घर आ जाया करो। तुम्हारा अपना घर है।"

"सो तो है आंटी, तभी तो आपके यहाँ रुका था।" कहकर मैंने घड़ी की ओर देखा।

अब दो बजने में सिर्फ़ दस मिनट बाक़ी थे। "चलो तुम्हारी क्लास का भी टाइम हो गया। अब हम चलते हैं। तुम्हारा इंस्टीट्यूट किधर है?" अंकल ने कहा।

"जी, बस पाँच मिनट का रास्ता है।"

"चलो, तुम्हें वहाँ तक छोड़ देते हैं।"

"अंकल, मैं चला जाऊँगा।"

"अरे! हमें कोई तकलीफ़ नहीं होगी, इसी बहाने हम भी तुम्हारा इंस्टीट्यूट देख लेंगे।"

देख लेंगे। कह तो ऐसे रहे हैं मानो मेरा इंस्टीट्यूट हवामहल का सगा भाई हो। मैंने अपने मन के भावों को चेहरे पर नहीं आने दिया। मुझे लगा डिओ की ख़ुशबू मेरी आँखों के सामने जा रही थी। शर्ट की सलवटें मुझ पर हँस रही थीं। मुझे मन मारकर उनके साथ मारुति 800 में बैठना ही पड़ा।

"कोमल, विल यू ड्राइव द कार?" अंकल बोले।

"या, वाय नॉट!" कोमल बोली। फिर कोमल ड्राइविंग सीट पर बैठी।

"बेटा तुम आगे ही बैठ जाओ।" अंकल ने पिछला दरवाज़ा खोलते हुए कहा।

मैं आगे वाली सीट पर जाकर बैठ गया।

"बेटा तुम्हें तो ड्राइविंग आती होगी ना?" अंकल के पूछने का सिलसिला अभी ख़त्म नहीं हो रहा था। पक्का वो मेरे पापा के बेस्ट फ्रेंड हैं। शर्त लगा सकता हूँ।

"नहीं अंकल।" मैंने कहा।

"कोई बात नहीं। किसी दिन वक़्त निकाल कर घर आ जाओ। कोमल तुम्हें सिखा देगी। एक्च्युली शी इज वेरी गुड ड्राइवर, राइट कोमल?"

"यस पापा।" दोनों बहुत रिदम में थे। जॉनी जॉनी यस पापा..टाइप।

मुझे कोमल को रास्ता बताना पड़ा। दो मिनट में हम लोग इंस्टीट्यूट के बाहर खड़े थे। मैं जितनी जल्दी नीचे उतर सकता था, उतरा।

"थैंक्यू अंकल।"

"बेटा घर आना।" आंटी बोलीं।

"जी ज़रूर।"

"बाय अनुराग।" कोमल ने मेरा नाम लिया।

"बाय।" मैंने एक बार फिर हल्के-से कह दिया। शायद उसने सुना था। नहीं तो होंठ पढ़

लिए होंगे। तभी तो वो मुस्कुराई थी। उसके बाद गाड़ी चल दी। दो बज चुके थे। मैंने इंस्टीट्यूट की ओर देखा। मन में डर था कहीं प्रतीक मुझे देख न ले।

बस पाँच मिनट में क्लास शुरू होने वाली होगी। भले ही दस मिनट की देर हो जाए, पर वहाँ तो जाना ही होगा। मुझे नेहा पर ग़ुस्सा भी आया। काश! कि वो मुझे अपना फ़ोन नंबर दे देती तो मैं उसे फ़ोन करके बता तो सकता था। ऐसे वक़्त पर मोबाइल की कमी महसूस हुई। मोबाइल होता तो मैं नेहा को बता देता कि पहले गुप्ता सर और बाद में सोमदेव अंकल हमारी डेट के बीच में आ रहे हैं। सो, हमें किसी और दिन मिलना चाहिए। पर ऐसी चीज़ें तब बिल्कुल हमारे पास नहीं होतीं जब हमें इनकी ज़रूरत हो। आई नीड मोबाइल....आई नीड मोबाइल। मैं मन-ही-मन ज़ोर से चिल्लाया। इसका फ़ायदा यह होता है कि आपकी कोई सुनता भी नहीं है और मन की भड़ास भी निकल जाती है।

मुझे तो जाना ही था। इस वक़्त बैग में रखी अंडरवियर की नई जोड़ी बहुत याद आई। काश! कि वो इस वक़्त मेरे पास होती तो मैं उन्हें पैंट पर पहनकर सुपरमैन बन जाता और जल्दी से नेहा के पास पहुँच जाता। बट आइ नो एन अंडरवियर कांट मेक ए मैन सुपरमैन, स्पेश्यली माय चंपा माइक्रो मैन। मैंने चारों ओर देखा, आस-पास कहीं ऑटो रिक्शा नहीं था। अगर मैं वक़्त पर होता तो सिटी बस में जाता और सिर्फ़ दो रुपये में राजमंदिर के सामने होता। पर अब ऑटो रिक्शा वाले को तीस रुपये देने होंगे। मेरा बजट हर वक़्त बढ़ता जा रहा था। पर रिक्शा! वो तो वहाँ नहीं था। मैंने भागना शुरू किया। कलेक्ट्रेट सर्किल तक में लगातार भागता रहा। आइ वाज बेटर देन पी टी उषा। अगर नेहा न होती तो मुझे अपने इस छिपे हुए टेलेंट के बारे में पता ही नहीं चलता। पर अभी अपने टेलेंट के बारे में सोचने का वक़्त नहीं था। मुझे जल्दी-से-जल्दी बरिस्ता पहुँचना था। सामने ही ऑटोरिक्शा वाला खड़ा था।

“राजमंदिर चलोगे?” मैंने भिड़ते ही पूछा।

“साहेब, अभी का तो कोई शो नहीं है वहाँ। शहर में नये लगते हो?” उसने खैनी मसलते हुए जवाब दिया।

“नहीं, मुझे फ़िल्म नहीं देखनी। मुझे तो बरिस्ता जाना है।” मैंने सामान्य से ज़्यादा स्पीड में कहा। ओह माय गॉड! मैं रिक्शावाले के साथ कैसे टाइम वेस्ट कर सकता हूँ और मैं इसे अपना प्लान क्यों बता रहा हूँ? मैंने ख़ुद को कोसा और ग़ुस्से में रिक्शे वाले से बोला, “चलना है तो बोलो।”

“चलिए।” उसने बड़े ही प्यार से कहा।

“कितना लोगे?”

“पचास रुपये।”

“क्या! तीस रुपये में तो सब जाते हैं।”

“तो उनके रिक्शे में ही चले जाओ।” उसने बेरुखी से जवाब दिया। मेरे पास इतना टाइम नहीं था कि मैं बारगेन करता। हर कोई मेरा बजट बिगाड़ने में लगा हुआ था। “सिस्टम ही ख़राब है।” मैंने कहा और ऑटो में बैठ गया। मेरे बैठते ही रिक्शे वाला मुस्कुराया। मुझे और

चिढ़ होने लगी। ऑटो में बैठा मैं बार-बार अपनी नज़र घड़ी पर डाल रहा था। सामने देखा तो रेड लाइट थी। रेड लाइट पर ऑटो दो मिनट खड़ा रहा। मैंने दो मिनट में कम-से-कम पाँच बार जयपुर के ट्रैफिक सिस्टम को कोसा। छठी बार कोसने से पहले लाइट ग्रीन हो गई और मैं कोसते-कोसते रह गया। दो बजकर बीस मिनट पर उसने मुझे राजमंदिर छोड़ दिया। नीचे उतारते हुए बोला, "साहेब वो सामने जो सड़क के पार दिख रहा है, वही राजमंदिर है। और फ़िल्म देखने का मन बने तो यह वाली तो देखना ही मत।" मैंने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। मैंने सोचा कहीं वो राजमंदिर बताने के भी पैसे न माँग ले। हर कोई मेरा बजट बिगाड़ने में लगा था। जिस तरह की घटनाएँ सुबह से मेरे साथ हो रही थीं उनके अनुसार तो मेरे साथ कुछ भी हो सकता था। ख़ैर, मैं उसे पैसे देकर सड़क क्रॉस कर राजमंदिर पहुँचा। उसके ठीक सामने बरिस्ता था जैसा कि उसने बताया था। मैं बरिस्ता के ठीक सामने पहुँच गया। पास ही खड़ी कार के शीशे में अपने-आपको देखा, बाल ठीक किए। फिर बरिस्ता को एक बार बाहर से निहारा। बहुत ख़ूबसूरत है। होगा भी क्यों नहीं, साठ रुपये जो लेते हैं एक कॉफ़ी के। फिर बरिस्ता के अंदर दाख़िल हुआ। मैंने अंदर नज़र घुमाई। कोने की एक टेबल पर नेहा बैठी थी। उसके सामने जाने की हिम्मत नहीं हो रही थी। पर जाना तो था ही। नेहा के सामने एक ख़ाली कप रखा था। यानी वो एक कप कॉफ़ी ऑलरेडी पी चुकी है। ओह माय गॉड! सेव माय बजट। स्कूल में देर से पहुँचे लड़के की तरह मैं सहमा हुआ नेहा के सामने जाकर खड़ा हो गया। नेहा ने मेरी ओर देखा। फिर एक नज़र घड़ी की ओर डाली।

"सॉरी, आइ एम लेट। वो क्लास कुछ ज़्यादा ही खींच गई।" मैंने स्पष्टीकरण दिया।

नेहा कुछ नहीं बोली। उसकी ख़ामोशी मुझे मेरे झूठ पर शर्मिंदा किए जा रही थी। पता नहीं लड़कियाँ यह सब नाटक कहाँ से सीखती हैं! शायद अपनी मम्मी को देखकर। वॉटएवर।

मैं सामने वाली कुर्सी पर बैठ चुका था और नेहा के बोलने का इंतज़ार कर रहा था। शायद वो मुझसे सॉरी सुनना चाह रही थी। उसने कुछ कहने को मुँह खोला उससे पहले ही मैं बोल पड़ा,

"आई एम सॉरी।" मैंने चेहरे पर बेचारगी और मासूमियत दोनों को साथ-साथ लाते हुए कहा। तभी किसी ने मेरे कंधे पर हाथ रखा। मैंने पीछे मुड़कर देखा।

मेरे होश उड़ गए। ये तो वही मोटी औरत....आई मीन नेहा की बुआ थीं। हु इज वेरी स्ट्रिक्ट। वो यहाँ कैसे? वो मुझे घूर रही थीं।

मैंने नेहा की ओर देखा। उसकी निगाहें नीचे थीं। मैं अपनी सीट से खड़ा हो गया। बहुत अजीब-सी सिचुएशन थी।

"क्या तुम इसे जानते हो?" बुआ बोली।

"जी..." मेरे मुँह से इतना ही निकला। मेरी ज़बान मेरा साथ नहीं दे रही थी। पर अचानक मुझे सूझा कि नेहा को इंप्रेस करने का यह सबसे अच्छा तरीक़ा है। सुन रखा था कि लड़कियों को स्पोन्टेनियस मतलब हाज़िर जवाब लड़के भी काफ़ी पसंद होते हैं। मैं यह मौक़ा गँवाना नहीं चाहता था। "जी...शायद।"

“शायद का क्या मतलब?” बुआ ने कड़क आवाज़ में पूछा।

“आप अनीता ही हैं ना?” मैंने नेहा की ओर देखते हुए कहा और अपनी निगाहों से उसे सारा मसला समझा दिया।

“नहीं। यह नेहा है और तुम जिससे मिलने आए हो उसकी शक्ल भी नहीं जानते! बोलो?” बुआ फिर बोलीं।

“एक्च्युली अनीता इज माय नेट फ्रेंड। हम याहू मैसेंजर में मिले थे। ‘मेक लव नो वार’ चैट रूम में। फिर पता चला कि वह भी जयपुर में ही है तो हमने आज यहीं पर मिलने का डिसाइड किया। उसे पहले कभी देखा नहीं सो इन्हें अकेले बैठा देखा तो...और इन्होंने भी लाल सूट ही पहना हुआ है। ठीक एसी के पास वाली टेबल पर बैठी हैं। और आप यक़ीन नहीं करेंगी हमने भी यही तय किया था। बस, इसलिए मैंने इन्हें अनीता समझ लिया।” मैं एक ही साँस में कह गया। “आई एम सॉरी।”

“कोई बात नहीं। चैट फ्रेंड! क्या-क्या करते हैं आजकल के लड़के!” बुआ बोली।

“सॉरी आंटी। सॉरी नेहा।”

“ठीक है जाओ और हाँ, ध्यान से। मैंने सुना है चैट पर अधिकतर लड़के ही लड़की बन के बात करते हैं।” बुआ ने जाते-जाते एक फ्रेंडली एडवाइज भी दे दी।

“ध्यान रखूँगा आंटी।” इतना कहकर मैं वहाँ से निकल लिया। काश! कि कोई मेरी पीठ थपथपा देता। मुझे अपने-आप पर अचानक गर्व होने लगा। आई वाज द आयडिया जनरेटर।

बरिस्ता से निकलकर मैं सीधा राजमंदिर आया। अभी मैं इस बात पर सोच ही रहा था कि नेहा की बुआ उसके साथ क्या कर रही थीं तभी मेरी नज़र सोमदेव अंकल पर पड़ी। वो सपरिवार राजमंदिर के बाहर खड़े थे। शायद गेट खुलने का इंतज़ार कर रहे थे। “हे भगवान! अगर उन्होंने देख लिया तो मेरी तो शामत ही आ जाएगी।” यह सोचते हुए मैं वहाँ से भागा और तब तक नहीं रुका जब तक यक़ीन नहीं हो गया कि मैं उनकी नज़रों की हद से दूर आ गया हूँ। फिर पाँच मिनट खड़े रहकर हाँफता रहा। वहाँ से साइकिल रिक्शा किया। जो दस रुपये में मुझे डिवाइन पैलेस छोड़ने पर राजी हो गया। डिवाइन पैलेस पहुँचकर देखा कि प्रतीक कमरे में पढ़ रहा था। सामने के कमरे पर ताला लगा हुआ था। भूपी कहीं गया होगा।

मैंने जैसे ही कमरे में क़दम रखा प्रतीक ने मेरी ओर देखते हुए पूछा, “कैसी है तबीयत?”

“तबीयत? किसकी तबीयत?” मैंने मन-ही-मन ख़ुद से पूछा। ओह माय गॉड! मेरी तबीयत ही तो ख़राब थी।

“हाँ पहले से ठीक है।” मैंने अपने को सामान्य करते हुए कहा।

“कहाँ गए थे?” प्रतीक का अगला सवाल आया। मैंने तुरंत अपने शब्द वापस लेने की ठानी जिनमें मैंने कहा था कि सवाल पूछने की बीमारी सिर्फ़ चालीस के पार ही होती है। दरअसल, यह किसी भी उम्र में हो सकती हैं। चिकित्सा विज्ञान को यह मेरा नया योगदान था।

“हॉस्पिटल। डॉक्टर को दिखा आया। एसिडिटी हो गई थी। सो, सिर चकरा रहा था।” जो मन में आया बोल दिया। मुझे नहीं पता कि एसिडिटी और सिर चकराने का आपस में

कोई लिंक है या नहीं। फिर प्रतीक ने कुछ नहीं पूछा।

“भूपी कहाँ है?” मैंने पूछा।

“पता नहीं। कह कर नहीं गया। काफ़ी देर से ग़ायब है।”

फिर मैंने उससे गुप्ता सर की क्लास के बारे में पूछा और रात को उनका असाइनमेंट किया। रात को सोने से पहले मैंने पूरे दिन के घटनाक्रम पर सोचा। शायद यह मेरे बजट को बचाने का नुस्ख़ा था, जो ऊपर वाले ने किया था। पर पूरे साठ रुपये बेवजह ख़र्च किए। ऊपर से नेहा से मुलाक़ात होते-होते रह गई। मैंने मन-ही-मन तीन बार नेहा नेहा नेहा कहा। फिर सो गया। मैंने सुन रखा था कि सोने से पहले जिसके बारे में सोचते हैं रात को उसी के सपने आते हैं। पर उस रात को नेहा के साथ-साथ बिन बुलाए उसकी बुआ भी आ गईं। मैं नींद से उठकर रात को मैथ्स के सवाल हल करने लगा। मैथ्स के सवाल बुआ से कम ही डरावने थे।

एक मिडल क्लास लड़के को हमेशा पता हाता है कि उसके माँ-बाप उससे क्या चाहते हैं। बस माँ-बाप को ही नहीं पता होता कि बच्चा क्या चाहता है। और बच्चे बेचारे सही-ग़लत के फेर में झूलते रहते हैं। क्योंकि बचपन से सिखाया कुछ और जाता है, बड़े होकर कुछ और ही सीखने में मशग़ूल हो जाते हैं। मैं जयपुर आया था कैट की तैयारी करने। सो मैं कर ही रहा था। अगर इसी बीच मैं नेहा से मिल लेता था तो कुछ ग़लत तो नहीं करता था। एक चीज़ जो मुझे समझ आई वो यह कि लड़कियाँ मैथ्स के सवाल की तरह होती हैं। एक सवाल मिलाओ और आंसर सही आ जाए तो फिर वही करते रहने का मन करता है। तो नेहा से फिर मिलने की इच्छा थी। पर पिछले एक सप्ताह से नेहा का कोई फ़ोन नहीं आया था। शायद इतना सब कुछ होने के बाद वो अब मिलना नहीं चाह रही हो। अब मेरा पूरा वक़्त उसी चीज़ में बीतने लगा जो मेरे पापा को आत्मिक सुख देती थी। मैंने अपने-आपको डिवाइन पैलेस और इंस्टीट्यूट तक सीमित कर लिया।

घर पर कोई फ़ोन नहीं किया। हाँ, वहाँ से एक बार फ़ोन आया था। चार मिनट बीस सेकेंड की बातचीत के बाद पापा ने फ़ोन रख दिया। प्रतीक के लिए कभी डिवाइन पैलेस में फ़ोन नहीं आते थे और कभी उसने मेरे सामने फ़ोन नहीं किया।

———————

जून चल रहा था। उस दिन बारह तारीख़ थी। शाम के आठ बजे थे। प्रतीक ने बड़ी तेज़ी से अपनी किताब बंद की। इस क्रिया से उत्पन्न हुई आवाज़ से मेरा ध्यान बँट गया। इससे भी

उसका मन न भरा, उसने आगे बढ़कर मेरे हाथ से किताब छीनी और उतनी ही तेज़ी से उसे बंद किया। मैंने सवालिया निगाहों से उसके चेहरे की ओर देखा। सवालिया निगाहें मेरी थीं और सवाल उसने दागा।

“यू नो आज क्या है?” प्रतीक ने मेरी किताब एक तरफ़ रखते हुए कहा। आइ हेट सच क्वेश्चन।

“व्हाट?” इससे ज़्यादा मेरे पास कहने को कुछ नहीं था।

“आज मेरा बर्थ डे है।”

“रियली!” मेरी प्रतिक्रिया इतनी आश्चर्य भरी थी मानो प्रतीक का जन्म न हुआ हो, अवतार हुआ हो।

“हाँ।” कहते हुए प्रतीक खड़ा हो गया।

“हैप्पी बर्थ डे यार।” मैंने उठकर उसे गले लगाया।

“तो आज कितने साल हो गए तुम्हें इस ज़मीन पर भार बनकर रहते हुए?” मैंने मज़ाक़िया लहज़े में पूछा।

“23 साल।”

“यानी कि ये तुम्हारे दसवें जन्मदिन की तेहरवीं सालगिरह है, राइट?”

“यह सब कुट्टी का कमाल है।” प्रतीक का इतना कहना था कि हम दोनों हँस पड़े। तभी मुझे लगा कि यह जानकारी हमारे ग्रुप के तीसरे सदस्य को भी दी जानी चाहिए। मैंने भूपी को बुलाने के लिए आवाज़ लगाई, “भूपी, ओ भूपी।” भूपी का रूम सामने होने से उसका दरवाज़ा साफ़ दिखता था।

“कहाँ चला गया। दरवाज़ा तो खुला है।” मैं सोच ही रहा था कि तभी वो इरशाद के साथ कमरे में आया।

“भूपी पता है, आज प्रतीक का बर्थ डे है।” मैंने भूपी को पूछने वाले अंदाज़ में बताया।

फिर भूपी और इरशाद दोनों ने प्रतीक को विश किया।

“वी नीड पार्टी।” हम तीनों ने एक साथ प्रतीक को कहा।

“वाय नॉट। आज डिवाइन पैलेस में जश्न होगा। सारे कैट के मारों को ख़बर कर दो, आज की रात वो कैट के पंजों से मुक्त होकर हमारे साथ जश्न में शामिल हों।” प्रतीक ने एक राजा की तरह घोषणा की।

ठीक आधे घंटे बाद हम सब डिवाइन पैलेस के बरामदे में थे। चारों ओर कुर्सियाँ लगी थीं और बीच में एक टेबल। बरामदे की सारी लाइट बंद करके, टेबल पर एक मोमबत्ती जला दी गई थी और सीढ़ियों से ऊपर आने-वाले एकमात्र दरवाज़े को बंद कर दिया गया। स्नेक्स अख़बार पर फैला दिए गए। सब कुर्सियों पर पसर गए। पहली बार मैं ऐसी किसी पार्टी का हिस्सा बन रहा था। जब तक घर पर था दोस्तों की पार्टी क्या होती है, बस सुन ही रखा था। सब लोग थे। बस प्रतीक का इंतज़ार था। तभी प्रतीक आया। उसके हाथ में बीयर का कैरेट था।

“इतनी सारी बीयर!” मेरे मुँह से निकला। सबने एक साथ मुझे घूरा। पर बीयर पर टिकी

उनकी निगाहें ज़्यादा देर मुझे घूर न सकीं।

फिर प्रतीक ने ओपनर से एक-एक बोतल खोलकर सबको थमाई।

“मैं नहीं पीता।” प्रतीक ने जब मुझे बोतल थमाने के लिए आगे बढ़ाई, तब मैंने कहा।

सबने एक बार फिर मुझे घूरा जैसे कि मैंने कोई ग़लत बात कह दी हो।

इरशाद बोला, “ले लो इसमें कुछ नहीं होता।”

“माय फुट कुछ नहीं होता। जब कुछ नहीं होता तो पीते ही क्यों हैं?” मैंने मन-ही-मन कहा। पर मन की कौन सुनता है। फिर मैंने वो कहा जो सबने सुना।

“मैंने पहले कभी नहीं पी, मेरे पापा...” कहते-कहते मैं रुक गया। सोचा पापा को बीच में क्यों लाऊँ।

“डियर इट्स माय बर्थडे।” प्रतीक ने कहा। मानो सरकार ने घोषणा कर रखी हो कि उसके जन्मदिन पर पीना क़ानूनन ज़रूरी है।

“यस इट्स हिज बर्थडे। जस्ट ट्राय वंस।” फ्री की बीयर हाथ में आते ही सब के सुर प्रतीक के सुर से मिल गए।

“मैंने पहले कभी नहीं पी। कुछ हो गया तो?” हिंदुस्तानी को हर चीज़ में गारंटी चाहिए।

“कुछ नहीं होगा। इट्स माय गारंटी।” इरशाद बोला।

“प्रतीक, सच्ची पीने में कोई ख़राबी नहीं है?”

“तुझे क्या लगता है, हम सब बिगड़ैल हैं? हमारा भी घर-परिवार है। और हम कोई रोज़-रोज़ तो पीते नहीं। यार सेलिब्रेशन में इतना तो चलता है।”

प्रतीक इतने विश्वास के साथ कहता था कि उसे मना कर पाना सच में मुश्किल हो जाता। और फिर मुझे एक बोतल थमा दी गई। उस दिन हर एक के चेहरे पर स्माइल थी। पता नहीं, वो मेरे बीयर पीने की वजह से ख़ुश थे या मेरा क़िस्सा ख़त्म होने पर। ताकि वो बीयर पीना शुरू कर सकें।

सबने बोतल हाथ में पकड़ी और एक साथ टकराई। मैंने भी।

“चीयर्स। आज की शाम प्रतीक के नाम।” सबने एक साथ कहा। मैंने भी।

डरते-काँपते मैंने पहली घूँट ली। कड़वी थी। लगा मुँह से लेकर पेट तक की तमाम स्वाद ग्रंथियाँ और माँसपेशियाँ हड़ताल पर चली जाएँगी। हमारे यहाँ तो जन्मदिन पर मुँह मीठा करवाया जाता है और यहाँ तो कड़वा हो गया। ओह माय गॉड! यह लोग कैसे पी लेते हैं! मैंने मन-ही-मन कहा। फिर सब के चेहरे की ओर बारी-बारी से देखा। सब ऐसे पी रहे थे मानों मीठा शरबत पी रहे हों।

एक बारगी तो मैंने सोचा कहीं मेरी वाली बोतल की एक्सपायरी डेट तो नहीं निकल गई, तभी इतनी कड़वी है। सो, मैंने बोतल को एक बार ऊपर से नीचे देखा। पर कहीं भी मुझे डेट नज़र नहीं आई।

“अच्छा सब बारी-बारी से बताएँगे, किस-किस की गर्लफ्रेंड है?” प्रतीक ने बातचीत का नया सिरा खोजते हुए कहा।

“यस।” सब एक स्वर में बोल पड़े। मानो सब इसी विषय के इंतज़ार में थे। भूपी हमेशा

की तरह प्रतीक की बात पर सिर हिला रहा था। मैं अभी भी बोतल पर एक्सपायरी डेट ढूँढ़ रहा था।

“सो, हम अब ऐसा करते हैं कि अंकुर से शुरू करते है।” सबने नज़रें अंकुर पर गड़ा दीं। कहीं से फुसफुसाहट की आवाज़ आई, “इसकी तो होगी, पक्के से।”

“नहीं है।” अंकुर ने सबके अनुमानों पर पानी फेरते हुए कहा।

“साले झूठे! तेरी नहीं है? हो ही नहीं सकता।” इरशाद ने स्नैक्स पर हाथ मारते हुए कहा।

“ले, बोतल पर हाथ रखकर बोल रहा हूँ, साले।” अंकुर के इस क़सम वाले सीन के बाद किसी को संशय नहीं रहा। सब जानते थे अंकुर बीयर की झूठी क़सम नहीं खा सकता।

अब इरशाद की बारी थी।

“अपना गर्लफ्रेंड बनाने में कोई इंटरेस्ट नहीं।”

“जिसकी नहीं होती, ऐसे ही बोलता है।” किसी ने धीमे से कहा जिस पर सब हँस दिए। इरशाद झेंप गया। भूपी ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। इरशाद के नज़दीक भूपी बैठा था। इससे पहले कि वो कुछ बोलता, प्रतीक बोल पड़ा, “भूपी के बारे में तो मैं ही बता देता हूँ। यह भी ठनठन गोपाल ही है।” भूपी ने फिर सिर हिला दिया।

अब मेरी बारी थी। आइ वाज कंफ़्यूज्ड। नेहा, इज शी माय गर्लफ्रेंड? मेरे पास अपने ही सवाल का जवाब नहीं था।

“नो, आइ थिंक आइ डोंट हेव।” मैंने बीयर की एक और घूँट घटकते हुए कहा।

अब सबकी नज़रें प्रतीक पर जम गईं। सबको उससे बहुत आशाएँ थीं। अब डिवाइन पैलेस की इज़्ज़त उसके हाथ में थी।

“हाँ, आइ हैव गर्लफ्रेंड्स।”

“व्हाट! गर्लफ्रेंड्स?” अंकुर के मुँह से निकला।

“यस आइ रिपीट। आइ हैव गर्लफ्रेंड्स। बट आई एम नॉट देयर बॉयफ्रेंड।” कहने के साथ ही प्रतीक मुस्कुराया। सब एक साथ हँसने लगे।

“सो वी आल बिलॉन्ग टु द सेम कैटेगरी। यू नो, वाय वी डोंट हैव गर्लफ्रेंड्स?”

“वाय?” प्रतीक की बात सुन भूपी ने पूछा।

“आइ नो।” यह अंकुर की आवाज़ थी।

सबने उस पर नज़रें गड़ा दीं। अब सबको उसके रहस्योद्घाटन का इंतज़ार था। शायद उसकी यह बात हमारी क़िस्मत बदल देती।

“बिकॉज़ वी बिलॉन्ग टु द गुड एंड नोबल फेमिली।” अंकुर ने पूरे आत्मविश्वास से कहा। वो आत्मविश्वास जो दो घूँट गले से उतरने के बाद स्वयं ही प्रस्फुटित होने लगता है।

“व्हाट!” सबने एक स्वर में कहा। अंकुर सकपका गया।

“यू मीन, गाय्ज हु हैव गर्लफ्रेंड, आर नॉट फ्रॉम गुड एंड रेप्युटेड फेमिलीज! थैंक गॉड! यू डोंट हैव गर्लफ्रेंड। अदरवाइज यू कुड हैव रयुन्ड यॉर फेमिलीज रेप्युटेशन।” प्रतीक चीखते हुए बोला। अंकुर की बोलती बंद। पार्टी प्रतीक ने दी थी, बर्थ डे उसका था, तो बात भी उसी

की सही थी। जो पिलाए उस दिन वही सही।

हर कोई एक घूँट भरता और अंकुर की ओर देख कर हँस देता। इस वक़्त हर कोई अंग्रेजी बोलने पर आमादा था। मैंने सुन रखा था कि इंडियन दो ही वक़्त अंग्रेजी बोलते हैं, पीने के बाद या पिटने के बाद।

इस वक़्त पी तो चुके ही थे। साथ-ही-साथ गर्लफ्रेंड के युद्ध में बुरी तरह पिटे हुए थे। सो, हमारा अंग्रेज़ी बोलना लाज़मी था।

"सो, एनी बडी एल्स वांट टु अटेंप्ट दिस क्वेश्चन?" प्रतीक ने एक बार फिर सबको जवाब का मौक़ा दिया।

किसी के पास इसका जवाब नहीं था। पर शायद मेरे पास जवाब था। वी डोंट हैव गर्लफ्रेंड क्योंकि उनकी बुआ वेरी वेरी स्ट्रिक्ट होती हैं। पर मैंने किसी को कहा नहीं। ख़ामोशी पसर गई। बस स्नैक्स खाने से पैदा हुई कचर-कचर की आवाज़ ही सुनाई दे रही थी।

"ओके टेल मी, डु यू लाइक गरिमा?" प्रतीक ने पूछा। गरिमा इंस्टीट्यूट की सबसे हसीन, कमसिन, ख़ूबसूरत लड़की थी, मतलब कि सबसे सेक्सी। और यह मेरे अपने विचार नहीं थे। इस मामले में पूरे इंस्टीट्यूट में आम राय थी। रेफरेंडम कराते तो भी यही निकल के आता। इतने लोग एक साथ ग़लत नहीं हो सकते।

"यस।" सबने एक साथ कहा।

"बट...", भूपी पहली बार कुछ कहने जा रहा था कि प्रतीक ने उसकी बात काट दी।

"मुझे पता है तुम क्या कहना चाहते हो...यही ना कि उसका ब्वॉय फ्रेंड है।"

"गौरव। हिज नेम इज गौरव।" अंकुर ने अपनी जानकारी भी उड़ेल दी।

"तो बताओ, गौरव के पास ऐसा क्या है जो तुम्हारे पास नहीं हैं?" प्रतीक का अगला सवाल।

वो ज़रूर जॉकी अंडरवियर पहनता होगा। मैंने मन-ही-मन कहा। आइ रियली हेट चंपा माइक्रो मैन। प्रतीक की बात अभी पूरी नहीं हुई थी। "तो बताओ, उसमें ऐसा क्या है जो गरिमा उसके पास है?"

अब प्रतीक वापस हिंदी पर आ गया था मतलब कि अब उतरने लगी थी। सबकी बोतलें भी ख़ाली हो गई थीं। प्रतीक ने फिर से बोतलें खोलीं और थमा दीं। मेरी बोतल तो अभी आधी ही ख़ाली हुई थी। एक बार फिर गरिमा-पुराण शुरू हो गया।

किसी के पास प्रतीक की बात का जवाब नहीं था। हम सबको यह तो पता था कि गरिमा के पास ऐसा क्या है जो दूसरी लड़कियों के पास नहीं है। पर गौरव के पास क्या ख़ास था यह हमें नहीं पता था। सो, सवाल जस-का-तस था।

"यह भी कोई बात हुई। यह सवाल तो गरिमा से किया जाना चाहिए कि उसे गौरव में ऐसा क्या नज़र आया जो हमारे पास नहीं है।" अंकुर ने नाराज़गी वाले स्वर में कहा। मतलब कि बात अब गंभीर होने लगी थी।

"ओके टेल मी, आर यू गाय्ज़ इंटेलीजेंट?" प्रतीक ने सवाल पूछना जारी रखा।

"यस।" सबने कोरस में कहा।

“डु यू गाय्ज़ हैव मनी?”

“यस।” भूपी की आवाज़ इस बार निकल के नहीं आई।

“डु यू गाय्ज़ हैव सेंस ऑफ़ ह्युमर?”

“यस।” एक बार फिर सबने एक साथ हाँ-में-हाँ मिलाई। फिर सब प्रतीक के अगले सवाल का इंतज़ार करने लगे। प्रतीक ने भी तुरंत ही अगला सवाल फेंका।

“क्या गौरव तुमसे स्मार्ट है?”

यह सवाल सुनकर सबने एक-दूसरे के चेहरे की ओर देखा और जब सबके चेहरों पर एक समान उत्तर पाया तो एक सुर में बोल पड़े, “नो।”

“यही तो बात है। समझ में आया कुछ। हैव यू गॉट द पॉइंट?”

“व्हाट?”

“स्मार्ट ब्वॉयज डोंट हैव गर्लफ्रेंड।” यह प्रतीक की नयी थ्योरी थी।

क्या नेहा और मेरे बीच मेरी स्मार्टनेस आ रही थी। जिस स्मार्टनेस पर बरसों इतराते रहे वो ही आज हमारी दुश्मन थी। ख़ैर, प्रतीक की बात में दम तो था।

सभी ने प्रतीक की इस थ्योरी को ध्वनिमत से पारित कर दिया। पर सवाल जस-का-तस था कि आख़िर हम ऐसा क्या करें कि हमारी भी गर्लफ्रेंड हों। हम अपनी स्मार्टनेस को कम तो नहीं कर सकते थे। सो, सभी जवाब की आस में प्रतीक की ओर देखने लगे।

“हम उनमें से नहीं हैं जो लड़कियों का पर्स उठाकर उनके पीछे चलें। उनकी हर बात पर हम ‘हाँ’ कहें और अपनी पॉकेट मनी से उन्हें गिफ़्ट ख़रीद कर देते रहें। या उन्हें कॉफ़ी पिलाते रहें। आख़िर क्यों? लेकिन अगर हम ऐसा कर सकें तो हमारे पास भी लड़कियाँ होंगी। बोलो तुम सब यह कर सकते हो?” प्रतीक ने मामला साफ़ किया।

कोई कुछ भी नहीं बोला। टेबल पर रखी मोमबत्ती बुझ गई थी। हम एक-दूसरे को नहीं देख पा रहे थे।

“क्या हमें ऐसा करना चाहिए?” अंकुर ने पूछा।

“देखो, अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारे आगे-पीछे भी लड़कियाँ रहें, तो तुम्हें ऐसा करना ही होगा। अब यह तुम पर है।” प्रतीक एक लीडर की तरह बोला।

भूपी ने कुछ नहीं पूछा। उसने इस पूरे डिस्कशन में लड़कियों में कोई इंटरेस्ट नहीं दिखाया। अँधेरे में मैं यह भी नहीं देख सकता था कि उसका सिर हिल रहा था कि नहीं। काफ़ी देर हो चुकी थी और बात के ख़त्म होने का कोई छोर नहीं दिखाई दे रहा था। बोतल भी ख़त्म हो चुकी थी। मेरी बोतल में तो अभी भी बीयर थी।

“देखो निराश होने की कोई बात नहीं। आख़िर हमें अपने स्मार्ट होने की कोई क़ीमत तो चुकानी ही थी।” प्रतीक ने अपनी तीसरी बोतल ख़त्म करते हुए कहा। इसका मुझे पता बाद में चला। जब अगले दिन प्रतीक ने बताया कि पार्टी में वो ऑलरेडी एक बोतल चढ़ा के आया था। ख़ैर, सबने उसकी बात में सहमति जताई। सब एक-एक करके अपनी बोतल नीचे रखते जा रहे थे। प्रतीक ने जाकर बल्ब जलाया। अब सब के चेहरे दिखाई देने लगे। अंकुर ने भी बोतल ख़त्म कर दी। मेरे लिए कड़वी बीयर पीना संभव नहीं हो पा रहा था। आख़िरकार

आधी भरी बोतल मैंने नीचे रख ही दी। अब सिर्फ़ प्रतीक के हाथ में बोतल बची हुई थी। उसने आख़िरी घूँट भरी और बोला,

“जो सबसे एंड में फिनिश करता है, उसके बारे में कहते हैं कि उसकी बीवी सुंदर और गर्लफ्रेंड सेक्सी होती है।” उसकी बात सुन सब सकते में आ गए।

“अरे! सेक्सी गर्लफ्रेंड को पाने का तो यह सबसे अच्छा तरीक़ा था। तुम स्वार्थी हो।” अंकुर ने घोषणा की। प्रतीक मुस्कुराने लगा। तभी मैंने अपनी बोतल उठाई ओर पीनी शुरू कर दी। सब मेरी ओर देख रहे थे। प्रतीक ने मुझे घूरा।

मुझसे भले ही बीयर पी नहीं जा रही थी पर सेक्सी गर्लफ्रेंड पाने का यह मौक़ा मैं छोड़ना नहीं चाह रहा था। मैंने एक ही घूँट में उसे फिनिश किया और बोतल को ऐसे रखा मानो किसी स्वयंवर में रखे धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाकर उसे विजयी भाव से रखा हो। सब मुझसे जल रहे थे। आइ वाज द विनर।

फिर सब अपने-अपने कमरे में चले गए। आज डिवाइन पैलेस ‘दि वाइन पैलेस’ बन गया था। वैसे भी तब मुझे बीयर और वाइन के बीच का अंतर नहीं मालूम था। सब अपनी-अपनी ख़ाली बोतलें अपने साथ कमरे में ले गए। इन्हें ठिकाने लगाने की सबकी अपनी-अपनी ज़िम्मेदारी थी। जाने से पहले सबने एक बार फिर प्रतीक को बर्थ डे विश किया। मैंने और प्रतीक ने कमरे में बेड के नीचे बोतलों को ठूँस दिया।

मैंने लाइट बंद कर दी। दोनों बेड पर लेट गए। मैं नेहा के बारे में सोच रहा था।

“अनुराग।” प्रतीक बोला। मुझे लगा ज़्यादा पी लेने पर नींद जल्दी आती होगी पर प्रतीक तो जाग रहा था।

“हाँ।” मैंने हल्की-सी आवाज़ में कहा।

“यू नो, आज मेरा बर्थ डे है।”

“हाँ।” शायद उसे चढ़ गई थी।

“आर यू हैप्पी।”

“फॉर व्हाट?”

“बीकॉज़ इट्स माय बर्थडे।”

“यस आइ एम।”

“बट आइ एम नॉट।” प्रतीक लड़खड़ाती आवाज़ में बोला।

“तुम अभी सो जाओ। हम कल बात करेंगे।”

“बट आइ एम नॉट।” एक बार प्रतीक ने फिर कहा। पर उसके बाद उसकी आवाज़ नहीं आई। शायद वो सो गया था। यक़ीनन, उसे चढ़ गई थी। भूपी के कमरे से कुछ गिरने की आवाज़ आई। शायद उसे भी चढ़ गई होगी। यह सोच मैं भी सो गया। नेहा मेरे सपनों में नहीं आई बीकॉज़...बीकॉज़ आइ वाज स्मार्ट।

लेकिन किसी लड़की के भी कोई ब्वॉयफ्रेंड न हो तो इसका मतलब वो भी स्मार्ट है। तो एक स्मार्ट लड़का और एक स्मार्ट लड़की मिलकर इस प्रॉब्लम को सॉल्व कर सकते हैं। इट वाज रियली कुट्टी इंपेक्ट। यह सब सोचते-सोचते पता ही नहीं चला कि नींद आई या नींद में

नेहा।

———————

सुबह तो नींद देर से ही खुली। प्रतीक मुझसे पहले उठ चुका था। वो खिड़की से बाहर झाँक रहा था। मेरा सिर दर्द कर रहा था। मैं बाथरूम में गया, मुँह धोया। बाहर आया तो प्रतीक बोला, “यार कल रात को सोते समय मैं तुझसे कुछ कहा था क्या?”

“नहीं, तुम तो बस मुझसे पूछ रहे थे कि मैं हैप्पी हूँ कि नहीं।”

“बस इतना ही, और कुछ नहीं?” मानो प्रतीक को डर था कहीं नशे में वो कुछ ऐसा ना कह गया हो जो उसे नहीं कहना था।

“नहीं, बस....और कह रहे थे कि तुम ख़ुश नहीं हो और तुम सो गए।”

“शायद ज़्यादा पी ली थी। इसलिए अनाप-शनाप बोल गया। आइ वाज़ वेरी हैप्पी।”

“हम्म वो तो है।” मुझे लगा प्रतीक के मन में कोई बात है जो वो कल रात को कहना चाह रहा था। पर मैंने उससे पूछा नहीं।

“अनुराग तुम्हारा फ़ोन।” तभी नीचे से आवाज़ आई।

“घर से होगा।” मैंने प्रतीक से कहा।

“मेरा नमस्ते कहना अंकल-आंटी को।” प्रतीक बोला। मैं मुस्कुराता हुआ नीचे चला गया।

रिसीवर को पकड़े हुए बूढ़ा मालिक वहीं खड़ा था। मैं पहुँचा तो मुझे रिसीवर पकड़ा के सोफ़े पर बैठ गया।

“हैलो।”

“अनुराग हाय, नेहा।”

ओह माय गॉड! नेहा अब भी मुझसे बात करना चाहती है। ज़रूर यह उस आख़िरी घूँट का कमाल है जो मैंने कल रात को पी थी।

“सो, तुम्हें वक़्त मिल गया।” मैंने उलाहना देते हुए कहा।

“ओह, आय एम सॉरी फॉर दैट डे!” नेहा की आवाज़ से लग रहा था कि वो सच में उस दिन के लिए माफ़ी माँग रही थी। एंड शी मस्ट बी।

“ओह, उस दिन तो तुमने मरवा ही दिया था।” मैं अचानक आप से तुम पर आ गया। “क्या तुम्हारी बुआ हर जगह तुम्हारे साथ ही जाती हैं। बॉडीगार्ड के जैसे?” मैंने बात पूरी की।

“अनुराग, यू नो शी इज वेरी स्ट्रिक्ट।”

“हम्म।”

“चलो बाक़ी बातें मिलकर करेंगे।”

“आर यू श्योर?”

“हाँ बाबा। बट दिस टाइम नॉट एट बरिस्ता।”

थैंक गॉड! 60 रुपये की एक कॉफ़ी। गॉड सेव्ड माय बजट।

“देन?”

“जीटी, आइ मीन गौरव टावर पर मिलते हैं। उसके बेसमेंट में कैफे कॉफ़ी डे है। वहीं पर, आज तीन बजे।”

“ओके। बट प्लीज अपनी बुआ के साथ मत आना।” मैंने उसे छेड़ते हुए कहा।

“अनुराग!” उसने बनावटी ग़ुस्से में कहा। मैं हँस दिया।

“चलो ठीक है। तीन बजे।”

“बाय।”

“बाय।”

———————

“यार प्रतीक, तू कभी कैफे कॉफ़ी डे गया है?” मैंने कमरे में एंटर होते हुए पूछा।

“तुम, क्या सभी कैफ़ेज़ पर रिसर्च कर रहे हो? उस दिन बरिस्ता के बारे में पूछ रहे थे और आज सीसीडी के।” प्रतीक ने हाथ में ब्रश लेकर उस पर पेस्ट लगाते हुए कहा, “आर यू ओके?” और फिर निगाहें मेरे चेहरे पर गड़ा दीं।

“अरे यार ऐसे ही। वो नीचे अख़बार में ऐड देखा तो पूछ लिया।” मेरी हाज़िरजवाबी एक बार फिर काम कर गई।

“हाँ गया हूँ।” उसने ब्रश को मुँह में डालने से ठीक पहले कहा, “और कोई सवाल?”

“नहीं बस जानना चाह रहा था कि वहाँ कॉफ़ी...” प्रतीक ने मेरी बात पूरी नहीं होने दी।

“75 रुपये की। यही पूछ रहा था ना?”

मैंने मुस्कुराते हुए गर्दन हिला दी। फिर बोला, “मैं कोई वहाँ जा थोड़ी रहा हूँ। आई एम हैप्पी विद सत्तुज टी।”

“मैंने कब कहा कि तू वहाँ जा रहा है और जाएगा भी तो किसके साथ?”

प्रतीक की बात सुन मैं झेंप गया। प्रतीक ने कुल्ला थूकते हुए कहा, “फ़ोन किसका था, पापा का?”

“नहीं...मेरे अंकल का। यू नो जहाँ मैं पहली बार रुका था। उन्होंने बुलाया है।” मैं झूठ का पुलिंदा बनता जा रहा था।

“कोई ख़ास काम?”

“नहीं बस ऐसे ही। कह रहे थे कि काफ़ी टाइम हो गया है। सो, आज आ जाओ।”

“हम्म।” प्रतीक ने मुँह पोंछते हुए कहा।

“यार, तुम जयपुर में घूमे हुए हो क्या?” मैंने पूछा।

“क्यों?”

“नहीं बस ऐसे ही। सुना है गौरव टावर बहुत अच्छा है। कभी गए हो तुम वहाँ?” हर एक शब्द के साथ मेरी ज़बान लड़खड़ा रही थी।

“हाँ, गया हूँ। कुछ साल पहले। मालवीय नगर में है।”

“बस थोड़ी जाती होगी वहाँ?”

“क्यों नहीं जाती। अपने यहाँ से तो सीधी सात नंबर बस जाती है। किसी दिन हम चलेंगे। ठीक है?”

मैं मुस्कुरा दिया। मेरा काम हो चुका था।

ठीक तीन बजे मैं ओर नेहा आमने-सामने बैठे थे। उसने ब्लैक जींस और व्हाइट टॉप पहना हुआ था। आज चेहरे पर मुँहासे कम लग रहे थे। मेकअप का कमाल था। पर वो मुँहासों में ज़्यादा सुंदर दिखाई देती थी। मुझे लगा कि मैं उसे कहूँ कि तुम सेक्सी लग रही हो। सुना है, लड़कियों को तारीफ़ पसंद है। पर सेक्सी कह डालूँ क्या? नहीं नहीं।

“टुडे यू आर लुकिंग गोरज़ियस।” मैंने अंतिम वक़्त पर अपना निर्णय बदलते हुए कहा।

“ऐ, फ्लर्ट कर रहे हो?”

“नो, रियली।” मैंने कहा और मुस्कुराया। वो भी मुस्कुरा दी। वो जानती थी कि वो सुंदर लग रही थी। फिर लगभग बीस सेकेंड तक हम में से कोई कुछ नहीं बोला।

फिर अचानक दोनों एक साथ बोल पड़े, “उस दिन...” और हँस पड़े। हँसते हुए एक-दूसरे की आँखों में झाँक लिया।

“यू नो...यू आर वेरी स्मार्ट एंड स्पोंटेनियस।” इसके जवाब में मेरी स्माइल तो बनती थी। फिर नेहा ने उस दिन का पूरा क़िस्सा सुनाया।

“एक्च्युली उस दिन जैसे ही मैं घर से बाहर निकल रही थी, बुआ ने रोक लिया। वो परेशान थीं और रिलीफ़ के लिए फ़िल्म देखना चाहती थीं। अब बरिस्ता ठीक राजमंदिर के सामने है। सो, टिकट्स लेने के बाद हम बरिस्ता आ गए। मैं तुम्हें फ़ोन भी नहीं कर सकी।” वो सारी घटना विस्तार से बता रही थी ताकि मैं जान सकूँ कि उसमें उसकी कोई ग़लती नहीं थी। “ठीक हमारे मिलने वाले वक़्त मैं बरिस्ता में थी, मेरी बुआ के साथ। पर जब तुम नहीं आए तो आइ वाज हैप्पी, बट यू केम। और फिर तो तुम जानते ही हो। अगर बुआ को शक हो जाता तो मेरी ख़ैर नहीं थी।” नेहा ने अपनी बात पूरी की। मेरी कहानी भी उसकी कहानी से कम इंटरस्टिंग नहीं थी। सो, मैंने इसे सुनाने को मौक़ा नहीं छोड़ा।

“उस दिन मेरे भी क्लास थी जिसे मैं बंक करके आया। निकलने से ठीक पहले मेरे अंकल...वही बी 47 वाले....वहाँ आ गए। बड़ी मुश्किल से क्लास का बहाना कर बचा। वर्ना वो तो मुझे अपने संग जयपुर घुमाने ले जाने वाले थे।” फिर एक गहरी साँस ली और कहना जारी रखा, “उनके साथ उनकी वो लड़की भी थी।” मैंने बात पूरी की।

“कोमल...राइट?”

“ हाँ, पर तुम्हें कैसे पता?”

“ वो मेरी पड़ोसन है। शी इज माय नेबर और मेरी दोस्त भी।”

“ओके।”

“शी इज ब्यूटीफुल!” नेहा ने मेरे चेहरे पर नज़रें गड़ाते हुए कहा। पता नहीं वो पूछ रही थी या कोमल के बारे में जानकारी दे रही थी।

“यस।”

“फिर तो उसके साथ ही चले जाना चाहिए था।” उसने चेहरा बनाते हुए कहा।

“ओह, चांस मिस कर दिया। और वैसे मैं उसके साथ चला जाता तो तुम्हारी बुआ से कैसे मिलता?” इतना कहकर मैं हँस दिया। पर वो नहीं हँसी। पता नहीं इन लड़कियों को किस बात पर हँसी आती है! या तो बिना बात ही हँसती रहती हैं और इतने अच्छे जोक पर भी चुप बैठी रही। गर्ल्स हैव पुअर सेंस ऑफ़ ह्युमर। यह मेरा निष्कर्ष था।

“यह हमारी तीसरी मुलाक़ात है।” नेहा ने बात का रुख मोड़ते हुए कहा।

“याददाश्त तो अच्छी है।” मैंने मन-ही-मन कहा।

“और तुमने अपने बारे में मुझे कुछ नहीं बताया।” नेहा का स्वर थोड़ा ऊँचा हुआ।

“मेरे बारे में जानने को है ही क्या? मैं मेरे मम्मी-पापा का इकलौता लड़का हूँ। यहाँ कैट की प्रिपरेशन कर रहा हूँ। देट्स ऑल अबाउट मी।” सच में इससे ज़्यादा तो मैं भी अपने बारे में नहीं जानता था।

“एंड यॉर गर्लफ्रेंड?” नेहा ने पूछा। अच्छा तो यह जानना चाह रही है। उसे कौन समझाता कि अगर मेरी कोई गर्लफ्रेंड होती तो मैं नेहा के साथ क्या कर रहा होता। इतनी-सी बात नहीं समझती कि मेरे यहाँ गर्लफ्रेंड की पोस्ट अभी वेकेंट है। लड़कियों के कॉमनसेंस पर भी मेरी वही राय बन रही थी जो सेंस ऑफ़ ह्युमर के बारे में थी।

मैं हल्का-सा मुस्कुराया। इन दिनों मैं इसमें परफेक्ट हो गया था। इट रियली वर्क्स।

“तुमने बहुत ही पर्सनल सवाल पूछ लिया।” यह मेरा जवाब था जो सवाल बनकर उभरा, “फर्स्ट यू टेल मी, डु यू हैव बॉयफ्रेंड।”

उसने सोचने का कुछ समय लिया। मुझे पता था, उसके यहाँ भी ब्वॉयफ्रेंड वाली पोस्ट ख़ाली थी और हम दोनों एक-दूसरे के यहाँ एप्लाई करना चाहते थे।

“अगर मैं कहूँ कि हाँ, आई हेव। देन?”

“देन आइ हैव टु।” मैंने ऐसे कहा मानो उसके ब्वॉयफ्रेंड होने की संभावना मेरे गर्लफ्रेंड होने के सीधे प्रपोशनल है।

वैसे हम दोनों को अपने-अपने जवाब मिल गए थे।

“क्या लोगी?” मैंने टॉपिक बदला।

“कैपुचिनो।” हर बार की तरह उसका वही जवाब था। मैंने आर्डर दे दिया।

“तुम कहाँ रहते हो, आई मीन जयपुर में कहाँ?”

“डिवाइन पैलेस।” मैंने ऐसे कहा मानो जयपुर के राजा का राजमहल हो और इसे हर कोई जानता हो। मैंने तुंरत इसमें अगली लाइन जोड़ दी, “मेरा मतलब बनीपार्क। डिवाइन पैलेस तो मेरे हॉस्टल का नाम है।”

“वेरी स्प्रिच्युल नेम।” इतना कहकर वो मुस्कुराई मानो उसका नामकरण मैंने ही किया

हो।

इतनी देर में कैपुचिनो आ गई। हमने कप उठाए। पहली घूँट के साथ ही मुझे कैपुचिनो कड़वी लगी। उस दिन से ज़्यादा कड़वी। बट नेहा लव्ज इट। एंड आइ लव नेहा। डज इट मीन आइ लव कैपुचिनो? नो वे। कुट्टी सर का नियम यहाँ फ़ेल हो गया। सॉरी कुट्टी सर।

"तो तुम अकेले रहते हो?"

"नहीं, रूममेट है, प्रतीक।" मैंने प्रतीक के बारे में इससे ज़्यादा बताना उचित नहीं समझा। क्योंकि वो मुझसे ज़्यादा हेंडसम था। मुझे बातचीत का टॉपिक बदलने की ज़रूरत महसूस हुई और मैंने कर दिया।

"डु यू लाइक मूवीज?" मैंने एक और कड़वा घूँट भरते हुए कहा।

उसने जवाब में गर्दन हिला दी। फिर मेरी ओर देखकर बोली, "क्या तुम्हें कैपुचिनो पसंद नहीं आई?"

"नहीं, ऐसी तो बात नहीं। बस थोड़ी कड़वी.."

"अरे तो यह शुगर रखी है ना। इधर लाओ..।" इतना कहकर उसने मेरे कप में शुगर डाली। मैं इस पूरे प्रकरण के बाद अपमानित महसूस कर रहा था। वो बार-बार मेरी ओर देखकर मुस्कुरा रही थी। मैंने ख़ुद को सामान्य दिखाने के लिए बातचीत को आगे बढ़ाया, "किस टाइप की फिल्में पसंद हैं?" सुना था कि फिल्मों की चॉइस से लड़कियों के बारे में काफ़ी कुछ जाना जा सकता है। मैंने आज़मा लिया।

"रोमांटिक।" इतना कहकर उसने कप को अपने मुँह से लगाया और फिर टेबल पर रख दिया। हाँ थोड़ी बहुत मुस्कुराई भी थी। मैंने सुन रखा था कि फ़िल्मों का दर्शकों पर प्रभाव पड़ता है। इसका मतलब ये भी ज़रूर रोमांटिक.... थैंक गॉड! इसे एक्शन मूवीज़ या साइ फ़ाइ पसंद नहीं। बिकॉज़ अ चंपा माइक्रो मैन कांट मेक अ मैन सुपरमैन। मैं सोचकर मन-ही-मन हँसा।

"और तुम्हें?" उसने मेरी ओर देखकर कहा। तब मेरा हाथ कप को लिए मेरे मुँह की ओर बढ़ रहा था। मैंने उसे वहीं रोका और जवाब दिया, "आइ लाइक मीनिंगफुल सिनेमा। इंटेलिजेंट फ़िल्म्स।" मैंने कुछ ज़्यादा ही भारी भरकम शब्द यूज कर लिए थे।

"तुम्हें लगता है आजकल ऐसा सिनेमा बन रहा है?"

हाँ। नागेश कुकनूर, सुधीर मिश्रा...और भी बहुत हैं।"

"ओह! यू रियली हैव गुड सेंस ऑफ़ सिनेमा।" याहू...मैंने उसे इंप्रेस कर दिया। किसी ने ठीक ही कहा है कि नॉलेज कभी बेकार नहीं जाती, भले ही वो फ़िल्मों के बारे में क्यों ना हो। यह ऐसा विषय था जिस पर मैं घंटों बात कर सकता था।

"तुम्हारी फेवरेट कौन-सी है?" मेरा अगला सवाल।

"टाइटेनिक।"

"वो तो मेरी भी है।"

"पर तुमने तो कहा था तुम्हें मीनिंगफुल सिनेमा...!"

"प्यार से ज़्यादा कुछ मीनिंगफुल होता है क्या!" मैंने उसकी आँखों में झाँकते हुए कहा।

“तो तुम्हारा फेवरेट सीन कौन-सा है?”

“जब वो दोनों जहाज़ पर एक साथ टायटेनिक पोज़ में खड़े होते हैं।” मैंने जवाब दिया। नेहा से यह मेरा पहला झूठ था। मुझे तो वो पेंटिंग वाला...।

“और तुम्हारा...?”

“डिट्टो।” उसने चहकते हुए कहा। मैं मुस्कुराया, कहीं इसे भी मेरी तरह वही पेंटिंग वाला...मेरी मुस्कुराहट और बढ़ गई।

नेहा ने पूछा, “क्यों मुस्कुरा रहे हो?”

मैंने कहा, “ऐसे ही।” फिर कुछ सेकेंड के लिए ख़ामोशी छा गई।

“चार बज गए हैं।” उसी ने कहा, “अब चलना चाहिए। मेरी क्लास ख़त्म होने का टाइम हो गया। रोज़ पाँच बजे तक मैं घर पर होती हूँ।”

“यू मीन यू बंक्ड द क्लास?” मैंने ऐसे कहा मानो उसने मेरे लिए कितनी बड़ी क़ुर्बानी दी हो।

“क्यों, तुमने क्लास बंक नहीं की?” नेहा ने तेज़ नज़रों से देखते हुए कहा। मैं मुस्कुरा दिया। मैंने बिल के लिए बोला। सिर्फ़ 150 रुपये ही हुए थे। मैंने पर्स निकाला।

“अनुराग आज मैं पे करूँगी।”

“सॉरी नेहा, यह नहीं हो सकता।” मैंने पर्स से पैसे निकाल लिए।

“मिलने के लिए मैंने बुलाया है तो मैं पे करूँगी।”

“आर यू माय फ्रेंड?” मैंने उसके चेहरे पर निगाहें जमाते हुए पूछा।

“यस।”

“देन प्लीज़ लैट मी डू दिस ऑनर।”

“नो वे अनुराग।” नेहा ज़िद पर अड़ गई।

“अनुराग आइ हैव सेल्फ रेस्पेक्ट। मैं उन लड़कियों में से नहीं हूँ जो लड़कों के साथ घूमती हैं ताकि वो उनका ख़र्चा उठा सकें। आइ एम हीयर विद यू बिकॉज़ आइ लाइक यॉर इंटेलिजेंस नॉट यॉर वॉलेट।” कहते-कहते वो सीरियस हो गई।

“बैंक के पास जब हमने कॉफ़ी पी थी तब भी मैं तुम्हें रोकना चाहती थी पर वो पहली बार था। सो, मैंने एतराज़ नहीं किया।”

मैं नेहा के चेहरे की ओर देखता रह गया। शी इज डिफ़रेंट। शी हेज एटीट्युड। एंड थैंक गॉड! वो पहली ऐसी शख़्स थी जो मेरा बजट बिगाड़ना नहीं चाहती थी।

“ठीक है। चलो फिर हम एक काम करते हैं।” मैंने कहा। फिर मेरे जवाब के इंतज़ार में मेरे चेहरे की ओर देखने लगी।

“तुम मेरा बिल पे करो और मैं तुम्हारा।”

मेरी बात सुन उसके चेहरे पर हल्की-सी मुस्कुराहट तैर गई। शायद एक बार फिर मैंने अपने आइडिया से उसे इंप्रेस कर दिया था। फिर 75 रुपये उसने दिए और 75 ही मैंने। हम वहाँ से निकल आए।

“तुम्हारे साथ वक़्त बिताकर अच्छा लगा।” यह सच था। नेहा के साथ बात करके मैं

बड़ा ही अच्छा-अच्छा फ़ील कर रहा था।

“मुझे भी।” नेहा बोली।

“फिर नेक्स्ट...”

“फ़ोन करती हूँ ना।”

“काश! कि यह काम मैं कर पाता। बट यॉर बुआ इज वेरी स्ट्रिक्ट।” मैंने जैसे ही यह कहा वो हँस पड़ी और मैं भी।

हमने हाथ मिलाया। नेहा के साथ हाथ मिलाना मुझे पसंद आ रहा था। उसके बाद वो अपनी स्कूटी पर और मैं अपनी सिटी बस नंबर सात में।

———————

तीन दिन हो गए। नेहा का एक बार फ़ोन आया था। पर मेरी बात नहीं हो पाई। तब मैं इंस्टीट्यूट में था। उसके बाद नेहा का कोई फ़ोन नहीं आया। घर पर बात हो गई थी। सो, सब कुछ सामान्य चल रहा था। आज कल भूपी इरशाद के साथ काफ़ी दिखाई देता था। इरशाद हम लोगों से ज़्यादा घुलता-मिलता नहीं था। हमें कई बार लगता था कि वो यहाँ कैट की प्रिपरेशन के लिए आया ही नहीं है। क्योंकि क्लास में भी वो कम ही नज़र आता था। ख़ैर, उसमें हम लोगों की कोई ख़ास रुचि भी नहीं थी। बस एक हॉस्टल में रहने से जितनी नज़दीकी बन सकती थी, बन गई थी। बस भूपी उसके नज़दीक होता जा रहा था। लेकिन उसने अपने बॉस यानी प्रतीक का कोई हुक्म मानने से मना नहीं किया था। वो हमारी हर मीटिंग में हाज़िर होता। सो, हमें इससे कोई दिक़्क़त नहीं थी।

मुझे जयपुर में आए एक महीने से ऊपर हो गए थे। इस एक महीने में मैं और प्रतीक काफ़ी नज़दीक आ गए। पर हमने एक-दूसरे से पर्सनल मैटर पर कभी बात नहीं की। भूपी से भी नहीं। हमारी दख़लंदाज़ी सिर्फ़ हमारे जयपुरी जीवन तक ही सीमित थी। और जयपुरी जीवन था ही कितना! डिवाइन पैलेस और इंस्टीट्यूट। प्रतीक की बात का अंकुर पर ख़ास असर हुआ। उसने तीन दिनों तक शेविंग नहीं की। वो अपनी स्मार्टनेस को खोने को पूरी तरह से तैयार था। बिना गर्लफ्रेंड वाली ज़िंदगी से वो पूरी तरह से उकता गया था। पर अभी तक उसे कोई सफलता नहीं मिली। एक बार उसने गरिमा से भी बात करने की कोशिश की। पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ। हालाँकि प्रतीक ने उससे कह दिया था कि वो हिम्मत ना हारे। सो, वो लगा हुआ था।

मैं कोई विदेश से नहीं आया था कि राजस्थान की गर्मी की शिकायत करूँ। लेकिन जयपुर

मेरे उदयपुर से ज़्यादा गर्म हो जाता था। एक तो यहाँ झीलें नहीं थीं। दूसरे हरे-भरे पहाड़। तीसरा राजधानी होने की वजह से यहाँ कंक्रीट का जंगल बनना शुरू हो चुका था। ऐसे में यहाँ दिन में सड़कें सूनी और शाम में छतें आबाद रहा करती थीं। मेरे कमरे में एक अदद पंखा था, जो अपनी पूरी कोशिश के बावजूद भी गर्मी से लड़ नहीं पाता था। बीच के हॉल में कूलर लगाने का प्रस्ताव लेकर हम बूढ़े मालिक के पास गए थे। जिसे उसने पूरी ख़ामोशी के साथ सुना। जब हमें यक़ीन होने ही वाला था कि वो 'हाँ' में गर्दन हिलाएगा उसने मुँह से 'ना' बोल दिया। ऐसे में हम लोगों का सहारा भी छत ही थी। सो, ऐसी ही एक शाम अपने टाइट शेड्यूल में से वक़्त निकालकर हम डिवाइन पैलेस की छत पर घूम रहे थे। धीमी-धीमी हवा चल रही थी। पसीने से भीगे तन को छूकर गुजरती तो एसी-सा अहसास दे जाती। डिवाइन पैलेस के पीछे एक होटल था। जहाँ यदा-कदा कोई टूरिस्ट आकर रुकता था। कई बार विदेशी टूरिस्ट भी होते थे। उस होटल के कुछ कमरों की खिड़की हमारे छत की ओर खुलती थी। सो, कभी-कभी हम मन बहलाने के लिए उन खिड़कियों में झाँक लिया करते थे। शायद कुछ दिख जाए। सो, छत पर घूमते-घूमते हमारी नज़र अक्सर उन खिड़कियों पर ही रहती थी। मैं, प्रतीक और अंकुर साथ थे। भूपी और इरशाद नीचे पढ़ाई कर रहे थे।

"यार, कभी तुमने इन अंग्रेज़ों को ध्यान से देखा है?" अंकुर अपने बरमुडे की जेब में हाथ डालते हुए बोला। उसकी नज़र पीछे वाली खिड़की पर थी। पर वो बंद थी और उसमें किसी के दिखाई देने का कोई अंदेशा भी नहीं था।

"ऐसा क्या ख़ास होता है उनमें? व्हाइट स्किन के अलावा, जैसे गरिमा..।" प्रतीक बोला।

"या शी हैज व्हाइट स्किन।" अंकुर ने प्रतीक का समर्थन किया। पर प्रतीक ने उसकी बात पूरी नहीं होने दी, "एंड देट्स वाय यू लाइक हर।" प्रतीक उसकी बात काटते हुए बोला।

"व्हाट एवर। बट राइट नाऊ आइ एम नॉट टॉकिंग अबाउट गरिमा।" अंकुर ने चीखते हुए कहा।

"सो वाट डीड यू फाइंड स्पेशल इन दीज़ इंग्लिश पीपल?" प्रतीक अंग्रेज़ी बोलना सीख रहा था। सो, इस लाइन को फ़्रेम करने में उसे दो मिनट लगे।

"मेरे ख़्याल से तो उनमें स्पेशल यही है कि वो हमसे अच्छी अंग्रेज़ी बोल लेते हैं।" जवाब अंकुर को देना था और मैं बोल पड़ा। अंकुर और प्रतीक मेरा मुँह ताकने लगे।

"बेटा रोमांस में बहुत क्रिएटिव होते हैं, ये लोग। अरे उनकी फ़िल्में देखो, कैसे-कैसे अलग-अलग स्टाइल में....करते हैं। एकदम परफ़ेक्शन के साथ। कभी-कभी सोचता हूँ, किसिंग का कोई क्रेश कोर्स नहीं होता क्या?" अंकुर ने अपना तमाम ज्ञान बिखेर दिया, जो क़िस्म-क़िस्म की फ़िल्मों को देखने के बाद इकट्ठा हुआ था।

"एक चीज़ दिमाग़ में बैठा लो। नो वन इज़ परफ़ेक्ट इन दिस वर्ल्ड। एक्च्युली प्रैक्टिस मेक्स ए मैन परफ़ेक्ट। परफ़ेक्ट होने के लिए चांस मिलना बहुत ज़रूरी है। और तुम्हारी गरिमा तुम्हें कभी चांस नहीं देगी।" प्रतीक बोला। प्रतीक की बात सुन शायद अंकुर अपमानित महसूस कर रहा था। उसके अंदर का दिलजला प्रेमी बाहर निकला, "वाट डु यू थिंक...दैट ब्लडी गौरव गेट्स द चांस?" अंकुर चिल्लाया। असली दोस्त वही होता है जो ऐसे

समय में अपने दोस्त को वही कहे जो वो सुनना चाहता है, मैंने वही किया।

“मुझे नहीं लगता। दरअसल वो सिर्फ़ गौरव के पैसे का इस्तेमाल कर रही है। वो उसे खिलाता है, घुमाता है एंड शी हैज सेंस ऑफ़ सिक्योरिटी विद हिम। गौरव भी यह जानता है।” मैंने अंकुर को दिलासा देने वाले अंदाज़ में कहा।

अंकुर यह सुनकर सामान्य हो चुका था। अंकुर ने एक बार फिर नज़र होटल की खिड़की की ओर दौड़ाई और एक खिड़की में रोशनी पाकर नज़रें वहीं पर जमा दीं। मैं और प्रतीक छत पर टहलते रहे।

“ऐ, इधर आओ।” यह अंकुर की आवाज़ थी।

“क्या है?” यह मेरी प्रतिक्रिया थी।

“जल्दी आओ यार।” उसके स्वर में गंभीर और तीव्र फ्रिक्वेंसी का आग्रह देख हम तुरंत उसके पास पहुँचे।

“वो देखो।” उसने खिड़की की ओर इशारा किया। हमने अपनी नज़रें उसकी अंगुली की सीध में लगा दी।

“क्या है वहाँ?” जब हमारी नज़रें सूनी-सूनी लौट आईं, तो हमने एक साथ कहा।

“रुको तो सही। बस नज़रें वहीं जमाए रहो।” यह अंकुर का अनुभव बोल रहा था या उसका आशावाद, यह तो वो ही जाने। इतनी देर में खिड़की के पार एक साया नज़र आया। हमनें अपनी नज़रों को वाइड शॉट से खिड़की पर ज़ूम कर दिया।

“ओह माय गॉड! फिगर तो देख।” अंकुर बोला। खिड़की में से धुंधली आकृति नज़र आई।

“हे जस्ट ए मिनट, वाट इज शी डुइंग?” प्रतीक बोला, “शायद...”

तभी उस कमरे की लाइट बंद हो गई।

“ओह नो! यार ग़ज़ब का सीन था। इज शी अलोन इन द रूम?” अफ़सोस जताने के बाद मैंने पूछा। मेरे कहने में मायूसी और जिज्ञासा दोनों थी। ऐसा कम ही होता है कि ये दोनों भाव एक साथ मिश्रण के रूप में सामने आएँ।

“ऑफ़कोर्स।” प्रतीक बोला। तभी उस कमरे का दरवाज़ा खुला जो कि हमारी छत से साफ़-साफ़ दिखाई देता था। हमारी निगाहें खिड़की से दरवाज़े पे आ गईं। दरवाज़े से बाहर एक दुबला-पतला आदमी निकला। उसने दरवाज़ा लॉक किया और चला गया।

हम एक-दूजे की ओर देखकर हँसने लगे।

“इतनी देर से हम एक आदमी को ही देख रहे थे, छीः।” अंकुर बोला।

“एक्च्युली यहाँ से सीन हमेशा धुँधला दिखाई देता है। दिस इज नॉट द राइट प्लेस। हमें दूसरा कॉर्नर ढूँढ़ना चाहिए।” मैंने कहा। जिस पर दोनों मुस्कुरा दिए।

जैसे कि नोटिस बोर्ड हर बार की तरह नोटिस बोर्ड कम और सरप्राइज बोर्ड ज़्यादा होते हैं। सो, इस बार भी ऐसा ही हुआ। हमारे इंस्टीट्यूट के हेड मसानी सर का कहना था कि कैट की तैयारी के दौरान हमें मानसिक तौर पर भी मज़बूत होना पड़ता हैं। यह परीक्षा आपकी ओवर ऑल पर्सनैलिटी की होती है। सो, अगले सप्ताह से एक नयी क्लास लगायी जा रही है। पी डी यानी पर्सनैलिटी डेवलपमेंट। हम इसके लिए तैयार नहीं थे। सप्ताह भर की मैथ्स, रीजनिंग और इंगलिश की क्लास के बाद यह हमारे लिए ओवरडोज़ की तरह थी। और अधिकतर लड़कों की राय में इसकी कोई ज़रूरत नहीं थी। उन्हें पहले रिटन पेपर पर ध्यान देना चाहिए।

पूरी क्लास में सिर्फ़ दस लोग बैठे थे। हम तीनों भी उन दस में शामिल थे। आख़िर जान लेना चाहते थे कि पीडी की क्लास में होता क्या है! ताकि अगली क्लास अटेंड करनी है कि नहीं, यह फ़ैसला कर सकें।

वो एक लेडी टीचर थी जिसे हम मैडम कहते हैं। उन्होंने क्लास में प्रवेश किया।

“यार यह अपनी टीचर है। यह तो सच्ची में अपनी पर्सनैलिटी इंप्रूव कर देगी।” मैंने कहा।

“यार कितने की होगी?” प्रतीक ने धीमे से कहा।

“साले, कुछ तो शर्म कर। गंदी सोच के जनक!”

“अबे सोच तो तुम्हारी गंदी है। मैं तो सिर्फ़ जानना चाह रहा हूँ कि उम्र कितनी है।”

“पच्चीस से तीस के बीच की होगी।” मैंने अंदाज़ा लगाते हुए कहा। हमारी बात पर भूपी आज भी अपनी गर्दन हिला रहा था।

“हाय, मायसेल्फ तस्नीम, एंड आई विल टेक यॉर पीडी क्लासेज।”

“यार शी इज मुस्लिम।” भूपी बोला।

“सो व्हाट?” मेरे पूछने पर भूपी ने कोई जवाब नहीं दिया।

“मोस्ट ऑफ़ द स्टूडेंट्स थिंक दैट दिस क्लास विल बिल्ड देयर फ़िजीकल पर्सनैलिटी। बट इट्स नॉट लाइक दैट। इट विल बिल्ड यॉर ओवरऑल पर्सनैलिटी। यॉर थिंकिंग, बिहेवियर, बॉडी लैंग्वेज।” तस्नीम मैडम ने साफ़ किया कि ये क्लास आख़िर है क्या।

वो बहुत ही ख़ूबसूरत तरीक़े से बोले जा रही थीं। मैडम ने ब्लैक ट्राउज़र और उस पर एक कोट पहन रखा था। स्ट्रेट हेयर। कॉर्पोरेट वुमेन...आई मीन गर्ल।

“शी इज बेटर देन गरिमा।” अंकुर की आवाज़ सुनकर मैं चौंका।

“यार तुम तो क्लास में नहीं थे। तुमने तो कहा था कि टाइम वेस्ट है।” मैंने पास ही की कुर्सी पर बैठे अंकुर से कहा।

“यार सब जगह इनकी ख़ूबसूरती के क़िस्से आग की तरह फैल गए हैं। पीछे मुड़कर देख।” अंकुर के कहने पर मैंने पीछे मुड़कर देखा तो पूरी क्लास भरी हुई थी। हालाँकि उनसे नज़र हटाने की इच्छा नहीं कर रही थी।

“सो गाय्ज़, इट्स इंट्रो टाइम, एंड वि विल स्टार्ट फ्रॉम लास्ट।”

पीछे बैठे लड़कों में खलबली मच गई। यह अप्रत्याशित हमला था। इंस्टीट्यूट में

अधिकतर लड़के-लड़कियाँ मध्यमवर्गीय परिवारों से थे। और उनमें से भी अधिकतर सरकारी स्कूलों में टाट-पट्टी पर बैठकर पढ़-लिखकर आए हुए, जिन्होंने अंग्रेज़ी पर वर्ल्ड बैंक से लोन ले रखा था। तस्नीम मैडम के हुए इस अचानक हमले से बचने के लिए लड़के बग़लें झाँकनें लगे। जिन्हें इंग्लिश नहीं आती थी वो वहीं पीछे वाले गेट से बाहर चल दिए। जो बचे वो अपना इंट्रो देने लगे। इतनी ख़ूबसूरत टीचर को अपना परिचय देना बार-बार नसीब नहीं होता। यही सोचकर एक लड़के ने ख़ूब हिम्मत जुटाई और बोला,

"आई...माई...समीर।" इतना कहकर बैठ गया। ज़रूर पहले उसने तय किया होगा कि आई एम समीर बोलेगा। फिर अंत में आकर उसे 'माई नेम इज़ समीर' बेहतर लगा होगा। अंतिम वक़्त पर हुए इस कंफ़्यूजन में न पड़ते हुए उसने सिर्फ़ नाम कहना ही उचित समझा होगा। यह मेरा आकलन था। इसी बीच में मेरा नंबर भी आ गया।

"माय सेल्फ़ अनुराग।" मैंने मुस्कुरा कर कहा। फिर अंकुर की बारी थी।

"आइ एम अंकुर, अंकुर भाटिया।" अंकुर ने जेम्स बांड की स्टाइल में कहा। अगला नंबर भूपी का था। वो खड़ा हुआ और तीन सेकेंड तक चुप रहा।

"से यॉर नेम?" तस्नीम मैडम ने बोली।

"भूपी।" उसने इतना ही कहा और बैठ गया।

"हैलो, माय सेल्फ़ प्रतीक।" प्रतीक ने कहना शुरू किया, "आइ एम ए मैंनेजमेंट ग्रेजुएट।"

"वेयर आर यू फ्रॉम?" मैडम ने पूछा।

"सन सिटी, जोधपुर।" प्रतीक ने कहा।

"हम्म, मावा कचौरी, मिर्ची बड़ा...आई लाइक इट।"

"आपको पसंद है?"

"हम्म।"

"मैं घर जाऊँगा तब लेके आऊँगा।"

"सो स्वीट।"

फिर तस्नीम कुछ नहीं बोलीं और बस मुस्कुरा दीं।

शायद उसने मैडम को इंप्रेस कर दिया था। फिर सबके इंट्रो हुए। पर प्रतीक जितना वक़्त किसी ने नहीं लिया।

शाम को डिवाइन पैलेस में यही चर्चा हो रही थी कि प्रतीक ने मैडम को इंप्रेस कर दिया था। अंकुर को जलन हो रही थी। "यार ऐसे लग रहा था मानो उसे सिर्फ़ प्रतीक की पर्सनैलिटी को इम्प्रूव करने के लिए ही बुलाया गया है।" अंकुर की बात सुन प्रतीक मंद-मंद मुस्कुराए जा रहा था।

फिर उसके बाद की सारी क्लास में हमारी मौजूदगी शत-प्रतिशत रहती। हर बार उनकी रिविलिंग ड्रेस डिवाइन पैलेस में चर्चा का विषय होती। नेहा का एक बार फिर फ़ोन आया था। उसने बताया कि वो पिछले कई दिनों से अपने इंस्टीट्यूट भी नहीं जा पा रही थी। कुछ फ़ैमिली प्रॉब्लम की वजह से वो न फ़ोन कर सकी न मिल सकी। उसने फिर से गौरव टावर

के उसी कैफ़े कॉफ़ी डे में मिलना निश्चित किया। और मैंने ख़ासतौर से ध्यान दिया कि मिलने का वक़्त वह न रखा जाए, जब पीडी की क्लास हो। मेरी तस्नीम मैडम में कोई ख़ास रुचि नहीं थी। क्योंकि मेरी रुचि तो नेहा में थी। पर मुझे पीडी की क्लास में उस दिन का इंतज़ार था जब हमें वो सिखातीं "हाउ टु इंप्रेस ए गर्ल।" हमें सच में इस लेसन की ज़रूरत थी। ख़ास तौर से अंकुर को।

उस दिन की कैफ़े कॉफ़ी डे की मुलाक़ात को एक महीना हो गया। मैं लगभग पाँच बार उससे मिला। एक महीने में पाँच बार। अच्छा एवरेज़ था। और हर बार की मुलाक़ात में मुझे उसके साथ कैपुचिनो पीनी पड़ी। इतनी मुलाक़ातों में हम अब एक-दूजे के बारे में काफ़ी कुछ जानने लगे थे, सिवाय एक-दूसरे की फ़ैमिली के बारे में जानने के। दो-तीन बार कोमल का ज़िक्र भी हुआ था। पर अब भी मैं यह नहीं कह सकता था कि वो मेरी गर्लफ्रेंड है। प्रतीक ने एक बार कहा था कि ब्वॉयफ्रेंड-गर्लफ्रेंड तो बहुत कुछ करते हैं पर हम तो सिर्फ़ कैपुचिनो पीते थे और बातें करते थे। अब तक हम सिर्फ़ एक-दूजे को पहचानने लगे थे, जानना अभी बाक़ी था।

पिछले एक महीने में छः बार घर पर बात हो गई थी। इन छः में से चार कॉल आए थे और दो ख़ुद मैंने किए थे। दो बार सोमदेव अंकल का फ़ोन भी आ गया था। मुझे डर लगता था कि कहीं वो ख़ुद न आ जाएँ, डिवाइन पैलेस में। कैट की ओर हमारे क़दम बढ़ रहे थे। पर गरिमा के क़दम अब भी गौरव के साथ थे। अंकुर की कोशिश कोई रंग नहीं लाई थी।

———————

हम डिवाइन पैलेस में अपने रूम में बैठे थे। मैं और प्रतीक।

"अनुराग, आइ थिंक आइ एम इन लव।" प्रतीक बोला।

"रियली!"

इसके जवाब में उसने गर्दन हिला दी।

"तो इसमें नया क्या है?" मैं बोला। प्रतीक ने मुझे घूरा।

"अरे यार, यहाँ तो हर कोई किसी-न-किसी के प्यार में है। अंकुर जाने कब से गरिमा के प्यार में है। अहम सवाल यह है कि तुम जिसके प्यार में हो, क्या वो भी तुम्हारे प्यार में है?" मैंने बात पूरी की। प्रतीक अब भी घूरे जा रहा था।

"इट्स नॉट अंकुर कांइड ऑफ़ लव।" प्रतीक बोला। थैंक गॉड! उसने घूरना बंद किया। पर अंकुर कांइड ऑफ़ लव? जैसे कि लव के बहुत सारे हिस्से हों और उनमें से एक हिस्सा

अंकुर के नाम से जाना जाता हो। ओह! अंकुर इज वेरी फ़ेमस। मैं मन-ही-मन हँसा। पर यह सब कहते हुए प्रतीक सीरियस जान पड़ रहा था।

“ओके, तो अब क्या तुम मुझे बताओगे कि वो ख़ुशक़िस्मत कौन है?” मैंने बात को संभाला। प्रतीक अब थोड़ा शांत हुआ।

“तस्नीम।” प्रतीक बोला।

“व्हाट!” यह मेरा रिएक्शन था। मेरे ख़्याल से यह परफ़ेक्ट था। प्रतीक अब भी सीरियस था।

“यू मीन तस्नीम मैडम। वो पीडी वाली?”

पीडी को अब लड़के परफ़ेक्ट डार्लिंग कहते थे। प्रतीक यह बात जानता था। पर यहाँ पीडी से मेरा मतलब पर्सनैलिटी डेवलपमेंट से था। उसने अपनी गर्दन हिला दी। ऐसे तो भूपी करता था। मैं उसके चेहरे का घूरने लगा। पर उसका चेहरा अब स्थिर था।

“तू श्योर है?” यह पूछना ज़रूरी था।

“हाँ।” मुझे यक़ीन था, प्रतीक यही कहेगा।

“कब से? और अब यह मत कहना कि पहली नज़र का वगैरह, वगैरह...।”

“पता नहीं कब से, पर उसके लिए फ़ीलिंग है।”

“शी इज यॉर टीचर। तू उनके बारे में ऐसा सोच भी कैसे सकता है! मेरे ख़्याल से यह फ़िज़िकल अट्रेक्शन है, और कुछ नहीं। यार इंस्टीट्यूट में किसी से भी पूछ लो। हर कोई तस्नीम मैडम से प्यार करता है। बीकॉज़ शी हेज वाइट ब्यूटीफ़ुल स्किन।” मैंने शायद सच कह दिया था। और यह हमेशा से ही कड़वा रहा है, उस ज़माने से जब शक्कर दो रुपये किलो मिला करती थी।

“बट दिस इज नॉट ब्लडी अंकुर कांइड ऑफ़ लव।” प्रतीक मेरी बात पर चिल्लाया। मतलब कि अंकुर लव्ज ओनली गरिमाज़...थैंक गॉड! अंकुर ने नहीं सुना। प्रतीक का चेहरा लाल हो गया था।

“मैं तुम्हें बता रहा हूँ, क्योंकि तुम मेरे दोस्त हो और तुम मेरी फ़ीलिंग्स को समझोगे।” कहते-कहते वो शांत होने लगा। मैंने प्रतीक को कभी इस तरह से बात करते हुए नहीं देखा था। शायद वो सचमुच तस्नीम मैडम से प्यार करने लगा था।

“तो तुमने कभी उन्हें बताया?”

“व्हाट?”

“यही कि तुम्हारे दिल में उनके लिए फ़ीलिंग है।” मैंने कहा।

“नहीं।” इतना कहकर प्रतीक थोड़ा रुका, पानी पिया। कुछ सोचा, फिर बोला, “पर मुझे लगता है, उनके दिल में भी मेरे लिए ऐसी ही फ़ीलिंग होगी।” अब प्रतीक जैसे स्मार्ट लड़के से मुझे ऐसी बेवक़ूफ़ी भरी बात की उम्मीद नहीं थी। बिल्कुल भी नहीं।

“उस दिन इंट्रो में उन्होंने सबसे ज़्यादा वक़्त तक मेरा इंट्रो लिया, मेरा। और तुम देखना, लेक्चर के वक़्त भी वो अधिकतर मेरे ही चेहरे की ओर देखती हैं।” प्रतीक ने अपने दावे के समर्थन में सबूत पेश किए।

पर मैं प्रतीक के इस तर्क से असहमत था। क्योंकि शायद हर लड़के को यही लगता था कि मैडम उसी की तरफ़ देख कर बोल रही हैं। यह बात इस समय प्रतीक को कहने का साहस मुझमें नहीं था।

“वो कई बार क्लास के बाद भी मुझसे मिलती हैं।”

“ओके... फ़ाइन, सो द स्मार्ट मैन गॉट हिज गर्लफ्रेंड।” मेरी बात सुन प्रतीक मुस्कुराया।

“पर तुम यह बात किसी से शेयर मत करना।” प्रतीक की बात में आग्रह भी था और आदेश भी। मैंने पलकें झुकाकर सहमति दे दी।

अब मैं प्रतीक को नेहा के बारे में बता सकता था। क्योंकि उसे गर्लफ्रेंड मिल गई थी। मैं नेहा को लेकर अब सेफ़ था। यह बताना इसलिए भी ज़रूरी था ताकि प्रतीक से झूठ न बोलना पड़े कि मैं सोमदेव अंकल से मिलने जा रहा हूँ। और ज़रूरत पड़ने पर वो मेरी मदद भी कर सके। सो, थोड़ा माहौल बनाते हुए मैं बोला, “प्रतीक आई थिंक आइ एम इन लव टू।” मैंने सकुचाते हुए कहा।

“अबे, कहीं ऐसा कह कर तू मेरा मज़ाक़ तो नहीं उड़ा रहा ना?” प्रतीक बोला। हालाँकि ऐसा संभव भी था पर इस वक़्त मैं सच ही बोल रहा था। आप तो जानते ही हैं।

“नो यार, आइ एम सीरियस। आइ एम इन लव। नेहा नाम है उसका।” मैंने उसे बताया।

“कितने टाइम से?”

“जब से जयपुर आया हूँ। आइ मीन, बस में मिला था उससे।”

“ओह! तो बच्चू इतने समय से तू मुझे गच्चा दिए जा रहा है।” उसकी बात सुन मैं मुस्कुराया।

“सो, तुमने उसे बताया?”

“नहीं, अब तक तो नहीं। पर हम कई बार कैफ़े कॉफ़ी डे में मिलते रहे हैं।”

“ओह! अब समझ में आया कि तुम कैफ़े के बारे में क्यों पूछा करते थे। वाह भाई, मान गए तुम्हें! यू आर ग्रेट!” यह कहते हुए प्रतीक अपनी जगह से खड़ा हुआ और एकदम सावधान की स्थिति में आते हुए मुझे एक सेल्युट मारा। “हमें तुम पर गर्व है अनुराग।” मुझे यक़ीन है, इस ‘हमें’ में उसने भूपी को भी शामिल कर लिया था।

“जस्ट स्टॉप इट।” मैंने कहा, “हम दोनों की हालत एक सी ही है। हमारी फीलिंग अब तक हमारे फ़ीलिंग स्टेशन में ही रखी हैं। हम इसे किसी को जता नहीं पाए। यू नो वाय?”

“वाय?” प्रतीक ने पूछा।

“बीकॉज़ वी डोंट हैव ब्लडी अंकुर कांइड ऑफ़ लव।” मैंने ज़ोर से कहा। प्रतीक और मैं हँसी की छलांगे मारने लगे। अंकुर दरवाज़े पर ही खड़ा था। हमारी हँसी बंद हो गई।

मुझे नेहा से प्यार था और प्रतीक को तस्नीम मैडम से। वो भले ही उसके लिए तस्नीम हो, मेरे लिए तो तस्नीम मैडम ही थीं। उसकी और मेरी स्थिति में यही फ़र्क़ था कि उसे पक्का यक़ीन था कि वो मैडम से प्यार करता है और मैं अभी यक़ीन के साथ नहीं कह पा रहा था। मैंने कभी प्रतीक को फ़ोन करते हुए नहीं देखा था, कहीं नहीं। और न उसके लिए कभी फ़ोन आया। मैं सोचता था कि वो कितना लकी है, जो एकदम फ़्री है। कोई नहीं है जो उसकी

आज़ादी पर प्रतिबंध लगाए। वो कितना आज़ाद है! नो फ़ोन कॉल्स, नो क्वेश्चन्स, नो फ़ाइव पीसेज ऑफ़ ब्लडी चंपा माइक्रो मैन।

रविवार था। उस दिन इंस्टीट्यूट बंद था। हमें असाइनमेंट दे दिया गया था ताकि हमें यह अहसास न हो कि यह संडे है। कुट्टी सर अपने पीक पर थे।

“अनुराग 98××××××42 को आपस में जोड़ो।” प्रतीक मेरे पास आकर बोला। अभी थोड़ी देर पहले ही नहाया था। सो, उसके डिओ की गंध का झोंका मेरे नाक के पास से गुज़रा और पास ही जाकर ठहर गया। मुझे लगा कोई मैथ्स का सवाल होगा। मैंने काउंट करके बताया, “47”।

“ओके, अब 4 ओर 7 को जोड़ो।”

“11, तुम क्या गणित का टेस्ट ले रहे हो?”

“अरे! 11 को आपस में जोड़ो।”

“एक और एक यानी दो।” मैंने कहा, “आख़िर तुम चाहते क्या हो?” प्रतीक को मेरी बात से कोई लेना-देना नहीं था। बस वो सवाल पे सवाल पूछे जा रहा था।

“अच्छा अब बताओ, मेरा जन्मदिन कब था?”

वो दिन मैं कैसे भूल सकता था, जब बीयर की बोतल पे एक्सपायरी डेट ढूँढ़ रहा था। मैंने तपाक से जवाब दिया, “11 को।”

“यानी अंकों का टोटल होता है दो।”

“यस, पर इतने इजी सवाल कैट में नहीं पूछे जाते।” मैंने कहा।

प्रतीक को एक बार फिर मेरी बात से कोई मतलब नहीं था। उसे तो बस अपनी बात ही कहनी थी।

“यह फ़ोन नंबर तस्नीम का है और मेरी डेट ऑफ़ बर्थ और उसके फ़ोन नंबर दोनों का जोड़ सेम है। क्यों है ना कोइंसिडेंस?”

मुझे प्रतीक पर ग़ुस्सा आया। इतनी देर से जोड़-पे-जोड़ करवा रहा था। वो भी इस संयोग के लिए। पर हमेशा की तरह मैंने मन की बात को चेहरे पर नहीं आने दिया।

“वाह! मान गए यार। क्या दिमाग़ लगाया है? पर तुम्हें यह नंबर मिला कहाँ से?”

“पिछली क्लास के बाद मैंने अकेले में मिल के उससे नंबर लिया।”

“...और उन्होंने तुझे दे दिया!”

“हाँ...आख़िर मैं प्यार करता हूँ उससे।” यह एक प्रकार से प्रतीक का दावा था।

“और तुम यह सोचकर पागल हुए जा रहे हो कि न्युमेरोलॉजी के हिसाब से वो भी तुम्हें...।” मैंने बात पूरी नहीं की। “ख़ैर, उम्मीद पर दुनिया क़ायम है। अब तुम उसके नंबर

का क्या करोगे?" कुछ देर रुककर मैं बोला।

उस वक़्त प्रतीक के पास इसका कोई जवाब नहीं था। पर मुझे लगा कि हो सकता है कि उसकी न्युमरोलॉजी सही हो। वर्ना मैडम ने उसे अपना नंबर क्यों दिया। मेरा मन भी न्युमरोलॉजी को एक बार आज़माने को हुआ। आख़िर नेहा और मेरे बारे में न्युमरोलॉजी क्या कहती है? क्या कभी हम कैपुचिनो से आगे बढ़ पाएँगे?

———————

अगले दिन नेहा का फ़ोन आया। वो मिलना चाहती थी। इस बार उसने मुझपर छोड़ा कि मिलने की जगह में तय करूँ। मेरे लिए यह मुश्किल था। मैथ्स से भी मुश्किल।

"कॉफ़ी हाउस?" मैंने कहा।

"ओके, आइ विल बी देयर एट शार्प थ्री।"

मैंने प्रतीक को बताया कि आज नेहा ने मुझे मिलने के लिए बुलाया है। प्रतीक उछल पड़ा।

"आज तो तुम उसे बता ही देना कि तुम उसे प्यार करते हो।" प्रतीक बोला।

"नहीं, यह मुझसे नहीं होगा। मैं उसके सामने यह नहीं कह सकता।"

"माय डियर, लव लेटर का ज़माना नहीं है। आजकल तो सीधा मुँह पर ही बोला जाता है।" प्रतीक ने ऐसे कहा मानो अब तक कइयों को वो बोल चुका हो।

"मैं कोशिश करता हूँ। शायद उससे कह पाऊँ।" मैंने प्रतीक से कह तो दिया पर मुझे पूरा विश्वास था कि मैं ऐसा नहीं कर पाऊँगा।

———————

"अनुराग जगह तो ख़ूबसूरत है। तुम्हें इसके बारे में किसने बताया या फिर किसी और के साथ भी यहाँ आ चुके हो?" नेहा बोली। हम कॉफ़ी हाउस में बैठे थे। जयपुर में जे एल एन रोड पर एक ख़ास जगह है, जवाहर कला केंद्र। जो रंगकर्मियों का अड्डा है। इसी जवाहर कला केंद्र के अंदर एक कॉफ़ी हाउस हैं। जहाँ की चाय-कॉफ़ी काफ़ी सस्ती है। जितनी देर चाहो, बैठ सकते हो। यह वैशाली नगर से भी दूर था और मेरे इंस्टीट्यूट से भी। नेहा के सवाल का जवाब देना अभी बाक़ी था।

"प्रतीक। माय रूममेट, उसी ने बताया था इसके बारे में।"

"ही हेज गुड चॉइस।" नेहा की बात सुनकर मुझे जलन होने लगी। मुझे प्रतीक का ज़िक्र नहीं करना चाहिए था।

फिर सोचा कि प्रतीक तो ख़ुद किसी के पीछे दीवाना है, मुझे उससे क्या डर?

"या, रियली। उसकी पसंद अच्छी है। वो एक लड़की को पसंद करता है और वो ग़ज़ब की ब्यूटीफुल है।"

"सच्ची?"

“हाँ। यू नो, वो हमारे इंस्टीट्यूट की मैडम हैं और प्रतीक उनसे प्यार करता है।” मैंने पूरी डिटेल दे दी। मैं ओर नेहा जो कि एक-दूसरे से मिलने आए थे, प्रतीक के बारे में बात कर रहे थे। हमारे पास की टेबल पर भी कई कपल बैठे थे। अपने मुँह इतने नज़दीक लाकर बातें कर रहे थे कि मानो हम उनकी बातें सुनने को ही वहाँ गए थे।

“आइ थिंक सिर्फ़ फ़िजिकल अट्रेक्शन है।” नेहा ने अपना अंदाज़ा लगाया, “जैसा कि तुमने कहा वो सुंदर है।” मेरी इच्छा हुई कि मैं नेहा से कह दूँ कि प्रतीक डजन्ट हैव ब्लडी अंकुर कांइड ऑफ़ लव।

“पता नहीं, पर वो तो यही कहता है। आइ थिंक ही रियली लव्ज हर।” मैंने अपनी बात रखी जो नेहा के दिए गए बयान से अलग थी।

“एंड वाट अबाउट यू?” उसने मुझसे ऐसा कुछ पूछ लिया जिसके लिए मैं तैयार नहीं था। सच में लड़कियों को प्रिडिक्ट करना बहुत ही मुश्किल है।

“व्हाट अबाउट मी!”

“आइ मीन, क्या तुम भी किसी से प्यार करते हो? तुम्हारे दोस्त प्रतीक की तरह।” मुझे समझ नहीं आया कि मैं क्या जवाब दूँ।

“नो, नॉट एग्ज़ेक्टली।” इससे ज़्यादा कुछ भी मुझे नहीं सूझ रहा था।

“एंड वाट अबाउट यू?” मैंने भी उससे पूछ लिया। “आइ लव एनीमेशन।” उसने मुस्कुराते हुए कहा। मैंने मन-ही-मन कहा कि काश! मेरा नाम अनुराग के बजाय एनीमेशन मेहता होता।

“ओह! देट्स ग्रेट। तुम्हें अपने काम से प्यार है।” अपने विचारों से बाहर आते हुए मैंने कहा और जवाब में वो इतराई।

फिर एक बार मैंने अपनी निगाहें आस-पास की टेबल पर दौड़ाईं। जो काम हम ख़ुद नहीं कर सकते वो औरों को करते देख बड़ी तसल्ली मिलती है। जवाहर कला केंद्र के पास ही कॉमर्स कॉलेज होने से वहाँ रौनक़ लगी रहती थी। आर्ट्स कॉलेज में तो मामला सूखा ही रहता है।

“अनुराग भूख लग रही है, कुछ खाने के लिए मँगवाएँ?” नेहा बोली। मेरा ध्यान वापस नेहा पर आया।

“कहाँ खो गए थे?”

“नहीं, कहीं नहीं। बस ऐसे ही।” मैंने सामान्य रहते हुए कहा, “प्रतीक बता रहा था कि यहाँ पर साउथ इंडियन अच्छा मिलता है।” मैंने बात का रुख पलटा।

“ओके, चलो आज मसाला-डोसा खाते हैं। क्योंकि प्रतीक की पसंद अच्छी है।” उसने कहा और ख़ुद ही मुस्कुरा दी।

“कैपुचिनो नहीं पियोगी आज?” पूछकर मैंने नज़रें उसके चेहरे पर गड़ा दीं।

“यहाँ सिर्फ़ सिंपल कॉफ़ी मिलती है।” नेहा बोली। मैंने मन-ही-मन सोचा कि नेहा को कैसे पता? इसका मतलब कि वो पहले भी यहाँ आई है, पर किसके साथ? कहीं...

संशय मिटाने के लिए मैंने पूछ लिया, “तो तुम पहले भी यहाँ आई हो, राइट?”

“तुम्हारे पास आँखें हैं?” नेहा ने सवाल के जवाब में तुरंत सवाल किया।

“हाँ।”

“तो तुम जब अपनी आँखों को किसी लड़की पर टिकाए हुए थे, तब मैंने उस मेन्यू बोर्ड पर पढ़ लिया था।” उसने पास ही लगे मेन्यूबोर्ड की ओर इशारा करते हुए कहा। मैं झेंप गया।

“अनुराग तुम्हें एक चीज़ दिखानी थी।” कहते हुए उसने अपने पर्स में हाथ डाला।

मुझे एक पल को डर लगा कि कहीं वो अपने पर्स से एक फ़ोटो निकालकर यह न कह दे कि मेरे घर वालों ने भेजा है। इससे मेरी शादी होने वाली है। मैंने अपनी निगाहें बराबर उसके हाथ पर गड़ा रखी थीं। उसने पर्स में से मोबाइल निकाला।

“मैंने मोबाइल ख़रीदा है।” कहते हुए उसने मोबाइल मेरी ओर बढ़ाया।

“अब तुम मुझे कभी भी कॉल कर सकते हो।” नेहा ने मेरी आँखों में आँखें डालते हुए कहा। नेहा की यह बात दिल के अंतिम छोर को छू गई। मैं पल भर उसकी ओर ही देखता रहा।

“यह मैंने ख़ुद अपनी कमाई से ख़रीदा है। लास्ट वीक मैंने एक एनीमेटेड फ़िल्म बनाई थी। सिर्फ़ दस सेकेंड की। एक कॉम्पटीशन में उसे सेकेंड प्राइज मिला और प्राइज मनी से मैंने मोबाइल ख़रीद लिया।” नेहा सारी बात ऐसे बताए जा रही थी, मानो जाने कब से यह बताने को वो उतावली थी। किसी अपने से अपनी ख़ुशी बाँटना चाहती थी। उसकी बात ख़त्म होते ही मैंने उसकी ओर हाथ बढ़ा दिया। आइ नेवर मिस द चांस।

“बधाई हो बधाई!” मैंने कहा। उसने हाथ मिलाते हुए थैंक्स कहा।

“मैडम, क्या मैं आपका नंबर ले सकता हूँ?” मैंने मुस्कुराते हुए पूछा। नेहा के हाथ की गर्माहट मैं अब भी अपनी हथेली में महसूस कर सकता था। मैं अपना हाथ टेबल के नीचे ले गया और मुट्ठी बंद कर ली।

“क्यों नहीं!” नेहा ने चेहरे पर गर्व लाते हुए कहा। ऐसा लग रहा था जैसे मैं कोई भिखारी हूँ और वो बहुत बड़ी दानवीर।

“94×××××××75” उसने कहा। हर एक नंबर बोलते हुए उसके चेहरे पर संतोष का भाव था और लिखते हुए मेरे चेहरे पर परम संतोष का। मैंने नंबर जोड़ने की कोशिश की। ताकि न्यूमरोलॉजी के हिसाब से कुछ बातें पता कर सकूँ।

“कहाँ खो गए?” नेहा बोली। उसकी आवाज़ सुनकर मैं जोड़ भूल गया।

फिर कुछ देर तक वो मुझे उस मोबाइल के फंक्शन सिखाती रही। फिर कॉफ़ी और मसाला-डोसा आ गए। जिन्हें खाने के बाद उसने कहा कि प्रतीक की पसंद सच में अच्छी है। मैं बार-बार अपनी नज़र नेहा से बचाकर आस-पास की टेबल पर मार लेता था। मैंने ऐसे ही पीछे मुड़कर देखा। कई बार कुछ अच्छी चीज़ें आपके आस-पास ही होती हैं और हम बेवजह अपनी नज़रों को दूर तक फेंक रहे होते हैं। सो, यही सोचकर मैं पीछे मुड़ा। तभी मेरे मुँह से निकला, “प्रतीक की पसंद।”

“क्या?”

“वो जो लेडी हमारी पीछे वाली टेबल पर बैठी है, वो तस्नीम है।”

“कौन तस्नीम?”

“प्रतीक का प्यार, हमारी पीडी वाली मैडम।”

“रियली?” कहते हुए नेहा ने अपनी नज़रें उस के चेहरे पर गड़ा दीं।

“शी इज रियली ब्यूटीफुल।” नेहा ने मेरी ओर देखते हुए कहा, “पर वो यहाँ किसके साथ है?” मेरा पीछे मुड़ने का साहस नहीं हो रहा था। कहीं उन्होंने पहचान लिया तो? पर फिर भी मैंने हिम्मत करके पीछे की ओर देखा। मेरी सीट के पास एक खंभा था। सो, मैं उसकी आड़ में आ गया। नेहा उनको साफ़-साफ़ देख सकती थी। मैं एक बार फिर चौंका।

“मसानी, अरे ये तो मसानी है!”

“कौन मसानी?” नेहा ने पूछा।

“हमारे इंस्टीट्यूट का हेड। आर के मसानी। हम उसे रास्कल कमीना मसानी कहते हैं।”

फिर मैंने उनकी बातें सुनने की कोशिश की। पर वो इतनी धीमें बात कर रहे थे कि मेरा कुछ भी सुन पाना मुश्किल हो रहा था। पर नेहा उनकी ओर लगातार देखे जा रही थी। उसी ने बताया कि वो दोनों एक-दूजे का हाथ अपने हाथ में लिए हुए हैं। इसका मतलब ....ओह नो! प्रतीक को पता चलेगा तो उसे कैसा लगेगा।

फिर हम वहाँ से निकल आए। नेहा ने बिल पे किया। उसका कहना था कि यह उसकी तरफ़ से ट्रीट थी। कॉम्पीटीशन में सेकेंड आने की ख़ुशी में। मैंने भी मना नहीं किया।

“तो तुम अब प्रतीक को इस बारे में बताओगे?” नेहा ने कॉफ़ी हाउस के बाहर आते हुए कहा।

“शायद, तुम क्या कहती हो?”

“आइ थिंक तुम्हें बताना चाहिए।” नेहा ने अपनी राय दी जिससे मैं सहमत था। फिर कुछ देर हम जवाहर कला केंद्र की पार्किंग में खड़े रहे। जाते हुए नेहा ने कहा, “जब भी तुम्हें बात करने की इच्छा हो, तुम फ़ोन कर सकते हो। एनी टाइम। बस आठ से नौ के बीच मत करना। उस वक़्त हम लोग खाना खा रहे होते हैं। और मेरी बुआ मेरे आस-पास ही होती हैं। यू नो शी इज वेरी स्ट्रिक्ट।”

उसकी बात सुन मैं मुस्कुराया। कॉफ़ी हाउस के बाहर भी काफ़ी कपल घूम रहे थे। पार्किंग में मसानी सर की कार खड़ी थी। जिसे मैं देखते ही पहचान गया। नेहा ने मुझसे कहा कि वो मुझे बस तक लिफ़्ट दे सकती है। पर मैंने मना कर दिया। नेहा चली गई। मेरी नज़र एक बार फिर मसानी सर की कार पर पड़ी। मेरे मन में कई सवाल थे जिनके जवाब मैं ले लेना चाहता था। मैं वापस कॉफ़ी हाउस के अंदर गया। मसानी तस्नीम मैडम की अंगुलियों से खेल रहा था। मैं अपनी जगह जाकर फिर बैठ गया। और उसी खंभे के पीछे अपने को छिपा लिया। पर उनकी आवाज़ अब भी मेरे कानों तक साफ़-साफ़ नहीं पहुँच रही थी।

मैं वापस डिवाइन पैलेस पहुँचा। रूम का दरवाज़ा बंद था। सामने के कमरे में भूपी पढ़

रहा था। उसने बताया कि काफ़ी देर से दरवाज़ा बंद है। शायद सो रहा होगा। मैंने दो बार दरवाज़ा खटखटाया और एक बार आवाज़ लगाई। तब जाकर प्रतीक ने दरवाज़ा खोल दिया। मैं अंदर आ गया और हमेशा की तरह दरवाज़े पर पर्दा कर दिया। भूपी भी अंदर आ गया।

"सो रहा था क्या? मैंने दो घंटे पहले भी दरवाज़ा नॉक किया था।" भूपी बोला।

"हाँ, वो आँख लग गई थी।" प्रतीक अलसायी आवाज़ में बोला। उसकी आँखें लाल थीं। भूपी ने हर बार की तरह फिर उसकी बात पर सिर हिला दिया। फिर भूपी अपने कमरे में चल दिया। "थोड़ी देर बाद चाय पीने चलेंगे, तैयार रहना।" मैंने भूपी के जाने के बाद कहा।

प्रतीक मुझसे आँख चुराने की कोशिश कर रहा था। प्रतीक के बिस्तर पर सलवटें नहीं थीं। इसका मतलब अभी-अभी जो उसने भूपी से कहा था, वो झूठ था। मैंने प्रतीक के चेहरे की ओर ग़ौर से देखा। उसकी आँखों के नीचे सूखे हुए आँसुओं के निशान थे। प्रतीक हाथ में तौलिया ले बाथरूम की ओर चल दिया। मेरी नज़र प्रतीक के तकिये के नीचे दबे एक काग़ज़ पर गई। जो शायद जल्दबाज़ी में छुपाने की वजह से आधा बाहर झाँक रहा था। मैंने उस काग़ज को हाथ में लिया। यह एक लैटर था। मैंने उसे खोलकर पढ़ना शुरू किया।

"बेटा,
जन्मदिन की शुभकामनाएँ।
तुम्हारा पिता"

ओह! यह तो जन्मदिन की बधाई थी, जो प्रतीक के पापा ने उसे भेजी थी। पर इसमें रोने वाली क्या बात थी? शायद घर की याद आ गई होगी। पर प्रतीक को तो होम सिकनेस नहीं थी। उसने तो कभी भी अपने घर का ज़िक्र तक नहीं किया था। मैं ख़ुद ही सवाल पूछ रहा था और ख़ुद ही संभावनाओं को ख़ारिज कर रहा था। मैं इसी उधेड़बुन में था तभी प्रतीक बाथरूम से बाहर आया। अब उसका चेहरा नॉर्मल लग रहा था। पर आँखों में अब भी हल्की लाली थी। शायद मन से वो अभी भी दुःखी था। पर क्यों? यह जानने के लिए मैंने वो लेटर उसकी ओर बढ़ा दिया।

"तुम्हारे पापा ने भेजा है? मैंने पूछा, भले ही मैं यह जानता था। आज समझ में आया कि पापा उन सवालों को क्यों पूछते थे, जिनका जवाब वे जानते थे।

"हाँ।" प्रतीक ने इतना कहा और टॉवेल को दरवाज़े के पीछे टाँग दिया।

"तुमने बताया नहीं।" मेरे पूछने पर वो कुछ नहीं बोला। मैंने प्रतीक का हाथ पकड़कर उसे अपने पास बैठा लिया।

"प्रतीक, क्या घर की याद आ रही है?" मैंने उसके चेहरे पर नज़र ठहराते हुए पूछा।

मैंने उसकी ख़ामोशी को हाँ समझते हुए कहा, "यार तो इसमें आँसू बहाने की कौन-सी बात है?" प्रतीक कुछ नहीं बोला। बस निगाहें नीचे किए हुए बैठा रहा।

"तुम अपने पापा से बहुत प्यार करते हो ना?" मैं चाहता था प्रतीक कुछ बोले। सो, मैंने बात आगे बढ़ाते हुए पूछा।

“नो आइ हेट हिम।” प्रतीक ने चिल्लाकर कहा। “आइ हेट हिम, आइ हेट हिम।” उसने तीन बार रीपीट किया। उसका चेहरा तन गया था। आँखें और लाल हो गई थीं।

“वो हमें छोड़कर किसी और के साथ रहते हैं। किसी और के साथ। तुम समझ रहे हो? किसी और के साथ। हमारे साथ नहीं। मेरी मम्मी के साथ नहीं। मेरे साथ नहीं।” प्रतीक बिफर पड़ा।

मैंने प्रतीक का यह रूप पहले कभी नहीं देखा था। पूरा चेहरा तमतमाया हुआ था। शायद कई दिनों बाद उसे अपनी दिल की बात कहने का मौक़ा मिल रहा था। वो बाहर से जितना स्ट्रॉन्ग दिखाई देता था, उतना था नहीं। वो लगातार बोले जा रहा था।

“वो हमसे ज़्यादा किसी और से प्यार करते हैं। उस औरत से जिसने हमारी ज़िंदगी तबाह कर दी। फिर मेरे जन्मदिन पर यह लेटर भेजने का क्या मतलब? वाय डिड ही सेंड मी दिस ब्लडी लेटर? मेरे हर जन्मदिन पर वो मुझे यह लेटर क्यों भेजते हैं?” कहते-कहते प्रतीक रोने लगा। समझ नहीं आ रहा था, उसे कैसे संभाला जाए। मैंने उससे और कुछ पूछना ठीक नहीं समझा। तस्नीम मैडम वाली बात बताकर मैं उसे और दुःखी नहीं करना चाहता था। सो, मैंने उसे कुछ नहीं बताया। पर उस दिन से मेरे और प्रतीक के संबंध पहले से प्रगाढ़ हो गए थे।

———————

हम सत्तु के यहाँ बैठे थे। कुछ देर पहले मेरे और प्रतीक के बीच बने गंभीर माहौल की कोई झलक अब बाक़ी नहीं थी। एक बार फिर हम हल्के मूड में थे। भूपी हमारे साथ नहीं आया था। उसने कहा कि उसे इरशाद को कुछ समझाना है। सो, वो नहीं आ पाएगा। प्रतीक ने दबाव नहीं डाला। आजकल भूपी हमसे दूर रहने लगा था।

“कैसी रही तुम्हारी मीटिंग?” प्रतीक ने चाय की चुस्की लेते हुए कहा। स्पेशल चाय।

मेरे पास नेहा के साथ हुई मुलाक़ात को डिफ़ाइन करने के लिए उचित शब्द नहीं थे। बस आज की एक ही बात अच्छी थी कि नेहा ने मोबाइल ले लिया था।

“वैसी ही जैसी हमेशा रहती है।” मैंने जवाब दिया।

“इसका मतलब आज भी तुमने उससे नहीं कहा।”

“नहीं। पता है, उसने मोबाइल ले लिया है।” मैंने चहकते हुए कहा और चाय की एक और घूँट अपने गले के नीचे गटका ली।

“तुमने वो न्युमरोलॉजी वाला फॉर्मूला ट्राय किया?” प्रतीक बोला।

मैंने उसकी बात ख़त्म होते ही जेब से वो काग़ज निकाला जिस पर नेहा का नंबर लिखा था।

“94××××××75”

मेरे ख़्याल से कैल्कुलेशन पावर इंप्रूव करने की यह सबसे अच्छी एक्सरसाइज थी।

“42” मैंने कहा।

“एंड 4+2, सिक्स। एंड यॉर डेट ऑफ़ बर्थ?” प्रतीक बोला।

“10 दिसंबर।”

“यानी वन। नहीं यार, यह तो मैच नहीं करते।” प्रतीक ने घोषणा की।

मेरा चेहरा उतर गया। एकदम से जैसे किसी ने मुझे सोते हुए से तब उठा दिया हो, जब मैं कोई मीठा सपना देख रहा था।

“अरे! तू यह सब मानता है क्या? मैं तो मज़ाक कर रहा था। टाइम पास। अरे! अगर ऐसा होता तो मैं अभी तेरी जगह तस्नीम के साथ चाय पी रहा होता।” प्रतीक ने शायद मेरे चेहरे के भाव पढ़ लिए थे। तभी मुझे सांत्वना देने के लिए बोला। मुझे उसकी बात में दम नज़र आया। क्योंकि तस्नीम मैडम तो उस मसानी के साथ चाय पी रही थीं। यह सोचकर मैं सामान्य हो गया।

———————

उसी रात मैं एसटीडी बूथ पर था। डिवाइन पैलेसे से निकल कर पाँच मिनट की दूरी पर ही यह बूथ था। नेहा का नंबर मेरे हाथ में था, अब तक याद नहीं हुआ था। हल्की-सी घबराहट भी थी। दरअसल, नेहा से बात करने से मैं ख़ुद को रोक नहीं पा रहा था। रात के दस बज गए थे। मैंने नंबर डायल किया और पहली घंटी में ही फ़ोन उठ गया।

“हैलो अनुराग।” नेहा की आवाज़ आई। मेरे बोले बग़ैर ही वो जान गई कि यह मेरा ही फ़ोन है।

“तुम्हें कैसे पता कि मेरा ही फ़ोन है।” मैं तो था ही जिज्ञासु प्रवृत्ति का, पूछ लिया।

“जस्ट गेस। यू नो सिक्सथ सेंस।” नेहा बोली। मैंने मन-ही-मन सोचा, कॉमनसेंस का तो अभाव है और सिक्सथ सेंस की बात हो रही है।

“तुम पहले बंदे हो, मुझे फ़ोन करने वाले।”

“रियली!” मैं ख़ुश हुआ मानो जीके की किताबों में अब से पूछा जाएगा कि नेहा के मोबाइल पर पहला फ़ोन करने वाला कौन था?

“तुमने प्रतीक को आज वाली बात बताई?” नेहा ने पूछा।

हमारी प्रॉब्लम ही यही थी कि हम दोनों कभी अपने बारे में बात करते ही नहीं थे। प्रतीक हमारे बीच का कॉमन टॉपिक था।

“नहीं।” मैंने कहा और फिर कारण भी बताया, “वो काफ़ी परेशान था।”

“उसे इमोशनल सपोर्ट चाहिए।” नेहा ने पूरी बात सुनकर अपनी प्रतिक्रिया दी।

“हूँ।” मैंने सिर्फ़ इतना कहा। फिर मैंने टॉपिक चेंज करना ठीक समझा, “तुम अब तक सोई नहीं!”

“इतनी जल्दी! अभी तो मैं पढ़ रही थी।”

“ओह! तो मैंने तुमको डिस्टर्ब कर दिया।”

“हाँ। बहुत डिस्टर्ब कर दिया।” फिर वो ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगी। लड़कियों की हँसी को समझना सच में बहुत ही मुश्किल है।

“लगता है मेरी हँसी से बुआ जग गई हैं, अब रखती हूँ। फिर बात करेंगे। बाय बाय

बाय।"

"बाय।"

प्रतीक को अब तक मैंने तस्नीम मैडम और मसानी को एक साथ देखे जाने वाली बात नहीं बताई थी। पर एक दिन फिर नेहा ने फ़ोन पर कहा कि मुझे उसे अब बता देना चाहिए। नेहा की बात मैं कम ही टालता था। कुट्टी सर की क्लास ख़त्म ही हुई थी। हम बाहर निकलने ही वाले थे कि मसानी अंदर आ गया। हम फिर से अपनी जगह पर बैठ गए। मसानी की मूँछें काफ़ी घनी थीं, जो उसके ऊपर वाले होंठों को ढँक लेती थीं। ऐसा लगता था मानो उसके ऊपर वाले होंठ मूँछों के ही बने हों। सो, कई उसे मूँछानी भी कहते थे। पर हम तो उसे वही रास्कल कमीना मसानी कहते थे। द परफ़ेक्ट नेम।

मसानी ने कहना शुरू किया, "स्टूडेंट्स, आपका बैच शुरू हुए तीन महीने होने को हैं। आई होप कि आप बहुत मेहनत और लगन के साथ तैयारी कर रहे हैं।"

"इतनी ही लगन से, जितनी कि तू उस दिन मैडम की उँगलियों से खेल रहा था। ब्लडी मसानी।" मैंने मन-ही-मन कहा।

"अब वक़्त आ गया है कि आप लोगों का टेस्ट लिया जाए। ताकि आप लोग यह जान सकें कि आप कहाँ स्टैंड करते हैं। आपकी कमियाँ क्या हैं? सो, वक़्त रहते उन पर ध्यान दिया जा सके।"

"तुम अपना ध्यान मैडम से क्यों नहीं हटा लेते?" मैं मन-ही-मन बुदबुदाया।

सब उसकी बातें ध्यान से सुन रहे थे।

"अगले सप्ताह आपका टेस्ट होगा और हर सेक्शन में सबसे ज़्यादा स्कोर करने वाले को दो हज़ार रुपये का इनाम दिया जाएगा।"

सबने तालियाँ बजाईं, मैंने नहीं। मेरे दिमाग़ में तो मसानी की वही तस्वीर बार-बार उभर रही थी, जिसमें वो मैडम के मुँह के नज़दीक अपना मुँह लाकर बात कर रहा था। "ब्लडी मसानी" मैंने एक बार फिर कहा। पर इस बार प्रतीक को सुनाई दे गया।

"तुमने कुछ कहा?" प्रतीक बोला। "नहीं....।" मैंने सिरे से नकार दिया।

इतना कहकर मसानी वहाँ से चल दिया। उसके जाते ही खुसर-पुसर शुरू हो गई। सब अपनी-अपनी स्ट्रेटजी बनाने में जुट जाना चाहते थे।

———————

"हेलो, तस्नीम मैम।"

“यस, हु इज देयर?”

“मैम प्रतीक दिस साइड।”

“हैलो प्रतीक, हाउ आर यु। एंड हाउ मेनी टाइम्स आइ टोल्ड यू, जस्ट कॉल मी मिस तस्नीम।”

“सॉरी मैम। आइ मीन, मिस तस्नीम। हाउ आर यू?”

“आइ एम फाइन। आज तुम्हें अपनी मैम की याद कैसे आ गई?”

“एक्च्युली वो...” प्रतीक की जबान वहीं अटक गई। उस प्रतीक की जो मुझे कहता था कि यह प्रेमपत्र लिखने का नहीं बल्कि मुँह पर कहने का ज़माना है। वही प्रतीक आज फ़ोन पर अपने दिल की बात नहीं कह पा रहा था। प्रतीक द लूज़र।

“वो...टेस्ट आ गए हैं एंड आइ एम लूजिंग कॉन्फ़िडेंस। तो सोचा कि आपसे बात कर लूँ।”

“व्हाट! प्रतीक इज लूज़िंग कॉन्फ़ीडेंस, तो बाक़ी लड़कों का क्या होगा? तुम पर तो मुझे ख़ास तौर से विश्वास है। यू नो प्रतीक तुम सभी स्टूडेंट्स में बेस्ट हो।”

“थैंक्यू मैडम। एंड मैडम यू नो.... यू आर द स्वीटेस्ट लेडी आइ हैव ऐवर मेट।” प्रतीक ने हिम्मत करके बोल दिया।

“ओह! थैंक्स फॉर द कॉप्लीमेंट एंड बेस्ट ऑफ़ लक। वेनएवर गेट ऐनी प्रॉब्ल्म फ़ील फ़्री टु कॉल मी।”

“थैंक्यू मैडम, आई मीन मिस तस्नीम।”

“हा हा हा, गुड नाइट।”

मेरे पूरे पैंतालीस मिनट समझाने के बाद आज प्रतीक ने तस्नीम मैडम से बात की। पर जो बात उसे करनी थी, वो कर ही नहीं पाया। हालाँकि फ़ोन रखने के बाद उसके चेहरे पर ख़ुशी थी। जो कई दिन बाद उसके चेहरे पर दिखाई दी। उस दिन भी मेरा मन उसे कॉफ़ी हाउस वाली बात बताने का नहीं हुआ। आगे अभी टेस्ट थे और उसे टेस्ट से पहले बताकर मैं उसकी परफॉर्मेंस बिगाड़ना नहीं चाहता था।

हमने ख़ुद को टेस्ट की तैयारी में झोंक दिया था। मैं कम-से-कम एक सेक्शन में तो टॉपर बनना ही चाहता था। जिस दिन से नेहा ने मोबाइल लिया, मुझे बार-बार मोबाइल की कमी महसूस होने लगी थी। रात को नेहा से बात करने की इच्छा होती, पर तब तक सारी एसटीडी बंद हो जाती थी। सो, यह अच्छा मौक़ा था मोबाइल ख़रीदने का। पर इसके लिए टॉप करना ज़रूरी था। हम रात को चार बजे तक पढ़ते थे। मैं और प्रतीक तो साथ पढ़ते ही थे पर कभी-कभी भूपी भी हमारे कमरे में आ जाता था। आख़िर वो हमारी टीम का हिस्सा जो था। एक ऐसा हिस्सा जिसकी गर्दन हमेशा एक ही दिशा में हिलती रहती थी। रात को जगने के लिए हमें चाय की ज़रूरत होती थी। और इतनी रात को भला चाय कहाँ मिलती! इसका हल यह निकला कि मैंने सोमदेव अंकल को कहकर उनके पास रखा एक पेट्रोमैक्स मँगवा लिया,

और कुछ बर्तन भी। यह ज़रूरी था। यह सब देने के लिए अंकल के साथ कोमल भी आई थी। तब प्रतीक रूम पर नहीं था। कोमल उस दिन सचमुच कोमल ही नज़र आ रही थी। तब मैंने अपने-आप से एक बार फिर पूछा, “इज शी बेटर देन नेहा?” मेरे अंदर से कोई जवाब नहीं आया।

रात को साढ़े दस बजे मैंने नेहा को फ़ोन किया। तीन घंटी बाद उसने फ़ोन उठाया।

“तो तुम्हें टाइम मिल गया, फ़ोन करने का।” नेहा बोली।

“आज कल बहुत बिजी हूँ। टेस्ट होने वाले हैं। और कम-से-कम एक सेक्शन में तो टॉप करना ही है।

“तो टाइम क्यूँ वेस्ट कर रहे हो, जाओ पढ़ाई करो।” नेहा नाराज़ होते हुए बोली।

“जानती हो, मैं टॉप क्यों करना चाहता हूँ?”

“मुझे क्या पता? इंस्टीट्यूट की लड़कियों को इंप्रेस करने के लिए या फिर अपनी कोमल को इंप्रेस करने के लिए।” नेहा ने चिढ़ते हुए कहा।

“और अगर मैं कहूँ कि अपनी एक ख़ास दोस्त से बात करने के लिए तो?”

“व्हाट!” मेरी इस बात ने उसे चौंका दिया था।

“यस, टॉप करना चाहता हूँ ताकि प्राइज मनी से मैं एक मोबाइल ख़रीद सकूँ और मेरी एक दोस्त है जो वैशाली नगर में बी 48 में रहती है, उससे जब चाहूँ बात कर सकूँ।”

“रियली!” मैं उसकी आवाज़ में ख़ुशी साफ़-साफ़ महसूस कर सकता था।

“यस।”

“तो मुझसे बात करके वक़्त क्यों ख़राब कर रहे हो। जाओ पढ़ो। हम सात दिन तक बिना बात किए रह सकते हैं।” नेहा ने अधिकार से कहा। पता नहीं, नेहा कब कौन-सी बात कह दे प्रीडिक्ट कर पाना मुश्किल है। शी इज मोस्ट अनप्रीडिक्टेबल गर्ल।

“ओके। ठीक है, अब मैं तुम्हें अगला कॉल अपने मोबाइल से ही करूँगा।” मैंने कहा।

“मैं इंतज़ार करूँगी।”

“जानता हूँ, टेक केयर।”

“बाय, गुड नाइट।”

“बाय।”

———————

रात के तीन बज गए थे। लगातार सात घंटे से हम पढ़ रहे थे। आँखों में नींद नहीं थी पर चाय की तलब ज़रूर थी। अगर एक कप चाय मिल जाती तो हम दो घंटे और पढ़ सकते थे। और यह दो घंटे हमें उन दो हज़ार रुपयों के दो क़दम और नज़दीक ले जा सकते थे।

“प्रतीक, यार चाय क्यों नहीं बना लेता!” मेरी बात सुनते ही प्रतीक का पेन रुक गया।

“ब्लैक टी पीनी है!”

“ब्लैक टी, क्यों?”

“क्योंकि दूध नहीं हैं।” इतना कहकर उसने फिर अपनी नज़रें अपनी किताब में गड़ा दीं।

मुझे उबासी आ रही थी और अगर मैं उसी अवस्था में दस मिनट और बैठा रहता तो ज़रूर मुझे नींद आ जाती।

“चल कुछ देर सड़क पर बाहर टहल आते हैं, नींद उड़ जाएगी।”

प्रतीक की भी हालत मुझ जैसी ही थी। वो तैयार हो गया। हम डिवाइन पैलेस से बाहर आ गए। अब तक सब सो चुके थे। किसी भी कमरे में लाइट नहीं जल रही थी। हम ख़ुश हुए कि सबसे ज़्यादा देर तक हम पढ़ रहे थे। और कुट्टी सर के अनुसार सक्सेस से हमारी दूरी हमारे द्वारा पढ़ाई को दिए गए टाइम के व्युतक्रमानुपाती होती है।

हम सड़क पर आ चुके थे। सड़क एकदम सुनसान थी। थोड़े-थोड़े अंतराल में कुत्तों के भौंकने की आवाज़ ज़रूर आ जाती थी। ठंडी हवा चल रही थी। पास ही के घर में लगी रातरानी की ख़ुशबू हमें तरोताज़ा कर रही थी।

रोडलाइट की रोशनी रात की सुंदरता को और बढ़ा रही थी। सच में दिन के बजाय रात ज़्यादा ख़ूबसूरत होती है।

हम चलते-चलते पास वाली मेन रोड पर आ गए। यदा-कदा कोई वाहन वहाँ से निकलता था। हम मेन रोड पर बने फुटपाथ पर चल रहे थे। तभी प्रतीक एकदम से रुक गया।

“क्या हुआ?” प्रतीक के इस अचानक रुक जाने पर मेरा सवाल सही था।

उसने हाथ से एक तरफ़ इशारा किया, मैंने अपनी आँखें उधर लगा दीं। वहाँ एक डेयरी का बूथ था। जहाँ पर दूध मिलता था। सरस डेयरी।

“वो तो अभी बंद होगा।” मैंने डेयरी पर लगे शटर को देखकर कहा।

“यक़ीनन बंद है। पर उसके बाहर दूध से भरे कैरेट नहीं दिखाई दे रहे क्या? रात को डेयरी वाले इन कैरेट की सप्लायी करते हैं और बूथ के बाहर रख जाते हैं। वो देख उन्हीं के पास में तीन लड़के सो रहे हैं। वो बूथ वाले ही हैं।” प्रतीक ने इशारा करते हुए कहा।

“तो तुम क्या चाहते हो?”

“तुम बस यहीं खड़े रहो और मेरा कमाल देखो।”

“तुम चोरी करोगे!” मेरी आवाज़ थोड़ी तेज़ हो गई थी। प्रतीक रुक गया। उसने मेरी ओर घूर के देखा और फिर धीरे से बोला, “तुम टॉप करना चाहते हो?”

मैंने ‘हाँ’ में गर्दन हिला दी। “तो तुम्हें पढ़ना होगा और उसके लिए जगना होगा और उसके लिए चाय पीनी होगी। और उसके लिए चाय चाहिए और चाय के लिए दूध। सो, हम जो कुछ भी कर रहे हैं यह हमारी पढ़ाई का ही हिस्सा है। अगर हम चाय के लिए दूध का इंतज़ाम नहीं कर सकते तो कल को किसी एमएनसी के लिए बाज़ार से पैसे कैसे जुटाएँगे?” प्रतीक ने कुट्टी सर के अंदाज़ में समझाया। मुझे लगा दूध चुराना मेरे अपने करियर के लिय बेहद ज़रूरी है और मेरा चुप रहना ही सही है।

“तुम यहीं खड़े रहो।” इतना कहकर प्रतीक वहाँ से चल दिया। कैरट के पास गया और चुपके से एक दूध की थैली उठा ली। फिर सामान्य चाल के साथ वापस लौट आया। आते समय उसके चेहरे पर विजयी मुस्कान थी। मुझे उसके हाथ में वो थैली नहीं बल्कि मोबाइल

फ़ोन लग रहा था। हम दबे पाँव वहाँ से चले आए। सीधे डिवाइन पैलेस में अपने रूम में आकर ही रुके और एक मिनट बैठकर सिर्फ़ और सिर्फ़ गहरी साँस ली। फिर एक-दूजे की ओर देखकर मुस्कुराए।

“यू आर रियली डेरिंग ब्वॉय!” मैंने उसके कंधे पर हाथ मारते हुए कहा।

“एनीथिंग फॉर कैट।” प्रतीक ने मुस्कुराते हुए कहा। फिर मैंने चाय बनाई। चाय पीने के बाद पता ही नहीं चला कब नींद आई। सुबह हम यह अंदाज़ा नहीं लगा पाए कि हम रात को कितने बजे तक पढ़ रहे थे। पर एक बात तय थी कि नेहा की चाहत ने मुझे और तस्नीम मैडम की चाहत ने प्रतीक को चोर बना दिया था। थैली चोर।

नेहा से बात करने की इच्छा होती थी पर मैंने उसे वादा जो किया था कि अगला कॉल मैं अपने मोबाइल से ही करूँगा। बस मन मारकर रहा जाता। दिन में हम इंस्टीट्यूट की लायब्रेरी में रहते और रात को अपने कमरे में। दोनों ही स्थिति में हम किताबों से घिरे रहते। रात को कई बार मुझे नींद नहीं आती और तब पढ़ने की भी इच्छा नहीं होती। तो मैं छत पर टहलने चला जाया करता था। कई बार प्रतीक भी मेरे साथ होता।

मैंने और प्रतीक ने अपने-अपने सेक्शन बाँट लिए थे। सभी सेक्शन पर ध्यान बाँटने से मोबाइल की उम्मीद धुँधली हो सकती थी। सो, मैंने रीजनिंग और प्रतीक ने मैथ्स ले लिया था। भूपी डाटा इंटरप्रिटेशन को बेहतर तरीक़े से इंटरप्रेट करने में लगा हुआ था।

———————

डिवाइन पैलेस की छत पर रात को एक बजे मैं और प्रतीक खड़े थे। यह एक घुप्प अँधेरे वाली रात थी। शायद इस दिन अमावस्या थी। कहीं दूर किसी घर में जली लाइट तारों के समान लग रही थी। ज़मीन पर तारे और मेरी नेहा चाँद। मैं मन-ही-मन हँसा।

“अनुराग, हम पिछले दो महीने से अपने को कुछ अंकों और तर्कों के हवाले कर जी रहे हैं। तुम्हें लगता है यह कभी हमारी ज़िंदगी में काम आएँगे? मैंने दसवीं कक्षा तक जाने कितने ही शासकों के बारे में पढ़ा, उनकी जन्म और मरने की तिथि तक को ऐसे याद किया मानो वो मेरे ही परिवार के सदस्य रहे हों। पर आज तक कभी यह मेरे कोई काम नहीं आए। हम बस उन्हें नंबर पाने के लिए याद करते रहे, पढ़ते रहे।” प्रतीक ने किसी गहरे चिंतक के समान बात कही।

“यार, धीरूभाई अंबानी ने तो एमबीए नहीं किया था। पर आज उनकी कंपनी में जाने कितने ही बड़े-बड़े एमबीए काम करते हैं। पता है हम क्यों पढ़ रहे हैं, ताकि हम अपने को

दुनिया के बाज़ार में बिकने योग्य बना सकें। एक दिन हमारी बोली लगेगी और जो सबसे ऊँची बोली लगाएगा हम अपना शरीर और दिमाग़ उसे सौंप देंगे। उसको पूरा अधिकार दे देंगे कि वो जितना चाहे हमारा ख़ून चूस ले।" मैं दार्शनिक बनने में पीछे नहीं रहना चाहता था। सामान्य तौर पर ऐसी बातचीत को बकैती कहा जाता है। हालाँकि वक़्त के साथ-साथ कई नए शब्दों ने इसकी जगह ले ली है।

"तो फिर हम अपने लिए कब कुछ करेंगे? जो सिर्फ़ हमारे अपने लिए हो।" प्रतीक ने कहा।

"तुम तस्नीम मैडम से बात करने के लिए मोबाइल ले लो। वो तुम सिर्फ़ अपने लिए करोगे।" मुझे हर वक़्त बस मोबाइल ही सूझता था।

"हाँ, मैं अगर ऐसा करता हूँ तो मैं अपने लिए करूँगा। अपनी ख़ुशी के लिए।"

"और मैं अपनी ख़ुशी के लिए।"

"मतलब तुम भी मोबाइल...!"

"क्यों, गर्लफ्रेंड सिर्फ़ तुम्हारे पास है? बात करना सिर्फ़ तुम्हें आता है? हमने क्या अपनी ज़बान और कान किराए पे दे रखे हैं?" मैंने नाराज़गी के स्वर में कहा।

"अरे मैं तो मज़ाक़ कर रहा था। लेकिन एक बात है, मोबाइल के लिए चाहिए रुपये। घर वाले दिलवाएँगे नहीं। तो एक ही तरीक़ा बचता है, टॉप करना।" प्रतीक बोला।

"हाँ, और इसके लिए एक बार फिर से अपना दिमाग़ अंकों और तर्कों के हवाले करना भी ज़रूरी है।" यह मेरी आवाज़ थी।

हम आधे घंटे के विचार-विमर्श के बाद फिर से उन्हीं कंदराओं में जाने को तैयार थे। वो कंदराएँ जहाँ मैथ्स के सवाल जंगली भेड़ियों की तरह हमें दबोचने के लिए उतावले हुए जा रहे थे।

हम सीढ़ियों से नीचे उतर आए। अब हम डिवाइन पैलेस की गैलेरी में थे। जो सारे कमरों को आपस में जोड़ती थी। हमने देखा इरशाद के रूम की लाइट जल रही थी।

"यार यह इरशाद कहीं हमें मात न दे दे। हम वहाँ ऊपर बातें कर रहे थे और यह पढ़ रहा है।" प्रतीक ने चिंता के स्वर में कहा।

बाक़ी सारे कमरों की लाइट बंद थी। हमने खिड़की से झाँकना चाहा। हमसे बर्दाश्त नहीं हो रहा था कि कोई हमारे और मोबाइल के बीच आने की कोशिश करे। वो भी डिवाइन पैलेस से। हमने दरवाज़े के बीच की जगह से झाँकने की कोशिश की। पर कुछ दिखाई नहीं दिया। मेरा मन बार-बार यही कह रहा था, "शुभ शुभ सोच अनुराग।"

"हो सकता है कि वो लाइट जलती छोड़ के सो गया हो," मैंने बी पॉजिटिव का फंडा अपनाते हुए कहा।

"पर जब हम ऊपर गए थे, तब तो उसकी लाइट बंद थी।" प्रतीक तर्कों का सहारा ले रहा था।

"खिड़की..." प्रतीक बोला। उसकी आवाज़ इतनी धीमी थी कि अगर उसी वक़्त यही आइडिया मेरे दिमाग़ में नहीं आया होता तो मैं नहीं समझ पाता कि उसने क्या कहा। हमने

एक दिन पहले दूध की चोरी की थी और आज हम चोरों की तरह बर्ताव कर रहे थे। प्रतीक का कहना था कि कैट और प्यार में सब जायज़ है। यहाँ तो कैट और प्यार का मिश्रित मामला था।

खिड़की की ऊँचाई ज़्यादा नहीं थी। पूरी खिड़की लकड़ी की बनी हुईं थी। उसके ऊपर वाले हिस्से पर काँच लगा हुआ था जिसमें से आर-पार दिखाई देता था। शायद बूढ़े ने पैसे बचाने के लिए ऐसे काँच लगवाए थे। इरशाद ने काँच पर कई जगह अख़बार चिपका रखे थे। जो जगह-जगह से फट चुके थे। वही फटे हुए अख़बार हमारी आशा की किरण थे। अगर इरशाद जाग भी रहा होता तो हम क्या कर लेते। हम तो बस अपनी तसल्ली कर लेना चाहते थे।

हम धीमे से चल के खिड़की के पास आए। अपनी नज़र खिड़की से अंदर उसके कमरे में जमा दीं। उसकी टेबल ठीक खिड़की के सामने थी। सो, वो हमें आसानी से दिखाई दे गई। पर इरशाद वहाँ नहीं था। अगर उसे टेबल पर पढ़ना होता तो वो पूरे कमरे को रोशन क्यों करता? वो टेबल लैंप भी तो जला सकता था। आख़िर बिजली का बिल तो उसे ही भरना था। मेरे मन में ख़्याल आने लगे। जो कि बहुत ही कॉमन बात थी। पर अब इरशाद को सोता देख लेने की हमारी उत्सुकता बढ़ती जा रही थी। प्रतीक ने मुझे ऊपर उठाया। अब मैं खिड़की के ऊपर की जगह से पूरे कमरे में आसानी से नज़रें घूमा सकता था। मैंने फिर जो वहाँ देखा, मेरी नज़रों को उस पर विश्वास नहीं हो रहा था। इरशाद के तन पर एक भी कपड़ा नहीं था। बिना कपड़ों के वो किसी भालू से कम नहीं था। वो उल्टा लेटा हुआ था और बेतहाशा किसी को चूमे जा रहा था। मेरे होश फ़ाख़्ता हो गए जब मैंने देखा कि उस भालू के भार के नीचे दबा शख़्स भूपी था। भूपी एकदम निर्वस्त्र। इरशाद के साथ।

प्रतीक अब तक मुझे ऊपर उठाए हुए था।

“क्या हुआ, कुछ दिखा क्या?” प्रतीक बोला।

मुझे प्रतीक की आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। मेरे दिमाग़ में तो उत्तेजनावश इरशाद के मुँह से निकल रही आवाज़ें गूँज रही थीं। जो बहुत ही धीमी थीं। मैं नीचे उतर आया। मेरे पूरे चेहरे पर पसीना था। प्रतीक के पूछने पर मैं कुछ नहीं बोला। प्रतीक बोला, “तू मुझे सहारा दे। मैं भी तो देखूँ कि वो कर क्या रहा है।”

मैंने उसे सहारा देकर खिड़की के ऊपरी हिस्से के स्तर तक पहुँचाया।

“ओ माय गॉड!” प्रतीक की आवाज़ थी। “आइ जस्ट कांट बिलीव इट।” मैंने प्रतीक को नीचे उतार दिया। कम-से-कम सत्तर किलो का होगा। ही मस्ट रिड्यूज़ वेट।

“अबे ये साले तो गे हैं, ब्लडी गे।” प्रतीक बोला।

“धीमे बोल। चल कमरे में चलते हैं।” मैंने उसके मुँह पर हाथ रखते हुए कहा। हम कमरे में आ गए। अभी-अभी जो हम दोनों ने देखा था उस पर हमें तो विश्वास नहीं हो रहा था। भूपी जो दिन-रात हमारे साथ रहता था, वो एक गे है। इरशाद क्या था, क्या नहीं हमें उससे कोई वास्ता नहीं था। पर भूपी? वो तो हमारा दोस्त था।

“मुझे तो पहले से ही वो नॉर्मल नहीं लगता था।” मैंने कहा। अब तक हमने गे के बारे में

पढ़ा और सुना था, पर आज पहली बार हमने...।

"कोई गे कैसे हो सकता है! सेम सेक्स के साथ फिजिकल रिलेशन...आदमी औरत का कंसेप्ट ही ख़त्म कर दिया सालों ने।" मैं सोचे जा रहा था। पहली बार तब प्रतीक ने कहा कि अंकुर कांइड ऑफ़ लव इज बेटर देन दिस लव। चलो लस्ट ही सही पर विपरीत सेक्स के लिए तो थी। हमें भूपी से नफ़रत होने लगी।

"अगर कल लोगों को मालूम चलेगा कि भूपी गे है, तो हो सकता है लोग हमें भी शक की निगाहों से देखें। क्योंकि वो हमारे ग्रुप में है। हम तीनों तो अक्सर साथ में ही रहते हैं। और तो और हमारी कोई गर्लफ्रेंड भी नहीं है। सब तरह-तरह की बाते करेंगे।" प्रतीक बोला। उसके चेहरे पर ग़ुस्सा साफ़-साफ़ दिखाई दे रहा था। "लगता है ये लोग इंडिया को अमेरिका बना के ही मानेंगे।" प्रतीक ने बात पूरी की। आमतौर पर हमारी यही धारणा थी कि इस तरह की हरकत अमेरिका में होती है।

"मैं अभी जाकर बताता हूँ उन बास्टर्ड्स को कि यह अमेरिका नहीं है। दरवाज़े पे एक लात मारूँगा और पूरा डिवाइन पैलेस जान जाएगा कि हमारे यहाँ क्या हो रहा है।" इतना कहकर प्रतीक जाने को हुआ।

मैंने उसका हाथ पकड़ लिया। "यह सही समय नहीं है। बेवजह सीन क्रिएट हो जाएगा। हमें भूपी से अकेले में बात करनी होगी।" मेरे कहने पर प्रतीक रुक गया।

पूरी रात हम सो नहीं पाए। बार-बार करवट बदलते प्रतीक को देखकर मुझे उसके जगने का अंदाज़ा होता। काश! कि हमें यह सब पता नहीं चलता। तो कम-से-कम हम रात को पढ़ तो सकते थे। हमारी पूरी रात ख़राब गई। न तो हम पढ़ पाए और न ही सो पाए।

रात भर जगे रहने के बाद सुबह आँख लग गई। देर तक सोते रहे। उस दिन की क्लास भी मिस हो गई। कल वाले कांड के बाद लग रहा था कि हमने जितना भी पढ़ा था, हम उसे भूलने लगे थे। हम दोनों की आँखें लाल थीं। सभी क्लास में गए थे पर भूपी का रूम खुला था। प्रतीक ने पर्दे को हटाकर उसके कमरे की ओर नज़र मारते हुए कहा, "नहीं गया क्लास में, सो रहा होगा। आख़िर रातभर तो...।"

"छोड़ ना! क्यों अपनी सुबह ख़राब करता है? जल्दी से नहा ले, अगली क्लास में अभी आधा घंटा बाक़ी है। उसे मिस नहीं करेंगे। वर्ना हमारे मोबाइल हमारे लिए ख़्वाब बनकर रह जाएँगे।" मैंने प्रतीक का ध्यान भूपी से हटाते हुए कहा। कल से मेरी हर बात में मोबाइल का ज़िक्र हो रहा था।

"दैट्स ओके, बट मैं इस बात को असेप्ट नहीं कर पा रहा हूँ। मेरा दोस्त, एक गे है। यू नो गे मीन्स...."

"या, आइ नो।" मैंने कहा।

मेरे पापा को पता चला कि डिवाइन पैलेस में मेरे बग़ल वाले रूम में एक गे रहता है तो वो यह डिवाइन पैलेस छोड़ने का फ़रमान जारी कर सकते हैं। मैंने मन-ही-मन सोचा, लेकिन प्रतीक से नहीं कहा। आख़िर मैं अपने पापा को बीच में क्यों लाऊँ? इतने में प्रतीक को जाने क्या सूझा कि पर्दा एक तरफ़ किया और सीधा भूपी के रूम में घुस गया। उसे जाता देख मैं

भी पीछे हो लिया।

भूपी बिस्तर में लेटा हुआ किताब पढ़ रहा था। हमें देख के वो बैठने लगा।

“लेटे रहो, इट विल बी पेनफुल फॉर यू टु गेट अप। यू ब्लडी गे। आइ नो वाट यू डिड लास्ट नाइट। वी आर हीयर टु से दैट वी हेट यू, वी हेट यू सिक मैन।” प्रतीक ने सारी भड़ास एक बारी में निकाल दी। वो भी अंग्रेज़ी में। तस्नीम मैडम से बात करते-करते उसकी इंग्लिश इंप्रूव हो रही थी। वैसे भी भड़ास कम्बख़्त अंग्रेज़ी में अच्छी निकलती है। भूपी के चेहरे का रंग उड़ गया। उसका चेहरा एकदम सफ़ेद पड़ गया। उससे कुछ बोलते हुए नहीं बना। प्रतीक भी नफ़रत और ग़ुस्से के मारे लाल हुए जा रहा था। वो पलटा और हम बाहर हो लिए। बाहर निकलने से पहले एक नज़र मैंने ज़रूर भूपी पर डाली। उसकी दशा दयनीय थी। पर उसका ज़िम्मेदार वो ख़ुद था। इरशाद से तो हमें कोई मतलब ही नहीं था, वो तो हमारा था भी नहीं। पर भूपी तो हमारा था। इसीलिए सारा ग़ुस्सा उसी पर निकला।

———————

इंस्टीट्यूट में क्लास अटेंड करने के बाद हम डिवाइन पैलेस नहीं गए। हम काफ़ी देर तक वहीं लायब्रेरी में बैठे रहे। प्रतीक मुझसे ज़्यादा अपसेट था। आख़िर भूपी से उसकी क़रीबी ज़्यादा थी। वो बस बैठा-बैठा किताब के पन्ने पलट रहा था। उसका ध्यान कहीं और ही था।

“मुझे शायद उससे यह सब नहीं कहना चाहिए था।” प्रतीक बोला। हम लायब्रेरी में थे सो, उसकी आवाज़ धीमी थी। प्रतीक के विचार इतनी जल्दी बदल जाएँगे, मैंने नहीं सोचा था।

“हम कौन होते हैं इतना रिएक्ट करने वाले? हु आर वी?” प्रतीक ने कहा।

मैं कुछ नहीं बोला। शायद उसका बोलना ठीक ही था। मैंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। मुझे भूपी से कभी कोई ख़ास लगाव न था। मतलब लगाव तो था पर प्रतीक जितना नहीं। वो न तो साथ में खाता-पीता था न ही घूमता था। कंजूस। पर अभी मुझे भूपी के बजाय वो मोबाइल दिखाई दे रहा था। जिसे ख़रीदने का दम मैं भर चुका था।

शाम के वक़्त हम डिवाइन पैलेस पहुँचे। डिवाइन पैलेस का मालिक बूढ़ा बाहर दरवाज़े पर ही खड़ा था। ऐसा अमूमन नहीं होता था। उसका घूरता हुआ चेहरा देखने के हम इतने आदी नहीं थे। अब जब मिल ही गया, तो नमस्ते तो करना ही था।

“नमस्ते।” हम दोनों ने एक साथ कहा।

“वो तुम्हारे सामने के कमरे में एक लड़का रहता था ना....?” बूढ़ा बोला। वो शायद नाम भूल गया था जैसा कि इस उम्र में अक्सर होता है।

“भूपी।” मैंने हिंट दिया।

“हाँ।” उसको अभी हॉस्पिटल ले के गए हैं।” अपनी काँपती आवाज़ में बूढ़ा बोला।

“क्या!” यह प्रतीक की प्रतिक्रिया थी।

“वो अंकुर और एक-दो जने और थे। वो ही एसएमएस लेकर गए हैं।”

“पर उसे हुआ क्या? सुबह तक तो ठीक-ठाक था।” मैंने पूछा।

“पता नहीं, बस मैंने ले जाते हुए देखा तो वैसे ही पूछ लिया था। हुआ होगा कुछ।” इतना कहकर बूढ़ा अंदर चला गया। शायद फ़ोन की घंटी बजी थी।

“अप्राकृतिक चीज़ें हमेशा स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती हैं।” मैंने कहा। प्रतीक ने मेरी बात सुन, मुझे घूरा।

यह तो सरासर डबल स्टेंडर्ड था। वो तो कल रात से जाने क्या-क्या कहे जा रहा था। सिक मेन, सोशल इवल, ब्लडी गे, और जाने क्या-क्या! मैंने थोड़ा-सा कुछ क्या कह दिया, मुझे आँखें दिखाने लगा। पर उस वक़्त मैंने उसके घूरने को लेकर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।

हम ऊपर अपने कमरे में गए। बाक़ी सभी कमरों पर ताले लगे हुए थे। यानी सभी हॉस्पिटल गए थे। यह हमारा अंदाज़ा था। हमने अपने बैग्स अपने कमरे में रखे।

“तुम्हें पता है, यह एसएमएस किधर है?” मैंने प्रतीक से कहा।

“हाँ, यहाँ से सिटी बस नंबर 13 वहीं जाती है।” प्रतीक बोला।

प्रतीक का सिटी बस का नॉलेज वाक़ई ज़बरदस्त था। कौन-सी बस कहाँ-से-कहाँ जाती है वो इस अनजान शहर में भी जानता था।

प्रतीक ने बताया कि यह शहर का सबसे बड़ा अस्पताल है। जिसमें बाद में उसने जोड़ा कि शहर का ही नहीं, पूरे राजस्थान का सबसे बड़ा अस्पताल है। और इस सबसे बड़े अस्पताल तक पहुँचने के लिए बस कहाँ से मिलेगी, कहाँ उतरना है, सब प्रतीक ने गाइड किया। बिना किसी से पूछे।

“उसे ज़रूर इमरजेंसी वार्ड में ले जाया गया होगा।” प्रतीक ने अपने-आप से कहते हुए अपने क़दम दूर दिख रहे एक दरवाज़े की ओर मोड़ लिए। हम एसएमएस के गलियारों में थे। एक गैलेरी को क्रॉस करते ही सामने एक काँच के दरवाज़े पर लाल रंग से इमरजेंसी वार्ड लिखा हुआ था। हम उसके अंदर चल दिए। प्रतीक आगे था। वो ऐसे चला जा रहा था मानो वो इस अस्पताल से भली-भाँति परिचित हो। एक बड़े-से हॉल में बहुत सारे बेड लगे हुए थे। हमने अपनी नज़रें दौड़ानी शुरू कीं। चारों ओर मरीज़ों को देखकर मुझे ऐसा लगा कि वोमिट आ जाएगी। मैंने रुमाल निकाल कर नाक-मुँह पर लगा लिया। इससे दवाइयों की आ रही गंध कुछ कम ज़रूर हो गई।

“वो रहा।” प्रतीक ने हाथ से इशारा करते हुए कहा। मैंने उधर देखा। वहाँ अंकुर और दो-तीन लड़के खड़े थे। हम भी वहीं चल दिए।

वे सब भूपी को घेरे हुए थे। भूपी बिस्तर पर बेहोश पड़ा हुआ था। उसका चेहरा अब भी उतरा हुआ ही लग रहा था, बेहोशी की हालत में भी। इरशाद वहाँ नहीं था।

“क्या हुआ इसे?” मैंने अपनी नाक से रुमाल हटाते हुए अंकुर से पूछा।

“भगवान जाने।”अंकुर बोला।

“क्यों, डॉक्टर ने क्या कहा?” यह सवाल प्रतीक की तरफ़ से था। जिसमें वो माहिर था। यह उसकी बदक़िस्मती थी कि वो स्टूडेंट था। उसे तो क्वेश्चन पेपर सेट करने वाला होना चाहिए था। मेरे पापा इसमें उसका हाथ बँटा सकते थे।

“डाक्टर कह रहे हैं कि उसने ट्राइका खाई है।” अंकुर ने ऐसे कहा जैसे कि उसे उम्मीद

थी कि हम ट्राइका के बारे में जानते हैं। काश! कि उसने ट्राइका न कहकर क्लोरोमिंट कहा होता। मैं मन-ही-मन मुस्कराया। उसने हमारे चेहरे को देख शायद यह बात समझ ली और अपनी बात को एक्सप्लेन करते हुए बोला, "आई मीन, नींद की गोलियाँ। सुसाइड अटेंप्ट।"

"व्हाट! भूपी ने ख़ुद को मारने की कोशिश की?" प्रतीक ने आश्चर्य से कहा। उतने ही आश्चर्य से जब उसने कहा था, "दीज़ गाय्ज आर गे। ब्लडी गे।"

"पुलिस केस है यार। जब तक पुलिस नहीं आ जाती ये लोग इसे हाथ भी नहीं लगाएँगे।" अंकुर बोला।

"ब्लडी सिस्टम, आइ हेट दिस सिस्टम।" मैंने ऐसे कहा मानो हर कोई जानना चाहता हो कि मुझे क्या पसंद है और क्या नहीं।

"बट उसने अपने को ख़त्म करने की कोशिश क्यों की?" अंकुर ने पूछा। फिर वो जवाब की अपेक्षा में हमारे चेहरों की ओर ताकने लगा। द न्यू क्वेश्चन पेपर सेटर। मेरी नई खोज।

"पता नहीं, कल शाम तक तो नॉर्मल था। और यह तो वैसे भी कम ही बोलता था। कभी कुछ बताया नहीं।" कल रात वाली बात को छिपाते हुए मैं बोला।

"इरशाद कहाँ है?" प्रतीक ने पूछा।

"पता नहीं। उसने कहा कि तुम अस्पताल पहुँचो, मैं आता हूँ। अब तक तो आया नहीं।" अंकुर ने जवाब दिया।

"वो नहीं आएगा।" मैंने मन-ही-मन कहा।

डाक्टर नहीं आए थे। उसका ट्रीटमेंट शुरू नहीं हुआ था। शायद वो पुलिस का इंतज़ार कर रहे थे। मैं इस तरह का सीन कई फ़िल्मों में देख चुका था।

"वेयर इज द डॉक्टर?" इधर-उधर नज़रें घूमाते हुए प्रतीक बोला।

"शायद अपने केबिन में हो।" अंकुर ने जवाब दिया।

"डॉक्टर का नाम क्या है?"

"डॉ. भास्कर।"

"हम्म।" इतना कहकर प्रतीक डॉक्टर के केबिन की ओर बढ़ गया। मैं भी उसके पीछे हो लिया। हम इमरजेंसी वार्ड से बाहर आ गए थे।

"कहीं मेरी वजह से तो उसने यह सब नहीं किया?" प्रतीक चलते-चलते बोल रहा था, "उसे शायद अपने-आप पर शर्म आई हो और अपनी बेइज़्ज़ती से बचने के लिए....।"

"देख ऐसा कुछ नहीं है। अपने-आपको दोषी मत समझ। और अगर ऐसा है भी तो तुम अकेले नहीं हो। मैं भी तुम्हारे साथ था।" मैंने प्रतीक की बात बीच में काटते हुए कहा।

"पर उससे मेरा या तुम्हारा अपराध कम तो नहीं हो जाता। हमने उससे कहा कि हम उससे नफ़रत करते हैं। जिसके साथ इतने दिन बिताए। वो हमारे ग्रुप का हिस्सा था। उससे नफ़रत। अचानक नफ़रत। बिकॉज़ ही इज नॉट नॉर्मल। और उस कमीने इरशाद को हमने कुछ नहीं कहा। हमने अपना पूरा ग़ुस्सा उस पर उतार दिया।"

"वो कमीना तो एक बार भी यहाँ नहीं आया।"

"आएगा भी नहीं। उसे डर है। डरपोक है वो।" कहते हुए प्रतीक की आवाज़ थोड़ी तेज़

हो गई थी।

एसएमएस की गैलेरी काफ़ी लंबी थी। प्रतीक एक कमरे के आगे जाकर रुक गया।

“डॉ. भास्कर।” मैंने कमरे के बाहर लिखे हुए नाम को पढ़ा।

“तुम यहीं रुको, मैं आता हूँ।” प्रतीक मुझे रुकने का कहकर ख़ुद वहाँ से चल दिया। मैं वहीं खड़ा रहा। पता नहीं प्रतीक ने अंदर क्या बात की। मुझे बाहर खड़े-खड़े सुनाई भी नहीं दी, भले ही मैंने दो बार दरवाज़े से कान लगाए। दस मिनट बाद प्रतीक डॉक्टर के साथ बाहर निकला। मैंने डॉक्टर को हैलो कहा। उसने गर्दन हिला दी।

पिछले दो दिन से जो हो रहा था वो कल्पना से परे था। अप्रत्याशित था। यह दो दिन मुझे मेरे मोबाइल से दूर किए जा रहे थे। नेहा से दूर किए जा रहे थे।

डॉक्टर ने चेकअप किया। बेहोश भूपी की आँखों को खोलकर देखा। फिर पास में खड़ी नर्स को अपनी डॉक्टरों वाली भाषा में कुछ कहा। जिसे मैं नहीं समझ पाया और प्रतीक समझा कि नहीं...पता नहीं। फिर नर्स इंजेक्शन की तैयारी करने लगी। मुझे इंजेक्शन से डर लगता था। पर यह मेरे लिए नहीं भूपी के लिए था। शायद उस डॉक्टर ने इंजेक्शन लगाने के लिए ही कहा था।

“आप इसे घेर के खड़े मत रहें। कोई एक यहाँ रहे बाक़ी चाहें तो जा सकते हैं। घंटे भर में यह होश में आ जाएगा। ट्राइका की ओवरडोज़ से यह बेहाशी की हालत में चला गया है।” डॉक्टर ने मामला साफ़ किया और हमारा तनाव कम किया।

“आइ होप ही इज़ आउट ऑफ़ डेंजर।” प्रतीक ने कहा।

“यस बेटा, लेकिन अगर इसने दो-चार गोलियाँ और खा ली होतीं तो शायद क्रिटिकल स्टेज होती। पर अभी चिंता की कोई ख़ास बात नहीं है। बस एक बार इसे होश आ जाए। इसने आत्महत्या की कोशिश की है और यह दुबारा भी कर सकता है। इसे अकेला मत छोड़ना।” डॉक्टर भास्कर ने नर्स को कुछ लिखकर दिया और फिर हमें पूरी स्थिति से अवगत कराया।

“पुलिस को इंफ़ॉर्म पहले ही किया जा चुका है। सो, वो तो आएगी ही। उससे निपटना तुम्हारी ज़िम्मेदारी। मुझसे जो बन पड़ेगा, मैं करूँगा।” डॉक्टर ने अपनी बात पूरी की।

या तो वो एक सामान्य डॉक्टर नहीं था या हम सामान्य नहीं थे। कोई तो बात थी, वो हमसे बहुत तमीज़ से बात किए जा रहा था।

बचपन से मैं बहुत-सी कहावतों को सुनते आया था। उनमें से एक थी, शैतान का नाम लो शैतान हाज़िर। और उस दिन मैंने इसे सच होते देखा। सामने से एक पुलिस इंसपेक्टर और एक कांस्टेबल हमारी ओर चले आ रहे थे। मैंने प्रतीक के चेहरे की ओर देखा। उस समय अंकुर भी उसी की ओर देख रहा था और प्रतीक ने आशा भरी नज़रों से डॉक्टर की ओर देखा। तब तक वो दोनों हमारे पास आ चुके थे।

“डॉक्टर हमें बताया गया था कि यहाँ कोई सुसाइड केस है।” इंस्पेक्टर ने डॉक्टर से कहा और एक नज़र हम सब पर भी डाल दी। मैंने चेहरे को नॉर्मल बनाने की कोशिश की।

“इट वाज जस्ट ए फर्स्ट साइट ओपिनियन। दरअसल, आजकल के स्टूडेंट पर इतना

दबाव होता है कि वो अधिक-से-अधिक पढ़ना चाहते हैं। इसी तनाव में इन्हें नींद नहीं आती। सो, अधिकतर स्टूडेंट्स को एग्जाम्स के समय नींद की गोली खाते हुए देखा गया है और कई बार अनजाने में यह लोग ज़्यादा गहरी नींद के लालच में ओवरडोज ले लेते है। यहाँ भी यही हुआ है।" डॉक्टर ने पूरी कोशिश की भूपी को बचाने की।

उनकी बात सुनकर इंस्पेक्टर ने ऐसे गर्दन हिलाई मानो वो सारी बात समझ गया हो। फिर उसने हमारी ओर देखा।

"यह लोग कौन हैं?" यह सवाल पूछ कर उसने हमें जवाब का ऑप्शन भी दिया, "उसके साथ हो क्या?" हालाँकि उसकी आवाज़ में घनघोर बेरुखी थी। अंकुर के चेहरे पर पसीना अपना हक़ जमाने लगा। मैं प्रतीक की ओर देखे जा रहा था।

"हाँ, हम लोग एक ही हॉस्टल में रहते है।" प्रतीक बोला। इंस्पेक्टर ने कुछ सेकेंड की ख़ामोशी ली। शायद वो अगला सवाल सोच रहा था। इसका मतलब मेरे पापा इस इंस्पेक्टर से तो अच्छे हैं, आख़िर उन्हें सवाल पूछने के लिए सोचना जो नहीं पड़ता।

"यह पहले भी नींद की गोली लेता था?" इंस्पेक्टर को सवाल मिल गया था।

"हाँ।" मैंने कहना शुरू किया, "एक्च्युली हम सभी लेते हैं।" मेरी इस बात पर प्रतीक और अंकुर ने ऐसे एक्सप्रेशन दिए मानो वो मेरी बात से पूरी तरह सहमत थे।

कुछ सेकेंड ख़ामोश रहने के बाद इंस्पेक्टर ने डॉक्टर से हाथ मिलाया और एक नज़र भूपी पर डालते हुए वहाँ से चल दिया।

"यू आर रियली स्पॉन्टेनियस।" डॉक्टर ने मुझसे कहा। मैं मुस्कुरा दिया।

"थैंक्यू।" प्रतीक ने डॉक्टर से कहा। फिर वो दोनों इमरजेंसी वार्ड से बाहर चल दिए। मैं और अंकुर वहीं भूपी के पास खड़े रहे। थोड़ी देर बाद प्रतीक वापस आ गया।

"डॉक्टर ने कहा है कि आज रात इसे यहीं रखना पड़ेगा और जब तक इसे होश नहीं आ जाता, हममें से किसी-न-किसी को तो यहाँ रुकना ही होगा। तुम एक काम करो अंकुर, तुम शाम तक यहाँ रुक जाओ। तब तक हम दोनों खाना खाकर आ जाते हैं। फिर हम दोनों रात को यहाँ रुक जाएँगे। तुम चले जाना।" प्रतीक की बात पर अंकुर ने गर्दन हिला दी। ओह गॉड! मुझे भूपी की हिलती गर्दन याद आ गई। इट मीन्स अंकुर ऑलसो....नो नो नो।

"ठीक है। पर जल्दी आ जाना। यूँ नहीं कि टेस्ट की तैयारी करने बैठ जाओ।" अंकुर ने भूपी के पास बैठते हुए कहा। उसके कहने से एक बार फिर याद आया कि टेस्ट की तैयारी तो हो ही नहीं पा रही। कल की रात तो ख़राब ही गई और आज की रात भी...। शायद अब नेहा को मैं कभी फ़ोन नहीं कर पाऊँगा। राजस्थान से था, ज़बान से नहीं मुकर सकता था। इन सबके बीच हम यह तो भूल ही गए थे कि हम जयपुर एमबीए में एडमिशन लेने आए थे। मैं और प्रतीक डिवाइन पैलेस चल दिए। वहाँ जाकर देखा तो इरशाद के रूम पर ताला लगा हुआ था।

"ब्लडी डरपोक। अब तक वापस नहीं आया।" प्रतीक बोला। प्रतीक को आजकल ग़ुस्सा कुछ ज़्यादा ही आ रहा था। पता नहीं वो किसका ग़ुस्सा कभी इरशाद, कभी अंकुर और कभी भूपी पर निकाल रहा था।

रात के दस बज चुके थे। मैं अपने साथ एक बैग ले आया था जिसमें रीजनिंग की आर एस अग्रवाल की बुक रखी थी। मैंने सोचा शायद कुछ फ़ायदा हो। वक़्त मिलेगा तो पढ़ लेंगे। भूपीज सुसाइड अटेंप्ट वाज अबाउट टु किल माय रिलेशनशिप विद नेहा। "बाय द वे, वाट कांइड ऑफ़ रिलेशन आइ हैव विद हर?" मुझे मेरे ही सवाल का जवाब नहीं मिला। ज़िंदगी में दूसरों के लिए चाहे जितना करो सब होता जाएगा पर जैसे ही अपने लिए कुछ करने की कोशिश करेंगे, सब मामला बिगड़ता जाएगा। भूपी को ट्राइका खानी ही थी तो तीन दिन और इंतज़ार नहीं कर सकता था। टेस्ट तो हो जाने देता।

भूपी को होश आ गया था। पर शरीर में कमज़ोरी थी। शायद उसने ट्राइका कुछ ज़्यादा ही ट्राय कर ली थी। वो बोलने वाली हालत में नहीं लग रहा था या फिर शायद वो कुछ बोलना ही नहीं चाह रहा हो। हमें देखकर उसने नज़रें नीचे झुका लीं। उसकी आँखों से लुढ़क कर नीचे गिर आए आँसू हम साफ़ तौर पर देख पा रहे थे। उसे जनरल वार्ड से निज़ी वार्ड में शिफ़्ट कर दिया गया था। पता नहीं प्रतीक ने यह सब कैसे मैंनेज किया। सरकारी अस्पताल में वार्ड पाना किसी चुनाव में टिकट पाने से कम मुश्किल नहीं होता। आने के बाद उसने एक बार डॉक्टर भास्कर से ज़रूर बात की थी। शायद उन्होंने ही यह वार्ड दिलवाया था। मैं और अंकुर भूपी के बेड के पास रखी कुर्सियों पर बैठे थे। जिन पर बैठना अपने-आप में सज़ा थी। लकड़ी के पाटिये की कुर्सी से निकली कील चुभ रही थी। सो, मैं खड़ा हो गया। वार्ड की दीवारों पर जगह-जगह से प्लास्टर उखड़ा हुआ था या जगह-जगह पर लगा हुआ था, कह पाना मुश्किल था। वहाँ जनरल वार्ड से कम बदबू थी। कम मरीज़ कम बदबू। मतलब मरीज़ों की संख्या हॉस्पिटल से आने वाली बदबू के अनुक्रमानुपाती है। मतलब मेरी रीजनिंग स्किल्स अच्छी है। मतलब अभी भी मोबाइल जीतने का चांस है। मैं मुस्कुराया। शायद यह नेहा का ही प्रभाव था।

भूपी को दवाई दे दी गई थी। दवाई के पैसे प्रतीक ने दिए थे। हालाँकि मैं भी दे सकता था पर प्रतीक ने मुझे रोक दिया। अंकुर ने बताया कि उसने भूपी से ज़्यादा बातें नहीं की। बस खाने के बारे में पूछा। डॉक्टर के कहे अनुसार उसे जूस पिला दिया था। अंकुर वापस जा चुका था। हम भूपी के ठीक सामने बैठे थे। भूपी हमसे नज़रें नहीं मिला पा रहा था। प्रतीक उससे कुछ कहना चाह रहा था, पर मैंने आँखों से इशारा कर कुछ भी बात करने से मना कर दिया। कहीं प्रतीक फिर से वो सारी बातें न छेड़ दे। मैंने प्रतीक के कंधे पर हाथ रखा और नज़रों से बाहर की ओर चलने का इशारा किया। मैंने सोचा बाहर जाने से पहले भूपी से कुछ भी कहके यह जता देना चाहिए कि हम उसके साथ हैं और हमें उसकी फ़िक्र है।

"तुम चाय लोगे? हम पीने जा रहे हैं तुम्हारे लिए लेते आएँगे।" अपनी फ़िक्र जताने का मुझे इससे बेहतर तरीक़ा नहीं सूझा। मैंने भूपी के जवाब का इंतज़ार किया पर उसने अपनी

गर्दन को आज नहीं हिलाया। द हेंगिंग नेक वाज़ ऑन रेस्ट। “डोंट वरी यू विल बी ऑल राइट।” प्रतीक ने कहा। भूपी की आँख से एक बार फिर आँसू लुढ़क गए। प्रतीक ने उसके सिर पर हाथ फेरा। फिर प्रतीक ने इशारा किया और हम दोनों रूम से बाहर आ गए। भूपी रूम में अकेला था।

“एसएमएस के बाहर की चाय की दुकान हर टाइम खुली रहती है।” प्रतीक ने वार्ड से बाहर आकर गैलेरी में चलते हुए कहा। प्रतीक जयपुर के बारे में सबकुछ जानता था, पता नहीं कैसे!

मैंने उसकी बात पर प्रतिक्रिया देने के लिए एक बार उसके चेहरे पर नज़र डाल दी। जिसका मतलब था कि मुझे उसके इस ज्ञान की कद्र है और मैं चाय पीने का इच्छुक हूँ।

वहाँ की चाय सत्तु की चाय से बेहतर नहीं थी। अपनी चरम सीमा तक काली हो चुकी चाय की पतीली को देखते हुए चाय को निगल पाना मुश्किल हो रहा था। ऐसे में हम वहाँ से उठकर वापस एसएमएस की चारदीवारी में आ गए। डिस्पोज़ल कप गर्म होने की वजह से हाथ जल रहा था। मैंने उसे कोने से पकड़ लिया। हालाँकि कप पकड़ने का यह तरीक़ा काफ़ी अनोख़ा था। प्रतीक अपने कप के साथ काफ़ी सहज था।

“प्रतीक, एक बात बताओ यार। यू नो अबाउट एसएमएस। यू नो अबाउट डॉक्टर्स केबिन। गौरव टावर, बरिस्ता, कॉफ़ी हाउस। तुम जयपुर के बारे में इतना सब कैसे जानते हो, तुम तो जोधपुर से हो?” मैं हाथ में कप पकड़े बोले जा रहा था और बात ख़त्म करके कप को मुँह से लगाया। चाय ठंडी हो चुकी थी। मैं कप को अब आसानी से पकड़ सकता था। प्रतीक अब तक चाय ख़त्म कर चुका था। मेरे सवाल का अब तक उसने जवाब नहीं दिया था।

“मेरे ख़्याल से यह तुम्हारे लिए अनजान शहर है?” मैंने जवाब के इंतज़ार में सवाल को फैलाया। चाय का कप अब तक मेरे हाथ में था। हम अब एसएमएस की पार्किंग के पास से गुज़र रहे थे। “एक अजनबी जयपुर के बारे में इतना सब कैसे जान सकता है?”

“जयपुर इज ब्लडी माय ओन सिटी। आइ एम नॉट ब्लडी स्ट्रेंजर। मेरा अपना शहर है जयपुर।” प्रतीक चिल्लाते हुए बोला। उसकी आवाज़ में ग़ुस्सा साफ़ झलक रहा था। जैसे कि बातों को दोहराना उसकी आदत थी, उसने एक बार फिर दोहराया।

“आइ एम नॉट ब्लडी स्ट्रेंजर।”

मैं उसके चेहरे की ओर ताकने लगा। जयपुर इसका अपना शहर है। पर इसने तो कुछ और ही बताया था। मुझे इतना आश्चर्य हुआ मानो उसने कहा हो कि वो मंगल ग्रह से आया है।

“व्हॉट!” मेरे मुँह से निकला। मैं चलते-चलते रुक गया। चाय अब पूरी तरह से ठंडी हो चुकी थी। मैंने कप में बची दो घूँट चाय को नीचे गिरा दिया।

मैंने प्रतीक के चेहरे को प्रश्नवाचक नज़रों से घूरा। प्रतीक चुप था। कुछ देर की चुप्पी के बाद उसी ने कहना शुरू किया।

“मैं चार साल पहले जयपुर में ही रहता था।” प्रतीक ने रहस्योद्घाटन किया। “हम सब

जयपुर में ही रहते थे। मैं, मेरी मम्मी और पापा।" पापा कहते हुए उसके चेहरे के भाव बदल गए थे। "फिर वो हमें छोड़ किसी और के पास चले गए।" प्रतीक ने गहराती आवाज़ में कहा। मैंने सोचा कि शायद मुझे नहीं पूछना चाहिए था।

"आई एम सॉरी।" मैंने कहा।

"सॉरी फॉर व्हॉट? यू मस्ट नॉट बी। अगर किसी को सॉरी कहना चाहिए तो उन्हें जिन्होंने हमारी ज़िंदगी को बर्बाद कर दिया।" प्रतीक पूरे आवेश में था।

"पापा और मम्मी की अरेंज मैरिज थी। कुछ साल बाद दोनों में झगड़े होने लगे। पापा डॉक्टर थे और मम्मी एक सीधी-सादी दसवीं पास गृहिणी। शायद एक-दूसरे को समझ नहीं पाए। लड़ाई-झगड़े होने लगे और एक दिन अलग होने का डिसीजन ले लिया। बिना मुझसे पूछे। मम्मी ने तलाक़ देने से मना कर दिया। मुझे कहा गया कि जिसके साथ रहना चाहूँ रहूँ। मैंने पापा को चुना। मम्मी नाना-नानी के पास जोधपुर चली गई।" प्रतीक ने बात पूरी की।

"और तुम अपने पापा के पास ही रह गए। फिर तुम पापा से अलग कैसे हुए।" मैं काफ़ी कुछ जान लेना चाहता था।

"हुआ कहाँ, कर दिया गया।"

"समझा नहीं।"

"पापा और मैं बड़े प्यार से साथ रहते थे। जब चाहता मम्मी से मिलने चले जाता। फिर एक दिन पापा ने दूसरी शादी कर ली। कुछ दिन तो सब सही चलने लगा। फिर पापा तनाव में रहने लगे। उनकी नई पत्नी भी मुझसे रूखा बर्ताव करने लगी। पापा छोटी-छोटी बात पर ग़ुस्सा कर देते। एक बार रात को ज़रा-सी देर से क्या आया, मुझ पर टूट पड़े। क्या-क्या नहीं कहा। बिल्कुल अपनी माँ जैसे हो। कुछ नहीं कर सकते लाइफ़ में। यहाँ भी हमारा जीना मुश्किल कर रखा है। तुम्हारी वजह से मेरी नई ज़िंदगी में भी ख़ुशियाँ नहीं हैं। कब तक तुम्हारा बोझ ढोना पड़ेगा? चले जाओ इस घर से अपनी माँ के पास और फिर कभी दुबारा मत आना। कभी नहीं। मैं तुम्हारा मुँह नहीं देखना चाहता। मैं कुछ समझ ही नहीं पाया। बस रोता रहा। कोई चुप कराने नहीं आया। पहली बार मम्मी बहुत याद आई। अगले दिन पापा ने मुझे जोधपुर की बस में बैठा दिया और एक बार मुड़कर भी नहीं देखा। मैंने उस दिन तय कर लिया कि मैं उनसे उतनी नफ़रत करूँगा जितनी कभी किसी बेटे ने अपने बाप से नहीं की होगी।" कहते-कहते प्रतीक की आँखें लाल हो गई थीं।

पर इतने पर वो रुका नहीं। बरसों से जो मन में फँसा था आज वो निकाल देना चाहता था। "यू नो, मेरे नाना-नानी ने कई बार कहा मेरी मम्मी से कि वो तलाक़ ले ले। पर उन्होंने ऐसा नहीं किया। मेरी मम्मी ने तलाक़ लेने से साफ़-साफ़ मना कर दिया। आज चार साल से मैंने अपने पापा को नहीं देखा। न ही उनकी आवाज़ सुनी।" प्रतीक की आवाज़ भर्राने लगी। अगर उस वक़्त मैं उसे गले नहीं लगाता तो वो शायद रो देता। मैंने उसे काफ़ी देर तक गले लगाए रखा। भले ही मेरी शर्ट से पसीने की बदबू आ रही थी पर उसने अलग होने की कोशिश नहीं की। इसका मतलब कि उसे अच्छा लग रहा था। आज इतने दिनों बाद वो अपने दिल की बात किसी से कह पा रहा था, जो शायद जन्मदिन वाली रात को ही कहना चाह

रहा था। जब उसने कहा था, “आइ एम नॉट हैप्पी।”

“अब तुम्हारी मम्मी कहाँ रहती हैं?”

“जोधपुर। जैसा कि मैंने तुमसे कहा था। वो मेरा ननिहाल है। हम लोग वहाँ नाना-नानी के घर पर रहते हैं। पर मुझे वहाँ रहना अच्छा नहीं लगता। हम नया घर ख़रीद सकते थे पर फिर मम्मी को अकेले रहना पड़ेगा। इसलिए हम वहीं रहते हैं। मैं अपनी माँ को इतनी लाचारी की हालत में नहीं देख सकता। इसलिए कम-से-कम जाता हूँ मैं वहाँ। एमबीए होने के बाद मम्मी को अपने पास ही बुला लूँगा।”

“फिर तुम इंस्टीट्यूट की फ़ीस वगैरह...आई मीन यह सब अफोर्ड कैसे करते हो?” मुझे नहीं पता था कि मुझे क्या पूछना चाहिए और क्या नहीं। बस प्रतीक के मन की हर बात मैं जान लेना चाहता था। मुझे पता नहीं था कि प्रतीक की ज़िंदगी में इतनी परेशानियाँ हैं या किसी के चारों ओर ऐसा माहौल भी हो सकता है। मेरे लिए तो मेरी मम्मी का मेरी पैंट को पोंछा बना लेना या पापा का बार-बार सवाल पूछना ही सबसे बड़ी परेशानी थी।

“हर महीने पापा मेरे खाते में बहुत से पैसे जमा करा देते हैं। मेरे न चाहते हुए भी। मुझे उनसे उनका साथ चाहिए न कि पैसे। पर मेरे पास और कोई चारा भी नहीं है। मुझे पैसों की सख़्त ज़रूरत है। मैं मम्मी को किसी के भी आगे हाथ फैलाते हुए नहीं देखना चाहता। ख़ासतौर से मेरी वजह से। मुझे उनके दिए पैसों को काम में लेना पड़ता है। लेकिन एक-एक पैसे का हिसाब मैं अपनी डायरी में लिखता हूँ। जिस दिन में कमाने लगूँगा, उनकी पाई-पाई चुका दूँगा।” प्रतीक की आँखों में भर आए आँसू अब की बार छलक ही पड़े। प्रतीक ने आँसू पोंछे और बोला, “मैं अपनी रूटीन लाइफ़ में अपने दुःख को शामिल नहीं करना चाहता। मैं हमेशा ख़ुश रहना चाहता हूँ और मम्मी को भी ख़ुश देखना चाहता हूँ। शी इज इंपोर्टेंट टु मी। शी इज एवरीथिंग टु मी। मेरे लिए सबकुछ वो ही हैं।” प्रतीक ने अपनी पूरी किताब मेरे सामने खोलकर रख दी। मुझे नहीं सूझा कि मैं उससे क्या कहूँ। ऐसी सिचुएशन के लिए मेरे पास कभी भी शब्द नहीं रहे थे। मैं उसे किसी प्रकार के सांत्वना वाले शब्द नहीं कहना चाहता था। मुझे पता था प्रतीक को उनकी ज़रूरत नहीं है। वो मेरी सोच से ज़्यादा मज़बूत था।

हम चलते-चलते एक बार फिर एसएमएस की गैलेरी में आ गए थे। भूपी को अकेले छोड़े हमें एक घंटे से ऊपर हो गया था। सो, हम वापस वार्ड की तरफ़ चल दिए। प्रतीक के साथ बिताया पिछला एक घंटा मुझे प्रतीक के और क़रीब ले आया था। जब पापा ने मुझे प्रतीक के बारे में जानने को कहा था, तब उसे जानने की कोशिश करता तो उसे इतना क़रीब से नहीं जान पाता। थैंक्स, थैंक्स टु मी। आख़िर मैंने ही तब यह निर्णय लिया था कि प्रतीक से उसकी फैमिली के बारे में नहीं पूछूँगा। प्रतीक को अंदर से इतना दुःखी देखकर मैं उसे एक बार फिर वो कॉफ़ी हाउस वाला क़िस्सा नहीं बता पाया।

———————

भूपी अभी सो रहा था। ऐसा हमें लगा। क्योंकि उसकी आँखें बंद थीं और वो एक करवट

लेटा हुआ था। उस कमरे में सोने के लिए कोई दूसरा बिस्तर नहीं था, जहाँ हम दोनों थोड़ी देर के लिए पाँव पसार सकते। हमने अपने-आपको कुर्सियों पर ही पसार दिया। मैंने अपने पाँव भूपी के बेड के नीचे लगे लोहे के सरिये पर रख दिए। मैं अब आराम की स्थिति में था। शायद इस बार कील वाली कुर्सी प्रतीक के पास थी। मैंने सोचा कि प्रतीक परफेक्ट है, वो मैनेज कर लेगा। आख़िर वो पिछले कई सालों से अपनी लाइफ़ को मैनेज कर ही रहा था, बिना अपने पिता के। पिता जो कि ज़िंदा हैं, पर उसके साथ नहीं। प्रतीक कुर्सी पर बैठ गया था। हम दोनों चुप थे। मैं सोच रहा था कि भूपी के जगने पर उससे क्या बात की जाए। शायद प्रतीक भी यही सोच रहा था। मैंने एक नज़र अपने बैग पर डाली। पर अभी पढ़ने का मन नहीं हो रहा था। आँखों में नींद थी। पर सोने की जगह नहीं थी और यूँ कुर्सी पर सोने की हमें आदत नहीं थी। भूपी के सिरहाने दवाइयाँ रखी थीं। मैंने एक नज़र प्रतीक पर डाली, उसकी आँखें बंद थीं। शायद उसे झपकी आ गई थी। वो मानसिक रूप से काफ़ी थका हुआ था। पर मुझे नींद नहीं आ रही थी। मेरे लिए उस स्थिति में ज़्यादा देर बैठे रहना और ज़्यादा तकलीफ़देह हो सकता था। मेरी ग़लतफ़हमी अब तक दूर हो चुकी थी। कील अब भी मेरी ही कुर्सी में थी। मैंने अपना वज़न कुर्सी के कोने पर डाला तो कील ने अपना काम कर दिखाया। चुभन इतनी तेज़ थी कि मेरा चिल्लाना जायज़ हो सकता था। पर प्रतीक और भूपी को सोता देख नहीं चिल्लाया। मेरी इस क़ुर्बानी का उनको कभी पता नहीं चलेगा।

रात के साढ़े ग्यारह बज चुके थे। वार्ड की लाइट बंद थी। सो, आर एस अग्रवाल को मैंने अपने बैग में ही रेस्ट देना ठीक समझा। हालाँकि एक बार तो सोने की कोशिश की पर उसमें कामयाब नहीं हुआ। जब ऐसा होता है तो वक़्त गुज़ारने को दिमाग़ ऊटपटांग बातें सोचने लगता है। जैसे कि मेरे दिमाग़ में आया कि अगर मेरी स्थिति किसी फ़िल्म में राजकुमार की होती तो वो कहता, "जानी, आँख बंद करने और सोने में फर्क़ होता है। समझे!" मैंने देखा कि मेरे हाथ मेरी गर्दन को खुजा रहे थे। मैं मुस्कराया। इस एक ख़्याल ने मेरे तीन मिनट पास कर दिए। आइ वाज़ हैप्पी। जब हम जानबूझकर कोशिश करते हैं तो हमारे दिमाग़ में कोई ख़्याल नहीं आता। सो, मेरी सारी कोशिश बेकार गई। मैं अपनी कुर्सी से उठा। उठने पर कील से जितना दर्द हुआ उतना उसके चुभने पर भी नहीं हुआ था। मेरी एक और क़ुर्बानी।

मैंने एक नज़र भूपी और प्रतीक पर डाली। उन दोनों को चैन से सोता देखकर जलन होने लगी। मैं वहा से बाहर आ गया। अब मैं गैलेरी में था। जहाँ कई वार्ड बने हुए थे। पूरी गैलेरी में रोशनी थी। ट्यूब लाइट्स लगी हुई थीं। एक ट्यूब लाइट लुप-झुप कर रही थी। गवर्नमेंट हॉस्पिटल में सबको पूरी आज़ादी है, जैसा चाहें वैसा बिहेव करें। मैंने ट्यूबलाइट को देख मन-ही-मन कहा और मुस्करा दिया। मुझे इस तरह अकेले में ट्यूबलाइट देखकर मुस्कुराते हुए कोई देख लेता तो यक़ीनन पागल समझ लेता। मैं गैलेरी में आगे बढ़ गया। गैलेरी सुनसान थी। वहाँ से निकलकर एक बार फिर इमरजेंसी वार्ड से होता उसके पीछे की ओर आ गया। इतनी रात को अकेले हॉस्पिटल में घूमना अजीब लग रहा था। पर यह उस बोरियत से तो भला था। उसके पीछे की ओर शायद स्पेशल वार्ड थे। शायद वीआइपी वार्ड। वहाँ थोड़ी चहल-पहल थी। पेशेंट से मिलने वाले कुछ लोग जा रहे थे। मैंने देखा एक महिला

हाथ में टिफिन लिए आ रही थी। शायद पेशेंट के लिए खाना लाई होगी। वो काफ़ी दूर थी। जैसे-जैसे पास आती गई उसका चेहरा साफ़ दिखाई देने लगा। मैंने उसके चेहरे पर नज़र जमाई। "ओह माय गॉड! यह तो नेहा की बुआ हैं।" मैंने ख़ुद से कहा। आवाज़ इतनी ही थी कि मैं ख़ुद सुन सकूँ। "कहीं नेहा तो...नो नो...शुभ-शुभ सोच अनुराग। वो एक वार्ड के अंदर चली गईं। मैं वहीं गैलेरी में चक्कर काटता रहा। ठीक दस मिनट बाद उस वार्ड से कोई बाहर निकला। वो नेहा थी, मैंने दूर से ही देखकर पहचान लिया। मैं उसके पीछे की तरफ़ था। उसने लोअर और टीशर्ट पहन रखा था। मैंने हल्के से आवाज़ लगाई।

"नेहा।"

वो आवाज़ सुनकर रुक गई। मैं भागकर उसके पास गया। शी वाज लुकिंग सेक्सी इन दैट ड्रेस। पहली बार मैं उसे स्लीवलैस टीशर्ट में देख रहा था।

"हाय नेहा।" मैंने कहा।

"अनुराग!" उसके चेहरे को देखकर लग रहा था कि मेरी इस गेस्ट ऐपिरियंस पर उसे आश्चर्य हो रहा था। हालाँकि सोचा तो मैंने भी नहीं था कि इतनी रात इस तरह इस ड्रेस में नेहा मेरे सामने होगी।

"तुम यहाँ!" नेहा आश्चर्य से बोली। जैसे कि मेरे एसएमएस आने पर प्रतिबंध लगा हो।

मैं मुस्कुरा दिया। उसने एक नज़र मुड़कर वार्ड पर डालते हुए कहा, "हम यहाँ बात नहीं कर सकते। मेरी बुआ बाहर आ सकती हैं। वो उस वार्ड में हैं। तुम मुझे कार पार्किंग में आकर मिलो।" इतना कहकर वो पार्किंग की ओर चल दी।

"तुम यहाँ कैसे, इज ऐवरी थिंग ऑलराइट?" हालाँकि नेहा से मिलकर मैं ख़ुश था पर किसी को इतनी रात गए हॉस्पिटल में देखने के बाद यह सवाल पूछा जाना जायज़ था। हम एक काले रंग की सेंट्रो के पास खड़े थे। मैंने उसके गेट से अपनी पीठ सटा रखी थी और नेहा मेरे सामने खड़ी थी।

"कुछ सही नहीं है।" उसने गहरी साँस छोड़ते हुए कहा। उसकी आँखों में हल्की-सी नमी आ गई थी, जो मैं देख सकता था।

मैं कुछ नहीं बोला बस उसके चेहरे पर नज़र गड़ाए रहा। मुझे पता था थोड़ा-सा गैप लेकर नेहा बोलेगी और वो बोली, "मेरे अंकल जिनके पास में रहती हूँ, वो यहाँ एडमिट हैं। अचानक उनकी तबीयत ख़राब हो गई तो उन्हें लाना पड़ा। मेरी बुआ पिछले दो घंटों से रोए जा रही हैं।" कहते हुए उसके गालों पर आँसू लुढ़क आए। वो इन आँसुओं के साथ और ख़ूबसूरत लग रही थी। उसकी स्किन पर आँसू बड़ी नज़ाकत के साथ लुढ़क रहे थे। और मुँहासों पर से जब वो गुज़रते तो लगता वो किसी स्पीड ब्रेकर पर से गुज़र रहे हों।

"हाँ, मैंने तुम्हारी बुआ को देखा, वहाँ गैलेरी में। उनके हाथ में टिफिन था।" इतना कहकर मैं थोड़ा ख़ामोश हुआ। नेहा कुछ नहीं बोली। वो संभलने की कोशिश कर रही थी। उस चुप्पी को तोड़ना ज़रूरी था।

"तो डॉक्टर ने क्या कहा है, इज ही सीरियस?" मैंने पूछा।

उसने तीन सेकेंड का पॉज़ लिया और फिर कहा, "उन्हे कैंसर हैं।"

“क्या!” मैंने ऐसे रिएक्ट किया मानो मुझे इस दुनिया में सबसे ज़्यादा चिंता उसके अंकल की है।

“हाँ अनुराग।”

“अंकल को यह बात पता है?”

“हाँ, सबसे पहले उन्हें ही पता थी। उन्होंने बुआ को बताया और बुआ ने मुझे। कई सालों से उनका इलाज चल रहा है। पर इस मेडिकल साइंस के पास इसका इलाज नहीं। ये साइंटिस्ट भी....वियाग्रा बना देंगे पर कैंसर की वैक्सीन इनसे नहीं बनती।”

“काश कि मैं वैज्ञानिक होता नेहा! तो सबसे पहले कैंसर की ही दवाई खोजता।” यह मेरे मन की आवाज़ थी जो मन में ही रह गई, और यही उचित भी था।

“आइ लव माय अंकल एंड बुआ। और जब भी वो रोती हैं, मेरे दिल के टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं।” उसकी आवाज़ में दर्द था। उसकी बात सुनकर मैंने सोचा, “क्या मैं उनमें से किसी टुकड़े में रहता हूँ? शायद दिल के सबसे छोटे वाले टुकड़े में।”

नेहा रोने लगी। मुझे समझ नहीं आया मैं क्या कहूँ। पर कुछ तो कहना था। मैं इतना भी इडियट नहीं था कि उसे रोता छोड़ दूँ, जिसे मैं प्यार करता था।

“डोंट वरी, सब ठीक हो जाएगा। जल्दी ही, और अगर रोने से उनकी हालत में सुधार आता है देन आइ एम रेडी टु क्राइ विद यु।” ओह! इट वाज रियली वेरी इंप्रेसिव डायलॉग। मेरा अपना डायलॉग।

“आइ एम सॉरी, मुझे ऐसे नहीं रोना चाहिए।” कहते हुए उसने अपने आँसू पोंछे। मेरा डायलॉग अपना काम कर गया था।

“नेहा अगर तुम ऐसे टूट जाओगी, तो सोचो तुम्हारी बुआ कितनी दुःखी होंगी।”

“यू नो, वो भी रोती हैं। जब भी रोना होता है वो बाथरूम में जाकर रोती हैं।” नेहा बोली। वो अब तक अपने आँसू पोंछ चुकी थी। पर एक आँसू अब भी उसके मुँहासों में अटका था। औरतें भी कितनी खोजी प्रवृत्ति की होती हैं, रोने के लिए बाथरूम की खोज। सुरक्षित जगह।

“ओके यू टेल, तुम इतनी रात को यहाँ हॉस्पिटल में क्या कर रहे हो?” नॉर्मल होते हुए उसने पूछा। “मैंने सोचा कि तुम तो रातभर पढ़ते होगे ताकि एटलीस्ट एक सेक्शन में टॉप करके मोबाइल ख़रीद सको। मैं तुम्हारे फ़ोन कॉल का इंतज़ार कर रही थी। तुम्हारे अपने मोबाइल से, जैसा कि तुमने वादा किया था।” नेहा ने मुझको मेरा वादा याद दिलाया।

मुझे भूपी पर ग़ुस्सा आया। वो मेरी लव स्टोरी को शुरू होने से पहले ही ख़त्म कर देने पर आमादा था।

“दरअसल मेरा एक फ्रेंड हॉस्पिटल में एडमिट है। ही अटेंप्टड सुसाइड। एक्चुयली उसने ट्राइका खाली थी।” मैंने जानबूझकर ट्राइका का नाम लिया ताकि नेहा को लगे कि मुझे मेडिसिन्स के बारे में भी जानकारी है।

“ओह, देन?” उसने पूछा।

“अब ख़तरे से बाहर है।”

“पर उसने यह क्यों किया? कोई अफ़ेयर, फैमिली प्रॉब्लम!” उसने ऑपशन्स दिए। पर असल कारण का तो वो अंदाज़ा भी नहीं लगा सकती थी।

“पता नहीं।” मैंने उससे झूठ बोल दिया। ब्लडी भूपी। एक नेहा है जो अपने अंकल की ज़िंदगी के लिए लड़ रही है और एक वो है जो अपनी जान देने पे आमादा है।

“पता है, मैं दो दिन से पढ़ नहीं पाया। पता नहीं आगे क्या होगा, पर मैं कोशिश करूँगा।”

“तो अभी वो अकेला है।”

“नहीं, प्रतीक उसके साथ है। वो दोनों सो रहे हैं।”

“और तुम्हें नींद नहीं आ रही है, राइट?”

“एक्च्युली वहाँ वार्ड में सिर्फ़ एक ही बेड है। प्रतीक तो चेयर पर ही सो गया। मेरे लिए चेयर पर सोना मुश्किल है। स्पेशली अगर चेयर में कील हो तो।” मैंने मुस्कुराते हुए कहा। वो भी जवाब में मुस्कुरा दी।

“तभी जनाब गैलरी में घूम रहे थे!” उसने मेरे चेहरे पर ग़ौर से नज़र मारते हुए कहा। मैं एक बार फिर मुस्कुरा दिया।

“सो, देन...?” वो कुछ कहते हुए रुक गई। हालाँकि मुझे बाद में समझ आया कि लड़कियाँ जब लड़कों से कुछ सुनना चाहती हैं तब ऐसे बोलती हैं। नेहा ने कहकर एक बार फिर निगाहें मेरे चेहरे पर टिका दी। मैं चुप रहा। इडियट।

“चलो कॉफ़ी पीने चलें।” उसने कहा। इतनी रात को वो मुझे कॉफ़ी ऑफर करेगी यह मैंने सोचा नहीं था।

“पर तुम्हें तो घर जाना होगा!” मैंने कहा। दरअसल, मैंने जताया कि मुझे उसकी चिंता है।

“हाँ, आज रात को बुआ यहीं हॉस्पिटल में रुकेंगी और मैं अकेली घर पर। सो, अब मैं कहीं भी जाऊँ, बुआ के अनुसार तो मैं घर पर ही हूँ।”

“और अगर उन्होंने फ़ोन कर दिया तो।”

“तो कह दूँगी कि मैं सो गई थी। बुआ को जानती हूँ मैं, वो नहीं करेंगी। वो बस रोती रहेंगी।” इससे पहले कि वो फिर भावुक होकर रोने लगती मैंने उससे हाँ कह दिया।

“पर इस वक़्त कॉफ़ी कहाँ मिलेगी?”

“सरस पार्लर। चलो आज तुम्हें जयपुर की एक ऐसी जगह दिखाती हूँ जो पूरी रात जागती है।” नेहा बोली।

मैंने मन-ही-मन दोहराया, सरस पार्लर।

“विल यू ड्राइव?” कार का दरवाज़ा खोलते हुए नेहा बोली।

“मुझे चलाना कहाँ आता है!” मैंने मायूसी से कहा।

“इट्स ओके। बहुत आसान है सीखना।” उसने कहा और ड्राइविंग सीट पर बैठ गई। काश! कि वो भी कोमल की तरह कहती कि वो मुझे ड्राइविंग सिखा देगी।

मैं आगे उसके पास वाली सीट पर बैठ गया। मैंने कभी नहीं सोचा था कि रात को एक

बजे मैं नेहा के साथ उसी की कार में कॉफ़ी पीने जाऊँगा। थैंक्स टु भूपी। थैंक्स टु हिज सुसाइड अटेंप्ट। थैंक्स टु दैट ब्लडी कील।

———————

हर घड़ी बदल रही है रूप ज़िंदगी, छाँव है कभी-कभी है धूप ज़िंदगी...। "आई लाइक दिस सॉन्ग।" नेहा बोली। रेडियो मिर्ची पर यह गाना बज रहा था। हम जयपुर की किसी बहुत ही चौड़ी सड़क पर थे।

"आई टू, एक्च्युली सोनू निगम ने इसे बहुत प्यारी तरह से गाया है।" मैंने एक्सपर्ट कमेंट दिए।

"ओके। तुम्हें और क्या पसंद है...मेरा मतलब तुम्हारा पसंदीदा गाना?" नेहा ने पूछा। थैंक गॉड! कि गाना बोल के उसने मेरा जवाब गाने तक सीमित कर दिया।

"चाँद हुआ मद्धम।" मैंने कहा पर गुनगुनाने की कोशिश नहीं की। अगर करता तो वो कोशिश कम और गुस्ताख़ी ज़्यादा होती।

"ऐसे थोड़े ही है, इट्स सूरज हुआ मद्धम।" नेहा ने तुंरत मुझे टोका। मैं झेंप गया।

"जब से जयपुर आया हूँ, आज पहली बार गाने सुन रहा हूँ। सो, अब चाँद और सूरज में ज़्यादा फ़र्क़ नहीं रह गया।" मैं बोला और सुनकर वो मुस्कुरा दी, हमेशा की तरह।

मैं आपकी अपनी आर जे...पल्लवी। प्यार से लोग मुझे पल्लो कहते हैं। मौसम सुहावना हो रहा है। बाहर ठंडी हवा चल रही है। इस हवा के संग आपको सुनाती हूँ, ऐसा गाना जो आपको बना देगा मौसम के जैसे रोमांटिक।

ये रातें ये मौसम नदी का किनारा....ये चंचल हवा। एफएम पर गाना बदल गया था। मैंने नेहा की ओर देखा। खिड़की से आ रही हवा उसके बाल उड़ा रही थी और वो बार-बार उन्हें संभालने का जतन कर रही थी। मेरी नज़र एक बार फिसल के उसके हाथों पर गई। द वाइट सेक्सी स्किन।

"क्या हुआ!" उसने मेरी ओर देखे बग़ैर कहा। मैं झेंप गया।

"लंबे बाल रखना सच में कितना कठिन होता होगा।" मैंने कहा और नज़रें उसके ख़ूबसूरत हाथों से हटाई।

"ओह! तुम मेरे बालों को देख रहे थे।" वो एकदम सहजता से कह जाती थी और मैं झेंप जाता था। इतना कहकर वो मेरे चेहरे की ओर देखकर बोली, "जस्ट कीडिंग यार।" और हँस दी। उसने एक बार फिर अपनी आँख के आगे आ रहे बालों को हटाया।

गाना अब भी बज रहा था। हम दोनों चुप थे।

"सो, तुमने वो कॉफ़ी हाउस वाली बात प्रतीक को बताई?" नेहा ने बिना मेरी तरफ़ देखे पूछा।

"नहीं, जब भी बताने की कोशिश करता हूँ, उससे पहले ही कुछ ऐसा हो जाता है कि मैं नहीं बता पाता। मैं उसे उदास नहीं करना चाहता। उसकी ज़िंदगी में पहले ही बहुत-सी परेशानियाँ थोक के भाव आई हुई हैं।"

“अनुराग तुम्हारे भी ग़ज़ब दोस्त हैं। एक है जिसने सुसाइड करने की कोशिश की। दूसरा है जिसकी लाइफ़ में बहुत प्रॉब्लम है और उसकी गर्लफ्रेंड किसी और के साथ कॉफ़ी हाउस में चाय पी रही थी।” नेहा बोली।

“पर बात तुमने अधूरी कही।” मैंने कहा। उसने मेरी और देखा। मैंने कहना जारी रखा, “नो, मेरे तीन दोस्त हैं और तीसरे को भी दिक़्क़त है। जैसे कि उसके अंकल हॉस्पिटल में एडमिट हैं।” वो मेरी ओर देख के मुस्कुराई।

“तो इन तीन दोस्तों के बीच तुम अकेले हो जिसे कोई प्रॉब्लम नहीं है, प्रॉब्लम फ़्री मैन।”

“नहीं, इतना फ़्री भी नहीं हूँ।” मैंने उसके चेहरे की ओर देखकर कहा। वो सामने की ओर देख रही थी। जो कि गाड़ी चलाने का पहला नियम है। मेरी बात सुनकर उसने एक नज़र मेरे चेहरे पर डाली और पूछा, “रियली। व्हाट प्रॉब्लम? टेल मी।”

“मेरे इस दोस्त की प्रॉब्लम भी तो मेरी ही प्रॉब्लम है।” मेरा इतना कहना था कि नेहा ने एकदम से ब्रेक लगा दिए। मुझे लगा उसे मेरी बात बुरी लग गई। कहीं मैंने अपनी किसी सीमा को तो नहीं लाँघ दिया। मैंने नेहा की ओर देखा।

“सच में तुम ऐसा सोचते हो!” नेहा बोली।

मैंने सिर्फ़ हाँ कहा। नेहा मेरी ओर देखती रही। गाना ख़त्म हो चुका था। विज्ञापन चल रहे थे। नेहा कार से उतरते हुए बोली यही सरस पार्लर है।

“हूँ, तो यह है सरस पार्लर।” मैंने गाड़ी से नीचे उतरते हुए कहा। फिर मैंने इधर-उधर नज़रें घुमाईं। यह एक ख़ूबसूरत जगह थी। एक बड़ा-सा लॉन, उसके बीचो-बीच एक फाउन्टेन। जो उस वक़्त बंद था। पूरे लॉन में टेबल-कुर्सी लगी हुई थी। जिन्हें बैठने वाले अपनी सुविधा और इच्छा से एक जगह से दूसरी जगह ले जा सकते थे।

पर आज तो यह जगह भी नेहा के सामने फीकी लग रही थीं। ऐसे पब्लिक प्लेस पर नेहा जैसी लड़की के साथ आकर मैं प्राउड फील कर रहा था। आइ वाज विद अ ब्यूटीफुल गर्ल वियरिंग स्लीवलेस टीशर्ट।

“कैसा लगा?” नेहा ने पूछा।

“क्या?”

“सरस पार्लर और क्या।”

मैं सरस पार्लर से ज़्यादा नेहा को निहार रहा था।

“इट्स ब्यूटीफुल!” मैंने नेहा और सरस पार्लर दोनों की तारीफ़ कर दी।

“क्या लोगी? आइ थिंक यहाँ सेल्फ सर्विस है।” मैंने सरस पार्लर पर एक नज़र मारते हुए कहा।

उसने पलके झपका कर हाँ कहा। ओह! यह तो आँखों से भी बात करती है, यह मेरे मन की आवाज़ थी।

“कैपुचिनो, राइट?” मैंने अपने क़दम काउंटर की ओर बढ़ाते हुए कहा।

“अनुराग जस्ट ए मिनट।” नेहा की आवाज़ सुनकर मैं रुक गया। वो मेरे पास आई और एकदम मेरे सामने आकर आँखों में आँखें डालकर बोली, “तुम्हें क्या पसंद है?”

“कैपुचिनो।” मैंने सहजता और सरलता के साथ कहा।

“नहीं, कैपुचिनो तो मुझे पसंद है।” उसने अपने हर शब्द पर ज़ोर देते हुए कहा। मैं उसकी तरफ़ ऐसे देख रहा था मानो जो वो कह रही थी मैं उसे नकार रहा था।

“तुम हर बार कैपुचिनो आर्डर करते हो क्योंकि वो मुझे पसंद है, न कि तुम्हें। आज तुम बताओ, तुम्हें क्या पसंद है?” उसने पूरी बात में एक बार भी पलक नहीं झपकाई। हाँ, बात पूरी करने के बाद एक बार भौंहों को ऊपर-नीचे किया था। यह मेरा स्पेशल विजुअल इफेक्ट था।

मैंने अपनी बात कहने के लिए जैसे ही अपने होंठों को खोला, उसने कहा, “प्लीज कैपुचिनो तो बोलना ही मत। मुझे पता है तब तुम झूठ बोल रहे होगे।” मैं उसकी बात सुनकर मुस्कुरा दिया।

“तो इंतज़ार करो, मैं अभी आता हूँ।” मैं इतना कहकर काउंटर पर चला गया। वापस आया तो मेरे हाथ में कुल्फी थी।

“यह लो, यह है मेरी पसंद।”

“पता है अनुराग, जाने कितना टाइम हो गया कुल्फी खाए हुए। सच्ची। अजमेर में मम्मी के साथ बाज़ार जाती थी तो ज़रूर खाती थीं। पर जयपुर आने के बाद तो बिल्कुल नहीं। यहाँ तो बस किसी के साथ बैठो तो कॉफ़ी ही पीनी पड़ती है।” नेहा ने कुल्फी हाथ में पकड़ते हुए कहा। फिर थोड़ी देर रुक कर बोली, “अभी तुम्हारे साथ खड़े होकर लगता है, एकदम टेंशन फ़्री हूँ।”

मैं उसकी बात सुन मन-ही-मन ख़ुश हुआ। मेरे पास इस ख़ुशी के पीछे पूरे तीन पॉइंट थे।

1. पूरे जयपुर में एक मैं ही हूँ जिसके साथ उसने कुल्फी खायी।

2. मैं ही ऐसा लड़का हूँ जिसके साथ होने पर वो अपने को टेंशन फ़्री महसूस कर रही है।

3. और उसने आज आधा बिल पे करने की बात नहीं की।

“तो तुम्हारे दोस्तो की प्रॉब्लम्स के सिवा तुम्हारी अपनी कोई प्रॉब्लम नहीं है।” उसने बात बदलते हुए कहा।

नेहा और मैं अब तक सिर्फ़ प्रॉब्लम्स के बारे में ही तो बात कर रहे थे। बस अब नहीं।

“कुछ अच्छी बातें करते हैं।”

“जैसे कि...”

“हूँ...जैसे कि...जैसे कि...यू आर लुकिंग ब्यूटीफुल टुडे, आइ मीन टु नाइट।”

“ओह थैंक्स, वैसे तुम भी बुरे नहीं लग रहे हो।” इतना कहकर वो मुस्कुराई। पर इस बार की मुस्कान पहले वाली मुस्कानों से कुछ अलग थी। बात शुरू हुई तो कुल्फी ख़त्म हो चुकी थी। अब तक पार्लर में गिने-चुने लोग ही थे और हम तो अपनी...आइ मीन नेहा की कार के पास ही खड़े होकर बातें कर रहे थे।

“एक कुल्फी और खाएँ?” नेहा ने कहा।

“आर यू श्योर, मतलब तुम्हें घर जाने में देर नहीं हो जाएगी?” मैंने चिंता ज़ाहिर करते

हुए कहा।

“ओके, मुझे देर हो रही है। तुम मेरे साथ बोर हो रहे हो। मैं समझ गई। लेट्स गो।” नेहा ने नाराज़ होते हुए कहा। जब वो नाराज़ होती थी उसकी उसकी आँखें और ख़ूबसूरत हो जाती थीं।

“नहीं, इट्स नॉट लाइक दैट।” मैंने डैमेज़ कंट्रोल करते हुए कहा।

“नो नो...जस्ट मूव।” इतना कह कर नेहा ने कार का दरवाज़ा खोला और अंदर जाकर बैठ गई। मैं चकित था। नेहा को समझ पाना मेरे लिए मुश्किल हो रहा था। लड़की किस बात पर हँस दे या किस बात पर नाराज़ हो जाए शायद इसकी भविष्यवाणी नेस्त्रादमस भी नहीं कर सकता था।

“नेहा...।” मैंने शिकायत के लहज़े में कहा। वो स्टेयरिंग पर बैठी सामने की ओर देखे जा रही थी।

मैं पार्लर के सामने रखी एक बेंच पर बैठ गया, जो कि कार के एकदम पास में ही थी।

“अनुराग, लेट हो रहे हैं।” नेहा बोली।

“मुझे यहीं छोड़ के जाना चाहो तो जा सकती हो।” मैंने कहा।

“अनुराग...!” उसने बनावटी ग़ुस्से में कहा।

“मुझे तो एक और कुल्फी खानी है। सोच लो....या तो मेरे साथ कुल्फी खाओ या अकेले चली जाओ।”

वो तुरंत गाड़ी से नीचे उतर आई और मेरे पास में बेंच पर आकर बैठ गई। बेंच छोटी थी। पहली बार उसकी ख़ूबसूरत स्किन मुझसे टच हुई। बेंच बनाने वाले का शुक्रिया। पर उसके छुअन भर से मेरे शरीर में कंपकंपी छूट गई। मैं तुरंत खड़ा हो गया।

“बहुत जल्दी नाराज़ हो जाती हो।” मैंने ख़ुद को सहज करते हुए नेहा से कहा। अब मैं पहले से बेहतर अनुभव कर रहा था। वो हल्की-सी मुस्कुराई।

“अब कुल्फी ले भी आओ।” उसने हक़ से कहा। मुझे अच्छा लगा। मैं एक बार फिर काउंटर पर गया।

“यू नो अनुराग जब भी मैं तुम्हारे साथ टाइम स्पेंड करती हूँ ना, मुझे डर नहीं लगता। एकदम सिक्योर सिक्योर-सा फ़ील होता है। अदर वाइज़ किसी नए शहर में लड़के के साथ टाइम बिताना आसान नहीं। जयुपर है यार, मिनी मेट्रो।” उसकी बात सुनकर मैं मुस्कुरा दिया।

मुझे अपना बेहद ज़रूरी चौथा पॉइंट मिल गया था।

4. नेहा को मुझ पर विश्वास है।

———————

रात के दो बज चुके थे। दूसरी कुल्फी ख़त्म हुए दस मिनट हो चुके थे और हम दोनों एसएमएस के बाहर कार में बैठे थे।

“अनुराग, तुम्हारे फ़ोन का वेट करूँगी... तुम्हारे अपने मोबाइल से।”

“पक्का करूँगा। लेकिन तुम्हें एक प्रॉमिस करना होगा।”

“प्रॉमिस, क्या?”

“तुम फिर से आँसू नहीं बहाओगी।” मैंने उसकी आँखों में झाँकते हुए कहा। कुछ सेकेंड की ख़ामोशी के बाद एक बार फिर पलकें झुकाकर उसने मुझे प्रॉमिस किया। फिर कार से नीचे उतरते हुए मैं बोला, “विश्वास करो वो जल्द ही ठीक हो जाएँगे।” वो बिना कुछ बोले मेरे चेहरे की ओर ही देखे जा रही थी।

“ओके, गुड नाइट।” मैंने उसकी खिड़की के पास आकर कहा।

“गुड नाइट।”

“नेहा, इस रात की सारी गुडनेस तुम्हारे जाने के साथ ही ख़त्म हो जाएगी।” मेरी बात सुन वो मुस्कुराई। जाते-जाते वो जोर से बोल गई, “इंतज़ार करूँगी फ़ोन का।”

मैं उसकी गाड़ी को जाते हुए तब तक देखता रहा जब तक वो नज़रों से ओझल न हो गई। मैं एक बार फिर एसएमएस के अंदर था। पूरी रात वहीं कुर्सी पर बैठकर गुज़ारनी पड़ी। अगले रोज़ मैंने डॉक्टर से कहा कि वो अगर चाहें तो भूपी को एक दिन और एडमिट रख सकते हैं। हाँ, मेरी यह बात सुनकर एक बार प्रतीक ने मुझे ज़रूर घूरा था। ऐसा होता तो शायद एक बार फिर नेहा से मुलाक़ात हो जाती। पर डॉक्टर ने कहा कि इसकी कोई ज़रूरत नहीं है।

काश! कि उसने एक दो ट्राइका और खा ली होती। भूपी को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई।

———————

“हैलो पापा,...अनुराग।”

“कल तू हॉस्टल में नहीं था। सुना है तुम्हारे सामने वाले रूम में रहने वाले लड़के ने सुसाइड किया!”

“नहीं, ऐसी कोई बात नहीं।”

“तो क्या जागीर सिंह जी झूठ बोल रहे थे?”

“जागीर सिंह, ये कौन?”

“तुम्हें अपने हॉस्टल के मालिक का नाम भी नहीं पता!”

ओह माय गॉड! इसका मतलब पापा ने कल डिवाइन पैलेस में फ़ोन किया और बूढ़े ने सबकुछ बता दिया।

“नहीं...हाँ...वो दरअसल...”

“ऐसे लड़कों से दूर रहा करो, और तुम रात को कहाँ थे?”

“हॉस्पिटल में।”

“उसी लड़के के साथ?”

“मैं अकेला नहीं था, मेरे साथ बाक़ी और लड़के भी थे।”

“बाक़ियों का मुझे नहीं पता, तुम वहाँ पढ़ने गए हो। अपना टाइम और मन दोनों पढ़ाई

में लगाओ।"

"जी।"

"पैसे हैं?"

"हाँ, अभी तो हैं।"

"कभी-कभी सोमदेव अंकल के यहाँ चले जाया करो।"

"जी।"

"तुम बता रहे थे कि तुम्हारा टेस्ट है?"

"हाँ, दो दिन बाद ही है।"

"ठीक से तैयारी करना।"

और फिर मम्मी से बात हुई और उनके सवालों के भी जवाब दिए। हॉस्टल आकर प्रतीक को जब बताया कि बूढ़े का नाम जागीर सिंह है तो दोनों ख़ूब हँसे।

इतनी तैयारी के बाद भी मुझे पक्का यक़ीन नहीं था कि मैं रीजनिंग में टॉप कर पाऊँगा। भूपी वाले केस ने बहुत वक़्त बर्बाद कर दिया था। इरशाद ने डिवाइन पैलेस छोड़ दिया था। यह सनसनीख़ेज ख़बर मुझे अंकुर ने दी। उसके अनुसार वो अपने सामान के साथ कहीं और शिफ़्ट हो गया। ब्लडी डरपोक। पर वो इंस्टीट्यूट आता था। ख़ैर, मैंने या प्रतीक ने उसे नहीं देखा। हम तो अपने मिशन मोबाइल में लगे हुए थे।

शाम का समय था। सत्तु ने एक स्टूल पर चाय लाकर रखी। भूपी हम लोगों के साथ नहीं था। हमने भी उससे नहीं पूछा। कम-से-कम टेस्ट तक हम ऐसे किसी भी विषय को नहीं छेड़ना चाहते थे जो हमें विचलित करे या हमारा ध्यान बाँटे। अंकुर हमारे साथ था। जब भी मैं अंकुर से मिलता मुझे प्रतीक की वो बात याद आती, "ब्लडी अंकुर कांइड ऑफ़ लव।" और हँसी छूट जाती।

"अंकुर, तैयारी तो ज़बरदस्त होगी?" मैंने पूछा।

"लगी पड़ी है यार, मत पूछ।" उसने प्रतिक्रिया दी।

"क्यों, तू प्राइज मनी नहीं जीतना चाहता और कुछ नहीं तो गरिमा को इंप्रेस करने के लिए ही सही।" मैंने कहा।

"यार तू तो ऐसे कह रहा है जैस गरिमा इस टेस्ट के रिजल्ट का इंतज़ार कर ही है कि मैं टॉप करूँ और वो सबके सामने मुझे किस करे।"

"तू एक बात सच्ची बताना, प्यार करता है क्या तू उससे?" यह सवाल पूछने के पीछे मेरा यह जानने का मक़सद था कि अंकुर काइंड ऑफ़ लव आख़िर है क्या।

"देख भाई, मुझे इंस्टीट्यूट की हर लड़की से प्यार है।" उसने समझाना शुरू किया, "मेरे

प्यार की मात्रा उनकी ब्यूटी की मात्रा के अनुक्रमानुपाती है। मतलब जितनी सुंदर लड़की उतना ज़्यादा प्यार। और गरिमा इंस्टीट्यूट की सबसे सुंदर लड़की है सो, मैं उससे सबसे ज़्यादा प्यार करता हूँ।" इतना कह के उसने बड़े इत्मीनान से चाय का एक घूँट अपने गले से उतारा मानो किसी साधु ने प्रवचन के बाद पानी पिया हो, तरोताज़ा होने के लिए।

हमारी बातचीत में प्रतीक का ध्यान कहीं और ही था। वो दूर कहीं किसी को घूरे जा रहा था या यूँ कह लो की टकटकी लगाए देखे जा रहा था। मैंने ध्यान नहीं दिया। इस चाय सेशन के बाद हम एक बार फिर डिवाइन पैलेस में थे।

रात का समय था। मेरी टेंशन अपने चरम पर थी। टेस्ट और मेरे बीच में सिर्फ़ एक दिन का समय था। यह एक दिन मेरे और नेहा के बीच संबंधों को आगे बढ़ाने की सीढ़ी साबित हो सकता था। पर मुझे उम्मीद कम ही थी। जैसी कि मेरी तैयारी थी मुझे टॉप टेन में भी जगह मिलने की उम्मीद नहीं थी। सो, मैं अब कभी नेहा को फ़ोन नहीं कर पाऊँगा। वो कभी मेरी नहीं हो पाएगी। मैं प्यार के मैदान में लूज़र कहलाऊँगा।

"तुम मेरे लिए एक अदना-सा टेस्ट टॉप नहीं कर पाए, कैट में क्या ख़ाक पर्सेंटाइल लेके आओगे?" नेहा की आवाज़ मेरे कानों में गूँजने लगी।

"नो..." मैं ज़ोर से चिल्लाया। "मैं मोबाइल लूँगा, नेहा आइ विल कॉल यू। पक्का।"

प्रतीक ने चौंककर मेरी ओर देखा, उसे समझ ही नहीं आया कि हो क्या रहा है।

"सोच क्या रहे हो तुम! कहाँ है नेहा? कोई नहीं सुन रहा तुम्हें। मुंगेरीलाल पढ़ाई में मन लगाओ।"

मैं एक बार फिर झेंप गया। "यार प्रतीक, कैसे भी करके यह टेस्ट तो टॉप करना ही है। यार, डू समथिंग। प्लीज डू समथिंग...कुछ तो कर अपने प्यार के लिए।"

"मैं क्या करूँ यार, पेपर तुझे देना है। परफ़ॉर्म तुझे करना है।"

"परफ़ॉर्म...बेटा पेपर ले लेगा, बता रहा हूँ।"

"शांत रह। मन को शांत रख और शांति से पढ़ ले।" इतना कहकर प्रतीक ने अपनी नज़रें अपनी किताब में गड़ा दीं।

"तुम्हें लगता है, तुम कभी वो इनाम का पैसा जीत पाओगे?" इतना कहकर मैंने उसके जवाब का इंतज़ार नहीं किया और कहा, "नहीं। भूपी के केस ने सब बर्बाद कर दिया। अब क्या ख़ाक कंपीट करेंगे। और तू तेरे प्यार से कैसे बात करेगा.....तस्नीम मैडम!" मैं उसको उकसा रहा था। पर किसलिए, पता नहीं। मैं लगातार बोले जा रहा था। कोई ऑक्सफ़ोर्ड का पढ़ा मनोवैज्ञानिक ही मेरी स्थिति का सही विश्लेषण कर सकता था। हम मिडल क्लास में मान्यता है कि वहीं का पढ़ा सर्वोत्तम होता है।

"माय डियर फट्टू, तू तस्नीम मैडम को आई लव यू बोल ही नहीं सकता। तुझे तो एसएमएस ही करना पड़ेगा। उसके लिए चाहिए मोबाइल। मोबाइल के लिए पैसे और पैसे के लिए टेस्ट का पेपर। पेपर का जुगाड़ नहीं हो सकता कहीं से? हे भगवान अगर तुम सुन रहे हो तो इस ग़रीब आदमी की मदद करो।" मैं अपने दोनों हाथ जोड़कर ऊपर की देखते हुए बोला। प्रतीक की प्रतिक्रिया का इंतज़ार किया। पर वो कुछ नहीं बोला। थक-हार कर मुझे

फिर से किताबों में खपना पड़ा।

ज़िंदगी में हम चीज़ों को जितना आसान समझते हैं वो उससे

1. कहीं ज़्यादा आसान होती हैं।
2. कहीं ज़्यादा मुश्किल होती हैं।
3. या हम सही समझते हैं और वो उतनी ही आसान होती हैं।

पर प्रतीक को मैं अब तक समझ ही नहीं पा रहा था। वो कब क्या कर देगा, अनुमान लगाना मुश्किल था। अगले दिन जब मैं अपनी नज़रों को नोट्स में घुसाए हर वो कोशिश कर रहा था जो मुझे मोबाइल तक पहुँचाने में मददगार हो सकती थी, प्रतीक रूम से बाहर था। पिछले एक घंटे से वो बाहर गया हुआ था। शायद उसने मोबाइल की आस छोड़ दी थी। मैं उसके बारे में सोच ही रहा था कि वो कमरे में आया और दरवाज़ा अंदर से बंद कर दिया। मेरे मन के सारे प्रश्न मेरी नज़रों से निकलकर उसके चेहरे पर गड़ गए। उसने अपने शर्ट के अंदर हाथ डाला ओर काग़ज़ का एक बंडल उसमें से निकाला और मेरे सामने रख दिया।

“यही वो पेपर हैं जो तुम्हारी ले लेना चाहते थे, और मैं इन्हें ले आया।”

“व्हॉट!” मैंने आश्चर्यमिश्रित ख़ुशी से कहा।

“हाँ बे, भगवान ने तेरी सुन ली। यह कल के टेस्ट के पेपर हैं।” मुझे उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ। मैंने बंडल खोला, यह तो सचमुच ही टेस्ट के पेपर थे।

मैंने एक नज़र पेपर्स को देखा ओर एक नज़र प्रतीक को। “आर यू श्योर यह कल के टेस्ट के पेपर हैं।” मैं कंफर्म कर लेना चाहता था। वैसे मैंने पूछा भले ही हो पर मैं जवाब हाँ में ही चाहता था।

“हाँ, यह पेपर नहीं बल्कि दो हज़ार रुपये का चेक है। यह मोबाइल है। यह हमारा प्यार है।”

“पर तुम्हें यह मिले कहाँ से?” मैंने जानना चाहा कहीं ये हमारे अलावा किसी और के पास भी तो नहीं थे।

“कल जब हम सत्तु के यहाँ चाय पी रहे थे और तुम अंकुर और गरिमा के प्यार के क़िस्से सुनने में व्यस्त थे। तब मेरी नज़र सत्तु के पास वाली फ़ोटो कॉपी की दुकान पर पड़ी। तुम्हें वो लड़की याद है जो इंस्टीट्यूट में पैसे जमा करने के लिए कांउटर पर बैठी थी।” मैंने गर्दन हिलाते हुए हाँ कहा। उसे मैं कैसे भूल सकता था। मुझे याद आया कि एक बार अंकुर ने कहा था कि उसे उस लड़की से भी प्यार हुआ था पर उसे बार-बार मसानी के ऑफ़िस में आता-जाता देख उसने विचार बदल दिए। अब वो सिर्फ़ गरिमा पर स्थिर था।

“वही लड़की कल फ़ोटो कॉपी की दुकान पर दिखाई दी। उससे पहले भी एक बार मैं उसे वहाँ देख चुका था।” प्रतीक बोला।

“तो उसने तुम्हें वो पेपर्स दिए हैं?” मैंने पूछा। शायद मूर्खतापूर्ण सवाल था।

उसने मुझे घूरा और फिर कहना शुरू किया, “मुझे सत्तु ने बताया कि यह तो अक्सर

इंस्टीट्यूट के डॉक्युमेंट्स यहाँ फ़ोटोकॉपी करवाने आती है। बस फिर क्या था। मैंने सोचा हो-न-हो हमारे पेपर्स भी यहीं पर फ़ोटोकॉपी होते होंगे। मैंने सत्तु से बात की। सत्तु ने उस फ़ोटोकॉपी वाले से। सौ रुपये में बात तय हुई। और आज पेपर्स मेरे हाथ में हैं।" मैं उसकी बात सुन अचंभित रह गया।

"वाह क्या प्लान! तुम जीनियस हो। तुम ग्रेट हो।" मैं बिस्तर से खड़ा हुआ और उसे एक सेल्यूट मारा। उसने गर्व से अपना एक पैर दूसरे पर रख दिया।

"बट यार, कॉपी कराते समय तो वह लड़की वहाँ खड़ी रहती होगी। फिर उसे शक नहीं हुआ।" मेरे इस सवाल पर सोनी टीवी के सीआईडी का ख़ासा प्रभाव था।

"देख, फ़ोटो कॉपी कराते समय कई बार एक दो पेपर ख़राब प्रिंट हो जाते हैं, आइ मीन जो डार्क नहीं होते। सो, उन्हें दुकानदार क्रश करके कचरे के डिब्बे में डाल देता है। उसने भी ऐसा ही किया।"

"और उसके जाने के बाद....मैं समझ गया।" मैंने उसकी बात बीच में काटते हुए कहा। मेरे चेहरे पर ख़ुशी की एक लंबी, शायद नील नदी से भी लंबी, रेखा खिंच गई।

मैंने अपनी किताब बंद कर दी और उछलते हुए बोला, "माय डियर नेहा, इंतज़ार करो मेरे फ़ोन का, मेरे अपने मोबाइल से।"

प्रतीक मेरी बात सुनकर मुस्कुराया।

"हमें एक सेक्शन का पेपर भूपी को भी देना चाहिए।" मैंने कहा।

"हाँ, आख़िर वो भी हमारे ग्रुप का...," इतना कहकर प्रतीक रुक गया।

हम भूपी के कमरे में गए। वो कुर्सी पर बैठा था। सामने रखी टेबल पर अपना सिर टिका रखा था। हमारी आहट से भी वो नहीं चौंका।

"सो रहा है, चल फिर आते हैं।" मैंने कहा। जैसे ही हम कमरे से बाहर आने के लिए मुड़े भूपी की आवाज़ आई, "नहीं, जाग रहा हूँ। आ जाओ।"

हम पीछे की ओर मुड़े। भूपी अब भी वैसे ही लेटा था। अगर हम भूपी की आवाज़ को पहचानते न होते तो कहना मुश्किल था कि अभी कुछ सेकेंड पहले भूपी ही बोला था। उसने अपनी गर्दन ऊपर की और अपनी टेबल पर फ़ोल्ड करके रखा हुआ एक काग़ज़ प्रतीक के हाथ में पकड़ा दिया। हम दोनों ने काग़ज़ की ओर देखा।

"यह क्या है?" प्रतीक ने पूछा। फिर भूपी के जवाब की प्रतीक्षा में उसके चेहरे की ओर ताड़ने लगे।

"मैं तुम दोनों से कुछ कहना चाहता हूँ। पर शायद कह नहीं पाऊँगा।" उसकी बात सुनकर मैंने प्रतीक के चेहरे की ओर देखा। भूपी ने कहना जारी रखा,

"...इस काग़ज़ में मैंने वो सब लिख दिया है, जो मैं शायद तुम्हारे सामने तुम्हें न कह पाऊँ।" प्रतीक ने काग़ज़ अपनी शर्ट की पॉकेट में रख लिया और ऐसे बिहेव किया मानो उसने अभी कुछ कहा ही नहीं हो।

मैंने माहौल को बदलने के लिए कहा, "माय डियर भूपी। कैसा हो अगर तुम किसी एक सेक्शन में टॉप कर जाओ।" उसने मुझे ऐसे देखा मानो मैंने कह दिया हो कि राहुल गाँधी देश

का पीएम बन जाए। फिर मैंने इंग्लिश का एक पेपर उसके सामने रख दिया। उसने एक निगाह पेपर पर डाली।

“यह क्या है?” उसने पूछा।

उन दिनों हर किसी को सवाल पूछने में मजा आ रहा था। हालाँकि पेपर पर एक निगाह डालकर भूपी इस सवाल को इग्नोर कर सकता था।

“यह कल के टेस्ट का पेपर है। प्लीज यह मत पूछना कि यह कहाँ से आया वग़ैरह-वग़ैरह। पढ़ और इसे तैयार कर। बेटा 2000 रुपये का चेक है ये.....पोस्ट डेटेड।” कहने के बाद मैंने स्माइल फेंकी, प्रतीक ने भी। फिर हम वहाँ से अपने कमरे में आ गए।

“यू नो प्रतीक, जब उसने कहा कि यह क्या है। मेरे मुँह से अचानक निकलने वाला था... इरशाद का लवलेटर।” यह सुनकर प्रतीक ने ब्लैंक एक्सप्रेशन दिए।

“यार एक सेक्शन अंकुर को भी दे दें क्या?” मैंने दरियादिली दिखाते हुए कहा।

“तुम एक काम करो, ये पेपर दुनिया-जहाँ में बाँट आओ। आख़िर हर एक को इनकी ज़रूरत है। कौन इन फार्मूलों में ख़ुद को धकेलना चाहता है।?” प्रतीक ग़ुस्से में बोला।

“यार ग़ुस्सा क्यों होते हो। तुम कहते तो नहीं देते।” मैंने इत्मीनान से कहा, पर प्रतीक इतने भर से ख़ुश नहीं हुआ मुझे इसके आगे भी बोलना पड़ा, “टेस्ट में हर उस लड़के की फट जानी चाहिए जो हमारी आँखों के सामने अपनी गर्लफ्रेंड लेकर घूमते हैं।”

प्रतीक कुछ देर चुप रहने के बाद बोला, “ठीक है, उसे बुला ला।”

“किसे?”

“अंकुर को।”

मैं यह सुनकर मुस्कुरा दिया।

———————

“हैलो।”

“हैलो।”

“नेहा?”

“हम्म, आप कौन?”

“गेस करो।”

“अनुराग?”

“जी। सही पहचाना, अनुराग अर्ज़ कर रहा हूँ मोहतरमा।”

“ओह माय गॉड! यू मीन...आई मीन, तुमने टॉप...”

“हाँ मोहतरमा, इस बंदे ने टॉप किया। और अपने वादे के अनुसार वो अपने ख़ुद के मोबाइल से फ़ोन कर रहा है।”

“ओह अनुराग! आइ एम हैप्पी फॉर यू।”

“होना भी चाहिए। आख़िर हम...आख़िर हम...अच्छे दोस्त हैं।

“सो तो हैं।”

“और बताओ?”
“तुम्हारा दोस्त कैसा है?”
“ही इज वेल। और तुम्हारे अंकल?”
“पहले से ठीक हैं।”
“तुमने मेरा नंबर देखा?”
“नहीं, ध्यान नहीं दिया।”
“हमारे लास्ट के दो डिज़िट सेम हैं।”
“रियली!”
“या और हाँ ये कोइंसिडेंस नहीं है। मैंने बहुत मेहनत से ऐसा नंबर ढूँढ़ा है।”
“ओह! सो स्वीट।”
“सो, हम कब मिल रहे हैं?”
“तुम बताओ....कल? वहीं। दो बजे?”
“ओके। कल तो मेरे इंस्टीट्यूट की छुट्टी भी है।”
“ठीक है। पक्का।”
“पक्का।”
“बाय।”
“बाय।”
“एक मिनट एक मिनट...”
“हम्म। बोलो।”
“वो तुमने प्रतीक को वो वाली बात बता दी।”
“नहीं।”
“बता दो।”
“आज बताता हूँ।”
“हम्म...चलो बाय।”
“बाय।”

———————

पहली बार हाथ में मोबाइल आया तो पगला गए थे। हर वक़्त उसे हाथ में ही रखा करते थे। वैसे मैंने तो मोबाइल लेने का परपज सॉल्व कर लिया था। नेहा से बात हो गई थी और अब तो जब चाहूँ बात कर सकता था। डिवाइन पैलेस के उस कमरे में हमारी भावनाएँ उबल रही थीं। प्रतीक भी चाहता था कि अपने मोबाइल से तस्नीम मैडम को फ़ोन करे, ताकि उसका नंबर मैडम के मोबाइल तक पहुँच सके। काफ़ी हिम्मत जुटाने के बाद प्रतीक ने तस्नीम मैडम का नंबर मिलाया और इससे पहले कि कॉल के बटन को दबाता, मैं बोल पड़ा।

“प्रतीक एक मिनट, रुक।”

“क्या?”

“सुन, एक बात बतानी है।”

“इतनी भूमिका क्यों बाँध रहा है, बोल ना?”

“तस्नीम मैडम के बारे में है।”

“अब बोल भी दे क्या...!”

“पिछली बार जब मैं और नेहा कॉफ़ी हाउस में मिले थे तो वहाँ हमने मसानी सर को देखा।”

“तो क्या, वो कॉफ़ी हाउस नहीं जा सकता क्या?”

“तस्नीम मैडम के साथ।”

“तो?”

“दोनों हाथ में हाथ लिए बैठे थे। मसानी उनकी अंगुलियों से खेल रहा था और दोनों लवबर्ड्स की तरह बातें कर रहे थे।”

मेरी बात सुन प्रतीक का चेहरा उतर गया। उसने मोबाइल फ़ोन नीचे रख दिया और कुछ नहीं बोला। एकदम चुपचाप बैठ गया। फिर थोड़ी देर बाद बोला, “पक्का वो लड़की तस्नीम ही थी, मेरी तस्नीम।”

“हाँ। एक-दूसरे से सट के बैठे थे। अरे, मैं तो कान लगाकर सुनना भी चाह रहा था कि बात क्या कर रहे हैं। पर इतना धीरे बोल रहे थे कि...”

प्रतीक ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। अब तक वो मेरे चेहरे की ओर ही देखे जा रहा था। जब मैंने अपनी नज़रें उसके चेहरे पर गड़ाईं तो उसने नज़रें नीची कर लीं।

“प्रतीक यह बात मैं बहुत पहले कह देना चाहता था, पर कभी सही टाइम मिला ही नहीं।”

“तो क्या अभी सही वक़्त है, बोल?”

मैं कुछ नहीं बोला। “इस मसानी की तो....” प्रतीक ग़ुस्से में बोला।

प्रतीक को यह बात बताकर मैं ख़ुद भी ख़ुश नहीं था। मैंने उसे दु:खी कर दिया। अपने सबसे अच्छे दोस्त को। बट नेहा भी तो यही कहती थी कि मुझे उसे बता देना चाहिए था। प्रतीक को दु:खी देख, नेहा से हुई बातचीत की ख़ुशी जाती रही।

———————

“हैलो।” मैं रिसीवर हाथ में पकड़े खड़ा था। पापा का फ़ोन था। बूढ़ा वहीं कान लगाए मेरे पास ही खड़ा था।

“बेटा, तुम्हारा टेस्ट का रिजल्ट आ गया?” पापा ने पूछा। मुझे तो इसी पल का इंतज़ार था।”

“हाँ पापा।”

“ठीक-ठाक नंबर आ गए ना। क्या लगता है, मिल पाएगा अच्छा इंस्टीट्यूट?” पापा को कभी मुझसे ज़्यादा उम्मीद नहीं रही।

“मैंने एक सेक्शन में टॉप किया है।” मैंने सोचा यह बात सुनकर पापा ख़ुश होंगे।

“और बाक़ी तीन सेक्शन में?”

“जी, उनमें भी एवरेज मार्क्स हैं।”

“बेटा, कैट में चॉइस नहीं होती कि किसी एक सेक्शन के ही क्वेश्चन सॉल्व करो, समझे। चारों सेक्शन में बराबर पकड़ होनी चाहिए।” पापा की प्रतिक्रिया ने मेरी सारी हवा निकाल दी।

“जी पापा।”

“वैसे मुझे सेक्शन में टॉप करने पर दो हजार रुपये की प्राइज मनी मिली है और मैंने उससे मोबाइल खरीदा है।

“क्या करोगे मोबाइल का, ज़रूरत होती तो हम नहीं दिलवा देते?”

मैं कुछ नहीं बोला। ज़बान को लक़वा मार गया। पापा ने आगे कहना या यूँ कह लो डाँटना जारी रखा।

“और तुमने हमें अब तक नंबर नहीं दिया।”

“जी, बस आज ही लिया है। अभी फ़ोन करने ही वाला था।”

“नंबर दो अपना।”

“जी लिखिए। 9413@#$%^&”

“अच्छा। वो तुम एक काम करो, कल सोमदेव अंकल के यहाँ चले जाओ।”

“जी, कुछ ख़ास काम?”

“ख़ास काम क्या होता है? वो तुम्हारा कितना ख़्याल रखते हैं, बिना काम के मिल आने में कोई बुराई है? कई बार उन्होंने कहा भी है, अनुराग को कहना कि घर आया-जाया करे।”

“जी कल ही जाना ज़रूरी है?” मैं टालने का कोई मौक़ा छोड़ना नहीं चाहता था।

“क्यों कल कहीं और जाना है?”

“जी नहीं, वो...क्लास...”

“पर जागीर सिंह जी तो अभी बता रहा थे कि तुम्हारे इंस्टीट्यूट की दो दिन की छुट्टी है।” मैंने तुरंत ही बूढ़े को एक नज़र देखा।

“जी...।” इसके अलावा पापा को और कुछ कहना संभव नहीं था।

“देखो वो हमारे समाज के हैं। तुम्हारी कितनी केयर भी करते हैं। छुट्टी में दोस्तों के साथ मटरगस्ती करने से तो अच्छा है कि तुम उनसे मिल आओ। समझे?”

“जी।”

फिर फ़ोन रख दिया गया। जागीर सिंह जी मुस्कुरा रहे थे। एक बार फिर मुझसे थैंक्यू सुनने की चाहत थी, शायद। मैं चुपचाप चला आया।

हर इंसान की ज़िंदगी में एक खलनायक होता है और मेरी ज़िंदगी में दो आदमी खलनायक बनते जा रहे थे। सोमदेव अंकल और वो बूढ़ा। नेहा से जब भी मुलाक़ात का समय तय होता इनका हस्तक्षेप किसी-न-किसी रूप में हो ही जाता।

अगले दिन सुबह ही मेरे मोबाइल पर घंटी बजी। नेहा का कॉल होगा, यह सोचकर मोबाइल को बड़ी ही उत्सुकता के साथ उठाया पर किसी अनजान नंबर को देख ख़ुशी

काफ़ूर हो गई। यह सोमदेव अंकल का फ़ोन था।

उन्होंने कहा कि बेटा आज घर ही आ जाओ। बातें करेंगे। तुम्हें भी घर से दूर रहते हुए घर के खाने की याद तो आती ही होगी।

मन मारकर उनको हाँ कहना पड़ा। ओह माय गॉड! नेहा मेरा इंतज़ार करेगी। यह ख़्याल आते ही मैंने नेहा को फ़ोन लगाया। नेहा को सारी बात बता दी। वो थोड़ी नाराज़ ज़रूर हुई, पर मान गई। मैंने उससे रात को फ़ोन करने का वादा किया।

"इससे पहले कभी तुम ड्राइविंग सीट पर बैठे हो?" कोमल ने मुझसे पूछा। वो मेरे पास वाली सीट पर बैठी थी। अंकल ने मेरे आते ही कह दिया कि आज तो कोमल तुम्हें ड्राइविंग सिखाएगी। मेरे टॉप करने की ख़ुशी में सबने मुझे मिठाई खिलाई। लड्डू। बड़े ही गर्व से बताया गया कि इसकी रेसिपी कोमल ने ही बताई थी और यह सुन कोमल मुस्कुराई भी थी। मुझे बड़ा अजीब लग रहा था। आख़िर पापा को क्या ज़रूरत थी अंकल को यह बात बताने की। पर उन्हें भी तो अपने बेटे की तारीफ़ के मौक़े सालों में एक-आध ही मिल पाते थे।

"नहीं, फर्स्ट टाइम है।" मैंने असहज होते हुए कहा। मैं वहाँ कोई कार चलाना सीखने तो आया नहीं था। मेरी ज़िंदगी में सीखने को बहुत-सी चीज़ें थीं। जैसे किसी लड़की के छूने पर न कंपकंपाना। वग़ैरह-वग़ैरह।

"नो प्रॉब्लम, फर्स्ट टाइम वाला हमेशा जल्दी सीख जाता है।" कोमल मुस्कुराते हुए बोली। मैं उसकी बात का मतलब अपने हिसाब से लेता उससे पहले ही उसने कहा, "मेरा मतलब ड्राइविंग जल्दी सीख जाता है।" फिर उसने ड्राइविंग लेसन शुरू किए।

"राइट वाला पाँव रेस के लिए और लेफ्ट वाला ब्रेक और क्लच के लिए।" कोमल सेक्सी लग रही थी। ब्लैक जींस और पिंक टॉप। वो भी बिना स्लीव्ज वाला।

अपने पाँव वहाँ रखो और फ़ील करो। मैंने उसकी बात मानते हुए अपने पाँव एक्सीलरेटर पर रखे।

"बहुत बढ़िया, तुम तो बहुत जल्दी सीख रहे हो।" उसने कहा। मैं मुस्कुरा दिया। यक़ीनन, तारीफ़ पर मुस्कुराना बनता था। कभी-कभी तो होती थी।

कोमल के साथ न होता तो उस वक़्त मैं नेहा के साथ होता और उसे अपना मोबाइल दिखा रहा होता। उसे बताता कि कितनी मुश्किल से मैंने यह नंबर ढूँढ़ा। इसके पचास रुपये अलग से दिए। सिर्फ़ उसकी ख़ातिर।

"यह पहला नंबर...." कोमल ने गियर को आगे की ओर धकेलते हुए कहा। मैं नेहा के ख़्यालों से बाहर आया।

"और यह दूसरा। तुम इस गियर को देखो इस पर इंडीकेट भी कर रखा है।" मैंने गियर

पर नज़र डाली, जिसे वो अपने हाथ से पकड़े हुए थी। “ओह वाइट ब्यूटीफुल स्कीन!” उसके हाथों पर नज़र पड़ते ही मन से आवाज़ आई।

“अच्छा अब तुम ट्राय करो।” कोमल ने मेरी ओर देखकर कहा। मैंने गियर को पकड़ा। उसने मेरे हाथ पर अपना हाथ रख दिया। मैं थोड़ा असहज हो गया। फिर उसने गियर को आगे की ओर खिसकाया। “दिस इज फ़र्स्ट गियर। अब इसे लेफ़्ट की ओर करते हुए आगे धकेलो। सेकेंड गियर। ऐसे ही तीसरा और चौथा लगाओ।”

फिर उसने अपना हाथ हटा दिया। चलो अब अपने से करो।

मैंने गियर बदले।

“बिल्कुल सही” कहते हुए वो मुस्कुराई। “ओह! तुम तो बहुत जल्दी सीख रहे हो।”

नेहा ने भी तो यही कहा था जब वो अपने मोबाइल के फ़ंक्शन मुझे बता रही थी। मैं उसे कम-से-कम मैसेज तो कर ही सकता हूँ। बता तो दूँ कि उसके घर के पास ही हूँ। कहे तो उसके अंकल के हाल-चाल पूछ आऊँ। वेरी फ़नी। अपने-आप से बात करते हुए मेरे चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान आ गई। जिसे देखकर कोमल बोल पड़ी, “अभी से इतना ख़ुश होने की ज़रूरत नहीं है। अभी जब कार की चाबी लगेगी तो सारी मुस्कुराहट जाती रहेगी।”

हम अभी कोमल के घर के बाहर ही थे और खड़ी गाड़ी में ही क्लास चल रही थी। दरवाज़े पर अंकल-आंटी खड़े मुझे देख रहे थे। मैंने भी उन्हें देख के स्माइल दे दी।

“तो चलो अब गाड़ी में चाबी लगाओ।” कोमल ने मेरे हाथ में चाबी देते हुए कहा। मैंने चाबी लगाई। “ओके अब क्लच दबाओ और गियर बदलो।” मैंने वैसा ही किया। “अब क्लच धीरे-धीरे छोड़ते हुए एक्सिलरेटर दबाओ।” कर तो मैं वही रहा था जो कोमल ने कहा, पर खच की आवाज़ के साथ कार बंद हो गई।

उसने मेरे चेहरे की ओर देखा। मैंने बच्चों की तरह चेहरा बनाया मानो सॉरी बोल रहा था।

“अच्छा एक काम करो। तुम ड्राइव करो, मैं देखता हूँ, फिर चलाऊँगा।” मुझे इस ड्राइविंग क्लास से बचने का इससे बेहतर तरीक़ा नहीं सूझा।

उसने हल्की-सी मुस्कुराहट फेंकी, शायद वो समझ गई थी। फिर हमने आपस में सीट बदल ली। गाड़ी आगे बढ़ी तो मैंने एक नज़र नेहा के घर पर डाली। वहाँ कोई नहीं था। नेहा तो अभी इंस्टीट्यूट में होगी, मैंने सोचा।

कोमल कार चलाती रही। मैं चुपचाप बैठा रहा। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि अंकल अपनी लड़की को, जो कि इतनी सुंदर है, मेरे साथ अकेले कैसे भेज सकते हैं। ठीक है कि वो मेरे पापा को जानते हैं पर मुझे नहीं लगता इससे कुछ ख़ास फ़र्क़ पड़ता है। यक़ीनन मेरी जगह अगर अंकुर होता तो ज़रूर अपने प्यार की ज़मीन तैयार कर रहा होता। पर मैं चुप था, क्योंकि मेरे पास ऑप्शन था, नेहा।

कोमल ने ब्रेक लगाया।

“क्या हुआ?” मैंने पूछा।

“तुमने कभी सेंट्रल पार्क देखा है।” कोमल ने कार की चाबी बाहर निकालते हुए कहा।

“सेंट्रल पार्क, वो क्या है?”

“तो चलो, आओ। बताती हूँ।” इतना कहकर वो कार से नीचे उतर गई। मैं अनजाने शहर में आए हुए किसी गाँव के भोले-भाले आदमी-सा एक्सप्रेशन देता हुआ उसके पीछे हो लिया। हालाँकि मेरा मन अब भी नेहा में अटका हुआ था।

यह एक बहुत ही ख़ूबसूरत पार्क था। जिसका अंत नज़र नहीं आ रहा था। चारों ओर हरियाली। हम अब तक पार्क के अंदर बने ट्रैक पर आ चुके थे। दिन का समय था फिर भी काफ़ी लोग थे। हर कोई किसी-न-किसी पेड़ या झाड़ी की ओट लिए बैठा था। “लड़का और लड़की को मिलने के लिए इससे अच्छी रोमांटिक जगह मिल पाना मुश्किल है।” यह वो ख़्याल है जो मेरे मन में सेंट्रल पार्क और वहा उपस्थित गणमान्य युवाओं को देखकर आया।

“अनुराग, तुम्हें नहीं लगता तुम बहुत बोरिंग हो!” कोमल ने चलते-चलते कहा।

मैंने उसके चेहरे की ओर देखा पर कोई जवाब नहीं दिया। कोमल ने बात को आगे बढ़ाया, “अब देखो ना, इतनी देर हो गई हमें साथ-साथ। पर तुम हो कि कुछ बोलते ही नहीं। इतनी देर में तो गूँगा भी किसी से भी दोस्ती कर ले पर तुम हो कि बोलते ही नहीं।”

मैं झेंप गया। ओके। सो वाट, इफ आइ लव नेहा। इसका मतलब यह तो नहीं कि मैं और किसी लड़की से बोलूँ ही ना। आख़िर नेहा भी तो अपने इंस्टीट्यूट के लड़कों से दोस्ती रखती होगी। ऐसा तो है नहीं कि उसने मोबाइल सिर्फ़ मुझसे बात करने के लिए लिया है। आख़िर मेरे सिवा भी तो और लोगों के फ़ोन उसे आते ही होंगे। इन सभी तर्कों से मैंने ख़ुद को समझाया। फिर कोमल की ओर देखकर मुस्कुराया और बोला,

“सच में मैं बोरिंग हूँ?”

उसने कुछ नहीं कहा। बस ऐसे एक्सप्रेशन दिए मानो वो कहना चाह रही हो कि “हाँ, बिल्कुल ऐसा ही सोचती हूँ।”

“ओके मिस कोमल, मेरा नाम अनुराग है।” और मैंने अपना हाथ कोमल की ओर बढ़ा दिया।

उसने भी अपना हाथ आगे बढ़ा दिया।

“हाय अनुराग, तुमसे मिलकर ख़ुशी हुई।” हमने हाथ मिलाया और एक साथ हँस दिए। अंकल ने उसका नाम ठीक ही रखा था, उसकी स्किन सच में कोमल थी...मतलब सॉफ्ट। फिर हम दोनों टहलने लगे। चलते हुए मेरी नज़र एक पेड़ के पीछे छिप कर बैठे कपल पर पड़ी। उनके मुँह काफ़ी नज़दीक थे और मेरा अनुमान था कि वो किस कर रहे थे। थोड़ा-सा आगे बढ़ने पर जब नज़रों का एंगल बदला तो मेरा अनुमान यक़ीन में बदल गया। मेरी नज़रें स्वतः ही वहाँ गड़ गईं। मेरी इस हरकत पर आप मेरे बारे में कोई धारणा न बनाएँ, यह एक बड़ी ही प्राकृतिक प्रतिक्रिया थी।

“ओह, क्या सीन है!” मेरे मुँह से निकला।

“या रियली।” कोमल की आवाज़ सुनकर मैं झेंप गया। पहली बार हुआ कि फुसफुसाहट थोड़ी तेज़ हो गई थी जो कोमल के कानों में पड़ गई थी। मैं अचानक अपनी नज़रें इधर-उधर घुमाने लगा, मानो मैंने कुछ देखा ही नहीं और कुछ देखा भी हो तो वो

अनायास ही दिख गया। इसमें मैंने पर्सनल एफ़र्ट्स नहीं दिए। पर कोमल अब भी वहीं देख रही थी।

“रोमांटिक सीन है।” कोमल बोली। मैंने कोई जवाब नहीं दिया।

“क्यों, नहीं है क्या?” कोमल ने पूछा।

मैं थोड़ा-सा शरमा गया। पर मुझे जवाब तो देना ही था।

“नहीं, मेरे ख़्याल से यह लस्ट है, लव नहीं।”

“कुछ ख़ास फ़र्क़ नहीं है।” कोमल बोली। मुझे एक लड़की के मुँह से ऐसी बात सुनकर आश्चर्य हुआ। अब तक मेरा पाला जिस तरह की लड़कियों से पड़ा था उनके सामने अगर ‘किस’ शब्द का उच्चारण भी कर दिया जाए तो वो मारे शर्म के दो घंटे तक अपना चेहरा ना दिखाएँ। हाँ, नेहा के बारे में पता नहीं कि वो कैसा रिएक्शन देती।

“कोमल तुम्हें क्या लगता है, ये एक-दूसरे से प्यार करते हैं?” मैंने उसकी आँखों में झाँकते हुए पूछा।

“अफ़कोर्स, दे लव। और अगर प्यार नहीं भी करते हैं तो वो जो कर रहे हैं, उसमें कुछ ग़लत नहीं। अच्छा तुम मुझे बताओ, प्यार क्या है?” कोमल ने पूछा।

मुझे इस तरह के किसी भी सवाल की अपेक्षा कोमल से नहीं थी। और हर बार की तरह वही सवाल मुझसे किया गया जिसका न तो जवाब मुझे आता था और न ही जिसकी अपेक्षा मुझे थी।

“आइ थिंक लव इज...” मेरी आवाज़ वहीं अटक गई। एक तो मेरा मन इस बात को लेकर आश्वस्त नहीं था कि मुझे बोलना क्या था। दूसरा अंग्रेज़ी में इससे ज़्यादा कुछ सूझ ही नहीं रहा था।

“एक अहसास है...और क्या!” आख़िर मैंने बोल दिया।

“तो प्यार एक अहसास है....पक्का?” कोमल ने पूछा।

“हाँ, मेरे ख़्याल से लव को डिफ़ाइन या डिस्क्राइब नहीं कर सकते। बस महसूस कर सकते हैं।”

“अच्छा। अगर हम लव को न तो डिफ़ाइन कर सकते हैं न डिस्क्राइब तो कोई किसी को कैसे बताएँ कि हमें उससे प्यार है। बताओ कैसे कोई किसी को यक़ीन दिलाए कि उसे प्यार है। जबकि तुम्हारे अनुसार तो इसे बताया ही नहीं जा सकता।”

अरे, यह तो रीजनिंग की क्लास होने लगी। कुट्टी सर प्लीज हैल्प मी। सवा रुपये का प्रसाद। मेरे ख़्याल से प्रसाद की राशि काफ़ी कम थी सो, मुझे कुट्टी सर की मदद नहीं मिली। हालाँकि मुझे बाद में पता चला कि कुट्टी सर को तो डायबिटीज है। मैं चुप था। मुझे जवाब नहीं सूझ रहा था।

“इतना क्या सोच रहे हो? तुम सही हो। वी कांट डिस्क्राइब लव। यह एक अहसास है।” अब कोमल ने मेरी ही बात का समर्थन किया। मेरे पास मौक़ा था सवाल पूछने का। वही सवाल जो अभी कोमल ने पूछा था।

“तो फिर अब तुम बताओ। कैसे बताएँ दूसरे को कि हमें उससे प्यार हैघ्” मैंने पूछा।

“वो लोग जो कुछ कर रहे थे, प्यार को एक्सप्रेस करने का ही एक तरीक़ा था। एक-दूजे को जता रहे थे कि उन्हें प्यार है। जब हम किसी बच्चे को प्यार करते हैं तो हम उसके गाल पर किस करते हैं ना। सो, वह क्या है? एक तरीक़ा उसे बताने का कि वो तुम्हें प्यारा है और तुम उससे प्यार करते हो। वो पब्लिक प्लेस पर किस कर रहे हैं, पता है क्यों?” मेरे जवाब की प्रतीक्षा किए बिना ही उसने जवाब दिया, “क्योंकि उनको पता है कि वो जो कर रहे हैं उसमें ग़लत कुछ नहीं है। तो किसी से क्यों डरे? और यह ताक़त उन्हें मिलती है एक-दूसरे के इनोसेंट प्यार से।” उसने बात पूरी की। मैं बस उसके चेहरे की ओर ही देखे जा रहा था।

“ओह रियली! बट सॉरी दैट्स नॉट लव। मेरे साथ आओ मैं दिखाता हूँ।” मैंने कहा।

फिर हम आगे बढ़ गए। मैंने पहले कभी इस तरह के डिस्कशन नहीं किए थे और लव पर तो कभी नहीं।

“तुम प्यार को एक्सप्रेस करने का सच्चा तरीक़ा देखना चाहती हो तो वो देखो।” मैंने हाथ से इशारा करते हुए उसे देखने को कहा। वहाँ एक लड़का और लड़की पास में बैठे थे। हँसते मुस्कुराते हुए बातें किए जा रहे थे। दोनों ने एक-दूजे का हाथ पकड़ रखा था। उनके व्यवहार से पूरी शालीनता झलक रही थी।

“उन्हें देखो कोमल। क्या यह प्यार नहीं है? और अगर यह प्यार हैं तो यक़ीनन जो हमने वहाँ देखा और जिसे तुम प्यार कह रही थी, वो सिर्फ़ लस्ट था। एल यू एस टी। लस्ट।” मैंने हर अक्षर पर ज़ोर देकर कहा। उसने सिर्फ़ मेरी ओर देखा मानो मैंने कोई मूर्खतापूर्ण बात कह दी हो, फिर मुस्कुराई।

“अच्छा तुमने टॉप किया है तो कुछ प्राइज-वाइज मिला कि नहीं?” उसने बातचीत की दिशा एकदम बदल दी। शायद इस तर्कशक्ति परीक्षण में मेरी जीत हुई थी।

“हाँ, मिला ना।” मैंने अपना मोबाइल बाहर निकालते हुए दिखाया। उसने मोबाइल हाथ में लिया।

“गुड, इंटेलिजेंट इनवेस्टमेंट। गर्लफ्रेंड से टच में रहने का आसान तरीक़ा।” उसने कहा। मैं झेंप गया। फिर उसने मोबाइल वापस दे दिया। हम निकले तो थे कार सीखने और जाने किन बातों को लेकर बैठ गए।

“अंकल-आंटी वेट कर रहे होंगे।” मैंने कहा। मैं जल्द-से-जल्द वहाँ से बाहर निकल जाना चाहता था।

“नहीं, उन्हें पता है। मैंने उन्हें कह दिया था।”

“क्या?”

“यही कि हम सेंट्रल पार्क जाएँगे।”

“और उन्होंने क्या कहा?”

“कहना क्या था। इसके पास इतनी ख़ाली सड़क है, उन्होंने सोचा होगा कि हम कार चलाने जाएँगे।” उसकी आँखों में शरारत मुझे साफ़ दिखाई दे रही थी।

“अनुराग वो देखो।” कोमल बोली।

मैंने ध्यान दिया कि हम चलकर फिर से उसी जगह आ गए थे। जहाँ मैंने उसे प्यार करता

एक कपल दिखाया था।

मैंने उसकी कही दिशा में देखा। वही कपल जो सिर्फ़ बात कर रहा था अब वो किस करने में व्यस्त था। उन्हें देखने के बाद मैंने कोमल की ओर देखा। वो मेरी ओर ही देखे जा रही थी। शायद मेरे चेहरे के भावों में आए परिवर्तन को ग़ौर से देख रही थी।

“अब कहो, कहाँ गया तुम्हारा प्यार? उसकी जगह लस्ट ने ले ली!” मेरे पास शब्द नहीं थे। मैं ज़िंदगी में पहली बार किसी लड़की से हारा था। हालाँकि इससे पहले मौक़ा भी नहीं मिला था।

“अनुराग तुम्हें मानना ही होगा, यह सब करने से वे बुरे नहीं हो जाते। यह तो सिर्फ़ एक तरीक़ा है अपने प्यार को ज़ाहिर करने का।” मैं कुछ नहीं बोला। पर उसकी बातों का मुझ पर असर ज़रूर हो रहा था।

मैंने कोमल को एक बार ऊपर से नीचे अच्छी तरह से देखा और फिर वही सवाल मेरे मन में उपजा। इज शी बेटर देन नेहा? बेटर पर किसमें...फिगर, स्किन, ब्यूटी, माइंड। व्हाट? मैं कंफ्यूज़ था।

पता नहीं क्यों मैं हमेशा दोनों को कंपेयर करता रहता था। नेहा के लिए मेरे मन में प्यार था और कोमल के लिए.. डोंट नो। पता नहीं।

कुछ भी हो, कोमल की बात मुझे भी ठीक लगने लगी थी। तो मुझे नेहा को किस करना चाहिए क्योंकि मैं उससे प्यार करता हूँ। और अगर मुझे कोमल को किस करना हो तो उससे प्यार करना शुरू करना होगा। मैं एक बार फिर पूरी तरह से कंफ्यूज़ हो गया था।

———————

शी लव्ज मी...शी लव्ज मी नॉट...शी लव्ज मी...शी लव्ज मी नॉट....। प्रतीक एक नोटबुक लिए उसके पेज फाड़े जा रहा था। जब से उसे कॉफ़ी हाउस वाला क़िस्सा सुनाया था, तब से उखड़ा-उखड़ा-सा रहता था।

“प्रतीक, क्या कर रहा है यार, इतनी इंपोर्टेंट चीज़ डिसाइड करने के लिए तू एक गुलाब का फूल नहीं खरीद सकता, कंजूस?”

वो मेरी बात सुने बग़ैर लगा रहा। शी लव्ज मी...शी लव्ज मी नॉट।

“अरे ये नोटबुक क्यों वेस्ट कर रहा है?”

“तो क्या करूँ?” प्रतीक एक और पेज फाड़ते हुए बोला।

“मैं बताता हूँ। देख, अगर नोटबुक के पेज इवन नंबर में हैं तो यक़ीनन लास्ट पेज पर आएगा....शी लव्ज मी नॉट और अगर ऑड नंबर है तो शी लव्ज मी। तू बस नोटबुक के पेज गिन ले, डिसाइड हो जाएगा।” मैं कहके मुस्कुराया। उसने उठाके नोटबुक मेरे ऊपर फेंकी। मैं हट गया और वो सीधी खिड़की पर लगे काँच पर जा लगी। थैंक गॉड! काँच बच गया।

———————

“अनुराग ब्रेकिंग न्यूज। गरिमा और गौरव का ब्रेकअप हो गया।” अंकुर ने यह ख़बर सुनाई। यह सुनाते वक़्त उसके चेहरे की ख़ुशी देखने लायक़ थी।

“रियली?” मैंने कहा। मेरी उनके रिलेशन में कोई ख़ास दिलचस्पी नहीं थी। पर ऐसी चटपटी ख़बरें सुनने में किसे मज़ा नहीं आता!

“अबे, तुझे कैसे पता चला?”

“अरे वो आजकल साथ नहीं दिखाई देते ना!”

“तो अब उसके यहाँ ब्वायफ्रेंड की वेकेंसी है!”

“नहीं यार तू ऐसी चिकनी लड़कियों को नहीं जानता।” अंकुर बोला। चिकनी का मतलब ज़रूर वाइट ब्यूटीफुल स्किन से रहा होगा। उसने कहना जारी रखा, “यह अपना पुराना ब्वायफ्रेंड तभी छोड़ती हैं, जब इन्हें कोई नया मिल जाता है। यानी कि पुराने को छोड़ने का जिस दिन से मन बना लेती हैं, उसी दिन से नया ढूँढ़ना शुरू। बेचारे पुराने को कानों-कान ख़बर नहीं होती और अचानक एक दिन उसे पता चलता है उसका त्याग कर दिया गया है।” लड़कियों के बारे में अंकुर का ज्ञान ग़ज़ब का था।

“सो, दिस टाइम हु इज द लकी मैन?” मैंने पूछा। यक़ीनन अंकुर तो नहीं था।

“पता नहीं। पर वो लकी मैन मैं तो नहीं हूँ।” उसने मायूसी भरे लहज़े में कहा।

“कोई बात नहीं यार, एक दिन ऊपर वाले को तुझ पर भी दया ज़रूर आएगी।” मेरे इस वाक्य ने यक़ीनन उसे मानसिक मजबूती प्रदान की होगी।

———

पापा ख़ुश थे कि मैं सोमदेव अंकल के घर गया। वो कार सीखने वाली बात अंकल ने पापा को बता दी थी। हालाँकि मेरे लिए यह थोड़ी अजीब-सी सिचुएशन थी। पापा फ़ोन पर दिख नहीं रहे थे फिर भी मारे शर्म के मेरा चेहरा लाल हो गया। मम्मी ने भी यही पूछा कि वहाँ क्या खाया, कौन-कौन था? उन्होंने क्या बात की? मेरे समझ में नहीं आ रहा था कि अचानक यह सब एक ही बात जानने में क्यों लगे हैं? ख़ैर, जानने को मेरे पास और भी बहुत चीज़ें थीं। सही समय पर खाने-पीने की हिदायत के साथ ही फ़ोन रख दिया गया। कुल मिलाकर पापा-मम्मी ख़ुश थे।

———

कितना अजीब था, मैं नेहा से प्यार करता था। वैसे प्यार कहना तो मुश्किल था क्योंकि प्यार होता क्या है, यह तो मैं नहीं जानता था। हाँ, पर इतना ज़रूर था कि नेहा से बात करना अच्छा लगता था। उससे मिलने को जी करता था। और एक बार मिलने के बाद उससे दूर जाने को जी नहीं करता था। जब वो नहीं होती तो अकेले में उसकी कही बातें याद कर अनायास ही मुस्कुरा देता था। या कभी-कभी उसे एसएमएस करके यह सोचा करता था कि वो इस समय क्या कर रही होगी। एसएमएस पढ़कर चेहरे पर कैसे भाव आए होंगे। मेरे

ख़्याल से यही सब प्यार के सिंपटम्स होते हैं। उस दिन ड्राइविंग क्लास के बाद मैंने नेहा को पहला एसएमएस किया था।

“मैं अंकल के यहाँ ज़रूर था। पर हर वक़्त तुम्हें मिस किया और साथ ही तुम्हारी कैपुचिनो को भी।” इसे टाइप करने में मुझे दस मिनट लगे। की-पैड पर मेरी अंगुलियाँ आसानी से नहीं दौड़ती थीं, क्योंकि वो इसकी अभ्यस्त नहीं थीं।

उसे मैसेज भेजने के बाद इस मैसेज को मैंने दो बार पढ़ा। कहीं ग़लती से कुछ ग़लत तो टाइप नहीं कर दिया। और जब आश्वस्त हो गया तो उसके मैसेज का इंतज़ार करने लगा।

छः मिनट बाद मेरे मोबाइल पर बीप की आवाज़ आई। मैंने मैसेज बॉक्स ओपन किया। यह नेहा का ही मैसेज था। मैं बहुत ख़ुश हुआ।

“डॉन्ट मेक योर फीलिंग्स लाइक द गार्डन। सो, दैट एवरीबडी वाक्स ऑन इट। बट लेट यॉर फ़ीलिंग्स बी लाइक द स्काई सो दैट एवरीबडी विशेज टु टच इट।”

यह मैसेज कुछ फ़िलॉसॉफ़िकल था। मैंने इसे समझने की कोशिश की, पर इसका असली मतलब समझ नहीं सका। पर उस रात वो मोबाइल ही मेरी किताब बन गया। मैं बार-बार मोबाइल के मैसेज बॉक्स में जाता और उस मैसेज को पढ़ता। फिर एक बार मैसेज बॉक्स से बाहर आ जाता। उसे पता नहीं मैंने कितनी ही बार पढ़ा। हर बार वो नया लगता। मानो नेहा ने एक नहीं जाने कई मैसेज किए हों। मोबाइल को सैल्यूट है। बाय द वे, क्या यही प्यार है? डोंट नो।

———————

जब से हमने टॉप किया था हर बंदा हमें शक्ल से जानने लगा था। यहाँ तक कि कई तो हमारे पास अपनी प्रॉब्लम्स भी लेकर आने लगे। यक़ीनी तौर पर हमारा क़द बढ़ गया था। इरशाद हमसे बचता रहा। भूपी से भी कभी उसे बातचीत करते हुए नहीं देखा गया। अंकुर नहीं जान पा रहा था कि गरिमा का अगला शिकार कौन है। या फिर वो शिकारी कौन है जिसने गरिमा का शिकार किया हो। जब हम पर इतनी ज़िम्मेदारी आ गई थी तो हमने भी पढ़ने की रफ़्तार तेज़ कर दी। पर इस तेज़ रफ़्तार में नेहा कहीं पीछे न छूट जाए सो, मैंने और नेहा ने मिलने का निश्चय किया। प्रतीक अभी भी फट्टू ही था। पर मैंने उसे मसानी और तस्नीम के बारे में बता दिया था। सो, उसने कोशिश बंद कर दी थी।

———————

“प्रतीक, आज नेहा से मिलना तय हुआ है।” मैंने प्रतीक को बताया।

“दैट्स गुड, सो आज क्लास बंक करने का इरादा है। राइट?”

मैं जवाब में मुस्कुरा दिया। मुस्कुराने के साथ ही मैंने अपनी भौंहों को इस तरह ऊपर किया जिसका मतलब था कि इसके सिवा कोई चारा भी नहीं है।

“तुम्हें उससे मिलते तीन महीने हो गए हैं। पर तुम अभी भी वहीं हो जहाँ से तुमने शुरू

किया था।" प्रतीक की यह प्रवचन वाली आदत मुझे ज़रा भी पसंद नहीं थी।

"और तू, तू कहाँ है, अरे तूने तो अभी शुरू भी नहीं किया।" मैंने झल्लाते हुए कहा। झल्लाहट में तुम से तू तक का सफ़र तय हो जाता था। उसने कोई जवाब नहीं दिया। फिर कुछ देर बाद जब मैं अपनी पैंट पहन रहा था वो बोला, "मैं कर भी क्या सकता हूँ। मैं एक क़दम भी आगे कैसे बढ़ाऊँ जबकि वो मसानी की कार में सवार है। मैं उस तक नहीं पहुँच सकता। वो मुझसे प्यार क्यों करे। जब उसके पास बेटर ऑप्शन है। मसानी। ए सक्सेसफुल मैन।" कहते-कहते वो रुक गया या शायद वो इतना ही कहना चाहता था।

"प्रतीक, यार तेरी शर्ट पहन लूँ क्या, मेरी सारी शर्ट्स गंदी पड़ी हैं?" मैंने बात बदलते हुए कहा।

"ले जा यार, देख वो जो हेंगर में टँगी हुई है, उसे पहन ले। एक दो बार पहनी हुई है पर साफ़ है। तुम पर अच्छी लगेगी।" मैंने हैंगर की ओर देखा। यह तो वही शर्ट थी जो उसने टेस्ट देते समय पहनी थी। लकी शर्ट। मैंने उसे पहन लिया।

"चल यार चलता हूँ। तू क्लास अच्छी तरह से अटेंड करना शाम को तुझसे पूछूँगा।"

"आज तो पी डी की क्लास है, तस्नीम की।"

मैं फिर कुछ नहीं बोला और वहाँ से चला आया।

"मैं बिल्कुल भी नहीं रोई, एक बार भी नहीं।" नेहा बोली। बात ख़त्म करते ही उसकी पलकों की सरहद पर आए आँसू मुझे दिख गए जो पलकों से बाहर झाँक रहे थे। पर नेहा थी कि उन्हें बाहर आने ही नहीं दे रही थी। मैं और नेहा कॉफ़ी हाउस में बैठे थे। मैंने नेहा का हाथ अपने हाथ में ले लिया। मुझे उस वक़्त जो सूझा मैंने वही किया। जो कोमल ने कहा था वो अगर सही था तो मैंने तो सिर्फ़ हाथ ही पकड़ा था। नेहा ने रिएक्ट नहीं किया।

"नेहा तुमने मुझे प्रॉसिम किया था अपनी आँखों में आँसू नहीं आने दोगी। तुम इसे तोड़ नहीं सकती।" मैंने कहा।

"अनुराग, कल मैंने डिस्कवरी चैनल पर मेडिकल साइंस पर आ रहा प्रोग्राम देखा। बता रहे थे कि कैंसर ठीक होना बहुत मुश्किल है। बहुत मुश्किल। कई बार नामुमकिन भी।" अब भी आँसू उसकी पलकों के अंदर ही थे।

"तुम इन टीवी शो पर कैसे विश्वास कर सकती हो! एक बार टीवी पर बता रहे थे कि आत्माएँ कुछ नहीं होतीं। यह सिर्फ़ हम लोगों का वहम होता है। पता है, मेरे अंकल ने ख़ुद आत्मा देखी और बात भी की। वो मेरी दादी की आत्मा थी।" मुझे लगा मेरा यह तर्क ज़रूर उसे संबल प्रदान करेगा। सॉरी दादी।

"नेहा, कुछ चीज़ें मेडिकल सांइस से बाहर की होती हैं। मैंने कई लोगों को ठीक होते देखा है। विश्वास करो, वो भी ठीक होंगे।" मेरी बात सुन उसके आँसुओं ने पलकों से झाँकना बंद कर दिया।

"शायद तुम ठीक कहते हो।" नेहा ने कहा। अब तक नेहा का हाथ मेरे हाथ में ही था।

“मेरी बुआ ने ऑफ़िस जाना बंद कर दिया है। अब वो अंकल के पास ही रहती हैं। मैं भी कई बार इंस्टीट्यूट की छुट्टी कर लेती हूँ। उन्हें मेरी ज़रूरत होती है।”

“नेहा, यू आर वेरी ब्रेव गर्ल। वेरी ब्रेव।” मैंने इतना कहा और फिर उसकी आँखों में देखा।

वेटर ऑर्डर लेने आ चुका था सो, मुझे उसका हाथ छोड़ना पड़ा। नेहा ने टेबल पर रखे टिश्यू पेपर से अपनी नम आँखों को पोंछा।

“टु कैपुचिनो।” मैंने वेटर से कहा।

नेहा अब तक अपने आँसुओं को पोंछ चुकी थी और टिश्यू पेपर को उसकी हद से ज़्यादा फोल्ड किए जा रही थी।

“मेरे ख़्याल से एक पेपर को आठ बार से ज़्यादा फोल्ड नहीं किया जा सकता।” मैंने नेहा से कहा।

उसने पेपर को कुर्सी के नीचे डाल दिया। फिर मेरी ओर देखे बिना ही एक मुस्कुराहट फेंकी। आइ लव दिस स्माइल। उसने फिर पानी का ग्लास उठाया और बोली, “तुम्हारी क्लासेज कैसी चल रही हैं?”

“हमेशा जैसी।” मैंने सिर्फ़ इतना ही कहा।

“और प्रतीक को तुमने बता दिया?” उसने पूछा।

“हाँ।”

“फिर! उसने कैसे रिएक्ट किया?”

“उसकी प्रतिक्रिया में ख़ामोशी ज़्यादा थी। उस दिन के बाद से वो ख़ुद को कमतर आँकने लग गया है। सोचता है, मसानी इज बेटर चॉइस फ़ोर हर।”

“ओह! इससे अच्छा तो उसे नहीं बताया जाता।” उसने कहा।

पर इतने दिनों से वही तो कहे जा रही थी कि मुझे बता देना चाहिए। और जब बता दिया तो कह रही है कि नहीं बताना चाहिए था। लड़की कब क्या कहेगी, कोई नहीं जानता। मैंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। फिर पानी का ग्लास उठाया और दो घूँट गले के नीचे गटका और बोला, “आइ थिंक यू आर राइट। मुझे उसे नहीं बताना चाहिए था। उसकी ज़िंदगी में पहले से ही बहुत दिक़्क़तें थीं।” कहते हुए मेरी नज़रें टेबल पर, अभी जो मैंने पानी का ग्लास रखा था, उस पर टिकी हुई थीं।

“वो ख़ुश नहीं है। उसने जो महसूस किया है और जितना सहा है, उतना अगर मेरे साथ होता तो शायद मैं टूट जाता। ही इज वेरी ब्रेव। मैं भले ही उसे फट्टू कहता हूँ पर उसमें बहुत हिम्मत है।”

वो मेरी बात चुपचाप सुने जा रही थी। फिर ख़्याल आया नेहा को भला प्रतीक की कहानी में क्यों इंटरेस्ट होने लगा और नेहा को तो मैंने उसकी पूरी कहानी बताई ही नहीं। उसने तो बस फ़ॉर्मेलिटी के नाते पूछ लिया होगा। “ओह! मैं भी क्या लेकर बैठ गया।” ग्लास से नज़रें हटाकर मैं नेहा की ओर देखते हुए बोला। उसने मेरी आँखों में झाँका और बोली, “तुम उसकी प्रॉब्लम से दुःखी होते हो ना?”

“हूँ।” मैंने बस इतना ही कहा। जिसे कहने में मेरी पलकों ने मेरा साथ दिया।

“तो तुम अपना दुःख मेरे साथ शेयर नहीं करोगे?” मैं उसकी बात सुनकर उसके चेहेरे की ओर ताकता रह गया। कोमल ने जो भी कहा था, झूठ था। अगर वो प्यार को जताने का तरीक़ा देखना चाहती थी तो उसे इस वक़्त यहाँ होना चाहिए था। नेहा ने जो कुछ भी कहा उसने नेहा के प्रति मेरे प्यार को और बढ़ा दिया।

“कहो...।” नेहा ने एक बार फिर आग्रह किया।

“प्रतीक के पापा उसके साथ नहीं रहते। अपने पिता से नफ़रत करता है वो। कई बार मैंने उसे अकेले में रोते देखा है।”

“उसकी इकॉनोमिक कंडीशन...?”

“उसके पापा पैसा भेजते हैं। पर वो ख़ुशी से उन्हें नहीं लेता। कहता है, उसे उस पैसे की ज़रूरत है। बहुत ज़रूरत। वो अपनी माँ को ननिहाल में दया पर जीते हुए नहीं देख सकता। उसने सारे पैसे एक डायरी में लिख रखे हैं। कहता है एक दिन सब चुका देगा। और एक नया दुःख मैंने दे दिया उसे। क्या हो जाता अगर मैं उसे नहीं बताता!” वो चुपचाप सुने जा रही थी। “नेहा, पैसे से ज़िंदगी में खुशियाँ नहीं आतीं, उसे प्यार चाहिए।”

“यू हैव ए गोल्डन हार्ट।” नेहा बोली। यह मेरी तारीफ़ थी, जो नेहा कर रही थी। नेहा... माय लव।

“तुम अपने दोस्त के बारे में इतना सोचते हो। आइ रियली फ़ील प्राउड टु हैव ए फ्रेंड लाइक यू। हम प्रतीक की मदद कैसे कर सकते हैं?” उसने हम कहा...हम....यानी मैं और नेहा। साथ-साथ। “मैं तुम्हारे साथ हूँ।” नेहा ने कहते हुए अपना हाथ मेरे हाथ पर रख दिया। मैंने एक बार फिर पलकें झुका दीं। फिर कुछ देर ख़ामोश रहा।

“अरे!” नेहा को कुछ याद आया, “तुमने उस दोस्त के बारे में नहीं बताया जिसे लेकर तुम एसएमएस आए थे। कुछ पता चला उसने सुसाइड करने की कोशिश क्यों की?”

“वो ठीक है। भूपी नाम है उसका। मेरे सामने वाले रूम में रहता है।” मैं उसके असली सवाल को नज़रअंदाज कर गया।

“भूपी...साउंड्स गुड।” नेहा बोली। मुझे बातचीत की दिशा बदलनी थी।

“ओह! मैंने अपना मोबाइल तो तुम्हें दिखाया ही नहीं।” अपनी जेब से मोबाइल निकालते हुए मैं बोला।

“वाऊ! नाइस कलर।” उसने कहा।

“सेम कलर।” मैंने कहा। वो मेरे चेहरे की ओर देख मुस्कुरा दी।

“तो देखें जनाब की फ़ोनबुक में किस-किस लड़की के नंबर फीड किए हुए हैं!” वो मोबाइल के की-बोर्ड पर अंगुली चलाए जा रही थी। उसकी रफ़्तार मुझसे तेज़ थी।

“हू इज दिस ए नेहा?”

“नंबर देखो।”

उसने बटन दबाया और नंबर निकाला।

“यह तो मेरा ही नंबर है।”

“हाँ, यह तुम्हारा ही नंबर है।

“फिर ए नेहा क्यों?” उसने आश्चर्य से पूछा, “ए फॉर अनुराग क्या?”

“मैं तुम्हारा नाम मोबाइल की फ़ोनबुक में सबसे आगे रखना चाहता था। सो, तुम्हारे नाम के आगे ए लगा दिया और तुम्हारा नाम सबसे पहले आ गया।” मैंने एक बार फिर भौंहों को ऊपर की ओर चढ़ाया जिसका मतलब था कि “है न कमाल का आइडिया!”

नेहा मुस्कुरा दी।

“यू आर सो स्वीट।” नेहा ने कहा। इस बार मुस्कुराने की बारी मेरी थी।

“ओह! तो तुम्हारे पास कोमल का नंबर भी है।” वो अभी भी मोबाइल की फ़ोनबुक चेक कर रही थी। “अगर मैं ग़लत नहीं हूँ तो यह वही कोमल है ना, तुम्हारे अंकल की बेटी?” उसने प्रश्नवाचक नज़रों से मुझे देखा।

“कोमल, पर उसका नंबर तो मैंने कभी सेव नहीं किया। इवन मैंने तो उससे पूछा भी नहीं।” सफ़ाई देने के अंदाज़ में उसे बताए जा रहा था। उसने मोबाइल की स्क्रीन मेरी तरफ़ कर दी।

“यह नंबर...समझा...उसने मुझसे मोबाइल लिया था, देखने के लिए। शायद तभी उसने ख़ुद ही सेव कर दिया होगा।”

“वाह! अनुराग क्या क़िस्मत पाई है। आजकल तो लड़कियाँ ख़ुद ही अपने नंबर देने को मरे जा रही हैं।” उसने कहा।

“हाँ, क्या करें पर्सनैलिटी ही ऐसी है।” मैंने अपनी कॉलर ठीक करते हुए कहा। वो मुस्कुरा दी। अब मुझे उसकी मुस्कुराहटों का मतलब कुछ-कुछ समझ में आने लगा था।

“मैं तो पूछना ही भूल गई। तो उस दिन मेरे पड़ोस तक की यात्रा कैसी रही?”

“तुम सुनोगी तो हँसोगी। एक्च्युली उस दिन कोमल ने मुझे कार ड्राइव करनी सिखाई।”

“रियली! वेरी लकी।” उसने कहा। उसकी आवाज़ में जलन साफ़ ज़ाहिर हो रही थी। तभी वेटर आकर कैपुचिनो के दो कप रख गया।

“एनिथिंग एल्स सर?” वेटर ने पूछा।

एनीथिंग, आइ वांट टु से मेनी थिंग्स लेकिन तुमसे नहीं नेहा से। यह मेरे मन की बात थी। जो सिर्फ़ मुझे ही पता थी।

“नथिंग।” नेहा ने कहा। वेटर चला गया।

“तो अब जमी महफ़िल, जब मिल बैठे तीन यार नेहा, अनुराग और नेहा की फेवरिट कैपुचिनो।” मैंने हँसते हुए कहा। नेहा ने मेरी बात पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। वो तो उस कार वाली बात पर ही अटकी थी।

“तो अब तो सीख गए होगे, एक ही दिन में। आख़िर कोमल जो सिखा रही थी!” उसने कप उठाते हुए कहा।

“या, डेफ़िनेटली। नाऊ... नाऊ आइ केन ड्राइव लाइक... लाइक...नारायण कार्तिकेयन।” मैं ज़ोरदार आवाज़ में हँसा। जिसे सामान्य तौर पर ठहाका कहा जाता है। फिर इधर-उधर देखा। कहीं कोई मुझ पर हँस तो नहीं रहा। पर सब वहाँ अपने में ही मशग़ूल थे।

नेहा ने हँसी में मेरा साथ नहीं दिया। वो वैसे ही चुपचाप बैठी रही। मैं महसूस कर सकता था कि उसे जलन हो रही थी। मेरा मन बार-बार बोल रहा था, "कोमल यू वर रॉन्ग। तुम्हें तो अभी यहाँ होना चाहिए था। काश! कि मैं तुम्हें प्यार के एक्सप्रेशन दिखा पाता।"

"हम लोग सेंट्रल पार्क भी गए थे। बेहद रोमांटिक जगह है, है ना?" मैंने पूछा। जलाने का मज़ा ही अलग है।

"हाँ, सचमुच। मैं भी अक्सर वहाँ जाती हूँ।" नेहा ने ख़ुद को सहज करने की नाकाम कोशिश के साथ कहा।

"ओह रियली! जान सकता हूँ किसके साथ?" मैंने मज़ाक़ के लहज़े में कहा।

"वाट डु यू थिंक, तुम मेरे इकलौते फ्रेंड हो जिसके साथ मैं बाहर जाती हूँ।" इतना कहकर उसने मेरे चेहरे पर नज़र गड़ा दी। मैंने कुछ सेकेंड की ख़ामोशी के बाद कहा, "आइ डोन्ट थिंक,.....एक्च्युली आइ बिलीव।" और यह कहते हुए मैंने एक बार भी पलक नहीं झपकाई और लगातार नेहा की आँखों में झाँकता रहा। उसने नज़रें हटा लीं। मैंने इनडायरेक्टली काफ़ी कुछ कह दिया था। उसने भले ही मुझसे पूछा था, पर वो इसका जवाब जानती थी। उसका नज़र चुराना इस बात के समर्थन में सबूत पेश कर रहा था।

"तुम्हें नहीं लगता आज कॉफ़ी में शुगर कम है। कुछ फीकी-फीकी-सी लग रही है?" उसने सहज होते हुए कहा। मुझे कैपुचिनो हमेशा से ही कड़वी लगती थी। मैंने तुरंत अपनी एक अंगुली उसकी कॉफ़ी में डुबा दी।

"वाट आर यू डुइंग?" नेहा मेरी इस अजीबोग़रीब अनहाइजीनिक हरकत पर बोली।

"क्यों तुम ही ने तो कहा था, आइ एम सो स्वीट।" इतना कहकर मैं मुस्कुरा दिया। वो भी हँस पड़ी।

"या इट्स रियली स्वीट नाऊ।" उसने कॉफ़ी पीते हुए कहा। कोमल वेयर आर यू?

"अनुराग तुमने राजमंदिर देखा है?" उसने पूछा।

"हाँ, देखा है।" मैंने कहा।

"किसके साथ?" फिर एक और सवाल।

"उस दिन बरिस्ता में तुमसे मिलने आया था जब...।"

"ओह! वो तो बाहर से देखा ना, मैं पूछ रही हूँ अंदर से देखा क्या?"

मैंने 'ना' में गर्दन हिला दी।

"पता है यह एशिया का सबसे बेस्ट सिनेमाघर हुआ करता था।"

"सच में!" मैंने आश्चर्य से कहा, मानो मैंने यह बात पहली बार सुनी हो।

"नेक्स्ट फ्राइडे...फ़िल्म देखते हैं। अगर तुम्हें मेरी कंपनी से कोई एतराज़ न हो।" उसने एतराज़ पर ज़ोर देते हुए कहा।

"माय प्लेज़र मोहतरमा।" मैंने बड़े अदब से कहा।

"तो तय रहा, बारह से तीन। मुझे अपनी क्लास बंक करनी होगी।"

"शायद मुझे भी। बट यू नो मैं क्लास बंक नहीं कर सकता। हाँ, एक काम कर सकते हैं, जब भी कोई क्लास कम इंपोर्टेंट होगी तो मैं बंक कर दूँगा।" मैंने अपनी मजबूरी बताई। वैसे

फिर मैंने सोचा, “क्या कोई भी क्लास कम इंपोर्टेंट हो सकती है?”

वो मायूस हो गई।

“ओके।” उसने टेबल पर ख़ाली कप रखते हुए धीमे स्वर में कहा। मुझसे उसकी मायूस शक्ल देखी नहीं गई।

“चलो, जब तुम कहो...तब चलेंगे। पर प्लीज़ ऐसी शक्ल मत बनाओ।” मैंने कैपुचिनो का आख़िरी सिप लेते हुए कहा।

“नो अनुराग, मुझे तुम्हारा क्लासेज बंक करना पसंद नहीं। इट्स यॉर कैरियर। तुम जब कहोगे तभी देखेंगे।” उसने चेहरे पर मुस्कान लाने की हरसंभव कोशिश करते हुए कहा। मैं भी मुस्कुरा दिया। आज की मुलाक़ात में मेरा ध्यान न तो नेहा के कपड़ों पर गया न ही वाइट ब्यूटीफुल स्किन पर।

“अच्छा तुम क्या कह रहे थे कि एक पेपर को आठ बार से ज़्यादा फोल्ड नहीं किया जा सकता।” नेहा ने बातचीत का नया छोर ढूँढ़ निकाला। आज मुझे समझ में आ रहा था कि लड़का-लड़की घंटों बैठे क्या बातें करते हैं।

“यस।”

“और अगर मैं कर दूँ तो।”

“मान जाऊँगा।”

“ऐसे नहीं, कुछ शर्त लगाओ।”

“शर्त...”.मैंने पर्स से सिक्का निकला और टेबल पर रखते हुए कहा, “लगी एक-एक रुपये की?” वो मुस्कुराई।

“ठीक है।” उसने भी मेरे सिक्के के पास अपना एक रुपये का सिक्का रख दिया।

“चलो पेपर लाओ।” नेहा ने जोश में कहा।

टेबल पर एक भी टिश्यू पेपर नहीं था। मैं नज़रें इधर-उधर दौड़ा रहा था। तभी नेहा ने मेरी जेब की ओर हाथ बढ़ाया। यह शर्ट के ऊपर वाली जेब थी और जेब में हाथ डालकर उसमें रखा काग़ज़ निकाल लिया।

“जनाब काग़ज़ साथ में लेकर घूमते हैं।” कहकर उसने फोल्ड किया काग़ज़ खोलना शुरू किया ताकि फिर से फोल्ड कर सके।

“अरे! एक मिनट देख तो लो, कहीं किसी काम का काग़ज़ तो नहीं है।” मैंने कहा। प्रतीक का शर्ट पहन रखा था। हो सकता था कि उसका ही कोई ज़रूरी काग़ज़ रहा गया हो।

“ओके, ठीक है। शायद तुम्हारा कोई लवलेटर हो।” यह कह कर नेहा ने काग़ज़ को ध्यान से देखा। “हाँ अनुराग, यह तो तुम्हारे लिए ही है और प्रतीक के लिए भी। ओह दोनों के लिए एक ही लवलेटर!” मुझे लगा वो मज़ाक़ कर रही है। हो सकता है प्रतीक ने नोट्स का कोई पन्ना फोल्ड कर अपनी जेब में रख दिया होगा।

“अच्छा हमारा लवलेटर है, तो अब तुम पढ़ के भी सुना दो।” मैंने कहा।

“ओके...सर, सुनिए।” उसने लेटर पढ़ना शुरू किया।

“प्रतीक, मैं वैसा नहीं हूँ जैसा तुम और अनुराग मुझे समझते हो। कई बार हालात हमारे

बस में नहीं रहते और जो कुछ हो रहा होता है, वो न चाहते हुए भी मजबूरियों के चलते हमें उसका हिस्सा बनना पड़ता है।"

इतना सुनते ही मेरा माथ ठनका। ओह माय गॉड! यह तो भूपी का लेटर है, जो उसने उस दिन दिया था और प्रतीक जेब में रखकर शायद भूल गया था। या एग्जाम की टेंशन के चलते हमारा ध्यान ही उससे हट गया था। प्रतीक ने यही शर्ट पहनी थी उस दिन। नेहा लेटर पढ़े जा रही थी।

"उस दिन तुमने मुझे जिस हालत में देखा वो मेरी मजबूरी थी। मैंने तुम्हें कभी बताया नहीं कि मेरे घर की आर्थिक हालत अच्छी नहीं है। जितना पैसा घर से आता है वो काफ़ी नहीं होता। यहाँ आने से पहले मैंने ट्यूशन पढ़ाकर कुछ पैसे जोड़े थे ताकि इंस्टीट्यूट की फ़ीस जमा करा सकूँ। पर जयपुर में रहने के लिए जितना पैसा चाहिए, उतना मेरे पापा नहीं भेज सकते। उन दिनों मुझे पैसों की ज़रूरत थी। याद है एक दिन हम तीनों कलेक्ट्रेट सर्किल पर खाना खाने गए थे पर मैंने कुछ नहीं खाया। भूख तो मुझे भी लगी थी, पर पैसे नहीं थे। इरशाद मुझे कभी-कभार पैसे दे दिया करता था। तो मैं उसके क़रीब होता गया। तुम्हारे जन्मदिन वाले दिन नशे की हालत में वो मेरे कमरे में ही सोने आया था और नशे में मुझे पता ही नहीं चला कि वो मेरे साथ क्या कर रहा था। पर फिर वो मुझे पैसे देता रहा और...। जिस दिन तुमने मुझे देखा उस दिन भी वो मुझे ब्लैकमेल कर मेरे साथ वो सब कर रहा था। मेरी मजबूरी थी। मैं ब्लैकमेल हो रहा था और मुझे पैसों की भी ज़रूरत थी। वर्ना अगला एक सप्ताह भी मेरे लिए जयपुर में गुज़ारना नामुमकिन हो जाता और मुझे फिर से अपने शहर जाकर अपने पिता की चाय की दुकान पर बैठकर चाय बनानी पड़ती। मैं गे नहीं हूँ। बट ब्लडी इरशाद इज गे। जिस दिन तुमने मुझे कहा कि तुम मुझसे नफ़रत करते हो तो मुझसे सहन नहीं हुआ। मैंने अपने को इतना अपमानित कभी महसूस नहीं किया। मैं अगले दिन तुमसे नज़रें ना मिला सकता था। सो, मैंने अपनी आँखें हमेशा के लिए बंद करना ही ठीक समझा। पर ग़लती मेरी ही है। मुझे परिस्थितियों के साथ समझौता नहीं करना चाहिए था। मैं यह सब तुमसे सहानुभूति बटोरने के लिए नहीं बता रहा हूँ। मैं बस इतना चाहता हूँ कि तुम असलियत जानो और मुझसे नफ़रत ना करो।"

भूपेंद्र

नेहा ने लेटर पढ़कर मेरी और देखा। कुछ देर ख़ामोशी छाई रही। फिर उसने लेटर फोल्ड कर टेबल पर रख दिया और वहाँ रखा अपना एक रुपया उठा लिया। मेरी आँखें कहीं से नम हो गई थीं।

"यह वही लड़का है ना, जिसने सुसाइड करने की कोशिश की थी?" नेहा ने गंभीरता से कहा।

"हाँ। कुछ दिन पहले यह ख़त उसने प्रतीक को दिया था। इसे जेब में रखकर हम भूल गए थे। वैसे भी हम सब कुछ भूल जाना चाहते थे। शायद इसीलिए तुम्हें भी मैंने उस दिन नहीं बताया।"

"कोई बात नहीं। अब तुम क्या करोगे?" उसने पूछा।

“क्या करोगे मतलब। अब क्या करना है?” मैंने पूछा। उस वक़्त मेरा दिमाग़ मेरे शब्दों का साथ नहीं दे रहा था।

“उसे तुम्हारी मदद की ज़रूरत है। तुम्हें क्या लगता है वो नॉर्मल हो गया है। वो कभी यह सब नहीं भूला पाएगा। जब तक तुम उसे भूलने में मदद नहीं करोगे। इस हादसे का असर कैट में उसकी परफ़ॉरमेंस पर भी हो सकता है।”

मैं चुपचाप नेहा की बातें सुनता जा रहा था। कितनी भावुक थी वो! जिसे नहीं जानती थी, उसके लिए भी चिंता कर रही थी।

“हम उससे अब वैसे ही बात करते हैं जैसे पहले करते थे। पर वो तो हमेशा से ही इंट्रोवर्ट रहा है। अगर वो बता देता कि उसे पैसों की ज़रूरत है तो क्या हम उसे मना करते! पर वो कभी कुछ कहे तो सही।”

“देखो, शायद ग़रीब परिवार का होने की वजह से वो कुछ न बोल पाता हो। वो अपने को तुम से हीन समझता हो। तुम शायद उसे वो कंफ़र्ट लेवल कभी नहीं दे पाए कि वो तुमसे सब कुछ कहे। न तुम, न प्रतीक।” नेहा पूरी स्थिति का बेहद सुलझे हुए तरीक़े से विश्लेषण किए जा रही थी और मैं किसी बच्चे की तरह उसकी बातें सुने जा रहा था। वो ठीक भी कह रही थी। प्रतीक तो हमेशा से ही उसे ऑर्डर ही देता आया था जिसे वो गर्दन हिला कर मान लेता।

“हो सकता है उसे मनोचिकित्सक की ज़रूरत हो। आइ मीन वो जो अपने को हीन समझ रहा है उस हीन भावना को दूर करने की ज़रूरत है। वो भी कैट से पहले।” नेहा के मुँह से इतनी समझदारी वाली बातें सुनकर में अचंभित भी था और ख़ुश भी।

“नेहा तुम जन्म से ही इतनी समझदार हो या बड़ी होकर समझदारी की कोई कोचिंग क्लास जॉइन की?” उसके चेहरे पर हँसी की रेखा खींच गई।

“नेहा थैंक्स, थैंक्स ए लॉट। तुम नहीं जानती तुम ने क्या किया।”

“अच्छा...” उसने मुँह बनाते हुए कहा।

“अनुराग दोस्त बनाना तो बहुत आसान है, पर ज़िंदगी भर के लिए निभाना मुश्किल है।” उसने कहते हुए एक बार फिर मेरे हाथ पर अपना हाथ रख दिया। आज तो मेरे हाथों की क़िस्मत ही खुल गई थी। फिर मेरी आँखों में ऐसे देखा मानो मेरे अंदर तक झाँक लिया हो। तभी वेटर बिल ले आया। हमें एक बार फिर हाथ हटाने पड़े। इस वेटर को देख मुझे बस का कंडक्टर याद आ गया। हमें कैपुचिनो ख़त्म किए हुए काफ़ी वक़्त हो गया था। वेटर बिल तभी लाते हैं, जब उन्हें पता हो कि हम कुछ और ऑर्डर करने वाले नहीं हैं।

“ओह सिर्फ़ 120! अनुराग तुम बहुत सस्ते में छूट गए। वर्ना तुम्हारे टॉप करने की और मोबाइल लेने की तो पार्टी होनी चाहिए थी।” नेहा अपना पर्स उठाते हुए बोली। लड़कियाँ जब कहीं बैठती हैं तो पहले उनके साथ आया सामान पसरता है और अंत में वो। और यही क्रम उनके उठने पर भी लागू होता है। फिर हम वहाँ से चल दिए। अलग होने के कुछ देर बाद ही मैंने नेहा को एक एसएमएस किया।

“रिश्ते निभाना हमें भी सिखा दो ज़रा, इस दिल के कोने में हमें भी बिठा लो ज़रा,

हम आपको याद हैं कि नहीं, एक एसएमएस करके बता दो ज़रा।”

अगले ही पल उसका रिप्लाई आया।

“फ्रेंड्स आर लाइक स्ट्रीट लाइट्स अलॉन्ग द रोड, दे डोंट मेक दी डिस्टेंस एनी शॉर्टर, बट दे लाइट अप द पाथ एंड मेक द वाक वर्थवाइल।” मैं पढ़कर मुस्कुराया। नेहा मेरी स्ट्रीट लाइट बन गई थी।

भूपी को एक मनोचिकित्सक के पास ले गए थे। तीन बार की मीटिंग के बाद वो बदल चुका था। वो पहले से बेहतर फ़ील कर रहा था। भूपी को जब भी पैसे की ज़रूरत होती वो हमसे माँग लेता। हमने भी अपने ख़र्चे कम कर दिए थे ताकि हम भूपी की मदद कर सकें। शुरू में तो भूपी ने मनोचिकित्सक से मिलने में आना-कानी की थी पर बाद में वो राजी हो गया। अब हम तीनों का एक बार फिर से ग्रुप बन गया था जिसे इंस्टीट्यूट में इज़्ज़त के साथ देखा जाता था। क्योंकि हम तीनों पिछले टेस्ट के टॉपर थे। भूपी इंस्टीट्यूट में कभी हमसे अलग नहीं होता। इरशाद हमें कई बार इंस्टीट्यूट में दिख जाता तो हाय-हैलो करके निकल लेता। भूपी हमारे साथ होता था। सो, इरशाद उससे बात करने की कोशिश नहीं करता। एक बार प्रतीक ने कहा था कि अगर सर्वसम्मति हो तो इरशाद को पीटा जा सकता है, पर भूपी ने मना कर दिया। उसे बात फैल जाने का डर था। ख़ैर, प्रतीक और मैं चुप ही रहे और इरशाद पर कभी अपनी प्रतिक्रिया ज़ाहिर नहीं की। इस एक महीने में नेहा से पाँच बार मुलाक़ात हो चुकी थी। हर बार हम या तो प्रतीक की बात करते या भूपी की। हाँ, इन दोनों की बातचीत के बीच में हमारी बातें भी हो जाती थीं। नेहा को दिन के दो एसएमएस मैं ज़रूर करता था। जिनके जवाब वो भी दिया करती। सुबह की मेरी नींद नेहा के एसएमएस के साथ ही खुलने लगी। अंकुर अब तक पता नहीं लगा पाया था कि गरिमा का नया प्रेमी कौन था या गरिमा अब किसकी प्रेमिका थी। एक महीने में सोमदेव अंकल के तीन फ़ोन आ गए थे, मुझे उनकी वजह समझ में नहीं आती थी। बस मेरे हाल-चाल जान लेते और घर आने का न्योता दे देते। कोमल के एसएमएस यदा-कदा आ जाते। जिनमें शेर-ओ-शायरी हुआ करती थी। मैं भी यदा-कदा उनका जवाब दे देता। अब जैसे-जैसे कैट पास में आ रही थी हमारी ज़िंदगी भी और टफ़ हुए जा रही थी। हमारा ज़्यादातर वक़्त किताबों के साथ ही बीतता। प्रतीक का तस्नीम मैडम से प्यार अभी भी एकतरफ़ा था। नेहा ने मुझसे कहा था कि मैं ही जाकर तस्नीम मैडम को बता आऊँ की प्रतीक उनको पसंद करता है। तब मैंने कहा था कि यह तो ग़लत मैसेज होगा। आख़िर प्यार और पसंद में फ़र्क़ होता है। नेहा ने कहा कि प्यार की शुरूआत पंसद से ही होती है। पर जब प्रतीक को मैंने यह प्रपोजल दिया तो उसने सिरे से नकार दिया। हाँ, जब भी मैं तस्नीम मैडम की बात करता तो वो एक बार तो मसानी को

गाली ज़रूर देता था। इन सब के बीच प्रतीक को कई बार अकेले में रोते देखा था। अपने पापा के ख़त को हाथ में लिए रोता रहता। एक दिन और ऐसा ही हुआ।

"अनुराग आज उनका लेटर आया है। आइ डोंट नो उन्हें कैसे पता कि मैं यहाँ रहता हूँ। बस मेरी और माँ की ख़ैरियत की ख़बर लेना चाहते हैं। जब हमारी इतनी ही चिंता थी तो छोड़कर क्यों गए? मैंने तो मम्मी-पापा में से पापा को चुना था और उस औरत के लिए मुझे ही घर से निकाल दिया।" प्रतीक अपने पापा की आई चिट्ठी को पढ़कर विचलित था। हर सप्ताह उसके पापा एक लेटर भेजते थे। और हर सप्ताह मुझे एक बार प्रतीक का वही रूप देखना होता जिसमें वो अपने पापा के लिए ज़हर उगलता था। आज भी वो यही कर रहा था। जिस आदमी ने इतने सालों से अपने बीवी बच्चों की ख़बर नहीं ली वो हर सप्ताह उनके हाल जानने को ख़त लिखता है। यह बात मेरी समझ से बाहर थी।

"जिन्हें मेरे पते की ख़बर है, क्या वो यह नहीं जानते कि जब से वो गए हैं माँ डिप्रेशन में रहती हैं! मेरा क्या हाल हुआ होगा! एक बार भी फ़ोन करके नहीं पूछा!" प्रतीक ने रोना शुरू कर दिया था। मैं उसे चुप नहीं करवा सकता था, क्योंकि चुप करवाने के लिए कुछ कहना पड़ता है और मेरे पास कहने को कुछ नहीं था। काश! कि नेहा इस वक़्त होती तो ज़रूर कुछ उपाय बताती।

"आइ एम विद यू प्रतीक। डोंट क्राय।" मैंने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा। पर उसके आँसू थम नहीं रहे थे। "पता है...एक पूरा बैग भरा है उनके ख़त से।" प्रतीक ने पलंग के नीचे से एक बैग निकाला, जिसमें से ढेरों ख़त निकालकर उसने बिस्तर पर फैला दिए।

"यह सब उन्होंने ही लिखे हैं, इतने सालों में। हर ख़त ने जाने कितनी बार आँसू बहाने को मजबूर किया है। एंड आइ नो ही मस्ट बी हैप्पी।" उसकी आँसुओं की रफ़्तार तेज़ होती जा रही थी।

मैंने बिस्तर से एक लेटर उठाया और उसे पढ़ा।

प्रतीक बेटा,

पढ़ाई में मन लगाना। अपनी मम्मी का ख़्याल रखना।

तुम्हारा पिता

बस इतना ही लिखा था।

"हर लेटर में यही लिखा है।" प्रतीक बोला।

"तुम अपने आँसू बंद करो। आँसू किसी मर्ज़ की दवा नहीं। अपना ध्यान कैट पर लगाओ।" मैंने सारे ख़त समेटकर वापस बैग में डाल दिए।

उसके पिता के ख़त से मुझे तो ऐसा लगा कि वो प्रतीक से बेहद प्यार करते थे। अगर प्रतीक के मन में सिर्फ़ नफ़रत ही होती तो वो इन लेटर्स को कभी सँजोकर नहीं रखता। हालाँकि वो नफ़रत करता था पर उसमें भी कहीं प्यार छिपा हुआ था। मैंने बैग को वापस पलंग के नीचे रख दिया। और उसके आगे अपना सूटकेस रख दिया, ताकि ग़लती से भी प्रतीक की नज़र उस पर नहीं जाए। "तुम सिर्फ़ अपने कैरियर पर कंसनट्रेट करो, सब ठीक हो जाएगा।" मेरे कहने पर उसने अपने आँसू पोंछे।

“अनुराग मैं एक बार घर जाकर आना चहता हूँ। चार महीने में एक बार भी घर नहीं गया। आज माँ की बहुत याद आ रही है।” उसने रूँधे हुए गले से कहा।

“तू जाना चाहता है तो दो-तीन दिन के लिए चला जा। वापस आने पर मैं और भूपी तेरी पढ़ाई में मदद कर देंगे” मैंने कहा। वो अब तक अपने आँसू पोंछ चुका था।

“इन ख़तों के बारे में तेरी मम्मी को पता है?” मैंने पूछा।

“नहीं, वो नहीं जानतीं। मैंने उन्हें कभी नहीं बताया। वो पहले से ही बहुत डिप्रेशन में रहती हैं। अलग होने के कुछ महीनों बाद ही मम्मी को अहसास हो गया था कि बहुत बड़ी ग़लती हो गई है। बड़ी मुश्किल से पापा को भुलाने की कोशिश कर रही हैं। इन ख़तों के बारे में पता चलेगा तो परेशान हो जाएँगी। मैं जानता हूँ पापा अब कभी लौटकर नहीं आएँगे। मम्मी शायद कोई आस लगा बैठे।” प्रतीक ने कहा। उसकी आवाज़ अब भी भर्रायी हुई थी।

“अच्छा घर से आते हुए आंटी के हाथ की बनी कुछ चीज़ें लेते आना। यूँ नहीं कि ख़ाली हाथ ही चला आए!” मैंने उसके मूड को ठीक करने के लिहाज़ से कहा। तभी भूपी कमरे में आया।

“कुछ खाने की बात सुनाई दी तो चला आया। खाने-पीने की क्या बात हो रही थी?” भूपी ने अपने आने का कारण स्पष्ट किया।

“अरे, ये घर जा रहा है तो मैंने कहा कि भाई खाने के लिए भी घर का बना कुछ लेते आना। अब देखना है कि यह नालायक़ लाता है कि नहीं।” इतना कहकर मैंने एक हल्की-सी चपत प्रतीक के गाल पे मार दी।

“वो तो ले आऊँगा चटोरो, पर अगर वापस आने पर तुमने मुझे पढ़ाया नहीं ना तो देख लेना! दोनों का गला दबा दूँगा।” उसने बनावटी ग़ुस्सा लाते हुए कहा।

अब तक उसका मूड ठीक हो चुका था। अगले दिन प्रतीक घर के लिए निकल गया। और उसी दिन मेरे घर से फ़ोन आ गया। पापा ने कहा कि आज कोमल का बर्थ डे है। सो, तुम एक अच्छा-सा गिफ़्ट ख़रीद के उनके यहाँ चले जाना। ओह! अगेन कोमल। पर उसके यहाँ पार्टी होगी तो नेहा को भी तो इनवाइट किया जाएगा। यह सोचकर मैं ख़ुशी से चहक उठा।

“जी पापा, मैं चला जाऊँगा” मैंने कहा।

“अच्छा वो सोमदेव जी कह रहे थे कि शायद आज कोमल को कुछ शॉपिंग भी करनी है, तो तुम दिन में ही चले जाना। वैसे वो तुम्हें फ़ोन करेंगे।” पापा बोले। मैं ना करने की स्थिति में नहीं था। उनके फ़ोन रखते ही अंकल का फ़ोन भी आ गया। अब तो जाना ही था।

“डु यू लाइक पिंक कलर?” कोमल ने पिंक कलर का टॉप देखते हुए कहा। हम जयपुर के गौरव टावर की एक शॉप में थे।

“पिंक तो सबको अच्छा लगता है।” मैंने कहा। मेरे ख़्याल से मैं इससे चलताऊ जवाब नहीं दे सकता था।

“इसका मतलब यह तुम्हें पसंद नहीं!” दूसरा टॉप उठाते हुए कोमल बोली।

“मैंने ऐसा तो नहीं कहा।”

“क्यों, एक बार तुम्हीं ने तो कहा था कि यू आर डिफरेंट।” उसे मेरी बात याद थी।

“अगर पूरी तरह से डिफरेंट हो गया तो लोग पागल कहेंगे। इसलिए कुछ चीज़ें अब भी मुझमें दूसरे सामान्य मानवों-सी हैं।” मैंने कहा। वो मेरे जवाब पर मुस्कुराई।

“लगता है आजकल लॉजिकल रीजनिंग बहुत पढ़ रहे हो!” उसने कहा। मैंने अपनी भौंहों को ऊपर-नीचे किया। जिसका मतलब था, “हाँ।”

फिर हम उस दुकान के अलावा भी कई जगह घूमे। तीन घंटे की शॉपिंग के बाद उसने दो टॉप और एक जींस ख़रीदी।

“आज तो तुम बोर हो गए ना?” अंतिम दुकान से बाहर निकलते हुए कोमल ने कहा।

“ऐसी तो कोई बात नहीं। तुम्हारे साथ मैं बोर कैसे हो सकता हूँ?”

“रियली?”

“हाँ।”

“तुम कुछ अपने लिए लेना चाहोगे?”

“नहीं, मुझे कपड़ों का कुछ ख़ास शौक नहीं है। वैसे भी पूरा दिन कमरे में ही बीतता है। नये कपड़े होंगे तो उनको पहन कर बाहर जाने की इच्छा होगी और वक़्त बर्बाद होगा। नये कपड़े न हों तो ही बेहतर है।” मैंने कहा।

“यू आर रियली डिफ़रेंट!” उसने एक बार फिर कहा। मैंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। हम लोग मॉल से निकलकर पार्किंग की ओर बढ़ रहे थे।

“अनुराग, तुम्हारी गर्लफ्रेंड है?” कोमल ने पूछा। मुझे समझ नहीं आया कि अचानक उसे यह सवाल कैसे सूझा।

“नो कोमल, अब तक तो ऐसा सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ।” मैंने मज़ाक़ में ही उतर दिया। मेरा जवाब ख़त्म भी नहीं हुआ था कि उसने दूसरा सवाल पूछा।

“आर यू वर्जिन?” उसका सवाल सुनकर मैं चौंका। यह सवाल तो बेहद ही निजी था। मैंने कभी ऐसी बातें किसी लड़के से भी नहीं की थीं और कोमल तो लड़की थी। ए गर्ल विद वाइट ब्यूटीफुल स्किन। मैंने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया।

“जवाब नहीं दिया तुमने।”

“तुम ऐसे ऊल-जुलूल सवाल क्यों पूछ रही हो?” मैंने चिढ़ते हुए कहा।

“ओह! तुम्हें बुरा लगा, सॉरी। बट इसमें सिली जैसी तो कोई बात नहीं थी।” कोमल ने थोड़ी तेज़ आवाज़ में कहा।

“ओके। आर यू वर्जिन?” मैंने पूछा।

“यस, आइ एम।”

“रियली!” मैंने आश्चर्य से पूछा।

“वाट डु यू मीन बाय रियली?”

मैं कुछ नहीं बोला। पर वो बोली।

“यू नो, तुम्हारी परेशानी क्या है?”

“तीन मुलाक़ातों में तुम्हें मेरी परेशानी का भी पता चल गया!” मैंने व्यंग्य में कहा।

“हाँ, सुनोगे?”

“कहो।”

“तुमने एक मुखौटा ओढ़ रखा है। तुम जैसा अपने को दिखाते हो, वैसे हो नहीं। सोचते कुछ हो और कहते कुछ। टेल मी, तुमने कभी कोई ब्लू फ़िल्म नहीं देखी?” मैंने उसकी बात का जवाब नहीं दिया।

“तुम भले ही जवाब मत दो। तुम्हारी उम्र का कोई लड़का ऐसा नहीं होगा जो ब्लू फ़िल्म न देख चुका हो। पर अगर मैं तुमसे ब्लू फ़िल्म की बात भी कर लूँ तो तुम ऐसे बिहेव करोगे जैसे कि यह जाने किस चीज़ का नाम ले लिया। शायद किसी और ग्रह की होगी। वाय डु यू हैव डबल स्टेंडर्ड?” कोमल बोले जा रही थी। हम चलते-चलते कार के पास आ गए थे।

“....जैसा कि तुम उस दिन सेंट्रल पार्क में कर रहे थे।” कोमल ने बात पूरी की। उसकी बातें सुन के मेरा दिमाग़ भौचक्का रह गया। वो मुझसे ऐसी बात कैसे कर सकती है? यहाँ तक कि नेहा ने भी मुझसे कभी ऐसे बात नहीं की। नेहा, जिसे मैं प्यार करता था।

मैंने कार का गेट खोला और उसमें चुपचाप बैठ गया। वो भी कुछ नहीं बोली। उसने कार स्टार्ट की।

मैं भले ही बोल कुछ नहीं रहा था पर मेरी सारी सोच कोमल की बातों पर ही केंद्रित थी। वो सही तो कहती है। अगर उस दिन मैं सेट्रल पार्क में उस लड़के की जगह होता तो क्या मैं किस नहीं करता? हम डिवाइन पैलेस की छत पर खड़े होकर आख़िर होटल की खिड़की में क्यों ताँक-झाँक करते हैं! यह तो नेचुरल है। अगर नेहा कहे कि वो मुझे किस करना चाहती है तो क्या मैं उसे मना करूँगा? नहीं। बीकॉज़ आइ लव हर। कोमल इज एब्सोल्युटली राइट।

“आइ थिंक कोमल, यू आर राइट।” मैंने कोमल की ओर देखते हुए कहा। उसका ध्यान गाड़ी चलाने में ही था तो शायद उसने नहीं सुना।

“हूँ...कुछ कहा?” उसने बिना मेरी ओर देखे कहा।

“आइ सेड...आइ थिंक यू आर राइट।”

“ओह, थैंक्स।”

“तुम्हारा ब्वॉयफ्रेंड है?”

“था।”

“मतलब?”

“मतलब था, अब नहीं है।”

“क्या हुआ?”

“हमेशा के लिए तो हीरा होता है। डी बीयर्स। बाक़ी सब छोड़ जाते हैं।”

“वापस आ गया तो।”

उसने मेरे इस सवाल पर घूरा। मानो मैंने किसी नाज़ुक तार पर हाथ रख दिया हो और वो झन्ना उठा हो।

“तब देखा जाएगा।”

“एक बात और पूछूँ?”

“पूछो।”

“वो ‘कुछ-कुछ होता है’ का डायलॉग है ना... हम एक बार जीते हैं, एक बार मरते हैं और प्यार भी एक ही बार करते हैं। मानती हो?”

“ये कैसा सवाल है?”

“जवाब दो।”

“नहीं। प्यार कई बार हो सकता है। पर पहला प्यार भूलता नहीं है।”

फिर मैं चुप हो गया। समझ नहीं आ रहा था कि हम दोनों ऐसी बातें क्यों कर रहे थे। शायद एक-दूसरे को जानने के लिए...पर क्यों? पता नहीं।

“मैं एक बात पूछूँ?” कोमल ने चुप्पी तोड़ी।

“पूछो।”

“तुम्हें पता है, मेरे घर वाले हमें एक साथ बाहर घूमने क्यों जाने देते हैं?”

“क्योंकि तुम्हारे पापा और मेरे पापा दोस्त हैं?”

“और...?”

“और क्या...?”

“कुछ नहीं।”

“नहीं...बताओ।”

“ऐसे ही पूछ लिया। चलो घर आ गया।”

———————

पार्टी में नेहा नहीं आई। सोमदेव अंकल ने कोमल से पूछा तो उसने बताया कि नेहा के अंकल की तबीयत ख़राब है। सो, वो नहीं आ पाएगी। काफ़ी लोग थे पार्टी में। मैं उनमें से किसी को नहीं जानता था। हालाँकि अंकल ने मेरा परिचय सबसे यह कहकर करवाया कि मैं कैट की कोचिंग कर रहा हूँ और मैंने टेस्ट में टॉप किया है। पूरी पार्टी में कोमल मेरे साथ ही रही। कोमल बहुत सुंदर लग रही थी। उसकी काली ड्रेस, जिसे जगह-जगह से लेस से बाँधा गया था, में से उसकी ब्यूटीफुल वाइट स्किन नज़र आ रही थी। जिसे मैं चोरी-छिपे उससे नज़रें बचाकर देख लेता था। ऐसा मैंने नेहा के साथ कभी नहीं किया था। हम घंटों साथ रहते पर कभी उसकी वाइट ब्यूटीफुल स्किन पर नज़र नहीं गई। हमारी नज़रें एक-दूसरे की आँखों में होती थी या फिर कैपुचिनो पर।

पार्टी में सब के जाने के बाद आंटी ने कहा कि जाकर पड़ोस में केक दे आओ। कोमल और मैं नेहा के घर की ओर केक लेकर चल दिए। कोमल ने बेल बजाई। मैं उसके पीछे ही खड़ा रहा। मैंने सोचा काश! कि दरवाज़ा नेहा ही खोले। पर आशा के विपरित दरवाज़ा उसकी बुआ ने खोला। बुआ...वो ही जो स्ट्रिक्ट थीं।

“आंटी, मम्मी ने केक भेजा है, वो नेहा नहीं आई ना...”

“वो तेरे अंकल की तबीयत ख़राब थी ना! तुम रुको मैं नेहा को भेजती हूँ।”

बुआ ने मुझ पर एक भी नज़र नहीं डाली। थैंक गॉड! भगवान कहीं तो मेहरबान होता है। बुआ केक वाली प्लेट लेकर अंदर चली गई। कुछ सेकेंड बाद नेहा बाहर आई। मैं पीछे खड़ा था जहाँ पर लाइट नहीं थी। सो, मेरी शक्ल आसानी से अँधेरे में नज़र आने वाली नहीं थी।

“हाय कोमल! हैप्पी बर्थ डे।” कहते हुए नेहा ने कोमल को गले लगाया। उसी वक़्त मुझे मेरा जन्म दिनांक याद आने लगा।

“थैंक्यू, तुम आई नहीं!”

“तुम तो जानती ही हो!”

“हाँ। अच्छा अपने दोस्त से मिलवाती हूँ। यह कहकर उसने मेरी ओर इशारा किया। “यह है अनुराग।” मैं आगे आया।

मुझे देखकर उसके चेहरे के भाव बदल गए। मैं मुस्कुराया।

“और यह है...” मैंने उसकी बात बीच में काटते हुए कहा, “नेहा।”

कोमल ने आश्चर्य से मेरी ओर देखा। “तुम इसे जानते हो?” नेहा के चेहरे पर डर था, कहीं मैं बता न दूँ।

“ओह! अभी आंटी ने ही तो कहा था कि मैं नेहा को भेजती हूँ।” कहकर मैं मुस्कुराया। कोमल हँस दी। “यू नो नेहा, ही इज वेरी इंटेलीजेंट।”

“रियली!” नेहा ने मेरी ओर शरारती नज़रों से देखते हुए कहा।

“अच्छा तो नेहा, अब हम चलते हैं।” कोमल बोली।

“आपसे मिलकर अच्छा लगा नेहा।” मैंने जाते-जाते कहा। वो मुस्करा दी और हम दोनों वहाँ से चले आए।

———————

“अनुराग तुम ड्रिंक करते हो?” अंकल-आटी सो चुके थे। मैं ओर कोमल फर्स्ट फ्लोर पर बने गेस्ट रूम में थे। टीवी का चैनल चेंज करते हुए कोमल ने पूछा।

“एक ही बार पी है।” मैंने जवाब दिया और तुरंत कोमल से पूछ लिया, “और तुम?”

मैं कोमल से पूरी तरह खुल चुका था। “ओनली वन्स। एक बार फ्रेंड की बर्थ डे पार्टी में पी थी। वोदका।”

“मैंने तो सिर्फ़ बीयर ही पी थी। वो भी तुम्हारे जैसे ही अपने दोस्त की बर्थ डे पार्टी में।”

“तो इस हिसाब से तो मैं तुम्हारी सीनियर हुई।”

“हाँ, मिस सीनियर।” मैंने कहा। कोमल ने ट्रांसपेरेंट टीशर्ट और कैप्री पहन रखी थी। बाल उसके खुले थे। शायद लोमानी का परफ्यूम था। मेरी नज़र उसके पाँवों की ओर गई और वहीं अटक गई।

“क्या हम दोस्त हैं?” कोमल ने कहा।

मैंने अपनी निगाहें कोमल के ख़ूबसूरत पाँवों से हटाते हुए जवाब दिया- “हाँ, कोई

शक?"

जबसे मैं उसकी बात से सहमत हुआ था, मैं उसके साथ एकदम सहज हो गया था।

"और आज तुम्हारे फ्रेंड का बर्थ डे है, राइट?" उसने एक बार फिर पूछा।

"यस।" मैंने जवाब दिया।

"तो तुम आज नहीं पीना चाहोगे?"

"हैव यू गॉन मैड? इस वक़्त, वो भी घर में!" मैंने आश्चर्य से कहा।

"हाँ, क्यों नहीं। मैं अरेंज कर सकती हूँ। तुम हाँ तो बोलो।" उसने कहा।

मैंने टीवी का चैनल चेंज करते हुए स्टार प्लस लगा दिया। शायद सास-बहू का कोई सीरियल चल रहा था।

"तुम यह टीवी सीरियल देखती हो?" मैंने पूछा।

"नहीं।" वो समझ गई थी कि मैं उसकी बात टाल रहा था।

"तो तुम्हें एक लड़की के साथ पीने में डर लगता है।" उसने मेरे चेहरे में नज़रों को गड़ाते हुए कहा।

"डर कैसा? अच्छा इतनी रात को तुम लाओगी कहाँ से?" मैंने यह जताने की कोशिश की कि मुझे पीने में कोई एतराज़ नहीं है।

"वो मुझ पर छोड़ो। मुझे पता है पापा कहाँ रखते हैं।" मैंने उसे ऐसी नज़रों से देखा जो कह रहीं थी, "कोमल यू आर जीनियस।"

"और अगर अंकल-आंटी को पता चल गया तो?" मैं सारे संदेह दूर कर लेना चाहता था।

"वो कैसे चलेगा?"

"वो जग गए तो!"

"मैं अपने पापा को अच्छी तरह से जानती हूँ। एक बार सो गए तो सुबह के सात बजे से पहले नहीं उठेंगे। और आज तो बिल्कुल नहीं, क्योंकि उन्होंने मेरे जन्मदिन की ख़ुशी में तीन पेग लिए हैं।"

"और तुम्हारी मम्मी?"

"उनके जोड़ों में दर्द रहता है। वो रात को पानी भी सिरहाने रखकर सोती हैं ताकि उठना ना पड़े।"

"तो तुम पूरी तरह से तैयार हो!" मैंने कहा।

"मैं तो हूँ। तुम अपनी बताओ।"

मैंने सोचा, मैं पीना तो चाहता हूँ पर मना क्यों कर रहा हूँ। जो काम करना चाहता हूँ अगर वो ग़लत नहीं है तो उसमे सोचना क्या! प्रतीक पीता है। भूपी पीता है। अंकल पीते हैं और मैं तो पहले भी पी चुका हूँ।

"ठीक है, पर सावधानी से!" मैंने कहा।

"यस सर।" इतना कहकर मुस्कुराते हुए कोमल वहाँ से चल दी। मैंने टीवी का चैनल चेंज किया। जब तक कोमल आई, मैं तीस चैनल चेंज कर चुका था। उसने लाकर वोदका की बोतल मुझे पकड़ा दी और दो डिस्पोजल ग्लास अपने हाथों में पकड़ लिए।

“सर्व करो अनुराग।” मैंने बोतल खोली जो कि पहले से ही आधी थी। ग्लास को ऊपर तक भर दिया।

“ओह! अनुराग, तुम्हें तो सर्व करना भी नहीं आता।” उसने कहा।

“मैडम आइ एम न्यू, इट्स फर्स्ट टाइम। जब बीयर पी थी तो ग्लास की ज़रूरत ही नहीं पड़ी थी।” मैंने मासूमियत से कहा।

फिर कोमल ने बताया कि ड्रिंक कैसे बनाया जाता है। अब हम दोनों के हाथ में ग्लास थे।

“चीयर्स।” हमने अपने ग्लास आपस में टच किए। वोदका का टेस्ट बीयर से अलग था। पर कड़वा उतना ही था। आज मैं बोतल पर एक्सपायरी डेट देखकर अपनी फजीहत नहीं करवाना चाहता था।

“आज का जाम तुम्हारे नाम, बर्थ डे गर्ल।” मैंने कहा और एक घूँट भरा।

“थैंक्स,” कहते हुए नेहा ने ग्लास अपने होंठों से लगाया।

मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि मैं नेहा के घर के पड़ोस में बैठा उसी की दोस्त के साथ वोदका पी रहा था। कैपुचिनो वोदका से कम ही कड़वी थी।

“कोमल, एक बात बताओ। तुम जब ऊपर आई तो अंकल-आंटी को पता था।”

“हाँ, मैंने बताया था कि मैं और तुम शायद कोई मूवी देखेंगे।”

“उन्होंने कोई एतराज़ नहीं किया?” मैंने एक घूँट लेते हुए पूछा।

“क्यों, एतराज़ भला कैसा!” उसने कहा।

“आइ मीन एक लड़की ओर लड़का अकेले...यू नो वाट आइ मीन?” यक़ीनन मुझे चढ़ने लगी थी।

“डीयर अनुराग, विश्वास है उनको तुम पर। वो जानते हैं तुम उनकी बेटी के साथ कुछ ग़लत नहीं करोगे।”

“और अगर कर दूँ तो?” मैंने शरारत के लिहाज़ से कहा।

“आइ विल नॉट माइंड।” उसने अपना ग्लास ख़ाली करते हुए कहा। मैंने नज़रें झुका लीं।

“सर, मेरा ग्लास ख़ाली हो गया है, सर्व कीजिए।” कोमल मेरी ओर ग्लास बढ़ाते हुए बोली। मैंने उसकी ग्लास में वोदका और मिरिंडा दोनों उड़ेली।

“यस, दिस इज द वे टु सर्व।”

“प्रैक्टिस मेक्स ए मैन परफ़ेक्ट।” मेरी बात सुन वो मुस्कुरा दी। मुझे प्रतीक की वो बात याद आ गई जब उसने छत पर कहा था ‘प्रैक्टिस मेक्स ए मैन परफ़ेक्ट।’ मेरे भी चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई। ख़ूबसूरत लड़की, वो भी ऐसे कपड़ों में जिनमें से उसकी देह दर्शन देने को आतुर हो, आपके साथ हो और आपने जीवन में पहली बार वोदका पी हो तो ऐसे समय में बस आसमान से बिजली चमकने और बादल गरज़ने की चाहत आपके मन में होती है।

“अनुराग, किस करोगे?” कोमल ने कहा।

मेरे पास उसका कोई उत्तर नहीं था। सिवाय इस एक एक्सप्रेशन के, “व्हाट!”

“जस्ट किडिंग यार।” उसने कहा। मैं बुरी तरह झेंप गया। अगर वो मेरे साथ मज़ाक़ कर सकती है तो क्या मैं नहीं कर सकता!

“कोमल, मे आइ किस यू?” मैंने कहा।

वो मेरी आँखों में देखकर बोली, “आर यू श्योर?”

ग्लास का आख़िरी घूँट लेते हुए मैं बोला, “यस।”

“ओके माय डियर।” कहकर वो मेरे क़रीब आ गई। मैं तो सिर्फ़ मज़ाक़ कर रहा था। मुझे नहीं पता था कि वो इस तरह तैयार हो जाएगी। शायद वोदका उस पर भी असर कर रही थी। मेरे हाथ-पाँव फूलने लगे। अरे, जो लड़की के टच हो जाने पर काँप जाता हो, किस का सोचकर वो पागल नहीं हो जाएगा?

मेरी यह हालत देख कोमल बोली, “क्या हुआ?”

“आइ...आइ...” मैं कह नहीं पा रहा था कि आइ वाज जस्ट किडिंग।

उसने अपने हाथ मेरे गले में डाल दिए। मेरे चेहरे पर पसीना आने लगा।

“क्लोज यॉर आइज।” कोमल अपना चेहरा क़रीब लाते हुए बोली। मेरे हाथ से ग्लास छूट गया। वो लगभग ख़ाली था। मैंने भी अपने हाथ उसके गले में डाल दिए जो ज़्यादा देर तक गले में नहीं टिके। रूई के नर्म फाहे मानो मेरे होंठों पर चल रहे थे। टीवी पर चल रहा म्युजिक मुझे सुनाई देना बंद हो गया।

———————

अगले दिन जब फ़ोन की घंटी बजी। नेहा का फ़ोन था। पता नहीं क्यों अचानक रात के नर्म रूई के फाहे मुझे याद आ गए और एक गिल्ट मेरे अंदर आकर बैठ गया। मैं तो नेहा से प्यार करता हूँ, फिर कोमल को किस क्यों किया? शायद वोदका के नशे में। हाँ, नशे में तो आदमी कुछ भी कर जाता है। मैंने अपने गिल्ट को बाहर निकालने के लिए तर्क खोज लिया था। तुरंत फ़ोन उठाया।

“हैलो अनुराग, कैसी रही कल की पार्टी?” नेहा ने शायद यही पूछने के लिए सुबह होने का इंतज़ार किया होगा। मैं वापस डिवाइन पैलेस जा चुका था। सुबह मैं जल्दी ही वहाँ से निकल आया था। सो, कोमल से आते समय मुलाक़ात नहीं हो पाई थी। सुबह सिर ज़रूर दर्द कर रहा था। अंकल कोमल को उठाना चाहते थे पर मैंने ही मना कर दिया।

“तुम्हारे बिना कैसी पार्टी?” मैंने नेहा को जवाब दिया।

“वो तो दिख रहा था, कैसे चहक रहे थे तुम।”

“देखा कल तो तुम्हारे घर भी आ गया। तुम्हारी स्ट्रिक्ट बुआ के सामने।”

“अच्छा, इतनी ही हिम्मत है तो अकेले आ के दिखाओ!”

“हाँ, ताकि वो मेरी चटनी बना दें!” मैंने हँसते हुए कहा।

“तो, कल तुम्हें टाइम मिल गया! क्लास भी बंक कर दी! पर तुम्हारे पास मेरे साथ फ़िल्म देखने का वक़्त नहीं है!” नेहा नाराज़गी भरे स्वर में बोली। मुझे याद आया कि मैंने नेहा को कहा था कि मैं ही उसे फ़ोन करके बताऊँगा कि कब चलना है।

“नेहा, पापा ने फ़ोन करके कह दिया था, इसीलिए जाना पड़ा। आफ्टर ऑल वो पापा के अच्छे दोस्त हैं।”

“और मैं तुम्हारी।”

“हाँ जी, आप मेरी बहुत अच्छी दोस्त हैं मोहतरमा और हम जल्द ही फ़िल्म देखने चलेंगे।”

“पक्का?”

“पक्का। अच्छा कल तुम्हारे अंकल की तबीयत बिगड़ गई थी ना, अब कैसे हैं?

“बस ठीक ही हैं। आजकल वो काफ़ी कम बोलने लगे हैं। लगता है कैंसर से ज़्यादा भी कोई चीज़ है जो उन्हें परेशान करती है।” उसकी आवाज़ से लगा कि वो रोने ही वाली है।

“नेहा, यू विल नॉट क्राय?”

“पता है अनुराग, मेरी बुआ कल सारी रात जगी रहीं। शी वाज क्रायिंग, क्रायिंग लाइक ए किड।”

“नेहा, आइ एम विद यू। तुम अपने अंकल के साथ टाइम स्पेंड करो, बातें करो, हँसी-मज़ाक़ करो। उन्हें अच्छा लगेगा।”

“थैंक्स अनुराग। आइ विल ट्राय।” नेहा बोली।

“चलो। मैं तुम्हें रात को फ़ोन करूँगा। ठीक है?”

“ठीक है। भूलना मत।”

“पक्का, ओके बाय। टेक केयर।”

“बाय।”

“अच्छा सुनो...”

“क्या?”

“बाय।”

“हा हा...बाय।”

———————

कल जब मैं वोदका पी रहा था, कोमल को किस कर रहा था तब नेहा रो रही थी। और मैंने उसे एक कॉल तक नहीं किया। उसे मेरे साथ की ज़रूरत थी। मुझे सोच-सोचकर ग्लानि होने लगी। तीन मुलाक़ातों में ही मैं और कोमल किस तक पहुँच गए थे और नेहा से इतनी मुलाक़ातों के बाद भी हम सिर्फ़ हाथ मिलाने तक ही सीमित थे। पर नेहा से मैं अपनी सारी बातें शेयर करता था। अपनी सारी प्रॉब्लम्स उसके साथ साझा करता था। नेहा भी अपनी बात बताकर जी हल्का कर लिया करती थी। हम एक-दूजे के लिए इमोशनल सपोर्ट बन गए थे।

“ओए, जल्दी छत पर चलो।” अंकुर भागता हुआ कमरे में आया।

“क्यों, क्या हुआ? मैंने पूछा।

“समझो यार, होटल की खिड़की...” उसका इतना ही कहना था कि हम छत की ओर लपके।

“यार यहाँ से तो कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा।” भूपी बोला। हम सब अपनी नज़रें खिड़की पर गड़ाए हुए थे। पर सब कुछ धुँधला दिखाई दे रहा था। पर इतना तय था कि हम जो देखना चाहते थे वो उस खिड़की में उपलब्ध था। अंकुर अक्सर शाम को छत पर आकर ताक-झाँक किया करता था और कुछ पॉजिटिव पाते ही हमें आवाज़ देकर बुला लिया करता था। जब काफ़ी देर तक हमें कुछ साफ़-साफ़ नहीं दिखाई दिया। मैं बोल पड़ा, “यार मैंने पहले ही कहा था, वी मस्ट फाइंड न्यू कॉर्नर।”

“डोंट वरी यार, तुम लोग मेरे साथ चलो।” अंकुर बोला।

“कहाँ?” प्रतीक ने पूछा।

“सामने वाले होटल में।” अंकुर बोला।

“पागल है क्या?” प्रतीक चिल्लाया।

“मैं पहले भी वहाँ जा चुका हूँ।” अंकुर ने आत्मविश्वास से कहा। मानो यह बहुत ही गर्व का काम हो।

“आर यू श्योर?” मैंने पूछा।

“बिलीव मी यार। उस गैलेरी से होते हुए हम इस खिड़की के बहुत पास में पहुँच सकते हैं।” अंकुर ने इशारा करते हुए पूरा प्लान बताया। हम में से कोई भी यह मौक़ा नहीं छोड़ना चाहता था।

हम अगले ही पल डिवाइन पैलेस के बाहर थे। उसके पीछे से होते हुए उस होटल के मेन गेट तक पहुँच गए। चौकीदार सो रहा था। रिसेप्शन की लाइट बंद थी। हम बिना कोई आवाज़ किए अंदर चल दिए। अंकुर हम सबसे आगे था। मानो उस रात वो हमारा गाइड था। हम गलियारे से होते हुए बालकनी में पहुँचे, जिसमें वो खिड़की थी। मुझे डर लग रहा था कहीं कोई देख न ले। हम सीधे उस खिड़की पर पहुँचे और नज़रें कमरे के अंदर गड़ा दी।

“अरे! यह आदमी देखा हुआ नहीं लगता?” भूपी बोला। उसकी आवाज़ धीमी थी। मैं उसके पास ही खड़ा था। सो, वह मुझे ही सुनाई दी। मैंने ध्यान से देखा।

“ब्लडी मसानी। अरे यह तो मसानी है!” मेरी आवाज़ ज़रा तेज़ थी। सभी ने सुन ली।

“हाँ यार, ये तो मसानी ही है।” प्रतीक ने मेरा समर्थन किया।

“ब्लडी मसानी। यहाँ क्या कर रहा है?” अंकुर बोला।

“देख ना, अभी पता चल जाएगा।” मैं बोला। मसानी एक लड़की के साथ था और दोनों

वो ही कर रहे थे जो हम देखना चाहते थे। लड़की का फेस देखने को हम उतावले हुए जा रहे थे। पर उसका फेस दूसरी तरफ़ होने से हम देख नहीं पा रहे थे। पर जितना कुछ देख पा रहे थे उसके अनुसार लड़की सच में ख़ूबसूरत थी।

"हाय! काश! मसानी की जगह मैं होता।" अंकुर एक गहरी साँस छोड़ते हुए बोला।

"तू क्यों, हम क्या बुरे हैं?" यह भूपी की आवाज़ थी।

"ओह...माय...गॉड...! गरिमा!" अंकुर बोला। लड़की का चेहरा अब घूम चुका था। जब पता चला कि वो गरिमा थी, हमारी निगाहें और ज़्यादा प्रखर और मुस्तैद होकर खिड़की से लग गईं। मैंने देखा कि अंकुर का चेहरा ग़ुस्से से लाल था। "इस साले मसानी को चांस कैसे मिल सकता है!" अंकुर ने तैश में आकर कहा।

"धीरे बोल, अपने पर क़ाबू रख। देख तेरे को वैसे वाला चांस तो कभी मिलेगा नहीं। फिर ये वाला चांस क्यों गवाँ रहा है।" प्रतीक बोला। शायद प्रतीक की बात ने उसके अंदर के ग़ुस्से को और बढ़ा दिया था। अंकुर उठा और खिड़की पर एक लात मारी। यह सब अप्रत्याशित था। हमारे लिए भी और मसानी के लिए भी। हम वहाँ से भागे। हमारे भागने की आवाज़ ने चौकीदार को ज़रूर उठा दिया। उसने हमारा रास्ता रोक हमें पकड़ने की कोशिश की। उसने भूपी को पकड़ लिया। मैं और अंकुर तो आगे थे। सो, उसके पीछे से प्रतीक आया और चौकीदार के पास रखा उसी का डंडा उठाकर चौकीदार के कंधों पर ज़ोर से मारा। इस मार के असर से उसने भूपी को छोड़ दिया और प्रतीक उसे धक्का देकर वहाँ से भाग आया। हम भागकर सीधे डिवाइन पैलेस पहुँचे। अँधेरे की वजह से चौकीदार हमारे चेहरे नहीं देख पाया। हमने डिवाइन पैलेस में ऊपर आने का दरवाज़ा बंद कर दिया। हम सभी भूपी के कमरे में थे।

"पानी पीना है, यार लाइट तो जला।" अंकुर ने हाँफ़ते हुए कहा।

भूपी लाइट जलाने को बढ़ा तभी प्रतीक ने उसे रोका।

"ए इडियट, लाइट मत जला। चौकीदार ने हमारी शक्ल नहीं देखी तो क्या, उसे यह तो पता ही है कि हम चार हैं? ऊपर से लाइट जलती देखेगा तो समझेगा हम ही थे।"

"तो क्या करें?" अंकुर बोला।

"कुछ नहीं अपने-अपने कमरे में जाओ और सो जाओ। गुड नाइट।" कहते हुए प्रतीक उस कमरे से निकल गया और उसके पीछे-पीछे मैं भी।

"यार विश्वास नहीं हो रहा। अनबिलीवेबल। मसानी गरिमा के साथ...सेक्स..." प्रतीक ने बेड पर बैठते हुए कहा।

"कुछ भी कहो, गरिमा लग मस्त रही थी।" मेरी इस बात पर प्रतीक ने कोई एक्सप्रेशन नहीं दिए। कुछ देर चुप रहने के बाद प्रतीक बोला, "यार तुमने कहा कि मसानी तस्नीम से प्यार करता है और अभी मसानी गरिमा के साथ। कुछ समझ नहीं आ रहा है।"

"जस्ट ए मिनट प्रतीक, मैंने यह नहीं कहा था कि मसानी तस्नीम मैडम से प्यार करता है। मैंने सिर्फ़ इतना कहा कि उन दोनों को एक साथ बात करते हुए कॉफी हाउस में देखा था और तब मुझे लगा शायद...वो मैडम की अंगुलियों से भी तो खेल रहा था।" मैं बोला।

मैंने जो कुछ भी कहा वो सुनकर प्रतीक किसी उधेड़बुन में था। फिर अचानक बोल

पड़ा, “इसका मतलब यह है कि मसानी कभी-न-कभी गरिमा के साथ भी किसी-न-किसी कॉफ़ी हाउस में बैठा होगा और फिर...आज...। इट मीन्स ही जस्ट वांट्स टु प्ले।” प्रतीक ने पूरी स्थिति का विश्लेषण किया।

“शायद!” मैंने बस इतना ही कहा।

कई बार कुछ चीज़ें जो नैतिक रूप से अच्छी नहीं मानी जातीं, वो किसी की नैतिकता को बचाने में सहायक हो जाती हैं। तो हमारी आज की इस अनैतिक घटना को इसी दृष्टि से देखा जाए। प्रतीक को पूरी रात नींद नहीं आई। वो तस्नीम मैडम के बारे में सोचता रहा और मैं...।

मैंने नेहा को कहा था कि उसे रात को फ़ोन करूँगा पर अब तक नहीं किया। रात के बारह बज चुके थे। अब तक तो वो सो गई होगी, यही सोचकर मैंने उसे सिर्फ़ एसएमएस किया।

फिर दिन ढल गया, फिर रात आ गई
फिर तन्हाई में बैठने की बात आ गई
अभी तारों की पनाह में बैठे ही थे
कि चाँद को देखा और तुम्हारी याद आ गई। गुड नाइट।

कुछ देर रिप्लाइ का इंतज़ार किया। जवाब नहीं आया। शायद सो गई थी। उसके एक पुराने मैसेज को दो बार पढ़ा और अकेले ही मुस्कुराता रहा और नींद आ गई।

———————

सुबह मेरे उठने से पहले प्रतीक उठ चुका था। शायद वो मेरे ही उठने का इंतज़ार कर रहा था। मेरी एक अँगड़ाई और दो उबासी के बाद वो बोला, “यार, हमें कुछ करना चाहिए।”

“ठीक है, फिर मैं फ्रेश हो के आता हूँ।” मैंने तीसरी बार उबासी लेते हुए कहा।

प्रतीक ने ऐसे मुँह बनाया कि उसे मेरा मज़ाक़ पसंद नहीं आया।

उसकी लाल आँखें बता रही थीं कि वो रात को सो नहीं पाया था। शायद रात वाले क़िस्से और तस्नीम मैडम को जोड़कर कुछ नये समीकरण बना रहा था और समीकरण न बने होंगे तो उनके लिए ज़मीन तो तलाश कर ही ली होगी।

“लेट मी गो टु टॉयलेट फ़र्स्ट, फिर बात करेंगे। एक टाइम में दो प्रेशर हेंडल नहीं कर सकता मैं।” मैंने बिस्तर से उठकर चप्पल पहनते हुए कहा। मैं बाथरूम में चला गया। हालाँकि पीछे से प्रतीक की एक आवाज़ ज़रूर सुनाई दी, “पता है हमारी कंट्री क्यों पीछे हैं, तुम्हारे जैसे लोगों की वजह से।”

प्रतीक के दिमाग़ में एक प्लान जन्म ले चुका था। वो हर क़ीमत पर तस्नीम मैडम को मसानी से दूर करना चाहता था। उसने कहा कि भले ही वो मुझे न चाहती हो बट आइ लव हर। इट वाज टिपिकल हिंदी फिल्मी डायलॉग।

नेहा ने कहा था कि मुझे हर सूरत में उसका साथ देना चाहिए। सो, मैं प्रतीक के प्लान में उसका साथ देने को तैयार था। दो दिन बाद तस्नीम मैडम की क्लास थी और उसी दिन हमें

इस प्लान को अंजाम देना था। पर प्रतीक के लिए यह दो दिन निकालने मुश्किल हो रहे थे। उसे हर पल लगता कि कहीं मसानी इस वक़्त तस्नीम मैडम के साथ तो नहीं। इन सबके बीच वो कैट से दूर हो रहा था। पिछले दिनों घर जाने की वजह से वो पढ़ नहीं पाया और वापस आने के बाद यह घटना घट गई। ख़ैर, मुझे प्रतीक पर विश्वास था। वो हम तीनों में सबसे ज़्यादा इंटेलिजेंट था।

———————

शाम को कोमल का फ़ोन आया था। उसको शिकायत थी कि मैं उससे मिले बिना ही चला आया। कम-से-कम मुझे उसे थैंक्स तो कहना ही चाहिए था, उस ख़ास शाम के लिए। ख़ास शब्द पर उसने काफ़ी ज़ोर दिया था। कई बार इंसान उत्तेजनावश या उलझन में कुछ काम कर जाता है, जो बाद में उसे मानसिक उलझन में डाल देते हैं। मैं तय नहीं कर पा रहा था कि कोमल के साथ बनता जा रहा मेरा रिश्ता सही था या ग़लत। कोमल की बात मानता तो यक़ीनन उस रिश्ते में ग़लत कुछ नहीं था।

उस रात किस के बाद भी वो मुझसे बहुत नॉर्मल होकर बातें करती रही। पर मैं असहज हो रहा था। यहाँ मैं कोई डबल स्टेंडर्ड नहीं दिखा रहा था। दरअसल, उस दिन मैंने अपनी सोच को एक दोराहे पर खड़ा पाया। आइ वाज टोटली कन्फ़यूज्ड। मुझे ख़ुश होना चाहिए था कि मैंने ज़िंदगी में पहली बार किसी लड़की को किस किया था। यही तो हम सब चाहते थे। आइ थिंक इस मामले में अंकुर मुझसे बेहतर था, कम-से-कम वो क्लियर तो था कि उसे क्या चाहिए। मुझे नहीं पता कि मैं क्या चाहता था। मैं कोमल से मिलने के किसी भी विकल्प पर विचार नहीं कर रहा था। हालाँकि उसने मिलने के लिए कहा भी, पर मैंने मना कर दिया।

प्रतीक ने बताया कि उसके प्लान के लिए एक मोबाइल फ़ोन और एक इयरफ़ोन की ज़रूरत होगी। हम दोनों के पास जो भी मोबाइल थे उनमें इयरफ़ोन वाला सिस्टम नहीं था। अब सवाल यह था कि इयर फ़ोन वाला मोबाइल कहाँ से लाया जाए। नेहा ने कहा था कि प्रतीक को जब भी मेरी ज़रूरत हो, मैं उसका साथ दूँ। प्रतीक ने कहा कि तुम नेहा से ला सकते हो। अगर मैं नेहा से माँगता तो वो यक़ीनन मना भी नहीं करती। पर इसके लिए मुझे नेहा को वो सारी बात बतानी होती। यह भी कि हम इतनी रात को होटल में क्या कर रहे थे। और फिर यह जानने के बाद जाने वो मेरे बारे में क्या सोचती। हालाँकि मैं नेहा से झूठ भी बोल सकता था, पर मैं यह नहीं करना चाहता था। मैंने नेहा के विकल्प पर सोचना ही बंद कर दिया। अब सिर्फ़ कोमल ही मदद कर सकती थी। और इसके लिए तो उससे मिलना होगा। पर प्रतीक का उतरा हुआ चेहरा देखकर मैंने कोमल से ही मदद लेना तय किया। हालाँकि मैं यह चाहता नहीं था। सच्ची कह रहा हूँ।

———————

“हैलो।”

“ओह अनु।”

“अनु, यह तुमको किसने बताया।”

“अभी थोड़ी देर पहले आंटी से बात हो रही थी। उन्होंने ही बताया कि तुम्हारा घर का नाम अनु है।”

“अच्छा...”

“हाँ,...आज मेरी याद कैसे आ गई?” कोमल बोली।

“बस ऐसे ही। तुमसे बात करने की इच्छा हुई।” मैंने कहा। शायद फ़ोन पर झूठ पकड़ना मुश्किल होता है।

“बोलो, फिर.... आज कहीं पर मिलें?” कोमल बोली। मुझे तो इसी पल का इंतज़ार था।

“नेकी और पूछ-पूछ।”

“चलो जगह मैं बताती हूँ। तीन से छः लक्ष्मी मंदिर।” कोमल बोली।

“मंदिर में!” मैंने आश्चर्य से कहा। मुझे नहीं लगता था कि कोमल इतनी धार्मिक होगी कि मिलने के लिए मंदिर में बुलाएगी।

“अरे बुद्धू! लक्ष्मी मंदिर सिनेमाहॉल है।” कोमल ने हँसते हुए कहा। मैं झेंप गया।

मैं उसे मना करने की सूरत में नहीं था। आख़िर दोस्त का काम करना था। हालाँकि राजमंदिर ले जाने का वादा मैंने नेहा से किया था। लेकिन कोमल को ‘हाँ’ कहना मेरी मजबूरी थी।

“वैसे भी मंदिर वाली तुम्हारी हरकतें नहीं हैं।” मैंने धीमे से कहा। सुपर कमांडो ध्रुव की प्रतिशोध की ज्वाला का गहरा प्रभाव था मुझ पर।

“क्या?” कोमल की ऐसी ही किसी प्रतिक्रिया की उम्मीद थी मुझे।

“मैंने कहा ठीक है, चलो फिर मिलते हैं। यह है कहाँ लक्ष्मी मंदिर?”

“टोंक फाटक के पास है।”

“ठीक है, चलो फिर मिलते हैं।”

“ओके, बाय।”

“अच्छा वो...घर पे मत बताना।” मैंने रिक्वेस्ट के लहज़े में कहा।

“ठीक है।”

“बाय।”

———————

सिटी बस में बैठ, ठीक पौने तीन बजे मैं लक्ष्मी मंदिर के बाहर पहुँच गया। एक पुराना-सा सिनेमाघर। जिसे लगता था कई सालों से पेंट नहीं कराया गया था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि कोमल ने राजमंदिर छोड़, लक्ष्मी मंदिर क्यों बुलाया। तभी मेरी नज़र दीवार पर लगे पोस्टर पर गई। ‘एक छोटी-सी लव स्टोरी’ मैंने फ़िल्म का नाम पढ़ा। अरे, यह तो वही फ़िल्म है जिसको लेकर काफ़ी बवाल हुआ था। फ़िल्म को ‘ए’ सर्टिफिकेट मिला था। मेरे जनरल नॉलेज ने अपने होने का सबूत दिया। अधिकतर नवयुवक ही टिकट की लाइन में

दिख रहे थे। हालाँकि इससे पहले मैंने सिनेमाघर में 'ए' सर्टिफिकेट वाली फ़िल्म नहीं देखी थी। अब देख भी रहा हूँ तो वाह री क़िस्मत! लड़की के साथ। एक बार फिर मुझे अपने-आप पर रश्क़ होने लगा। इसी दरमियान मैंने टिकट्स की रेट पर नज़र मार ली। मैं देख लना चाहता था कि कुल कितना ख़र्चा होना है। अकेले होता तो ड्रेस सर्किल में ही बैठ के देख लेता। पर किसी लड़की के साथ तो वहाँ नहीं बैठा जा सकता। ख़ासकर उस लड़की के साथ जिसे कुछ दिनों पहले मैंने किस किया था। बॉक्स का टिकट अस्सी रुपये का था। मैं लाइन में लग गया। बॉक्स की लाइन लंबी नहीं थी। सो, जल्द ही नंबर आ गया। मैं टिकट लेकर मेन गेट की ओर बढ़ गया। दस मिनट के इंतज़ार के बाद कोमल आई। कार पार्किंग में लगा के कोमल मेरी ही तरफ़ आई। दूर से उसे आते हुए देखना सुखद था। मैं देख सकता था कि आस-पास बैठे कई नौजवानों का ध्यान आकर्षित करने में वो कामयाब हुई थी। जैसे ही वो चलकर मेरे पास आई, मेरे हाव-भाव अचानक बदल गए। ऐसे कि मानो किसी ग़रीब को अचानक एक लाख की लॉटरी लग गई हो।

"वेरी पंक्चुअल।" उसने आते ही कहा। मैं मुस्कुरा दिया।

"चलें, फ़िल्म शुरू होने वाली है।" मैंने कहा। हम थियेटर के अंदर आ गए। सलाखों वाले गेट को पार करके हम सीढ़ियों की ओर मुड़े। दीवारों पर पीक से की गई कलाकारी आँखों के साथ-साथ नाक को भी परेशान कर रही थी।

"टिकट!" एक आदमी ने मुँह पर टॉर्च मारते हुए कहा। मैंने जेब से टिकट निकाले।

"ऊपर चले जाओ...थर्ड रॉ।" उसने कहा और टॉर्च का मुँह किसी और के मुँह पर कर दिया। हम सीढ़ियों से होते हुए ऊपर आ गए। फ़िल्म को लगे एक सप्ताह ही हुआ था। फिर भी बॉक्स में ज़्यादा भीड़ नहीं थी।

"यह रही थर्ड रॉ। नंबर क्या है?" कोमल बोली।

"17,18" मैंने टिकट देखकर बताया।

हम कुर्सी पर नंबर देखते हुए आगे बढ़े, तभी कोमल बोली, "ओह कॉर्नर सीट! यू नॉटी।" मैं झेंप गया। मैंने सफ़ाई देना उचित समझा। मेरी इमेज पर आँच आती देख मैं सचेत हो जाया करता था।

"मैंने तो कहा था कि एकदम सेंटर की टिकट देना।" मैंने बच्चे-सी मासूमियत से कहा।

कोमल मुस्कुरा दी। पर्दे पर विज्ञापन शुरू हो चुके थे। हॉल की लाइट बंद नहीं हुई थी। किसी ने चिल्लाकर कहा तो लाइट बंद कर दी गई। अँधेरे में पर्दे से आ रही रोशनी में कोमल का चेहरा कुछ अलग लग रहा था। शायद आज थोड़ा-सा ज़्यादा मेकअप था। फ़िल्म शुरू हो गई। मेरा पूरा ध्यान फ़िल्म पर ही था।

"तुम्हें अजीब नहीं लगा, मैंने राजमंदिर छोड़कर तुम्हें लक्ष्मी मंदिर बुलाया? इस ख़स्ताहाल सिनेमाघर में।" कोमल मेरी ओर देखकर बोली।

"शायद तुम्हें यह फ़िल्म देखनी थी।" मैंने कोमल की पंसद को सही ठहराने की कोशिश की।

"हाँ, बोल्ड फ़िल्म है।" कोमल तपाक से बोली।

“कॉपी है।”

“मैंने तो वो नहीं देखी, मेरे लिए तो नई है।”

मैंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। फ़िल्म शुरू हो चुकी थी। एक लड़का दूरबीन से दूसरों के घर में ताक-झाँक कर रहा था। मुझे लगा मानो यह तो डिवाइन पैलेस की फ़िल्म है।

“एक कारण और भी था।” कोमल बोली।

“क्या?”

“एक्च्युली मैं तुम्हारे साथ थोड़ा टाइम बिताना चाहती थी।” वो बेझिझक-सी कुछ भी कह देती थी। “राजमंदिर में तो इतनी भीड़ लगी रहती है। यहाँ कोई देखने वाला नहीं।”

मुझे एक बार फिर समझ नहीं आया कि किस प्रकार की प्रतिक्रिया दूँ। हालाँकि मेरी फ़िल्म देखने में रुचि नहीं थी। मैं तो अपने ख़ास मक़सद के लिए आया था।

फ़िल्म में जब भी रोमांटिक सीन आता, कोमल मेरी ओर ज़रूर देखती। एक बार मेरे हाथ पर हाथ भी रख दिया। मैं सहम गया। उसने हाथ नहीं हटाया।

“तुम्हें उस दिन किस कैसा लगा?” कोमल बोली। पर्दे पर मनीषा कोईराला का किस सीन चल रहा था। मुझे तुरंत नेहा याद आई। मैं कुछ नहीं बोला। बस, फ़िल्म ख़त्म होने का इंतज़ार करने लगा। फ़िल्म भी हद से ज़्यादा बोरिंग थी। हम इंटरवल में निकल आए।

“सो, कैन वी हैव ए कप ऑफ़ कॉफ़ी?” मैंने कहा। वो क्यों मना करती। हम वहाँ से सीधा बरिस्ता गए। बरिस्ता, जहाँ मेरी मुलाक़ात नेहा की बुआ से हुई थी।

“वाट वुड यू लाइक टु हैव, कैपुचिनो?” मैंने कोमल को ऑप्शन देते हुए कहा। मुझे लगा हर लड़की यही पीती होगी।

“नो, कोल्ड कॉफ़ी।” कोमल मेरे ऑप्शन को नकारते हुए बोली। मैं उठकर काउंटर पर गया और ऑर्डर प्लेस किया। दो कोल्ड कॉफ़ी। फिर अपनी जगह आकर बैठा।

“तुम घर पर क्या कहकर आई हो?” मैंने पूछा।

“यही कि तुम्हारे साथ फ़िल्म देखने जा रही हूँ।” मेरे स्वर के विपरीत कोमल ने सहजता से जवाब दिया।

“रियली! मैंने मना किया था ना?” मैंने पूछा।

“हाँ, पर छुपाना क्यों? जब वो मना नहीं करते।”

व्हाट ए फैमिली! लड़की किसी लड़के के साथ फ़िल्म देखने जा रही है और घरवाले मना ही नहीं कर रहे हैं! मुझे याद आया कि एक बार पापा से मैंने अपने दोस्त के साथ फ़िल्म देखने के बारे में पूछा था, तब उन्होंने किस तरह से मुझे डाँटा और अपने तमाम तर्कों से मेरे दोस्त को आवारा लड़का साबित कर दिया था। मैं जब तक उदयपुर में रहा अधिकतर फिल्में मम्मी-पापा के साथ ही देखी थी। जेम्स बांड की फ़िल्म लगी थी। पापा के साथ नहीं देख सकता था, पता नहीं जेम्स बांड कब क्या कर जाए और मुझे लज्जित होना पड़े। पापा को बता भी नहीं सकता था कि दोस्त के साथ अंग्रेजी फ़िल्म देखने जा रहा हूँ। मिडिल क्लास फैमिली में अंग्रेज़ी फ़िल्मों की एक ख़ास इमेज होती है। इसे देखना अच्छा नहीं माना जाता। तब मैंने एक्सट्रा क्लास का बहाना बनाकर अपने दोस्त के साथ फ़िल्म देखी थी। मेरे

मध्यमवर्गीय विचारों ने मुझे घेर रखा था। कोमल की आवाज़ ने विचारों का क्रम तोड़ा।

“तुम्हारी फ़ैमिली बहुत लिबरल है ना?” मैंने कहा। उसने मेरी ओर देखा और कुछ देर बाद कहा, “सिर्फ़ तभी जब तुम साथ में होते हो। वर्ना कोई लिबरल नहीं है। तुम अगर मुझे डिस्को भी ले जाओ तो वो कुछ नहीं कहेंगे।” मुझे समझ नहीं आया, कोमल ने स्पष्टीकरण दिया या डिस्को चलने का इन्विटेशन।

“क्योंकि वो जानते हैं कि मैं उनकी बेटी के साथ कुछ भी ऐसा-वैसा नहीं करूँगा, राइट?” मैंने मजाक़ में कहा। उसने अपनी गर्दन हिला दी।

“तुम्हें मुझे थैंक्स बोलना चाहिए। मेरी वजह से तुम्हें इतनी आज़ादी मिल रही है।”

“ओह रियली... थैंक्स।” कोमल ने मुस्कान फेंकते हुए कहा।

तभी कोल्ड कॉफ़ी आ गई। वेटर लंबे-लंबे गिलास टेबल पर रख कर चला गया। मैं यह सोच रहा था कि आख़िर उसे कैसे कहूँ। मेरे लिए किसी से कोई चीज़ माँगना सचमुच बहुत मुश्किल था। फिर सोचा जब मैं उसे किस के लिए बोल सकता हूँ तो मोबाइल के लिए क्यों नहीं। तर्क में दम था।

“थैंक्स से काम नहीं चलेगा।” मैंने कहा।

“तो...” कोमल कप उठाते हुए बोली।

“गिफ़्ट बनता है।” मैं धीरे-धीरे मुद्दे पर आ रहा था।

“गिफ़्ट...ओके। नेक्स्ट मुलाक़ात में।”

“नहीं अभी चाहिए।” मैं मुस्कुराते हुए बात कर रहा था ताकि अगर वो मोबाइल के लिए मना भी कर दे तो मैं यह कह सकूँ कि मैं तो मज़ाक़ कर रहा था।

“अभी तो मेरे पास तुम्हारा अहसान चुकाने के लिए कोई गिफ़्ट नहीं है। तुम चाहो तो मेरा यह पर्स रख लो।” उसने पर्स मेरी तरफ़ खिसकाते हुए कहा। मैंने एक नज़र उसके चेहरे की ओर देखा और एक नज़र पर्स की ओर। फिर बोला, “सोच लो।”

“हाँ, सोच लिया।” इतना कहकर कोमल ने एक और घूँट भरी। कोल्ड कॉफ़ी के झाग की वजह से उसके होठों पर मूँछें बन आई थीं। मेरी कोल्ड कॉफ़ी अभी वहीं रखी हुई थी। जैसे-जैसे वो गर्म हो रही थी उसकी क्वालिटी में डेप्रिसिएशन हो रहा था। अगर बरिस्ता की किसी कॉफ़ी का मूल्य बीस डिग्री सेंटीग्रेट तापमान पर चालीस रुपये है तो चालीस डिग्री सेंटीग्रेट तापमान वाली कॉफ़ी का मूल्य बताओ? कैट की कोचिंग कर रहे लड़के के मन में ऐसा ख़्याल आना स्वाभाविक था।

मैंने तुरंत गिलास उठाया और मुँह से लगाया। तभी मन में आया, नेहा की चॉइस कोमल से अच्छी है। लेकिन कोल्ड कॉफ़ी हो या कैपुचिनो...बीयर से दोनों बेहतर थीं।

तभी मेरे फ़ोन की घंटी बजी। प्रतीक का फ़ोन था। वो जानना चाह रहा था कि मोबाइल का इंतज़ाम हुआ कि नहीं।

मैंने सिर्फ़ इतना ही कहा कि हो जाएगा और काट दिया।

कोमल मेरी ओर ही देखे जा रही थी और जब भी वो मुझे ऐसे देखती थी मैं असहज हो जाता था। मैंने अपने को सहज करते हुए कहा, “मेरा मोबाइल देखा। टॉप करने पर जो पैसे

मिले ना, उसी से ख़रीदा है।"

उसने हाथ में लेते हुए कहा, "हाँ, तुमने बताया था।"

मुझे याद आया कि यह तो मैं उसे बता चुका था और मोबाइल भी उसे दिखा चुका था। तभी तो उसने अपने मोबाइल नंबर इसमें फीड कर दिए था।

"तुमने अपना मोबाइल नहीं दिखाया।" मैंने उससे कहा। मोबाइल से बात निकलेगी तो इयर फ़ोन तलक जाएगी।

"ओह! वो तो मैं तुम्हें गिफ़्ट कर चुकी हूँ ना।" कोमल तपाक से बोली।

"कब?" अचानक मेरे मुँह से निकला।

"अभी तो तुम्हें यह पर्स गिफ़्ट किया है, इसी में मेरा मोबाइल है।" उसने निगाहों से पर्स की ओर इशारा करते हुए कहा।

"मैं इसे पर्स में से निकाल सकता हूँ?" मैंने पूछा। शायद लड़की के पर्स को हाथ लगाने से पहले उससे पूछना शिष्टाचार होता है। और ऐसा करना इसलिये भी ज़रूरी है ताकि बाद में किसी भी प्रकार की शर्मिंदगी से बचा जा सके।

"इट विल बी माय ऑनर।" उसने सिर झुका कर मुस्कुराते हुए कहा।

मैंने पर्स खोला, उसमें ऊपर ही मोबाइल रखा हुआ था। उसके आसपास लिपस्टिक और अन्य सामान थे। जिन पर मैंने ख़ास नज़र नहीं डाली।

मैंने ग्लास उठाया और एक साथ दो घूँट भरे। ग्लास वापस रखा।

मैं मोबाइल के फंक्शन चेक कर रहा था। "इसमें तो एफएम भी है। हाउ लकी यू आर!" मैंने ऐसे कहा मानो किसी ग़रीब ने बर्गर देखकर प्रतिक्रिया दी हो।

"क्यों तुम्हारे पास एफएम नहीं है?" अब भी उसकी नज़रें मेरे चेहरे पर ही थीं। ऐसे में मेरे लिए नाटक करना मुश्किल हो रहा था। रूम पर था और मोबाइल में है नहीं। मुझे लगा मेरी आवाज़ किसी याचक के समान हो रही है, जो अपनी दरिद्रता का गुणगान कर किसी की भी जेब ख़ाली करवा लेता है।

"एक्च्युली क्या है ना कि रात को सोते समय रोज़ एफएम चलाते हैं। पूरे दिन के मेंटल वर्क के बाद यह बहुत आराम देता है। पर कल वो ख़राब हो गया। यू नो चाइनीज प्रोडक्ट।" मैंने मायूस होते हुए कहा।

"जब तक रेडियो ठीक नहीं होता, तुम मेरा मोबाइल क्यों नहीं रख लेते?" कोमल ने वो बोल दिया जिसे सुनने के लिए मैंने उसके साथ फ़िल्म देखी थी। एक बहुत ही बोरिंग फ़िल्म।

"नो थैंक्स।" मैं तुम्हारा मोबाइल कैसे रख सकता हूँ?

"क्यों नहीं! तुम मुझे किस कर सकते हो पर मोबाइल नहीं ले सकते।" उसने घूरते हुए कहा। मैं झेंप गया और झेंपा हुआ आदमी कुछ नहीं बोलता।

"मेरा मतलब इतना फ़ॉर्मल होने की ज़रूरत नहीं है। चलो हम फ़ोन एक्सचेंज कर लेते हैं।" शायद यह सोचकर कि उसकी बात का मुझे बुरा लगा, उसने आवाज़ को धीमा और मधुर करते हुए कहा। और इस बार उसकी आवाज़ में आग्रह था।

"ठीक है, तुम इतना कह रही हो तो...," मैंने ऐसे कहा मानो में उसकी बात ज़बरदस्ती

मान रहा था। जबकि मेरे मन में मयूर नाच रहे थे। आइ मीन भाँगड़ा हो रहा था।

“पर बिन इयरफ़ोन के इसमें एफएम चलेगा कैसे?”

“पर्स को ज़रा और टटोलोगे तो इयरफ़ोन भी मिलेगा ना।”

मैंने तुरंत पर्स में हाथ घुमाया और इयरफ़ोन निकाला। मुझे यह समुद्र-मंथन वाली फील दे गया।

फिर मैंने अपने मोबाइल का सिम निकाल कर अपना मोबाइल उसे दे दिया। फिर उसके मोबाइल में अपना सिम डालकर उसका सिम उसे वापस कर दिया।

इतना सब करने के बाद बोला, “अब ख़ुश!”

“हाँ।” इतना कहकर वो मुस्कुरा दी। मैं अपने मक़सद में कामयाब हो चुका था।

अब तक कोल्ड कॉफ़ी भी गर्म हो चुकी थी। झाग सारे बैठ चुके थे। मैंने एक नज़र घड़ी पर डाली।

“सात बज गए हैं, अब चलना चाहिए।” मैंने कहा।

“एज यू विश।” उसने जवाब दिया। हम बरिस्ता से बाहर आ गए। कहना न होगा कि बिल मैंने ही पे किया था। प्रतीक के प्यार के चक्कर में काफ़ी ख़र्चा हो गया था।

“मैं तुमको ड्रॉप कर दूँ?” पार्किंग की ओर आते हुए कोमल बोली।

मैंने मना कर दिया। “थैंक्स, यहाँ से सीधी बस है। चला जाऊँगा।”

———————

मैं भूपी और प्रतीक रात को हमारे कमरे में बैठे थे। प्रतीक हम सबको प्लान समझा रहा था। उसका प्लान समझाने का तरीक़ा बिल्कुल फ़ौज़ियों जैसा था। उसने बक़ायदा एक पेपर पर इंस्टीट्यूट का नक्शा बनाया और हम दोनों को हमारी पोजिशन समझाई। डायलॉग हमारे अपने थे, बस प्रतीक ने सबको उनका करेक्टर समझा दिया था। उस दिन के लिए प्रतीक जनरल बन गया था और हम दोनों कैडेट्स।

नक्शे को समझाते हुए वो हमें कैडेट भूपी और कैडेट अनुराग के नाम से ही संबोधित कर रहा था। मैंने इस पर आपत्ति दर्ज कराई।

“जनरल इस अहम मिशन में हमें हमारे नाम का प्रयोग नहीं करना चाहिए। बेहतर होगा कि हम कोडवर्ड यूज़ करें।”

जनरल को मेरी बात पसंद आई और यह मुझ पर ही छोड़ा गया कि मैं ही कोई कोड नेम बताऊँ। नामकरण की इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी का निर्वाह मैंने भी अच्छी तरह से किया।

“आप जनरल गामा हैं सर और भूपी कैडेट एल्फा होंगे और मैं कैडेट बीटा।” उनके चेहरों की मुस्कानों से ऐसा लगा कि उन्हें नाम पसंद थे। थैंक्स टु सनी देओल एंड बॉर्डर।

“कैडेट्स आप सभी जान चुके हैं कि आपको क्या करना है?” यह प्रतीक की आवाज़ थी। प्रतीक पूरा प्लान समझा चुका था। अब हमें कोई संदेह नहीं था।

“यस जनरल।” हमने एक स्वर में जवाब दिया।

“कैडेट बीटा आप अपने अस्त्र का प्रयोग सीख चुके हैं?” अस्त्र मतलब मोबाइल।

“यस जनरल।”

“तो कैडेट्स किसी भी तरह का कोई सवाल, कोई शक?”

“नो सर।” हमने फिर एक साथ कहा।

हम सब का काम बँट चुका था। बस अब इंतज़ार था अगली सुबह का, जो मसानी के लिए दिक़्क़तें पैदा करने वाली थी। इस मिशन को एक नाम दे दिया गया था। ‘मिशन मसानी।’

जब पहली बार प्रतीक ने यह नाम दिया तो मुझे हँसी आ गई। प्रतीक के घूरने पर यह नाम मुझे पसंद आने लगा। प्रतीक का बनाया नक्शा बहुत अच्छा था। उसे मैंने अपने पास रख लिया। ताकि अपनी पोजिशन भूल जाऊँ तो मैं उसे देख सकूँ।

———————

रात को ग्यारह बजे नेहा का फ़ोन आया।

“अनुराग, कैसे हो?”

“हमेशा की तरह, तुम अपनी बताओ।”

“हमेशा की तरह।” उसने भी वही कहा। नेहा कुछ भी कहती थी तो सुनना अच्छा लगता था।

“नेहा, मैं तुम्हें फ़ोन करने ही वाला था।”

“क्यों?”

“तुमसे बात करने की इच्छा हो रही थी।”

“रियली?”

“क्यों, नहीं हो सकती?”

“पता नहीं।”

“तुम्हारी इच्छा होती है, मुझसे बात करने की?”

“पता नहीं।”

“डु यू मिस मी?”

“पता नहीं।” नेहा लगातार बस यही बोले जा रही थी। जो मुझे परेशान किए जा रहा था। मैं चिढ़कर बोला- “तो पता करो।” इस बार मैंने काफ़ी कुछ कह दिया था। काश! कि नेहा समझती।

“तो पता किया ना, आज फ़िल्म कैसी लगी?” नेहा तल्ख़ी के साथ बोली। ओह माय गॉड! नेहा को फ़िल्म वाली बात कैसे पता चल गई। मेरा शरीर सुन्न हो गया। जीभ हड़ताल पर चली गई। जिसे काफ़ी मेहनत से मैं काम पर लाया।

“कौन-सी फ़िल्म?” चोर की चोरी पकड़े जाने पर जैसी उसकी आवाज़ होती है, मेरी भी वैसी ही थी।

“वही जिसके लिए तुम्हारे पास वक़्त नहीं था, पिछले एक महीने से।” नेहा की आवाज़ का रूखापन मैं भाँप सकता था।

“तुम्हें कैसे पता चला?”

“तुमने ही तो कहा पता करो, तो मैंने पता कर लिया।”

“नेहा, मैं तुम्हें सारी बात बताता हूँ। पहले तुम बताओ, तुम्हें पता कैसे चला?”

“वो कोमल ने ही बताया। आज घर पर आई थी। बहुत तारीफ़ कर रही थी तुम्हारी।” ओह! तो नेहा को जलन हो रही है, इट मीन्स शी ऑल्सो लव्ज मी। थैंक्स कोमल।

“अच्छा तो सुनो। एक्च्युली...अच्छा सिर्फ़ इतना जान लो, मैं उससे प्रतीक के लिए मिला था। हमें किसी काम के लिए एक दिन के लिए इयर फ़ोन और मोबाइल चाहिए था। बस इसीलिए मुझे उससे मिलना पड़ा और फ़िल्म भी देखनी पड़ी।” मैंने नेहा को समझाते हुए कहा। पर यह इतना आसान तो था नहीं।

“तो तुम मुझसे मोबाइल नहीं ले सकते थे?” उसने कहा। उसकी आवाज़ में नाराज़गी साफ़ झलक रही थी।

“ले सकता था पर...”

“अनुराग, मेरे पास पहले से ही बहुत कारण हैं दुःखी होने के। एक तुम ही तो हो जयुपर में जिसे मैं अपने मन की कह सकती हूँ। जिस पर अधिकार जता सकती हूँ, पर लगता है तुम ऐसा फ़ील नहीं करते।” कहते हुए नेहा भावुक हो गई।

“नेहा, प्लीज ट्राय टु अंडरस्टेंड। तुम्हें पता ही नहीं है कि मैं तुम्हारे लिए क्या फ़ील करता हूँ। अच्छा...अच्छा एक काम करो। हम कल शाम को मिलते हैं, जहाँ तुम कहो।” यह एक डैमेज कंट्रोल एक्सरसाइज थी। “अभी तुम कहाँ से बोल रही हो?” मैंने बात पूरी की।

“एसएमएस हॉस्पिटल।”

“आर यू ओके?”

“या आइ एम ओके...बट पता है, अंकल को ख़ून की उल्टी हुई? उन्हें फिर से यहाँ भर्ती कराना पड़ा।”

“अब कैसे हैं वो?”

“ठीक हैं। शायद आज रात को यहीं हॉस्पिटल में ओबजर्वेशन में रहना होगा।”

“ओह नेहा! तुमने मुझे बताया नहीं। शायद मैं कोई मदद कर पाता।”

“थैंक्स अनुराग। तुम्हारी क्लास होती है। मैं तुम्हें परेशान नहीं करना चाहती।”

“कैसी बात कर रही हो!”

“अच्छा बताओ कहाँ मिलोगे?”

“तुम एसएमएस से घर के लिए कितने बजे निकलोगी?” मैंने पूछा।

“रात को नौ बजे के लगभग। अंकल-आंटी को खाना खिलाने के बाद।”

“तो ठीक है। हम उसी जगह मिलते हैं, जो सारी रात जागती है।”

“यू मीन सरस पार्लर?”

“ओह, तुम तो मेरे साथ रहकर इंटेलिजेंट हो गई नेहा।” मैंने माहौल को हल्का करते हुए कहा।

“रियली!” नेहा की आवाज़ से लग रहा था कि वो उस तरफ़ मुस्कुरा रही थी। नेहा से

बात करके वो सारा कंफ़्युजन दूर हो जाता था जो कोमल से मिलने के बाद होता था।

“ठीक है, हम आपस में फ़ोन पर बात कर लेंगे।”

“ओके, टेक केयर।”

“बाय।”

“रुको रुको...पहले प्रॉमिस करो।”

“व्हाट?”

“तुम जानती हो।”

“ओके बाबा। आइ विल नॉट क्राय....हैप्पी?”

“दैट्स लाइक ए गुड गर्ल, बाय।”

“बाय बाय।”

“कैडेट्स आज का दिन है, जब हमें दिखाना है कि हम जो ठान लेते हैं वो कर के ही दम लेते हैं। फिर चाहे हमारा दुश्मन कोई माउस हो या मसानी। आइ होप सबको अपना-अपना काम याद है। और किसी से कोई ग़लती नहीं होगी।” अगले दिन सुबह प्रतीक डिवाइन पैलेस से निकलने से पहले एक जनरल की तरह बोल रहा था।

“यस सर।” मैंने और भूपी ने एक साथ कहा।

“ओके। मोर्चे पर जाने से पहले कैडेट अल्फा बताएगा कि उसकी पोजिशन क्या होगी?” प्रतीक ने पूछा।

“टाइगर हिल सर।” टाइगर हिल का मतलब था मसानी के ऑफ़िस के बाहर का हिस्सा।

“गुड कैडेट अल्फा, एंड कैडेट बीटा योर पोजिशन?”

“पाकिस्तान।” पाकिस्तान का मतलब था मसानी का केबिन।

“वेरी गुड कैडेट्स। और मैं पीएम की सुरक्षा का ख़्याल रखूँगा।” प्रतीक बोला। पी एम का मतलब था पर्सनल मैटर। क्योंकि तस्नीम मैडम प्रतीक का पर्सनल मैटर थी।

हम इंस्टीट्यूट में थे। पहली क्लास अटेंड कर रहे थे। मसानी अब तक ऑफ़िस में नहीं आया था।

“कहीं आज उसने छुट्टी तो नहीं कर ली?” प्रतीक बोला। प्रतीक पीछे वाले गेट के पास ही बैठा था जहाँ से मसानी के ऑफ़िस का गेट दिखाई देता था। यह पहली बार था जब प्रतीक पीछे की सीट पर बैठा था।

“होप फॉर द बेस्ट, जनरल गामा।” मैंने कहा। ऐसा पहली बार ही हो रहा होगा कि एक कैडेट अपने जनरल का हौसला बँधा रहा था। शायद कुट्टी सर ने हमें बातें करते देख लिया था।

“अनुराग, एक बार टॉप करने से कैट क्रेक नहीं होती। मेन एग्ज़ाम अभी बाक़ी है। क्लास में कंसनट्रेट करो।” कुट्टी सर ने कहा।

“सॉरी सर।” मैंने कहा और सारा ध्यान कुटटी सर की बातों पर लगा दिया।

“पर यार अगर तस्नीम ही नहीं आई तो?” एक बार फिर प्रतीक ने मेरे कान में कहा।

“ज़रूर आएगी। बी पॉज़िटिव।” मैंने भी धीमे से कह दिया।

“अनुराग, आंसर दिस क्वेश्चन।” कुट्टी सर की आवाज़ सुन मैंने अपना ध्यान उन पर लगाया।

“जी सर।”

“सपोज़ इन ए कोड लेंग्वेज बीटा इज इक्वल टु यू एंड एल्फा इज इक्वल टु योर फ्रेंड। देन इन द सेम कोड लेंग्वेज, वाट द गामा स्टैंड्स फॉर?”

“ओह माय गॉड! सर को कैसे पता चला? ऐसे तो सारा प्लान ख़त्म हो जाएगा।” मैंने धीमे से कहा। मैं इस सवाल का कुछ जवाब देता उससे पहले ही प्रतीक के मुँह से निकला, “अबे मसानी आ गया।”

“अबे मसानी की ऐसी-की-तैसी। इसको कोडवर्ड के बारे में किसने बताया? मैंने धीमे से कहा।

“अनुराग, आंसर?” मेरे पास कोई जवाब नहीं था।

“सॉरी सर।” मैंने कहा।

“इटस ओके, मुझे तो लगा सिर्फ़ तुम ही बता पाओगे।” उनकी बात सुनकर पसीना छूटने लगा।

“एवरीबडी विल कम टुमारो विद द आंसर। दिस क्वेश्चन वाज आस्कड इन मैट।” कुट्टी सर ने कहा।

“ओह! यह तो सिर्फ़ सवाल था। मैंने तो सोचा था कि...” इंस्टीट्यूट के वाटर कूलर से पानी का ग्लास भरते हुए मैंने कहा।

“कैडेट तुम बहुत जल्दी डर जाते हो।” प्रतीक बोला।

वो बोल तो ऐसे रहा था जैसे कि उसके माथे पर पसीना आया ही नहीं। वो उस दिन जनरल था सो, मैं कुछ नहीं बोला। हम लोग तस्नीम मैडम के आने का इंतज़ार कर रहे थे।

“भूपी तुम्हारी कभी इरशाद से बात हुई, आइ मीन उस दिन के बाद?” प्रतीक सामने से आते इरशाद को देखकर बोला। उसने भले ही इरशाद को आता देख बात पूछा हो पर मेरे ख़्याल से उसे नहीं पूछना चाहिए था। इसके दो कारण थे, एक तो यह कि भूपी को बुरा लग सकता था और दूसरा यह कि उसको बुरा लगने से वो अपनी आज की ज़िम्मेदारी से विचलित हो सकता था। पर मेरी सोच के विपरीत भूपी ने जवाब दिया।

“हाँ, एक बार हुई। वो मुझे धमका रहा था।” उसने इतना ही कहा और चुप हो गया। उसका चेहरा एकदम गंभीर हो चुका था।

“ब्लडी बास्टर्ड, इसकी तो मैं...” कहते हुए प्रतीक इरशाद की ओर लपका। मैंने उसका हाथ पकड़ा।

“इट्स नॉट राइट टाइम एंड राइट प्लेस। वन डे वन मिशन ओनली।” प्रतीक को रोकते हुए मैं बोला। भूपी कुछ नहीं बोल रहा था। उस वक़्त मैं भूपी के मन की दशा समझ सकता था। इरशाद हम तक नहीं आया। हमारी ग़लतफ़हमी थी कि वो हमारी ओर आ रहा था। पर यक़ीनन उसने हमें देखा तो ज़रूर था।

“कैडेट्स पीएम आ गई है।” प्रतीक ने कहा तो हमने गेट की ओर देखा। तस्नीम मैडम आ रही थीं। अंदर आते-आते उन्होंने अपना काला चश्मा खोलकर हाथ में ले लिया। वो घर से यहाँ तक बस में ही आया करती थीं। एक बार मैंने और प्रतीक ने उनका पीछा किया था। वो काफ़ी देर तक एक बस स्टॉप, जो कलेक्ट्रेट सर्किल के पास था, पर बस का इंतज़ार किया करती थीं। बत्तीस नंबर की बस से जाया करती थीं। हमारा पीछा सिर्फ़ बस स्टॉप तक ही हुआ करता था। हालाँकि, मैंने एक बार प्रतीक को कहा भी था कि हम बस में चढ़ जाते हैं। आख़िर पता तो चले कि वो रहती कहाँ है। तब मैंने उसे एक चालू शायरी भी सुनाई थी जो मेरी ख़ुद की रचना थी।

“इश्क़ में जाने कैसा है यह डर, आशिक़ ही नहीं जा पा रहा माशूक़ा के घर।”

हालाँकि यह सुनाने के बाद प्रतीक ने मेरे हाथ पर एक पंच मारा था। पर मेरी उस रचना के बदले वो बहुत कम था, इसका अहसास मुझे बाद में हुआ।

तस्नीम मैडम आते ही सबसे पहले बाथरूम जाया करती थीं। और वहाँ से बाहर निकलने के बाद जो उनकी एपीरियेंस में फ़र्क़ होता था उस हिसाब से मैं अंदाज़ा लगा सकता था कि वो अंदर जाकर अपना ज्योग्राफिया ठीक करती थीं। मैडम की क्लास में पंद्रह मिनट बाक़ी थे और जो कुछ करना था, इन्हीं पंद्रह मिनट में करना था। अगेन बेक टु द मिशन मसानी।

पीएम से बात करने का सही समय वही था, जब वो बाथरूम से बाहर निकलती थीं। हालाँकि बाथरूम के एकदम बाहर रोकना मैनर्स वाली बात नहीं होती। सो, पीएम बाथरूम से निकलकर कुछ क़दम जब चल लें, तो उनसे बात की जा सकती थी। जनरल गामा एकदम तैयार थे। पीएम बाथरूम से बाहर आईं। जनरल गामा उनकी ओर लपके।

“हैलो मैडम!”

“हैलो प्रतीक! हाउ आर यू?”

“फ़ाइन मैडम।”

“प्रतीक, हाउ मेनी टाइम्स आइ टोल्ड यू, डोंट कॉल मी मैडम। जस्ट से मिस तस्नीम।”

प्रतीक मुस्कुरा कर बोला, “ओके हाउ आर यू मिस तस्नीम।”

“हाँ, यह हुई ना कोई बात। आइ एम फ़ाइन।”

जनरल गामा ने पीएम से बातचीत शुरू कर दी थी। सो, अब मेरी यानी कैडेट बीटा की बारी थी, पाकिस्तान में जाकर मोर्चा संभालने की। मैं और कैडेट अल्फा पाकिस्तान की ओर बढ़े। कैडेट एल्फा टाइगर हिल पर ही रुक गए और मैं अंदर पाकिस्तान में चला गया।

“मे आइ कम इन सर? मैंने कहा। हालाँकि तय यह हुआ था कि मुझे बिना परमिशन लिए अंदर जाना था। पर इतने साल टीचर्स के प्रति रही मेरी कर्टसी ने मुझे यह करने से रोक

दिया।

"कम इन।" मसानी ने कहा। हालाँकि मुझे मेरी कर्टसी उसे मसानी सर के बजाय मसानी कहने से नहीं रोक रही थी।

मैंने तभी अपने हाथ में पकड़े हुए फ़ोन से प्रतीक का नंबर डायल कर दिया। एक ही घंटी में जनरल गामा ने कॉल रिसीव कर लिया। मुझे नहीं पता था कि जनरल गामा की क्या पोजिशन थी। क्या वो अब तक मैडम से बातचीत कर रहा था। हाँ, इतना यक़ीन था कि कैडेट अल्फा अपना काम बेहतर तरीक़े से कर रहा था। उसका काम था किसी को भी अगले दस मिनट तक पाकिस्तान के अंदर आने से रोकना।

"यस, कहो?" मसानी बोला। वो अपनी रोलिंग चैयर पर बैठा था। उसके सिर के पीछे किसी इंडस्ट्रलिस्ट की फ़ोटो लगी थी। जिसके नीचे लिखा था कि मसानी फलाँ इंडस्ट्रलिस्ट के साथ मैंनेजमेंट की प्रॉब्लम डिस्कस करते हुए।

मैंनेजमेंट प्रॉब्लम...माय फुट। ही मस्ट बी डिस्कसिंग सेक्स प्रॉब्लम। यह वक़्त अपना ग़ुस्सा निकालने का नहीं बल्कि अपना मिशन पूरा करने का था। मैंने ख़ुद पे कंट्रोल किया।

"सर, आइ वांट टु टेल यू समथिंग।" मैंने कहा। हालाँकि डायलॉग मेरे अपने थे। मैंने कभी सी ग्रेड फ़िल्म्स नहीं देखी थी। सो, इस सिचुएशन के लिए मुझे बड़ी मुश्किल से डायलॉग सूझ रहे थे।

"हाँ, कहो..." मसानी का आधा ध्यान अपने कम्प्यूटर पर था। पता नहीं क्या कर रहा था।

"सर डु यू लाइक गरिमा?" मैंने कहा और यह कहने से पहले मैंने अपनी सारी हिम्मत जुटा ली थी। हालाँकि कोई मेरे कान को हाथ लगा कर देखता वो दोनों गर्म हो चुके थे।

"व्हाट!" मसानी ने तेज़ आवाज़ में कहा। उसका ध्यान कप्यूटर से हटकर मेरी तरफ़ आ गया।

"क्यों! नहीं करते क्या?" मैं भी कहाँ रुकने वाला था। अब मैं धीरे-धीरे सहज हो रहा था।

"व्हाट रबिश यू आर टॉकिंग?" मसानी एक बार फिर चिल्लाया। मैंने एक बार अपने मोबाइल की ओर देखा, फ़ोन कट चुका था। ओह शिट! मैंने तभी दुबारा फ़ोन मिलाया। मसानी मेरी ओर ही देखे जा रहा था पर मेरे फ़ोन पर उसका ध्यान नहीं गया।

"मैं अपना सवाल बदल लेता हूँ, क्या आपको उसके साथ सोना अच्छा लगता है?"

यह सुनते ही उसके चेहरे का रंग बदल गया। उस वक़्त उसका चेहरा देखने लायक़ था।

"तो...परसों रात को वो दरवाज़े पर आवाज़ हुई थी। जब आप उसे..."

"वो तुम थे। यू ब्लडी..." अचानक उसके मुँह से निकला। माय फ़र्स्ट स्टेप वाज सक्सेसफुल। बधाई हो अनुराग।

"तो आप उससे प्यार करते हैं या फिर...खाया-पीया हो गया टाइप।"

"वाट डु यू वांट?" उसने मेरी बात बीच में काटते हुए कहा। शायद उसने सोचा कि मैं उसे ब्लैकमेल कर रहा हूँ।

“नथिंग सर, मैं तो वैसे ही पूछ रहा था। जस्ट फॉर द सेक ऑफ़ क्यूरोसिटी। एक्च्युली मेरा भी एक दोस्त उससे प्यार करता है। वो भी उस रात वहीं था। दरवाज़े पर लात उसी ने मारी थी।” मसानी चुपचाप किसी समझदार बच्चे की तरह मेरी बात सुन रहा था। मैंने कहना जारी रखा,

“...तो उसने कहा कि मैं पूछ आऊँ कि आप गरिमा से प्यार करते हैं, शादी-वादी वाली बात है या फिर वैसे ही...?”

“इट्स नन ऑफ़ यॉर बिज़नेस। काम से काम रखो। वर्ना 100 परसेंट सलेक्शन गारंटी ख़त्म समझो।” मसानी ने धमकाने के अंदाज़ में कहा।

“अच्छा!” मैंने व्यंग्य में कहा।

“सुन, ये मार्केट है और यहाँ हर कोई अवेलेबल है। तुम में दम होना चाहिए ख़रीदने का। पैसों से, वादों से या अपनी शानो-शौक़त से। वाट डु यू वांट टु नो...लव गरिमा...माय फुट। ना तो गरिमा पहली थी ना तस्नीम आख़िरी, समझा। गेट लॉस्ट।”

“व्हाट, तस्नीम मैडम!” मैंने कहा। मसानी को अहसास हुआ कि उसने क्या कह दिया। यह उसे नहीं कहना चाहिए था। पर मेरा तो मिशन पूरा हो चुका था। अब मेरी पाकिस्तान से बाहर जाने की बारी थी।

“तो आप उन्हें कैसे ख़रीद रहे हैं, पैसों से या झूठे वादों से?” मैंने व्यंग्यात्मक लहज़े में कहा।

“जस्ट गेट आउट। यू डोंट नो वाट कैन आइ डू।” मसानी ग़ुस्से में टेबल से उठते हुए बोला।

“डोंट गेट एंग्री मिस्टर मसानी, आइ एम गोइंग और जहाँ तक यह सवाल है कि आप क्या कर सकते हैं, तो वो मैं उस रात देख ही चुका हूँ।”

“गेट आउट।” मसानी चीखा।

“जा रहा हूँ, बाय द वे सेक्स ए लॉट।”

“व्हाट?”

“ओह, आइ मीन थैंक्स ए लॉट।”

यह कहकर मैं पाकिस्तान का गेट खोलकर बाहर आ गया। कैडेट अल्फा वहाँ नहीं था। ख़ैर, काम तो पूरा हो चुका था। मैंने एक बार फिर फ़ोन की ओर देखा। कॉल अब भी चल रहा था। मैंने तुरंत फ़ोन काटा। मैं बाथरूम की तरफ़ बढ़ा पर जनरल गामा वहाँ भी नहीं था। पर मुझे बाथरूम यूज़ करने की सख़्त ज़रूरत थी। मैं बाथरूम में गया। जनरल गामा वहीं था। वो अपना मुँह धो रहा था। बाथरूम में दो और भी लड़के थे। सो, मैंने वहाँ जनरल से मिशन के बारे में कोई बात नहीं की।

“जल्दी से क्लास में आ जाओ।” मैं उससे कहकर बाहर जाने को हुआ।

“क्लास नहीं होगी।” उसने कहा।

इस बात की पुष्टि अंकुर ने भी की, जब मैं क्लास की ओर बढ़ा।

“आज मैडम की क्लास नहीं होगी, उनकी तबीयत ख़राब है। नोटिस बोर्ड पर देखा नहीं

क्या?" अंकुर बोला। हालाँकि वो जानता था कि क्लास नहीं होगी फिर भी क्लास में बैठा था। कुछ गिने-चुने स्टुडेंट और भी बैठे थे जो कि आपस में गप मार रहे थे।

"तुम यहाँ क्या कर रहे हो? चलो डिवाइन पैलेस चलते हैं।" मैं बाहर की ओर बढ़ा।

"अपना तो डिवाइन यही है।" अंकुर ने सामने की कुर्सी की ओर इशारा करते हुए कहा। सामने की कुर्सी पर गरिमा बैठ हुई थी। उसने ऐसी ड्रेसी पहन रखी थी जिसमें से उसकी ख़ूबसूरत देह झाँकती हुई दर्शकों की आँखों को ठंडक पहुँचा रही थी। मैं अंकुर को देख मुस्कुराया और वहाँ से निकल लिया। अंकुर का प्यार अंधा नहीं था, उसका प्यार तो आँखों से ही शुरू होता था।

"मिशन इज सक्सेसफुल।" प्रतीक बोला। मैं और भूपी उसे घेरे हुए थे। "जो बात हम तस्नीम तक पहुँचाना चाहते थे, वो पहुँचा दी। थैंक्स यार, तुम्हारी मदद के लिए।" प्रतीक चहकते हुए बोला।

"प्रतीक, तुम बताओ आख़िर मैडम से तुमने बात क्या की और फिर सारी बात जानकर उनका रिएक्शन क्या था? मैंने पूछा। भूपी के चेहरे से ऐसा लग रहा था कि अगर यह सवाल मैं नहीं पूछता तो वो पूछने वाला था।

"देख, जैसे ही तुम मसानी के रूम में एंटर हुए, मैंने तस्नीम से कहा कि मैं उनको कुछ सुनाना चाहता हूँ और उन्हें सुनना ही होगा।" प्रतीक पूरी घटना का ब्यौरा दे रहा था।

"उन्होंने क्या कहा?" भूपी ने पूछा।

"उन्होंने मुस्कुराते हुए यस कहा। सो, मेरा आधा काम तो यहीं बन गया। फिर मैंने इअर फ़ोन तस्नीम को दे दिया। इतने में तुम्हारा कॉल आ गया। मैंने रिसीव किया। हालाँकि मैं सुन नहीं पा रहा था कि बात क्या हो रही है। थोड़ी देर बाद मैडम ने ग़ुस्से में फ़ोन काट दिया और बोली, "यह तुम मुझे किसकी बातचीत सुनवा रहे हो। मेरा इससे क्या लेना-देना।" उन्होंने काफ़ी ग़ुस्से में कहा था।

"अच्छा फिर?" एक अच्छे कहानी सुनने वाले की तरह मैंने पूछा।

"फिर मैंने कहा, मैडम आप जानती हैं कि इन दोनों में से एक मसानी सर हैं और आप यह भी जानती हैं कि इस बातचीत से आपका ताल्लुक़ है। प्लीज आप सुनिए। इतने में तुम्हारा फिर से कॉल आ गया।" प्रतीक ने बताया।

"हाँ, मैंने तो सोचा था कि नेटवर्क प्रॉब्लम की वजह से ऐसा हुआ होगा। मैंने तुरंत फ़ोन लगाया, उस मसानी की नज़रों से बचाते हुए।" मैं बोला।

"हाँ और तुम्हारा फ़ोन आने के बाद उन्होंने एक बार फिर से इयर फ़ोन लगा लिए। फिर उन्होंने सारी बात सुनी और हर पाँच सेकेंड बाद उनके चेहरे का रंग बदल रहा था। एक बार तो उनका चेहरा ग़ुस्से से लाल हो गया था।" प्रतीक बोला। मैंने उसकी बात बीच में काटते हुए कहा, "हाँ यह तभी हुआ होगा जब मसानी ने कहा कि गरिमा वाज नॉट फर्स्ट एंड तस्नीम विल नॉट बी लास्ट।"

“रियली, उसने ऐसा कहा?” भूपी बोला। मैंने गर्दन हिला दी।

“फिर क्या हुआ?” भूपी बोला।

“बस, उन्होंने इअर फ़ोन निकाला और मेरे हाथ में पकड़ा दिया। कुछ बोली नहीं। पर मुझे तो कहना ही था। मैंने कहा, सॉरी मिस तस्नीम, मुझे यह सब करना पड़ा। एक्च्युली आइ लाइक यू। मैं आपको उस मसानी से धोखा खाते हुए नहीं देख सकता था। मेरा इतना कहना था कि उन्होंने मेरे चेहरे पर एक थप्पड़ जड़ दिया।” प्रतीक बोला।

“व्हाट! थप्पड़। बट वाय? तुम तो उसकी मदद कर रहे थे। तुमने उसे अहसास दिलाया कि मसानी इज ब्लडी फ़कर नॉट लवर। एंड शी स्लेप्ड यू!” मैंने आश्चर्य से पूछा।

प्रतीक कुछ नहीं बोला। काफ़ी देर से चुपचाप सुन रहा भूपी बोल पड़ा, “शायद इस बात पर कि तुम उसे लाइक करते हो। उसे बुरा लग गया हो।” भूपी की बात सही हो सकती थी। पर ऐसा था भी तो, यार थप्पड़ तो नहीं बनता था।

“कोई बात नहीं यार, कम-से-कम हमने उसे मसानी से तो बचा लिया और मैंने अपने दिल की बात कह दी। अब जो हो सो हो, और थैंक गॉड! थप्पड़ लगते समय किसी ने देखा नहीं।” प्रतीक ने गहरी साँस छोड़ते हुए कहा। मैं सुनकर मुस्कुरा दिया।

“चलो, कुछ तो अच्छा हुआ!” मैंने कहा। तभी मुझे याद आया कि जब मैं मसानी के ऑफ़िस से बाहर आया तो भूपी वहाँ नहीं था।

“चलो, कैडेट अल्फा तुम बताओ, जब मैं बाहर आया तब तुम गेट पर नहीं थे?” मैंने भूपी से पूछा। मेरी बात सुन भूपी गंभीर हो गया। “यार ऐसे में कोई अंदर आ जाता तो मारे जाते ना।” मैंने शिकायत की।

भूपी ख़ामोश रहा। “क्या हुआ बताओ भी यार।” मैंने ज़ोर देते हुए पूछा। भूपी के चेहरे पर पसीना आने लगा।

“इरशाद आया था। वो मुझे एक तरफ़ कोने में ले गया।” भूपी की बात सुनकर मैं और प्रतीक दोनों चौंके।

“तूने उससे बात ही क्यों की?” प्रतीक बोला।

“मैंने कहा कि मुझे उससे कोई बात नहीं करनी, तो ज़बरदस्ती मेरा हाथ पकड़कर एक तरफ़ ले गया और धमकी दी कि मैं कोई भी बात तुम दोनों को ना बताऊँ।” यह कहते हुए भूपी काफ़ी सहम गया था।

“उसने ऐसा कहा।” एक बार फिर प्रतीक तैश में आ गया। “इरशाद..डंकीज ऐस।”

“उसने तो यह भी का कि वो मेरे साथ...” कहते-कहते भूपी का गला रूँध गया। आँसू उसकी पलकों पर आकर ठहर गए थे। “अनुराग बता रहा हूँ, मैं किसी दिन उसका मर्डर कर दूँगा। मेरी लाइफ़ ख़राब कर रहा है वो।” कहते-कहते भूपी रोने लगा।

“भूपी, डोंट वरी यार, हम हैं ना। सब ठीक हो जाएगा। कैट हो जाने दो, उसे भी देख लेंगे।” मैंने उसे रुमाल देते हुए कहा।

“अब कैट पर कंसन्ट्रेट करो। अब ज़्यादा दिन नहीं बचे हैं। कैट के फ़ॉर्म्स भी आ गए हैं, डियर वो भी फिल अप करने हैं। एंड डिसाइड करो कि कैट अलाइड्स में किस-किस

इंस्टीट्यूट के फ़ॉर्म भरने है।" प्रतीक बोला।

भूपी इस बात पर थोड़ा चिंतित दिखाई दिया। मैं जानता था उसके पास फ़ॉर्म भरने के पैसे नहीं थे।

"भूपी, चिंता मत कर। हमने पैसे बचाए हैं तेरे फ़ॉर्म के। तू बस पढ़ाई पे ध्यान दे।" आप सोच रहे होंगे यह मैंने कहा। नहीं, मैं कहना चाहता था पर प्रतीक ने मुझसे पहले ही कह दिया। मैंने उसकी बात पर हामी भरी।

———————

"जनरल गामा। वाट ए फनी नेम।" इतना कहकर नेहा हँस पड़ी, "और यह नाम तुमने दिए! अच्छा तुम्हारा नाम क्या था?" मुश्किल से अपनी हँसी रोकते हुए नेहा ने अपनी बात पूरी की।

"तुम हँसोगी।"

"नो आइ विल नॉट।"

"पक्का?"

"हाँ।"

"कैडेट बीटा।"

"व्हाट, कैडेट बीटा...!" इतना कहकर वो फिर एक बार हँस दी। उसे यूँ हँसता हुआ देखकर अच्छा लग रहा था। नेहा और मैं सरस पार्लर में बैठे थे। वो एसएमएस में अपने अंकल और बुआ को छोड़कर आई थी। उसने मुझे रास्ते से पिक कर लिया। मैंने उसे बताया कि किस तरह से हमने मिशन मसानी को अंजाम दिया। लेकिन पूरी कहानी में होटल और कोमल का ज़िक्र नहीं किया।

"सो, इट वाज मिशन मसानी, राइट कैडेट बीटा?" एक बार फिर नेहा ने हँसते हुए कहा। मैंने अपने आस-पास देखा कहीं कोई हमारी बात तो नहीं सुन रहा था। हालाँकि वहाँ काफ़ी रश था।

"नेहा, तुम मज़ाक़ उड़ा रही हो। पता है यह सब मैंने तुम्हारी वजह से किया।"

"मेरी वजह से!" उसने अपनी हँसी को रोकने की नाकाम कोशिश करते हुए कहा।

"हाँ, तुम्हारी वजह से। तुमने ही तो कहा था कि प्रतीक का हरदम साथ देना। जब भी उसे तुम्हारी ज़रूरत हो उसके साथ खड़े रहना। सो, मैंने उसका साथ दिया।"

"ओह! चो च्वीट अनुराग।" उसने बच्चों से लहज़े में कहा, "कुल मिलाकर मिशन वाज़ सक्सेसफुल।"

मैंने अपनी गर्दन हिला दी। मैंने उसे नहीं बताया कि प्रतीक को तस्नीम मैडम ने चाँटा मारा। बेचारे प्रतीक की इज़्ज़त के खाँखरे करने से क्या मतलब।

"उसने अपनी मैडम को कहा..?" नेहा ने पूछा।

"क्या?"

"आइ लव यू।"

“रियली?” मैंने शरारत भरी नज़रों से उसकी ओर देखते हुए कहा। वो शर्मा गई। “मेरा मतलब...क्या रियली उसे यह कहना चाहिए था, पर उसने तो कहा कि आइ लाइक यू।” मैंने अपनी बात को संभाल लिया।

“दोनों में कोई फ़र्क़ नहीं।” नेहा बोली।

“मुझे याद है, एक बार तुमने कहा था कि अगर प्यार डेस्टिनेशन है तो किसी को लाइक करना उसकी पहली सीढ़ी है।” मेरी बात सुन वो मुस्कुराई। हालाँकि उसने एक बार पूछा भी था कि हमें मसानी और गरिमा के रिश्ते के बार में कैसे पता चला, पर मैं बात को टाल गया।

“कोमल लाइक्स यू।” नेहा ने अचानक बात को पलटते हुए कहा।

“व्हाट...सच्ची में....ओह माय गॉड....कितना लकी हूँ मैं!” मैंने बनावटी ख़ुशी चेहरे पर लाते हुए कहा।

नेहा ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।

“बाय द वे, तुम्हें कैसे पता चला?” मैंने पूछा।

“बस उसकी बातों से।”

“ओह! तो तुम अब बातों से दिल की बात जानने लगी हो।” मेरा इतना कहने पर नेहा ने भौंहों को ऊपर किया और कंधों को उचकाया। जिसका मतलब था, हाँ। मैंने आगे कहा, “तो कोमल की बातों से तुम्हें लगा कि शी लाइक्स मी।” उसने गर्दन हिला दी।

“और मेरी बातों से क्या लगता है?” यह पूछकर मैंने अपनी नज़रें उसके चेहरे में गड़ा दीं। वो कुछ नहीं बोली। मेरा तीर सही निशाने पर लगा था। पर एक बार फिर मुझे मेरी बात को बदलना पड़ा।

“आइ मीन तुम्हें मेरी बातों से भी लगता है कि आइ लाइक हर?” मैंने कहने के बाद एक पल को भी निगाहें उसके चेहरे से नहीं हटाईं। बस उसके चेहरे के भावों को पढ़ लेना चाहता था। आज एक ही दिन में, दो बार उसे बता चुका था कि मैं उससे प्यार करता हूँ। अब पता नहीं कि वो समझ पाई कि नहीं।

“पता नहीं...तुम्हारा चेहरा एकदम ब्लैंक है।” नेहा रूखेपन से बोली।

“तो मुझे इस ब्लैंक फेस के साथ एक बार फिर कोमल से मिलना होगा। शायद कल ही।”

“वाह! तीन दिन में दो बार। इस बार किस पिक्चर हॉल में?” उसने उखड़ते हुए कहा। हालाँकि उसका उखड़ना जायज़ था। पर इस बात से यह पक्का हो गया था कि वो मुझसे प्यार करती थी।

“उसे यह मोबाइल जो देना है, वापस। इसका तो काम हो गया ना।” मैंने उसे मोबाइल दिखाते हुए कहा। उसने मोबाइल की ओर नहीं देखा। अब तो भगवान भी आकर कहे ना कि नेहा मुझसे प्यार नहीं करती, तो मैं न मानूँ।

“क्या लोगी?” मैंने उससे पूछा। ताकि बातचीत का टॉपिक बदला जा सके।

“कुल्फी।” उसने अपनी पंसद बताई। मेरी पसंद अब उसकी पसंद बन चुकी थी।

“और मैं क्या लूँगा...पता है?” मैंने कहा। नेहा ने हाँ में गर्दन हिलाई।

“तो बताओ।”

“कैपुचिनो।” उसने मेरी आँखों में देखते हुए कहा। मुझे लगा बहुत अंदर तक झाँक गई। शायद दिल तक।

“तुम्हें कैसे पता?” मैं भी कहाँ कम था।

“आइ एम योर...योर फ्रेंड।” उसने आँखों में ऐसे देखा मानो मुझसे भी वो यही कहलवाना चाह रही हो। “जब मुझे तुम्हारी पसंद पसंद है तो यक़ीनन तुम्हें भी मेरी पसंद पसंद है। राइट मिस्टर अनुराग?”

“यस मिस नेहा।”

फिर हम दोनों मुस्कुरा दिए। दिक़्क़त यह थी कि हम दोनों जानते थे कि हमें एक-दूजे से प्यार है, बस कहना नहीं चाहते थे या कह नहीं पाते थे।

“थोड़ा टहलें?” मैंने नेहा के हाथ में कुल्फी देते हुए कहा। उसने सिर हिला दिया। सरस पार्लर से जुड़ा एक गार्डन था जिसके चारों ओर एक सड़क थी। हम उसी गार्डन की दूब पर चलने लगे।

“यू नो नेहा, बहुत टाइम हो गया इस तरह वॉक करते हुए।” मैं कैपुचिनो पीते हुए कहता जा रहा था, “उदयपुर में एक झील है फ़तेहसागर। बहुत सुंदर है। हमारा घर उसके नज़दीक ही है। मैं और मम्मी रोज़ शाम को उसी के किनारे सैर करने जाते थे। पानी से उठकर आती हुई ठंडी हवा और चारों ओर खुली जगह। कभी-कभी जब सवालों में दिमाग़ खपा के थक जाता हूँ तो मन करता है एक बार फ़तेहसागर की पाल पर घूम आऊँ। एकदम तरोताज़ा हो जाऊँ।” वो मेरी बातें सुन रही थी। मैंने देखा कि उसकी कुल्फी पिघलना शुरू हो गई थी।

“तो तुम अपने शहर को बहुत मिस करते हो?” उसने पिघलती हुई कुल्फी को खाते हुए कहा।

“हूँ...और तुम?”

“हूँ...करती हूँ। पर किससे कहूँ। यू नो अनुराग इन बड़े शहरों में अपनी मन की बात किसी को नहीं बता सकते। बुआ तो पहले से ही इतनी दुःखी हैं कि मैं भला क्या उनको अपने मन की सुनाऊँ। वो तो ख़ुद ही अपने मन की नहीं कह पातीं और उनके अलावा इस शहर में कौन है, जो मेरी सुनेगा।” मैं उसकी ओर ही देखे जा रहा था। मुझे कैपुचिनो के डेप्रिसिएशन की कोई चिंता नहीं थी।

“तुम मुझे कह सकती हो, मैं सुनूँगा। जैसे कि मैं तुमसे कहता हूँ।”

“तभी तो तुम और मैं साथ हैं।” आगे सड़क पर मोड़ था नेहा उस मोड़ पर रुक गई। “अनुराग, कहने में अजीब लगता है पर यह सच है कि तुमसे बात करने के बाद मुझे घर की याद उतनी नहीं सताती जितनी कि तुमसे मिलने से पहले। इसीलिए तुमसे मिलने को बार-बार मन करता है।”

“और शायद इसीलिए हम बार-बार मिलते हैं। पर नेहा एक बात बताओ, तुम्हें किसी ने यहाँ जयपुर में प्रपोज तो किया ही होगा, आइ मीन किसी दिन कोई गुलाब का फूल लेकर आया हो...?” मुझे भी जाने क्या सूझा, मैं अजीब-सी बात पूछ बैठा। नेहा मेरी बात बीच में

काटते हुए बोली, “हाँ बहुत से लोगों ने। तीन-चार तो मेरे ब्वॉयफ्रेंड हैं”, उसने हँसते हुए कहा।

“मज़ाक़ नहीं नेहा, सच बताओ। कभी तो किसी ने कहा होगा।”

“क्या?”

“आइ लव यू।”

“रियली?” यह कहकर नेहा ने शरारत भरी नज़रों से देखा। मैं झेंप गया। मैंने नज़रें हटा ली। फट्टू। अनुराग इज फट्टू।

मुझे कह देना चाहिए था। रियली नेहा आइ लव यू। पर...पर वर कुछ नहीं अनुराग आज तो तुम्हें कहना ही होगा। अरे यार, प्रतीक तक ने कहा दिया और एक तुम हो। मेरे मन की आवाज़ मुझ पर हावी होने लगी।

“नेहा...कुछ कहना है।” मन की आवाज़ सुनकर आख़िरकार मैंने कहने की ठान ही ली।

“व्हाट!”

“एक मिनट यहीं रुको मैं आता हूँ।”

मैंने फ़िल्मों में देखा था कि प्रपोज करते समय फूल दिया करते हैं। सरस पार्लर में तो कहीं फूल नहीं थे। ओह! आइ हैव एन आइडिया।

मैंने एक आईसक्रीम का कोन ख़रीदा, एक स्कूप वनीला और एक स्ट्राबरी डलवाया और उस पर एक चेरी। फिर उसे देखकर कहा, “हूँ, यह किसी फूल से कम नहीं लग रहा।” मैं उसे लेकर नेहा के पास पहुँचा।

“दिस इज फॉर यू।” अब इससे आगे के शब्द मुझे नहीं आ रहे थे। मेरी जबान अटक रही थी। “नेहा मैं...मैं...मैं तुम्हारे साथ गाना गाना चाहता हूँ। आइ वांट टु डांस विद यू...विद ट्वेंटी थर्टी एक्सट्राज। स्पेशली अराउंड द ट्रीज।” वो मेरी तरफ़ ऐसे देखे जा रही थी मानो वो समझ ही नहीं रही हो कि मैं उससे क्या कह रहा हूँ।

नेहा मेरी बात सुनती रही। मेरे मुँह से भी फिर कुछ न निकला। आस-पास की छोटी-से-छोटी आवाज़ साफ़-साफ़ सुनाई देने लगी। ऐसे में नेहा बोली, “कहीं तुम मुझे आई लव यू तो नहीं कहना चाह रहे हो!” नेहा कहते हुए एकदम सहज थी। आइ एम सच एन इडियट। इतना भी नहीं कह पाया।

“एम आइ राइट?” नेहा ने मेरी ओर देखा। मैं ऐसे खड़ा रहा मानो मुझे साँप सूँघ गया हो।

“तुम ना एकदम बच्चे हो। तुम्हें क्या लगता है, तुमसे मिलने का मन करता है, तुम्हारे साथ रात को बारह बजे सरस पार्लर में मिलती हूँ, तुमसे नाराज़ होती हूँ। इसका मतलब कि मैं तुम्हें प्यार करती हूँ?” यह सुन मेरे चेहरे पर पसीने की दो-चार बूँदें आने को आतुर थीं। कलेजा काँप रहा था। दिमाग़ सुन्न हो रहा था। नेहा की बात अभी पूरी नहीं हुई थी, “अगर तुम्हें ऐसा लगता है तो आइ थिंक यू....यू आर राइट। आइ लव यू टू।” उसने मुस्कुराते हुए कहा। मेरी पसीने की बूँदें सूख गईं। कलेजा सामान्य हुआ और दिमाग़ में रक्त सुचारू रूप से बहने लगा। नेहा अब भी बोले जा रही थी, “मुझे नहीं लगता था कि हमें यह एक-दूसरे को

बताने की ज़रूरत है। आइ नो यू आर ओनली माइन, माय कैटू।"

उसने मुझे कैटू कहा। बहुत ही अजीब था...कैटू।

"वाट इज दिस कैटू?"

"कैटू तुम्हें मैं प्यार से कहती हूँ। तुम्हारा नंबर भी मैंने इसी नाम से फीड कर रखा है।" वो अपना मोबाइल दिखाते हुए बोली।

"ओह! तो मुझे भी तुम्हारा कोई नाम रखना होगा।" मैंने कहा।

"रखो...जो चाहे रखो। अपने दिल में हमेशा के लिए रखो।" नेहा ने आइसक्रीम खाते हुए कहा। उसकी इस बात पर मैं उसकी आँखों में देखकर मुस्कुरा दिया और थोड़ा शर्मा भी गया।

"अच्छा, तुम्हें सच में लगता है कि मेरे और कोमल के बीच कुछ है?" मैंने पूछा।

"मज़ाक़ कर रही थी। तुम जैसे लड़के को मेरे सिवा और कौन झेल सकता है, कैटू!" उसने एक बार फिर आइसक्रीम खाते हुए कहा। ओह, नेहा को मुझपर कितना विश्वास है! सच ही तो है कोमल और मेरे बीच तो वैसा कुछ भी नहीं सिवाय उस किस और हाफ बोटल वोदका के। लेकिन अगर नेहा मुझपर इतना विश्वास करती है तो मुझे उसे इस इंसीडेंट के बारे में ज़रूर बताना चाहिए। बात विश्वास की है। डर तो यह भी था कि शायद कोमल ही उसे किसी दिन बता दे।

"नेहा, एक कंफेशन करना है।"

"क्या?" नेहा का पूरा ध्यान आइसक्रीम पर था।

"अच्छा, चलो पहले एक बाइट लो, फिर करना कंफ़ेशन।" कहते हुए नेहा ने आइसक्रीम मेरे मुँह की ओर बढ़ा दी। आइसक्रीम की मिठास मुँह में घुलने लगी थी, तभी नेहा बोली, "हाँ, अब बताओ।"

"नेहा...वो...वो...आइ किस्ड कोमल, बट ओनली वन्स।" पहले तो मैं कह नहीं पा रहा था। पर जब कहना शुरू किया तो एक ही साँस में तपाक से कह दिया। नेहा मेरे चेहरे की ओर ताके जा रही थी। मैं देख सकता था कि उसका चेहरा उस समय कितना ब्लैंक था। शायद वो यह तय नहीं कर पा रही थी कि उसे किस तरह के एक्सप्रेशन देने चाहिए या फिर वो प्रॉपर तरीक़े से रिएक्ट नहीं कर पा रही थी, क्योंकि अभी कुछ देर पहले ही मैंने उसे आइ लव यू कहा था।

"एक्च्यूली...उसका बर्थ डे था और फिर वोदका भी पी ली थी...वो भी पहली बार। यू नो...।" मैं इससे ज़्यादा नहीं बोल पाया। मेरे ख़त्म करते ही उसने कहा, "तो तुम मुझसे यह सब क्यों कह रहे हो?"

"तुम्हें इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता?"

"किससे?"

उसने ऐसे पूछा मानो थोड़ी देर पहले जो मैंने कहा था, वो उसके लिए कोई मायने नहीं रखता।

"अभी-अभी तुमने मुझे कहा कि तुम मुझसे प्यार करते हो। प्यार में विश्वास और

ऑनेस्टी होनी चाहिए। तुम ऑनेस्ट हो जो मुझे यह बात बता दी। और मुझे विश्वास है कि तुम किस चाहे जिसे करो प्यार मुझ से ही करते हो। तुम सिर्फ़ मेरे साथ ही गाना गाना और मेरे साथ ही पेड़ों के राउण्ड नाचना, ओके माय कैटू!" नेहा को समझना मेरे बस में नहीं था।

मैं समझ गया कि वो रिएक्ट नहीं कर रही है। पर शायद वो मेरी बात समझ गई थी। "मेरे ख़्याल से कोमल वो पहली लड़की है, जिसे तुमने किस किया?"

मैं कुछ नहीं बोला। "माय कैटू, डोंट फ़ील गिल्टी।" उसकी बात सुनकर मैं यही सोचे जा रहा था कि कोई लड़की इतनी अच्छी कैसे हो सकती है। मुझे अपने-आप पर शर्म आने लगी।

"मैं कोमल को जानती हूँ। उसके लिए किस कोई बड़ी बात नहीं है।" मैंने उसके चेहरे को आश्चर्य से देखा। मानो वो जो कोमल के बारे में बोल रही थी, मैं उसे झुठला रहा था।

"हाँ अनुराग, इसमें इतना आश्चर्य से देखने की बात नहीं है। जयपुर जैसे शहर में यह सब नॉर्मल है। अपने आस-पास देखो। इतनी सारी लड़कियाँ लड़कों के साथ हैं। इनमें से कई तुम्हें अगली बार किसी और लड़के के साथ दिखाई देगी। इट्स नॉर्मल। ऐसा कोई नियम नहीं है कि जिसे किस करो उसी से शादी करो।"

"तो कोमल का भी ब्वॉयफ्रेंड..."

"था।"

"तुम्हें कैसे पता? "

"कोमल ने बताया था?"

मुझे याद आया, यह तो कोमल ने मुझे भी कहा था। ख़ैर, मुझे कोमल से क्या! मेरा लेना-देना तो नेहा से था। और वो इस वक़्त मेरे साथ थी और हम दोनों उसकी कार में।

"नेहा तुमने कभी किसी को किस किया है?" मैंने कार के डिवाइन पैलसे के आगे रुकते ही पूछा। उसने मेरी ओर देखा। फिर दो बार पलक झपकाई। मेरी नज़रें उसके चेहरे पर ही थीं। सो उसके चेहरे में हो रही हर हरकत पर मेरी नज़र थी। वो फिर मुस्कुराई।

"तुम्हारे लिए यह मैटर करता है?" उसने हौले से कहा।

"पता नहीं।" सच में मैं नहीं जानता था कि मैंने क्यों पूछा था।

"बट आइ नो वन थिंग।"

"व्हाट?"

"आइ लव यू।"

"अनुराग, यू नो हमारे छोटे शहरों में लोग कहते हैं कि कोई लड़की किसी को किस कर ले तो वो बुरी हो जाती है। कहो सच है ना?" उसने पूछा।

वो सच कह रही थी। छोटे शहरों में लड़की अगर किसी लड़के साथ घूमती भी नज़र आ जाए तो उसे बुरी लड़की कह दिया जाता है। पर पता नहीं नेहा ने अभी मुझसे यह क्यों पूछा था। मैंने सिर्फ़ उसके सवाल के जवाब में अपनी गर्दन हिला दी।

"तो सुनो, मैं अब तक अच्छी लड़की हूँ।" उसने गंभीर होते हुए कहा। इसका मतलब उसने कभी किसी को किस नहीं किया। मेरे चेहरे पर मुस्कान खींच आई। नेहा ने फिर कहा,

“बट अनुराग, आज मैं बुरी लड़की बनना चाहती हूँ। बीकॉज़ आइ लव यू।” यह बात उसने मेरी आँखों के अंदर तक झाँकते हुए कही। मुझे ऐसा लगा मानो उसकी नज़र मेरे हृदय के अंदर तक झाँक रही थी। शी वांट्स टु किस मी। नेहा ने अपनी आँखें बंद कर ली और मेरी ओर थोड़ी आगे हो गई। मेरी नज़र सिर्फ़ उसके चेहरे पर थी। मुझे कोमल की बात याद आई। किस प्यार को एक्सप्रेस करने का एक तरीक़ा है। यस आई वांट टु एक्सप्रेस माय लव। मैं नेहा के नज़दीक आया। एक बार फिर रूई के नर्म फाहों को महसूस किया। गीले नर्म फाहे।

“थैंक्स अनुराग, थैंक्स फॉर मेकिंग मी बैड गर्ल।” कहते हुए नेहा मुस्कुराई। मुझे अब तक यक़ीन नहीं हो रहा था कि मैंने नेहा को किस किया। “नेहा, द बैड गर्ल।” उसने एक बार मुस्कुराते हुए कहा।

“नो, नेहा...द लविंग गर्ल। नेहा अनुराग्स लव।” मैंने कहा। मैं अब कुछ रोमांटिक होने लगा था। आइ वाज श्योर कि कोई हमें नहीं देख रहा था। सड़क एकदम सुनसान थी।

“तुम्हें वो चाँद दिखाई दे रहा है नेहा?” मैंने आसमान की ओर इशारा करते हुए कहा। मुझे पता था कि मैं जो कुछ कह रहा था वो किसी हिंदी फ़िल्म के डायलॉग-सा था। पर यह मेरा पहला प्यार था और ज़िंदगी में पहली बार ही मैं रोमांटिक हुआ था। सो, मुझे इससे बेहतर नहीं सूझ रहा था।

“कहाँ?” नेहा ने कहा।

मैंने इशारा किया, “वहाँ देखो।”

“कहाँ, वहाँ तो कोई चाँद नहीं है?”

“ध्यान से देखो।”

“नहीं है कैटू।” उसने मुझे फिर कैटू कहा। मैंने सामने लगे मिरर की ओर इशारा करके कहा, “अब दिखा।” मिरर में अपना चेहरा देखकर वो शर्माते हुए बोली, “यू नॉटी।” और फिर उसने दो हल्के-फुल्के पंच मेरे हाथ पर दे मारे।

“नेहा मन तो कर रहा है कि यूँ ही सारी रात तुम्हारे साथ बातें करता रहूँ। बट यू नो, तुम्हारे इस कैटू की कैट पास में आ गई है। सो, अब जा के स्टडी करनी होगी। तुम्हें भी तो जल्दी हॉस्पिटल जाना है।” मैंने कहा।

“हाँ, सो तो है। फ़ोन करोगे?”

“नहीं।”

वो मुस्कुरा दी। मैं कार से नीचे उतर आया।

“अच्छा सुनो, फिर कोमल को किस मत करना।”

“करूँगा।”

वो फिर मुस्कुरा दी।

“लव यू।” मैंने कहा।

“जानती हूँ।”

फिर दोनों चुप रहे, मंद-मंद मुस्कुराते रहे। मैंने गाड़ी से दो क़दम पीछे लिए।

“बाय।”

“बाय।”

उसकी कार जब तक दिखती रही, मैं जाते हुए देखता रहा।

———————

“क्या बात है, आज बहुत ख़ुश नज़र आ रहे हो?” मेरे कमरे में घुसते ही प्रतीक ने कहा। शायद मेरे चेहरे पर अब भी प्यार की ख़ुशी अड्डा जमाए हुए थी।

मैंने अपने कपड़े बदलकर उन्हें दरवाज़े के पीछे हेंगर में टाँगा और सवाल पे सवाल मारा, “रियली, तुम्हें लगता है कि आज मैं ख़ुश हूँ?”

“हूँ।” उसने मोबाइल में देखते हुए कहा। शायद कोई एसएमएस पढ़ रहा था।

“मैं मोबाइल की नहीं अपनी ख़ुशी की बात कर रहा हूँ।” मैंने चिड़ते हुए कहा। हालाँकि मुझे उससे ऐसे बात नहीं करनी चाहिए थी, आज ही तो उसका दिल टूटा था। मेडिकल साइंस को यह मेरा नया योगदान था। कई बार गाल पर पड़ने वाले चाँटे का सीधा संबंध दिल से होता है।

मेरे कहने के बाद प्रतीक ने मेरी ओर देखा। “अरे, तुझे देखकर ही कह रहा हूँ। तेरी तो आज चाल ही बदली-बदली नज़र आ रही है।” मैं अब तक कपड़े हेंगर में टाँग चुका था। मैं प्रतीक के पास आकर बैठ गया।

“प्रतीक, आज मैंने नेहा से वो सब कह दिया।”

“सच्ची।”

“हाँ, और वो भी मुझसे प्यार करती है।”

“लकी मैन।” उसने मेरे पीठ पर हाथ से मारते हुए कहा।

“सो तो हूँ।”

“मेरे पास भी कुछ बताने को है।”

“बोल।”

“तस्नीम का एसएमएस आया है।”

“क्या बात कर रहा है!” मैंने लगभग उछलते हुए कहा।

“हाँ, रुक मैं पढ़कर सुनाता हूँ।”

“रहने दे, मैं ख़ुद ही पढ़ लूँगा।” इतना कहकर मैंने उसके हाथ से मोबाइल छीन लिया।

“डियर प्रतीक, आइ एम सॉरी। एक्च्युली आइ वाज वेरी अपसेट। आइ वाज एंग्री विद मसानी। अगेन सॉरी। थैंक्स फॉर वाटएवर यू डिड फॉर मी। विल यू मीट मी टुमॉरो नियर कलेक्ट्रेट सर्किल। गुड नाइट।”

“उसने तुझे बुलाया है! तेरी तो निकल पड़ी यार। पता है, वो मसानी को चाँटा लगाना चाहती थी और उसका ग़ुस्सा तुम पर निकल गया। पर मैं उससे नाराज़ हूँ।”

“क्यों?”

“क्या लिखा उसने, थैंक्स फॉर व्हाटएवर यू डिड फॉर मी। सारा क्रेडिट तुमको। कैडेट अल्फा और बीटा का क्या!” मैंने नाराज़ होने का नाटक करते हुए कहा। जिसे वो अच्छी

तरह से पहचानता था।

“माय डियर, किसी भी मिशन की सफलता का क्रेडिट टीम के कैप्टन को जाता है और तुम्हारा कैप्टन था जनरल गामा।” हम दोनों इस बात पर साथ-साथ हँस दिए। यह दिन हम दोनों के लिए प्यार ले के आया था।

“कितना दुबला हो गया है। देख यह पैंट भी ढीली हो गई है। वहाँ खाना-वाना खाता नहीं था क्या? इतने महीने हुए एक बार भी घर नहीं आया। अगर यह दिपावली नहीं होती तो, तू तो अब भी नहीं आता। भला यह कैसी पढ़ाई!” माँ बार-बार अपनी चिंता व्यक्त किए जा रही थी। दीपावली की तीन दिन की छुट्टियाँ थीं। इंस्टीट्यूट बंद था। हॉस्टल में से भी कई लोग घर जा चुके थे। प्रतीक भी गया। पर भूपी ने जाने से मना कर दिया। उसने कहा कि घर आने-जाने में जितने पैसे खर्च होंगे उतने में वो एक और इंस्टीट्यूट का फार्म भर सकता है।

मम्मी अब भी कहे जा रही थीं, “अब जब तक यहाँ है, ख़ूब खाया-पीया कर।” मैंने भी सोचा कि मम्मी तीन दिन में कितना खिला देगीं। “मैं वेसा ही हूँ। वो तो आपने इतने दिनों बाद देखा ना, इसलिए लग रहा है।”

“जयपुर जा के तू बड़ा समझदार हो गया है। अपनी मम्मी को ही सिखा रहा है।” इतना कहकर वो रसोई की ओर चल दीं। सच में मम्मी को कोई बात समझाना बहुत मुश्किल है।

आज घर पर मन नहीं लग रहा था। आइ वाज मिसिंग डिवाइन पैलेस। रात को मैंने नेहा को फ़ोन किया। वो अपने अंकल के साथ थी, इसलिए फ़ोन नहीं उठाया। यह बात उसने मुझे एसएमएस करके बताई।

रात को मम्मी मेरे कमरे में आईं। उनके हाथ में दूध का ग्लास था। सुबह से तीन ग्लास दूध मैं पी चुका था। पर मम्मी को मना करने से कोई मतलब नहीं था। जब मम्मी आईं तब मैं अपनी किताबें खोलकर बैठा था। मम्मी ने दूध टेबल पर रखा और मेरे पास आकर बैठ गईं।

“तू सोमदेव जी के यहाँ जाता है ना!” मम्मी ने पूछा।

“हूँ।” मैंने सिर हिला दिया।

“अच्छे लोग हैं, मुझे भी फ़ोन कर के हाल-चाल पूछते रहते हैं।” मैंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। “उनकी लड़की से मिला होगा ना?” मम्मी ने पूछा।

“हाँ।” मैंने एक बार फिर सिर हिला दिया।

“वो बता रहे थे, तुम एक बार उसके साथ फ़िल्म देखने भी गए थे।” माँ की बात सुनते ही मेरा ध्यान किताबों से हट गया। उन्होंने मम्मी को भी बता दिया। ओह माय गॉड! कहीं उसने वो किस वाली बात भी तो...नहीं...नहीं वो कैसे बता सकती है।

मैंने मम्मी की ओर देखे बिना ही ‘हाँ’ में जवाब दिया। मम्मी की ओर देख लेता तो शायद

मुझे शर्म आ जाती। हालाँकि ऐसी कोई बात नहीं थी पर मम्मी के सामने किसी लड़की की बात करना....मेरे बस में नहीं था। तो फिर मैं मम्मी को नेहा के बारे में कैसे बताऊँगा, तुरंत मेरे मन में ख़्याल आया। चलो जब वक़्त आएगा तब देखा जाएगा।

"कौन-सी फ़िल्म थी?" मम्मी ने पूछना जारी रखा।

"होगी कोई....मुझे याद नहीं।" मैंने इस टॉपिक से पीछा छुड़ाने के लिहाज़ से कहा। मम्मी फिर भी नहीं रुकी तो मैंने झल्लाकर कहा, "मम्मी प्लीज, पढ़ लेने दो ना।"

"ठीक है। सोने से पहले यह दूध पी लेना।" इतना कहकर मम्मी चली गईं।

उनके जाते ही विचारों ने मेरे दिमाग़ के कमरे में हल्ला मचाना शुरू किया। कोमल को क्या ज़रूरत थी, अपने घर पर बताने की कि वो मेरे साथ फ़िल्म देखने जा रही है। और अगर बता भी दिया तो अंकल-आंटी को क्या ज़रूरत थी कि वो इस ख़बर को मेरे घर पर ब्रॉडकास्ट करें। कोमल को मोबाइल वापस करते समय भी उसने घूमने की इच्छा व्यक्त की थी। थैंक गॉड! मैंने क्लास का बहाना बना दिया था वर्ना वो तो यह भी मेरे घर तक पहुँचा देती।

रात को नेहा का फ़ोन आया। उसने बताया कि जब मैंने उसे कॉल किया था, वो मेरे कहे अनुसार अपने अंकल से बातें कर रही थी। उन्हें ख़ुश रखने की कोशिश कर रही थी। उसने मुझे थैंक्स कहा। मेरी वजह से ही आज अंकल ने अपने दिल की बातें उसे बताई थी। आइ लव यू के साथ हमने फ़ोन रख दिया। रात को एक बजे नेहा का एसएमएस आया।

एक अजनबी अहसास हो तुम
हर पल मेरे पास हो तुम
जो बनाए हैं रिश्ते ज़माने ने
उन सबमें भी ज़्यादा ख़ास हो तुम।

"आई हेट यू, आई हेट यू।" प्रतीक चिल्लाए जा रहा था। आस-पास काग़ज़ के टुकड़े बिखरे पड़े थे। दीवाली को गुज़रे दो दिन हो चुके थे। हम सब एक बार फिर डिवाइन पैलेस में थे। मैं छत की ओर जाने वाली सीढ़ियों में बैठा नेहा से बात कर रहा था। भूपी इंस्टीट्यूट की लायब्रेरी में था। प्रतीक की आवाज़ सुन मैं कमरे में आया। प्रतीक के आस-पास काग़ज़ के टुकड़े बिखरे पड़े थे। प्रतीक अब भी चिल्लाए जा रहा था।

अब तक मैंने फ़ोन नहीं रखा था। "थोड़ी देर में फ़ोन करता हूँ।" नेहा का जवाब सुने बिना मैंने मोबाइल को जेब में रखा और प्रतीक की ओर बढ़ा।

"क्या हुआ?" मैंने यह कहने के साथ ही एक नज़र फ़र्श पर पड़े काग़ज के टुकड़ों पर डाली। प्रतीक ने मेरी बात का जवाब नहीं दिया। वो बस रोये जा रहा था।

“जब वो जानते हैं कि मैं उनसे नफ़रत करता हूँ तो फिर....क्यों...क्यों...?” जब मुझे लगा कि प्रतीक चुप हो गया, तब एक बार वो फिर चिल्लाया।

मैंने फ़र्श पर बिख़रे काग़ज़ के टुकड़ों में सबसे बड़ा टुकड़ा उठाया। यह कोई ग्रीटिंग कार्ड था। उस पर सिर्फ़ इतना ही लिखा था, तुम्हारा पिता। बाक़ी की बात मैं समझ गया। ज़रूर प्रतीक के पापा ने उसे दीवाली का कार्ड भेजा होगा और उसे पढ़कर एक बार फिर उसे अपनी परेशान डिप्रेस्ड माँ का चेहरा याद आ गया होगा और सीने में कहीं दबी नफ़रत एक बार फिर उसके सामने आ गई होगी। सारे अनुमान लगाने के बाद मैं प्रतीक के पास जाकर बैठा। हालाँकि अब उसका रोना कम हो गया था, पर पलकों में अटके आँसू अब भी बहे जा रहे थे।

“प्रतीक, तुम भले ही कहो कि तुम उनसे नफ़रत करते हो, पर यह सच नहीं है। एक्च्युली यू स्टिल लव योर फादर। तुम उनको मिस करते हो।” मैंने वही कहा जो इतने दिनों में प्रतीक के साथ रहकर महसूस किया था। कई बार उसने अपने पापा के साथ बीते दिनों के क़िस्से सुनाए थे। कई बार वो बताया करता था कि उसके पिता और माँ की पहली मुलाक़ात कहाँ हुई थी। वो कहानी सुनाते हुए उसकी आँखों में चमक होती थी। वो अपने पापा से नफ़रत कर ही नहीं सकता था। पर उसने अपने मन में यह बात बैठा ली थी कि वो उस आदमी से, जिसने उसे और उसकी माँ को छोड़ दिया है, सिर्फ़ और सिर्फ़ नफ़रत करता है। अगर वो नहीं भी करता तो उसके नाते-रिश्तेदार उसे नफ़रत करने को मजबूर कर देते। हमारी प्रतिक्रिया हमारी अपनी कब होती है! वो तो हमेशा से ही औरों की बातों, भावनाओं और हमारे उबलते हुए जज़्बात का मिश्रण होती हैं। अब यह तो मुमकिन ही नहीं था कि मेरी बात सुन प्रतीक कोई प्रतिक्रिया नहीं देता।

“व्हाट!” प्रतीक ने चिल्लाते हुए कहा, “आइ हेट हिम। यू नो व्हाट....आइ एम टेलिंग यू...कैन यू हियर मी...आइ सेड, आइ हेट हिम। अगर तुम मेरी माँ को देखोगे तो जानोगे कि मैं उनसे कितनी नफ़रत करता हूँ। ख़ुद जाने कितने ऐशोआराम से रहते होंगे। ख़ुश होंगे। हमारे बारे में कभी नहीं सोचा। अकाउंट में ख़ूब सारा रुपया और ज़मीन-जायदाद दे देने से क्या ख़ुशियाँ मिल जाती हैं! ख़ूब पटाखे छोड़े होंगे न इस दीवाली पर। तब मैं बचपन की दीवाली याद कर के रो रहा था।” प्रतीक कहते-कहते खिड़की से बाहर झाँकने लगा और कहीं खो गया।

“प्रतीक, वो जयपुर में ही रहते हैं ना?” मैंने पूछा, हालाँकि यह मेरा अंदाज़ा भर था। जिसके जवाब में उसने सिर्फ़ गर्दन हिलाई।

“तो तुम जाकर एक बार मिल क्यों नहीं लेते?”

“मैं उनसे मिलूँ...माय फ़ुट! इतने साल में एक बार न फ़ोन किया न हाल-चाल पूछा। बिना ग़लती कह दिया कि चले जाओ मेरे घर से। कभी लौट के मत आना। उससे जो दुनिया में सबसे ज़्यादा उन्हीं से प्यार करता था। अब बस यह चिट्ठियाँ लिख देते हैं। सोचते हैं, इतने भर से ज़िम्मेदारी पूरी हो जाती है उनकी। नफ़रत करता हूँ मैं उनसे। अगर कैट की कोचिंग न होती तो मैं कभी जयपुर भी नहीं आता।”

“और कुछ नहीं तो मिलकर यही बता देना कि तुम उनसे कितनी नफ़रत करते हो। और साथ ही यह भी कह देना कि वो तुम्हें लेटर न लिखा करें।”

प्रतीक ख़ामोश हो गया। वो कुछ नहीं बोला। मुझे लगा प्रतीक को ख़ुद उनके लेटर्स का इंतज़ार रहता है। तभी तो उसने सारे ख़त अब तक संभाल कर रख रखे थे। कई बार लेटर नहीं आता तो प्रतीक कोई पुराना लेटर निकालकर ही पढ़ने लग जाता। ऐसा करते मैंने कई बार उसे छुप-छुपकर देखा था। मेरे लिए उसके व्यवहार को समझना मुश्किल था।

“प्रतीक तुमने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया?” प्रतीक की ओर से कोई जवाब न पाकर मैंने कहा। हालाँकि यह प्रतीक का पर्सनल मैटर था पर मैं जानता था कि मुझे इसमें दख़लंदाज़ी करने की ख़ामोश इजाज़त प्रतीक की तरफ़ से मिली हुई थी।

“ओके। तुम मुझे इतना तो बताओगे कि वो रहते कहाँ हैं?” प्रतीक जब कुछ नहीं बोला तो मैंने उसका चेहरा ऊपर उठाकर उसकी आँखों में देखते हुए पूछा।

“उससे क्या होगा?” मेरे सवाल के जवाब में प्रतीक का सवाल।

“कुछ नहीं होगा, बस मैं जानना चाहता हूँ।”

“वैशाली नगर।” उसने कहा।

“वैशाली नगर में कहाँ?”

वो एक बार फिर ख़ामोश हो गया। मैंने अपना सवाल दोहराया, “वेयर इन वैशाली नगर?”

“क्या करोगे जानकर?” उसने धीमे से पूछा। मुझे नहीं पता था कि उस वक़्त वो क्या सोच रहा था। मैं बस उसके घर का पता जान लेना चाहता था। मैंने तय किया था कि मैं ख़ुद उसके पापा से मिलकर आऊँगा।

मैंने उसके सवाल का जवाब नहीं दिया। बस एक प्रश्नवाचक नज़र लिए उसकी आँखों में देखता रहा।

“बी 48।” उसने कहा।

“बी 48।” मैंने मन-ही-मन दोहराया। मुझे लगा यह तो सुना हुआ लगता है। बी 47 वैशाली नगर में तो सोमदेव अंकल रहते हैं। इट मीन्स...ओह माय गॉड! मुझे एक बहुत बड़ा झटका लगा।

“प्रतीक आर यू श्योर...इट इज बी 48!” मैंने थोड़ी ऊँची आवाज़ में कहा। हालाँकि मेरे चेहरे की परेशानी वो अगर ग़ौर करता तो पढ़ सकता था।

“हाँ, बी 48। मैं उस घर में पंद्रह बरस से ज़्यादा रहा हूँ। मैं कैसे भूल सकता हूँ।” उसने भी उतनी ही ऊँची आवाज़ में जवाब दिया। यक़ीनन मेरे सवाल से वो झल्ला गया था।

“मैं उस नेम प्लेट को भूल नहीं सकता। मैं ख़ुद लाया था बाज़ार से और अपने हाथों से पेंट किया था। डॉक्टर सोहनलाल अग्रवाल, बी 48।” प्रतीक ने पुरानी यादों को खंगालते हुए कहा।

मेरे लिए यह बहुत ही शॉकिंग न्यूज़ थी। प्रतीक के घर तो मैं जा चुका हूँ। उस औरत से मिल चुका हूँ जिसकी वजह से, प्रतीक के अनुसार, उसके पापा ने उनको छोड़ा। नेहा के

अंकल ही प्रतीक के फादर हैं। यानी प्रतीक के पापा को कैंसर है। और प्रतीक सोचता है कि वो ऐशोआराम की ज़िंदगी बिता रहे हैं। इस हालत में भी अगर वो अपने बेटे को लेटर लिखते हैं, तो यक़ीनन वो प्रतीक से बेहद प्यार करते हैं। यह भी तो हो सकता है कि उसके पापा ने यह मकान किसी और को बेच दिया हो। अब वे कहीं और रहते हों। यदि ऐसा है तो नेहा के अंकल को तो ज़रूर पता होगा। तमाम संभावनाओं में सिर खपाते हुए मैंने नेहा को फ़ोन लगाया।

“हैलो....नेहा।”

“यस माय कैटू।”

“नेहा...तुम्हारे अंकल का क्या नाम है?”

“वाय आर यू आस्किंग?”

“नेहा...बाद में बताऊँगा। पहले तुम बताओ उनका नाम क्या है?”

“डाक्टर सोहन लाल अग्रवाल।”

“आर यू श्योर?”

“अनुराग तुम पागल हो गए हो क्या, मेरे अंकल का नाम है, क्या मुझे नहीं पता होगा!”

“सॉरी। और तुम्हारे घर का नंबर बी 48 है ना?”

“हाँ। अनुराग बात क्या है?”

“मैं तुम्हें बाद में सब कुछ बताता हूँ।”

“अनुराग!”

“फिर बताता हूँ, बाय बाय बाय बाय बाय।” बिना नेहा की बात सुने मैंने फ़ोन काट दिया और जहाँ था वहीं बैठ गया।

नेहा से बात करने के बाद मैं श्योर हो गया कि नेहा के अंकल ही प्रतीक के पापा हैं। मेरा मन हुआ कि मैं जाकर प्रतीक को कह दूँ कि उसके पापा को कैंसर है। उन्हें उसकी ज़रूरत है। पर शायद यह सही वक़्त नहीं था।

मैं एक बार फिर प्रतीक के पास गया। वो अभी भी चुपचाप बैठा था। हालाँकि फ़र्श पर अब काग़ज़ के टुकड़े नहीं फैले थे। प्रतीक उन्हें समेट चुका था।

“ओए तस्नीम मैडम को फ़ोन कर न। शायद उनसे बात करके तुझे अच्छा लगे।” मैंने उसके मूड को ठीक करने के लिहाज़ से कहा। तस्नीम मैडम से उसकी आख़िरी मुलाक़ात कलेक्ट्रेट सर्किल पर हुई थी, जहाँ उन्होंने प्रतीक को बुलाया था। फिर दोनों एक रेस्टोरेंट में गए। तस्नीम मैडम ने प्रतीक से माफ़ी माँगी और कई बार शुक्रिया कहा। फिर उन्होंने मसानी को बेहिसाब गालियाँ निकालीं और इतनी सब बातों के ख़त्म हो जाने पर बात उन दोनों के रिश्ते पर आ के ठहरी। तस्नीम मैडम ने कहा कि वो प्रतीक की फ़ीलिंग्स की कद्र करती हैं, पर उन्हें कुछ समय चाहिए। इस दरमियान वे दोनों अच्छे दोस्त बन सकते हैं। और सब कुछ वक़्त पर छोड़ देते हैं। शायद उन दोनों के बीच कुछ उस तरह का रिश्ता डेवलप हो जाए। तब से वे एक-दूसरे से मोबाइल पर बातें किया करते हैं और उनसे बात करके प्रतीक हर बार ख़ुश नज़र आता है। यही सोचकर मैंने आज भी उससे तस्नीम मैडम से बात करने को कहा।

पर प्रतीक ने मेरी बात का जवाब नहीं दिया।

“क्या यार, अब ऐसे मुँह लटका के मत बैठ। चल मैं तुझे एक जोक सुनाता हूँ, नेहा ने एसएमएस किया है।” मैंने मोबाइल हाथ में लिया और मैसेज बॉक्स खोलने लगा।

“तस्नीम सेंड्स मी बेटर जोक्स।” उसने कहा। थैंक गॉड! वो कुछ बोला तो सही। वैसे भी मैंने उससे झूठ ही बोला था। नेहा ने तो कभी भी मुझे जोक्स एसएमएस नहीं किए थे। वो तो हमेशा ही रोमांटिक या मोटीवेशनल लाइन्स ही लिखा करती थी।

“रियली!” मैंने उसकी बात के जवाब में कहा। उसने मेरी तरफ़ देखकर गर्दन हिला दी।

“फिर तुम ही सुना दो।” मेरे कहने पर प्रतीक चुटकुले सुनाने लगा और मैं हँसने।

———————

“व्हाट...! आर यू श्योर अनुराग, तुम्हें पता है तुम क्या कह रहे हो?”

नेहा को मैंने पूरी बात बताई। सुनकर वो अवाक् रह गई। हम दोनों सेंट्रल पार्क की एक बेंच पर बैठे थे।

“यस नेहा, डेम श्योर। मुझे ख़ुद प्रतीक ने उसके घर का पता बताया है और उसके पापा का नाम भी यही है। अच्छा तुम ही बताओ, तुम्हारी बुआ से अंकल की दूसरी शादी हुई थी। राइट। यह सही है कि नहीं?” मैं बिना किसी झिझक के नेहा से बोल पड़ा। शायद मेरी इस बात से उसे इंसल्ट फ़ील हुई, पर यह बातें ज़रूरी थीं। नेहा की ओर से कोई जवाब न आता देखकर मैं बोला, “नेहा बताओ, मैं सही कह रहा हूँ ना?”

उसने जवाब में गर्दन हिलाई। जिसका मतलब ‘हाँ’ था। पर वो बोली कुछ भी नहीं। “उन्होंने अपनी पहली पत्नी से तलाक़ लिए बिना तुम्हारे बुआ से शादी की। प्रतीक उनकी पहली पत्नी का बेटा है। और वो अपने बेटे से बहुत प्यार करते हैं। बट आइ डोंट अंडरस्टेंड जब वो इतना प्यार करते थे, तो उसे घर से निकालने की क्या ज़रूरत थी। उसका कहना है कि तुम्हारी बुआ को शायद उसका रहना अच्छा नहीं लगता था। यू नो स्टेप मॉम।” मैं नेहा से ऐसे पूछ रहा था मानो इस सब के लिए वो ही ज़िम्मेदार हो। नेहा कुछ नहीं बोली, बस अपना सिर झुकाए बैठी रही। न जाने किस उधेड़बुन में थी। कुछ देर शांति पसर गई। मैं जवाब के इंतज़ार में नेहा की ओर देखता रहा। फिर कुछ देर बार नेहा बोल पड़ी, “अनुराग वो सच में उसे बहुत प्यार करते हैं। यू नो एक दिन मैंने कहा था कि मैं अंकल के साथ बैठी हूँ और वो मुझे अपने मन की बहुत-सी बातें बता रहे हैं।” नेहा ने मेरे चेहरे पर ऐसे झाँका कि मुझे सारी बात याद आ गई। मैंने ‘हाँ’ में सिर हिलाया, फिर नेहा ने कहा, “उस दिन अंकल ने बताया कि वो अपने बेटे को बहुत चाहते हैं, पर वो कहाँ है यह उन्होंने मुझे कभी नहीं बताया। यहाँ तक कि उसका नाम तक नहीं बताया। मैंने उन्हें कई बार ख़त भी लिखते देखा है। पता है... उन ख़तों को बुआ ही पोस्ट करती हैं।”

“और जिस दिन उनका ख़त आता है, प्रतीक का रो-रो के बुरा हाल हो जाता है। वो बस एक ही बात कहता है कि वो उनसे नफ़रत करता है। बेहद नफ़रत। पर मुझे पता है कि वो झूठ कहता है। एकदम झूठ। अगर ऐसा होता तो वो उनके सारे ख़तों को संभाल कर क्यों

रखता! कल दीवाली ग्रीटिंग को उसने फाड़कर फेंक दिया था। और जब ग़ुस्सा ठंडा हो गया तो उन्हीं बिखरे टुकड़ों को फिर से सहेजकर अपने पास रख लिया।" नेहा चुपचाप मेरी बात सुन रही थी।

"पर मैं इतना कह सकती हूँ कि मेरी बुआ को प्रतीक से कभी प्रॉब्लम नहीं थी। कभी नहीं। वो तो उसे अपने बेटे जैसा ही मानती थीं। बुआ और अंकल कॉलेज में एक साथ थे। शायद एक-दूसरे शादी करना चाहते थे पर...। बुआ ने तय किया था कि ताउम्र शादी नहीं करेंगी। फिर जब अंकल प्रतीक की मम्मी से अलग हुए तो उन्होंने शादी कर ली।"

"अच्छा...तुम्हारी बुआ को कब पता चला कि अंकल को कैंसर है?" मैं किसी सी ग्रेड की जासूसी फ़िल्म के जासूस की तरह बिहेव कर रहा था।

"पता नहीं अनुराग, मैं तो इसी साल उनके पास आई हूँ। सो, मुझे बहुत ज़्यादा उनके बारे में पता नहीं और मैंने कभी पूछा भी नहीं। मैं इस तरह की बातें पूछकर उन्हें और ज़्यादा दुःखी नहीं करना चाहती थी।" नेहा ने कहा।

"अगर तुम्हारी बुआ को प्रतीक से कोई प्रॉब्लम नहीं थी और अंकल अब भी उससे उतना ही प्यार करते हैं तो वजह क्या रही होगी जो उन्होंने...मेरी समझ से बाहर है। नेहा मैं तुम्हारे अंकल से मिलना चाहता हूँ। विल यू हेल्प मी?" मैंने नेहा के हाथ-पर-हाथ रखते हुए कहा।

"माय कैटू आइ लव यू एंड यू नो.....लव के लिए कुछ भी करेगा।" उसने मुस्कुराकर कहा। मेरे चेहरे पर भी मुस्कान आ गई।

"पता है, यू आर द स्वीटेस्ट गर्ल आइ हैव एवर मेट।" मैंने कहा।

"आइ थिंक यू रिएलाइज्ड इट आफ्टर किसिंग मी।" उसने आँखों में शरारत लाते हुए कहा।

"ओह...तुम्हें ऐसा लगता है!"

"लगता तो है।"

"अगर वो स्वीटनेस दोबारा....," इस बार शरारत मेरी आँखों में थी।

"नॉट टुडे...और एटलिस्ट नॉट हियर।" उसने एक नज़र आस-पास मारते हुए कहा।

"तो फिर कब आऊँ मैं तुम्हारे घर?"

"मुँह मीठा करने!" नेहा ने शरारत करते हुए कहा।

"तुम्हारे अंकल से मिलने। मेरे बेस्ट फ्रेंड के फादर से मिलने। तुम सच्ची में बैड गर्ल बन गई हो।" मैंने हँसते हुए कहा।

"सब आपकी सोहबत का असर है जनाब।" उसने एक बार फिर हँसी बिखेरी।

"नेहा जब तुम्हारी आंटी घर पर नहीं रहती हों, तब ही अंकल से मिलना ठीक रहेगा। वर्ना आंटी मुझे पहचान लेंगी।"

"आइ विल कॉल यू। पर तुम बात क्या करोगे?" उसने पूछा और उसका सवाल जायज़ था।

"मैं उनसे कहूँगा कि मैं नेहा से प्यार करता हूँ और एक दिन उससे शादी करना चाहूँगा।

सो, बस एडवांस बुकिंग करवाने आया हूँ।" मैंने हँसते हुए कहा।

"बी सीरियस...यार।" बताओ अभी ख़ुद मज़ाक़ कर रही थी, मैंने किया तो बी सीरियस यार। अब तो आदत हो गई।

"ओके। मैं उन्हें बताऊँगा कि प्रतीक उनके बारे में क्या सोचता है और उनसे कहूँगा कि कम-से-कम वो प्रतीक को लेटर न लिखा करें।" मैंने सीरियस होते हुए कहा।

"पर ध्यान से, तुम्हारी कोई बात उनकी तबीयत पर भी असर कर सकती है।" उसने गंभीर होते हुए कहा।

"डोंट वरी। आइ विल बी केयर फुल। पर एक प्रॉब्लम है..." कहते हुए मैं रुक गया।

"क्या?" नेहा ने उतावलेपन में कहा।

"तुम्हारे घर आते हुए मुझे सोमदेव अंकल ने देख लिया तो या फिर कोमल ने! हे भगवान, हेल्प अस।" मैंने ऊपर की ओर देखते हुए कहा।

"डोंट वरी अनुराग, कोमल दिन में कॉलेज में होती है और उसके पापा ऑफ़िस में। अब आंटी बाहर खड़े होकर तुम्हें देखने से रहीं।" उसकी बात पर मुझे थोड़ी तसल्ली हुई।

———————

"तो आज मिस तस्नीम से क्या बात हुई?" भूपी की मौजूदगी में मैंने प्रतीक से पूछा।

अब उसका मूड थोड़ा ठीक लग रहा था।

"उसने कहा कि मैं कैट पर कंसन्ट्रेट करूँ और यह सब उसने तुम दोनों के लिए भी कहा है।" प्रतीक हमारी ओर आँखों से इशारा करते हुए बोला।

अगले तीन दिन तक नेहा का फ़ोन नहीं आया। मैंने भी उसे कोई फ़ोन नहीं किया। हाँ, बस रोमांटिक एसएमएस एक-दूसरे को भेजते रहे। उधर प्रतीक भी तस्नीम मैडम को सेमी रोमांटिक मैसेज भेजता, जिनका जवाब मोटीवेशनल मैसेज के रूप में आता। हालाँकि प्रतीक इतने भर से भी ख़ुश था। कैट एकदम पास में आ गई थी। हम लोगों ने अपनी सारी ऊर्जा उसी में झोंक दी थी। इंस्टीट्यूट का कोर्स पूरा हो गया था। अब बस फैकल्टी प्रॉब्लम सॉल्व करने के लिए दिन में एक घंटा अवेलेबल रहती थी। अब सारी पढ़ाई डिवाइन पैलेस में ही होती थी। पिछले तीन दिन से हमने अपने-आपको डिवाइन पैलेस तक समेट लिया था। अंकुर दिन के समय डिवाइन पैलेस में दिखाई नहीं देता था। भूपी ने बताया कि वो इंस्टीट्यूट जाता है। शायद उसे कुछ ज़्यादा ही प्रॉब्लम्स थी। मम्मी का फ़ोन आ जाया करता था। और ले-देकर उनकी बातों में सोमदेव अंकल और कोमल का ज़िक्र आ ही जाता था। कई बार वो कह भी दिया करती थीं कि मैं उनके यहाँ चला जाया करूँ। पर मुझे मालूम था मैं ऐसा करने वाला नहीं था। मुझे इंतज़ार था नेहा के फ़ोन का, जब वो मुझे प्रतीक के पापा से मिलवाने वाली थी। भूपी ने कैट का फ़ॉर्म तो भर दिया पर अलाइड्स के फ़ॉर्म भरने के पैसे उसके पास नहीं थे। मैंने और प्रतीक ने एक-एक फ़ॉर्म कम भरे और उन पैसों से भूपी ने एक कैट अलाइड का और एक एफएमएस देल्ही का फ़ॉर्म भर दिया। भूपी ने अपना टाइम-टेबल बनाया था। उसने पूरे दिन को सब्जेक्ट्स में डिवाइड कर दिया था। मैंने और प्रतीक ने उस

टाइम-टेबल को ज्यों-का-त्यों एडॉप्ट कर लिया था। उस की एक कॉपी अपने रूम की दीवार पर लगा दी थी। प्रतीक के कहने पर मंगलवार को टाइम-टेबल में ज़रा-सी ढील दे दी गई और उस दिन से हम सबने व्रत रखना और मंदिर जाना शुरू कर दिया। शायद प्रतीक को तस्नीम ने कहा होगा। हालाँकि तस्नीम मुस्लिम थी पर उसकी आस्था भगवान में उतनी ही थी जितनी कि उन दिनों हमारी। एक बार प्रतीक और तस्नीम दोनों साथ-साथ मंदिर गए थे। मैं भगवान को मानता तो था पर श्योर नहीं था कि वो मेरी मदद करेंगे। वो भी तब जब कि मैंने एक बार भी उनको प्रसाद नहीं चढ़ाया। प्रतीक ख़ुश था। भूपी तभी ख़ुश हो सकता था जब कि वो कैट क्रेक करता। उसे देखकर लगता भी था कि वो कैट क्रेक कर सकता है। हालाँकि मुझे अपने-आप पर भी विश्वास था। नेहा को तो मुझ पर कुछ ज़्यादा ही विश्वास था। एक दिन उसने मुझसे कहा भी तुम कौन से आइआइएम में जाओगे। आइआइएम को लेकर मैं आश्वस्त था। आश्वस्त था कि इनमें तो नहीं होने वाला। मैं तो कैट एलाइड्स के लिए खेल रहा था।

“नेहा, आर यू श्योर तुम्हारी बुआ घर पर नहीं हैं?” नेहा का एक दिन फ़ोन आया। उसने बताया कि उसकी बुआ बाहर गई हैं और मैं उसके अंकल यानी प्रतीक के पापा से मिलने उसके घर आ सकता हूँ। हमें बताया गया था कि किसी भी आंसर पर तब तक टिक नहीं करना है जब तक हम श्योर न हो जाएँ। सो, इसी चक्कर में मैं नेहा से भी पूछ बैठा, आर यू श्योर?”

“अनुराग तुम पागल हो गए हो क्या! पिछले आधे घंटे में तीन बार तुम फ़ोन करके यही पूछ चुके हो। और अगर इस बार तुमने पूछा ना तो मैं फ़ोन करके बुआ को घर पर वापस बुला लूँगी। डेंटिस्ट के साथ उनका अपॉइंटमेंट कैंसिल भी हो सकता है।” नेहा ने उखड़ते हुए कहा।

“ओके डियर, आई विल नॉट आस्क अगैन।”

“एक और गुड न्यूज़। कोमल भी घर पर नहीं है।”

“तुम्हें कैसे पता?” नेहा की बात ख़त्म होने से पहले ही मैंने सवाल दाग दिया।

“उसे और उसकी माँ को मैंने कार में बैठकर कहीं जाते हुए देखा है।”

“थैंक गॉड!”

“तो तुम कितनी देर में पहुँच रहे हो?”

“बस दस मिनट और।”

“ओके कम सून, वेटिंग फॉर यू माय कैटू।” कई बार मुझे कैटू फट्टू की तरह साउंड करता था।

———————

मेरा हाथ बेल पर था और पिछले पाँच सेकेंड से यह हाथ वहीं था। मेरे शरीर में इतनी ताक़त नहीं थी कि मैं उसे प्रेस कर सकूँ। मैंने मोबाइल निकाला और नेहा को मिस्ड कॉल दिया। नेहा बाहर दरवाज़े पर आई।

“ऐ बुद्धू घंटी तो बजाओ, अंकल को कैसे पता चलेगा कि कोई मिलने आया है?” नेहा धीरे से बोली। मेरा एक हाथ अब भी वहीं था और मैं बेल को प्रेस नहीं कर पा रहा था।

“तुम भी ना, हटो।” इतना कहकर नेहा ने ख़ुद ही बेल प्रेस कर दी और अंदर भाग गई। म्युजिकल बेल थी। ओम जय जगदीश....यही धुन थी। बेल बजते ही नेहा ने आवाज़ के साथ दरवाज़ा खोला और मुझे ड्रॉइंग रूम में बैठाते हुए बोली, “तुम यहीं बैठो, मैं अंकल को बताकर आती हूँ।” वो ड्राइंगरूम से बाहर चली गई। “वेल डेकोरेटेड रूम” मैंने मन-ही-मन कहा। कुछ देर बाद नेहा वापस आई।

“तुम्हें अंकल अंदर ही बुला रहे हैं।” उसने कहा।

“तुमने अंकल को क्या बताया कि मैं कौन हूँ।”

“डॉन।” कहकर वो हँस दी।

“नेहा!” मैंने गंभीर होते हुए कहा।

“आइ सेड यू आर माय लवर...और मुँह मीठा करने आए हो। इसके लिए परमिशन लेना चाहते हो।” इतना कहकर वो एक बार फिर हँस दी, पर उसकी आवाज़ धीमी थी।

“बी सीरियस...।”

“ओके ओके...मैंने कहा कि कोई लड़का आया है और कह रहा है कि वो प्रतीक का दोस्त है। आपसे मिलना चाहता है।”

“ओके...वेयर इज ही?” मैंने पूछा। मेरे चेहरे पर पसीना आने को उतावला था, हालाँकि मौसम सर्दियों का था।

“मेरे साथ आओ...” इतना कहकर वो आगे-आगे चल दी। फिर हम ड्राइंगरूम से बाहर निकलकर उसी से जुड़े दूसरे कमरे में चले गए। कमरे में घुसते ही मैंने दवाइयों की गंध महसूस की। जो यक़ीनन अच्छी तो नहीं ही लग रही थी। प्रतीक के पापा डबल बेड पर लेटे हुए थे। उन्होंने एक पतली चादर ओढ़ रखी थी, जिसका रंग मैरून था। शायद उन्हें ख़ून की उल्टी होती थी। एक बार नेहा ने बताया भी था। उन्हें देखकर सहसा विश्वास हो जाता था कि वो प्रतीक के पापा ही हैं। प्रतीक से हू-ब-हू शक्ल मिलती थी या यूँ कह लें कि प्रतीक की शक्ल उनसे हू-ब-हू मिलती थी। पक्का वो बचपन में प्रतीक जैसे ही दिखते थे। मैं शर्त लगा सकता था। उन्होंने इशारा किया और मैं पास ही रखी कुर्सी पर बैठ गया।

“नमस्ते अंकल।” मैंने कहा। हालाँकि मुझे प्रणाम करना चाहिए था पर उनके पाँव चद्दर से ढँके हुए थे। उन्होंने अपनी आँखों को झुकाकर मेरे नमस्ते का जवाब दिया। फिर तकिये का सहारा लेते हुए बैठ गए।

“अंकल प्लीज, आप लेटे रहिए।” मैंने कहा।

“इट्स ओके।” अंकल लगभग बैठते हुए बोले। उनके चेहरे को देखकर कोई भी उनकी

तबीयत का अंदाज़ा लगा सकता था। मेरी नज़र उनके सिरहाने रखे फ़ोटो फ्रेम पर पड़ी। जिसमें एक ओर प्रतीक था और दूसरी ओर एक औरत। यक़ीनन वो प्रतीक की मम्मी ही रही होंगी। वो प्रतीक के बचपन की फ़ोटो थी। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं बात कहाँ से शुरू करूँ।

"अंकल आपकी तबीयत कैसी है?" यह बात शुरू करने की सबसे आसान लाइन है, पर यहाँ शायद उचित नहीं थी। अंकल ने मेरी बात का जवाब नहीं दिया और मुझसे ही सवाल कर दिया।

"तुम्हें प्रतीक ने भेजा है?" और फिर उत्तर की आस में मेरे चेहरे को ताकते रहे।

"अंकल यू नो...," इसके आगे मैं कुछ कह नहीं पाया और मेरे कहने की ज़रूरत ही नहीं रही। शायद अंकल मेरे चेहरे भावों से ही सारी बात समझ गए थे।

"तुम क्या उसके अच्छे दोस्त हो?" उन्होंने पूछा।

"अंकल हम दोनों रूममेट हैं।"

"तब तो वो तुम्हें काफ़ी कुछ बताता होगा।" उन्होंने पूछा। मैं समझ पा रहा था कि वो क्या जानना चाह रहे थे।

"हाँ अंकल, अक्सर आप के बारे में बात करता है। अपने बचपन के क़िस्से सुनाता है। आपकी और आंटी की पहली मुलाक़ात के भी।" मैंने मुस्कुराते हुए कहा। अंकल के चेहरे पर भी कहीं दबी-दबी-सी मुस्कुराहट आहट दे रही थी। फिर अंकल बोले, "हाँ हमने ही उसे एक दिन बताया था। बहुत जिद्दी था। जो ठान लेता वो कर के ही दम लेता था।"

मुझे मिशन मसानी याद आया। अंकल के चेहरे पर मुस्कान की मात्रा बढ़ने लगी। मैं तय नहीं कर पा रहा था कि अंकल को कैसे कहूँ कि वो आपसे नफ़रत करता है। आप के लेटर उसे रुलाते हैं। तभी नेहा पानी लेकर आ गई। मैंने नेहा को ऐसे घरेलू लड़की की तरह कभी इमेजिन नहीं किया था। मेरे पास आई और ट्रे आगे कर दी।

मैंने पानी का ग्लास उठाया। अंकल के सिरहाने पानी का ग्लास रखकर वो वापस बाहर की ओर चली गई। मैंने एक ही घूँट में पानी पीया और ग्लास नीचे रख दिया।

"अंकल, मे आइ आस्क यू वेरी पर्सनल क्वेश्चन?" मैंने हिम्मत करके पूछा। उन्होंने पलकें झपकाईं।

"आपने अपनी फैमिली को अकेला क्यों छोड़ा, प्रतीक को घर से क्यों निकाला?" मेरी बात सुनकर वो ख़ामोश रहे। उन्होंने नज़र मेरे चेहरे से हटा ली। एक पल को मैंने सोचा कि मुझे यह नहीं पूछना चाहिए था। शायद वो इसका जवाब नहीं देना चाहते थे।

"सॉरी अंकल...अगर मैंने..." उनकी आँखों से निकल आए एक आँसू को देखकर मैंने कहा। पर उन्होंने मुझे बीच में ही रोक दिया और बोले, "मैंने कभी उन्हें अपने से अलग नहीं किया...। हाँ मैंने अपने-आपको उनसे दूर ज़रूर कर लिया, पर अलग कभी नहीं किया। दे स्टिल लिव इन माय हार्ट।" उन्होंने दीवार की ओर एक टक देखते हुए कहा।

"बेटा, तुम मुझसे भले ही ना कहो बट आइ नो, ही हेट्स मी।" अंकल वो बात कह गए जो मैं उनसे नहीं कह पा रहा था।

“नो अंकल....” अचानक मेरे मुँह से निकल गया। उन्होंने नज़रें दीवार से हटाकर मेरे चेहरे पर लगा दीं।

“ही लव्ज यू। सच्ची कहूँ तो वो कंफ्यूज़ है। वो तय नहीं कर पा रहा है कि वो आपसे क्या करे। नफ़रत...जो वो कर नहीं सकता और प्यार जो कि वो आपसे हमेशा से करता आया है। यू नो आपके लिखे लेटर उसने संभालकर रखे हैं। आप आंटी से अलग हुए तो उसने बर्दाश्त कर लिया। पर उसे यह बर्दाश्त नहीं हुआ कि आपने उसे घर से चले जाने के लिए कह दिया। आपके जाने के बाद आंटी डिप्रेशन में रहने लगीं। इसका ज़िम्मेदार वो आप ही को मानता है। आइ थिंक ही इज राइट।” मेरे अंतिम शब्द जजमेंटल थे। मानो पूरे केस को सुनने के बाद मैंने अपना फ़ैसला सुना दिया था।

“अंकल चुप हो गए। हाँ, उनके चेहरे पर कुछ आँसू और लुढ़क आए थे। वो खाँसने लगे। खाँसी की आवाज़ सुन नेहा अंदर आ गई और सिरहाने रखा पानी उनको पिलाया।

“आइ एम फ़ाइन नेहा।” उन्होंने नेहा की ओर देखकर अपने को संभालते हुए कहा।

“अनुराग....यही नाम बताया ना तुमने....?” उन्होंने नेहा से पूछा।

“जी...।” नेहा ने बस इतना ही कहा।

“अनुराग...शी इज लाइक माय डॉटर। यही मेरा ख़्याल रखती है। माय ब्रेव केयरिंग डॉटर।” नेहा मुस्कुरा दी। “नेहा अनुराग के लिए कॉफ़ी बनाओ।”

“अंकल रहने दीजिए। उसकी कोई ज़रूरत नहीं है।” नेहा ने मेरी इस बात पर मुझे घूरा। शायद वो चाहती थी कि मैं कॉफ़ी पीऊँ।

“नो अनुराग ऐसे नहीं चलेगा। नेहा तुम कॉफ़ी लाओ।”

नेहा कमरे से बाहर चली गई। मैं बस मुस्कुराता हुआ रह गया। अंकल ने मेरी बात का जवाब नहीं दिया था। पर दुबारा वही सवाल पूछने पर उनकी तबीयत ख़राब हो सकती थी। नेहा ने पहले ही सावधान किया था। मैंने अपने-आपको कुछ भी पूछने से रोका।

“तुम्हारी प्रिपरेशन कैसी चल रही है।” उन्होंने ही वापस बातचीत शुरू की। हालाँकि बातचीत का टॉपिक बदल चुका था।

“डुइंग अवर बेस्ट अंकल।” मैंने बस इतना ही कहा। उन्होंने मुझसे प्रतीक के बारे में काफ़ी कुछ पूछा। उनकी बातों से साफ़ झलक रहा था कि वो प्रतीक के बारे में छोटी-से-छोटी बात जानकर भी कितना ख़ुश हो रहे थे। इतने में नेहा कॉफ़ी ले आई।

“अंकल आप कॉफ़ी नहीं लेंगे।” मैंने ट्रे में एक ही कप देखकर कहा और वो कप उठा भी लिया।

“नहीं बेटा...डॉक्टर्स अब कहाँ पीने देते हैं। अच्छा तुम प्रतीक का घर नहीं देखना चाहोगे।”

“वाय नॉट अंकल!” मैंने उत्सुकता से कहा।

“नेहा तुम अनुराग को पूरा घर दिखाओ और अपना रूम भी, कभी उसमें प्रतीक रहता था।”

“आइए।” नेहा ने कहा। कितनी तमीज़ और तहजीब से पेश आ रही थी नेहा! मैं नेहा के

साथ कमरे से बाहर की ओर चल दिया।

“दिस इज माय रूम।” हम डाइनिंग रूम क्रॉस करते हुए एक रूम में दाख़िल हुए।

“ओह नाइस रूम!” मैंने एक नज़र कमरे पर दौड़ाते हुए कहा।

“यू हैव योर ओन कंप्यूटर!” मैंने कोने में रखे कंप्यूटर को देखकर कहा। आजकल कंप्यूटर बड़ी बात नहीं, पर उन दिनों थी।

“अंकल का था, अब वो इस पर काम नहीं करते, मेरे काम आता है। यू नो....अंकल ने एक शर्त पर इसे मुझे दिया है।”

“वो क्या?” मैंने कॉफ़ी का एक सिप लेते हुए पूछा।

“वो यह कि मैं कभी इसका वॉलपेपर चेंज ना करूँ।”

“अजीब-सी शर्त है।” मैंने मन-ही-मन कहा। नेहा शायद मेरे मन की बात समझ गई थी।

“उन्होंने वॉलपेपर में प्रतीक का फ़ोटो लगा रखा है। मुझे कभी उसका नाम नहीं बताया, बस इतना ही कहा कि मेरे बेटे की फ़ोटो है। जिस दिन तुमने कहा कि अंकल ही प्रतीक के पापा हैं, उस दिन मैंने अंकल से उनके बेटे का नाम पूछा था।” मुझे उसकी बात सुन आश्चर्य हुआ।

“तुम्हारी आंटी को यह कैसा लगता है, आइ मीन...,” मैं बोल ही रहा था कि वो मेरी बात बीच में काटते हुए बोल पड़ी, “मेरी बुआ को इन सबसे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।”

“पर्सनल सवाल पूछ लूँ?” मैंने कहा।

उसने पलकें झपकाईं। न झपकाती तो भी पूछता। प्यार में इतनी लिबर्टी तो होती ही है।

“कहीं तुम्हारी बुआ ने बच्चे के लिए...तुम मेरा मतलब समझ रही हो ना।”

“मैंने कहा ना, बुआ प्रतीक को अपने बच्चे जैसा ही समझती हैं। उन्हें बच्चा नहीं चाहिए था। बस वो अंकल के साथ ज़िंदगी गुज़ारना चाहती थीं और वो यही कर रही हैं। अंकल ने ही उन्हें मना किया था कि वो प्रतीक से कोई कॉन्टेक्ट न रखें।”

अचानक मेरे मन में नेहा की बुआ की बनी-बनाई छवि बदलने लगी। जैसे स्लेट पर से किसी ने कुछ मिटाकर कुछ और लिख दिया हो। जिसके मन में प्यार इतना गहरे समाया हो, वो कुछ भी हो मेरे और नेहा के प्यार के ख़िलाफ़ तो कभी नहीं होंगी।

“शी इज अ गुड लेडी।” मेरी बात पर एक बार फिर उसने पलकों को झपकाया।

“पर नेहा उन्होंने तो अब तक मुझे नहीं बताया कि उन्होंने प्रतीक को घर से क्यों निकाला?” मैंने मायूस होते हुए कहा।

“डोंट वरी माय कैटू...ही विल टेल यू। पता है आज तुमसे मिलकर उन्हें कितना अच्छा लगा होगा। इतने दिनों में पहली बार मैंने उन्हें मुस्कुराते हुए देखा। जस्ट बीकॉज़ ऑफ़ यू... माय कैटू।”

“ओह रियली! बाय द वे आइ फॉरगॉट वन थिंग।

“व्हाट?”

“टैस्टिंग योर स्वीटनेस। मुँह मीठा करना।” मैंने बातों और आँखों दोनों में शरारत लाते हुए कहा।

“यू नॉटी...।” नेहा बोली। मैं उसके पास आ गया।

“अगर मेरी बुआ आ गई तो...!” लड़की एकदम से ‘हाँ’ कह दे तो नानी मरती है ना।

“दरवाज़ा बंद है।”

“तुम मेरे ही घर में मेरे अंकल की मौज़ूदगी में मुझे किस करोगे!”

“आइ थिंक सो!” कहते हुए मैं उसके और पास आ गया।

“नाऊ यू आर टर्निंग इन टु बैड ब्वाय।” उसने कहा और अपने हाथ मेरे कंधे पर रख दिए। अगले दस मिनट फिर रूई के नम फाहों का अहसास लेता रहा।

“यू आर रियली वेरी स्वीट।” मैंने कहा तो वो शर्मा के मेरे सीने से लगकर बोली, “अब तो कॉफ़ी फीकी लगेगी, मीठा जो चख लिया।” हम दोनों मुस्कुराए।

“चलो, अब अंकल से मिल लो। पता चला वो ही यहाँ आ गए।” नेहा ने कहा तो मुझे अहसास हुआ कि हम दोनों के सिवा भी घर में कोई था।

“ओके अंकल, मैं चलता हूँ।” मैंने अंकल के पाँव छूते हुए कहा।

“अनुराग, क्या तुम प्रतीक को बताओगे कि तुम यहाँ आए थे?” अंकल ने पूछा। मैंने तो अब तक इस बारे मैं सोचा ही नहीं था।

“अंकल अगर आप कहें...,” मैंने इतना ही कहा था कि उन्होंने मेरी बात काटते हुए कहना शुरू किया, “नो अनुराग, उसे मत बताना। तुम्हारा कोई कॉन्टेक्ट नंबर हो तो नेहा को दे देना। तुमसे बात करके अच्छा लगा। अगर तुम डिस्टर्ब न हो तो मैं तुम्हें किसी दिन बात करने के लिए बुला सकता हूँ?”

“वाय नॉट अंकल! जब आपका जी चाहे। और अब तो मैं ख़ुद ही आपसे मिलने आता रहूँगा।” फिर मैं वहाँ से चला आया। अंकल के कहने पर नेहा मुझे बाहर तक छोड़ने आई थी।

मैंने प्रतीक को नहीं बताया कि मैं उसके पापा से मिल के आया और यह भी नहीं कि उनको कैंसर है। कुछ भी नहीं। पर यह बात उससे छुपाकर मैं अपराध-बोध के तले दबा जा रहा था। मुझे लग रहा था कि प्रतीक से यह छुपाकर मैं बहुत बड़ा पाप कर रहा हूँ। फिर भी मैंने उससे कुछ नहीं कहा, भूपी से भी नहीं। भूपी तो वैसे भी बात-बात में घबरा जाता था। इस तरह के अजीब रिलेशन मैंने पहली बार ही देखे थे। दोनों एक-दूसरे से प्यार करते हैं, एक-दूसरे को मिस करते हैं। पर कहना नहीं चाहते। दोनों के पास इसके अपने-अपने कारण हैं। कैंसर का इलाज लगभग नामुमकिन है, ऐसा मैं सोचता था। ऐसे में क्या कभी प्रतीक को यह मौक़ा मिल पाएगा कि वो अपने पिता से कह सके, ही लव्ज़ हिम। विल हिज़ फादर गेट द चांस टु गिव द रिज़न? पता नहीं, क्या होने वाला था। बस इस वक़्त मैं परेशान था। मुझे

इतने दिनों में पहली बार घर की याद आई। मैं कितना लकी हूँ, कम-से-कम कोई हैं जो मुझसे सवाल पूछते हैं। मेरी चिंता करते हैं, ख़्याल रखते हैं। मैंने घर फ़ोन लगाया। फ़ोन मम्मी ने उठाया।

"मम्मी आज आपकी याद आ रही है। सोचा बात कर लूँ। आइ रियली मिस यू। आइ लव यू।" मैंने मम्मी को कहा। पिछले 24 सालों में पहली बार था जब मैंने मम्मी को आइ लव यू कहा था। मम्मी की आवाज़ सुनकर अंदाज़ा हो गया था कि उनकी आँखों में आँसू हैं।

"बेटा तेरी भी बहुत याद आती है। पर तू ना पढ़ाई में मन लगा। ले तेरे पापा से बात कर।" इतना कहकर उन्होंने फ़ोन पापा को पकड़ा दिया।

"हाँ अनुराग, कैसे हो? आज घर की कैसे याद आ गई?" इतना सुनना था कि मैं रो पड़ा। बड़ी मुश्किल से ख़ुद को संभाला।

"पापा, बस ऐसे ही।"

"एक काम करो। अभी अपने रूममेट के साथ बाहर जाओ और मेरी तरफ़ से तुम भी कुल्फी खाओ और उसे भी खिलाओ। इसके पैसे मैं तुम्हें अलग से दूँगा।"

"हूँ।" मेंरी आँखों में आँसू आ गए।

"आइ रियली मिस यू पापा।" कभी-कभी अपने मन की बता देनी भी ज़रूरी होती है। पता नहीं वक़्त फिर मौक़ा दे या न दे। पापा जान गए थे कि मैं जितनी देर बात करूँगा, रुआँसा रहूँगा।

"अनुराग फ़ोन रखो और जाओ कुल्फी खा के आओ। और अगर नहीं गए ना तो मैं तुम्हारे जागीर सिंह जी से पूछूँगा। समझ गए?"

"ओके पापा, बाय बाय।"

एक पल में इतने सालों की दूरियाँ ख़त्म हो गईं। सिर्फ़ आई लव यू कहने से।

मैं जानता हूँ कि वो मुझे भी इतना ही मिस करते होंगे। फाइव पीसेज ऑफ़ चंपा माइक्रोमेन दे सेंट विद मी बीकॉज़ दे नो देयर सन कांट वाश अंडरगारमेंट रेग्युलरली।

मैं कमरे में गया। प्रतीक द हिंदू का एडिटोरियल पेज़ पढ़ रहा था।

"प्रतीक, मेरे साथ बाहर चलो ना!"

"डोंट वेस्ट टाइम यार। अब कुछ दिन ही तो बचे हैं।" उसने एडिटोरियल पढ़ते हुए कहा।

"प्लीज!" मैंने कहा।

"नो वे यार, आइ जस्ट कांट वेस्ट माय टाइम।" उसने इस बार भी मेरी ओर नहीं देखा और नज़रें न्यूजपेपर में गड़ाए रखीं।

"मेरे पापा ने कहा है कि मैं तुम्हें अभी कुल्फी खिलाकर लाऊँ।" मेरी बात सुनकर उसने नज़र मुझ पर डाली।

"व्हाट! एक बार फिर से कहना।" उसने न्यूज़पेपर समेटते हुए कहा।

"मेरी पापा से बात हुई, अभी। उन्होंने कहा कि मैं तुम्हें बाहर ले जाकर कुल्फी खिलाऊँ, अभी।"

"पर क्यों?" उसने प्रश्नवाचक नज़रें मुझ पर डाली।

“क्योंकि मैं आज उन्हें मिस कर रहा था और उनको पता है कि कुल्फी मुझे पसंद है।”

“रियली!” उसने कहा। मैंने गर्दन हिला दी।

“देन ओके, बोल कहाँ चलना है?” इतना कहकर वो मेरे साथ हो लिया।

हम कलेक्ट्रेट सर्किल पर थे। इस वक़्त यहाँ ज़्यादा भीड़-भाड़ नहीं होती थी। बस किनारों पर फ़ास्ट फ़ूड के ठेले और कुल्फी वाले खड़े रहा करते थे।

“पता है प्रतीक, पापा ने ऐसा क्यों कहा?” इतना कहकर मैंने उसके क्यों का इंतज़ार नहीं किया, और अपने सवाल का ख़ुद ही जवाब देने लगा। “क्योंकि जब मैं छोटा था तो पापा-मम्मी के साथ शाम को घूमने जाया करता था। हम लोग कुल्फी खाया करते थे। मुझे याद है वो नेकर पहने छोटा-सा लड़का कुल्फी बेचा करता था। हमें देखकर पहले से ही कुल्फी तैयार कर देता, कहना ही नहीं पड़ता। एक दिन मैंने उसका नाम भी पूछा था। कालू, यही नाम बताया था उसने। पापा को भी यह सब याद है, कभी-कभी लगता है यादें ऑक्सीज़न से भी ज़्यादा ज़रूरी होती हैं, जीने के लिए।” प्रतीक बड़े ध्यान से मेरी बात सुन रहा था। मेरी बात ख़त्म होने पर भी वो कुछ नहीं बोला। शायद मेरी बात सुन उसे कुछ याद आ गया था। मैंने देखा कि उसकी कुल्फी पिघल रही थी।

“प्रतीक, कहाँ खो गया?” मैंने उसके कंधे पर हाथ मारते हुए कहा, “तुम्हारी कुल्फी...,” उसने कुल्फी की ओर देखा और जल्दी से उसे जीभ की ओर ले गया।

“कहाँ खो गया था?” मैंने अपनी कुल्फी का एक बड़ा-सा बाइट लेते हुए कहा।

“पापा की याद आ गई। आई मीन उनकी जो हमारे साथ रहते थे। हर शाम वो मुझे चॉकलेट दिया करते थे। मम्मी लड़ती थीं। वो तो बस एक ही रट लगा के रखती थी, मेरे दाँत ख़राब हो जाएँगे। पापा मम्मी से छुपकर चॉकलेट्स दिया करते थे। यू नो....जिस दिन से पापा से अलग हुआ हूँ, मैंने चॉकलेट नहीं खाई।” कहते-कहते उसका गला रूँध गया। उसकी आँखों में तैरती नमी को देख मैं ख़ुद को भावुक होने से नहीं रोक पाया। मैंने एक तरफ़ मुँह घुमाते हुए जल्दी से आँसू पोंछे। प्रतीक पिघल चुकी कुल्फी के बाद बची डंडी को चाट रहा था। जब उसे इस बात का पता चला उसने डंडी को हाथ में पकड़े रखा और इधर-उधर देखने लगा। फिर डंडी को फेंक दिया।

“आर यू ओके?” मैंने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

“यस, आइ एम।” फिर उसने कुछ देर चुप रहकर कहा, “अनुराग, दिस लाइफ़ इज़ वेरी स्ट्रेंज। हम नहीं जानते कि अगले पल क्या होगा। और पास्ट में बहुत-सी ऐसी यादें होती हैं जो हमें रुलाती हैं। देन वाय डोंट वी लिव इन प्रजेंट! वाय डोंट वी लिव फॉर दिस मोमेंट ओनली! क्यों सबके बारे में सोचें!”

मैंने कोई जवाब नहीं दिया। मुझे लगा कि हमें टॉपिक बदलना चाहिए।

“हे, तुझे लेटैस्ट ख़बर पता है?” उसने मेरी ओर एक नज़र भर डाली। जिसका मतलब था, “क्या?”

“अंकुर ने सेट कर ली, गर्ल विद व्हाइट ब्यूटीफुल स्किन।”

“यू मीन गरिमा।”

“यस।”

“बट हाउ?”

“अंकुर ने ही बताया कि एक दिन गरिमा इंस्टीट्यूट में अकेले बैठी रो रही थी। शायद मसानी ने कुछ कह दिया था। तब हमारे अंकुर पहुँच गए। उसे रोने के लिए अपना कंधा दे दिया और आँसू पोंछने के लिए रुमाल। बस वो दीवानी हो गई अंकुर की।”

“डिड ही गेट द चांस?”

“डोंट नो यार। वैसे भी जिस दिन उसे चांस मिलेगा वो सबको चीख-चीखकर बता देगा।” मैंने कहा। प्रतीक मेरी बात पर हँस दिया। चलो उसका मूड कुछ तो ठीक हुआ।

“अच्छा, तस्नीम मैडम का क़िस्सा कहाँ तक पहुँचा। कुछ क़दम आगे बढ़े या किसी बड़े-से नॉवेल की तरह, जिसके पचास पेज़ पढ़ने के बाद पता चलता है कि यार अभी तक तो कुछ हुआ ही नहीं?”

“नहीं, उस नॉवेल की तरह जिस के हर पन्ने पर कुछ-न-कुछ मीनिंगफुल होता है। सीखने को मिलता है।”

“रियली!” मेरे कहने पर उसने अपनी भौंहों को ऊपर करते हुए अपनी गर्दन राइट साइड में झुका दी, जिसका मतलब होता था, “यस।”

“सो, यू स्टिल कॉल हर मिस तस्नीम ओर समथिंग लाइक जानू ऑर वाटएवर।”

“जैसे कि नेहा तुम्हें कैटू कहती है।” प्रतीक ने मुस्कुराते हुए कहा। इट वाज एंबरेसिंग सिचुएशन। इसको यह कैसे पता चला?

“कैटू! वाट्स इट?” मैंने ऐसे कहा मानो मैं उसे झुठला रहा था।

“अब बनो मत, मैंने तुम्हारे मोबाइल में उसका एसएमएस पढ़ा था। क्या लिखा था वो ... वो...हाँ, माय डियर कैटू।” इतना कहकर वो ठहाका मार के हँस दिया। मैं झेंप गया। मैं सोच भी नहीं सकता था कि वो मेरा मोबाइल चेक कर सकता है। एथिकली, मोरली...इट वाज रॉन्ग।

“ओके। एंड वाट शी कॉल्स यू...फट्टू?” मैंने हल्का-फुल्का ग़ुस्सा दिखाते हुए कहा। आइ रिमेम्बर्ड ऐसा ही ग़ुस्सा मुझे तब आया था, जब मेरे बेस्ट फ्रेंड ने पूरी क्लास को बता दिया था कि मुझे घर पर सब बबलू कह कर बुलाते हैं। और हर किसी ने मुझे बबलू कहकर पुकारा। मैंने तभी उस बेस्ट फ्रेंड से बेस्ट की उपाधि छीन ली थी। प्रतीक मेरी ओर देख मुस्कुराए जा रहा था। उसे शायद मुझे चिड़ाने में मज़ा आ रहा था। फिर वो मेरे पास आया और बोला, “कैटू!” और कहकर भाग गया। अब वो आगे था और मैं उसके पीछे-पीछे। कैटू...कैटू उसने दो बार और कहा। जब मेरे हाथ में आ गया तो उसे उतने ही पंच पड़े जितनी बार उसने मुझे कैटू कहा।

“जी अंकल, उसने मुझे बताया कि आप उसे चॉकलेट ले जाकर देते थे।”

“हाँ बेटा, ही लव्ज़ चॉकलेट।” अंकल ने कहा। नेहा ने मुझे फ़ोन कर के कहा कि अंकल मुझसे मिलना चाहते हैं। हालाँकि कैट में ज़्यादा दिन नहीं रह गए थे। फिर भी मैं उन्हें मना नहीं कर पाया। नेहा की बुआ आज भी घर पर नहीं थीं।

“चॉकलेट तो अब भी खाता होगा, उससे कहना कि कम खाया करे। दाँत ख़राब हो जाएँगे।” उन्होंने सीरियस होते हुए कहा। इन्हें तो अब भी फ़िक्र है प्रतीक की। प्रतीक समझ ही नहीं पाया इनको।

“अंकल, पिछले चार साल से उसने चॉकलेट नहीं खाई।” मैंने कहा तो अंकल की आँखों में आँसू आ गए। वो कुछ नहीं बोले।

“नेहा।” अंकल ने नेहा को आवाज़ लगाई।

“जी।” नेहा तेज़ क़दमों से कमरे के अंदर आई।

“यहाँ बैठो।” अंकल ने इशारा किया। नेहा उनके पास बैठ गई।

“अनुराग, तुम जानने चाहते थे ना, मैंने प्रतीक को घर से क्यों निकाला?” फिर उन्होंने नेहा की ओर देखकर कहा, “तुम भी?”

हम दोनों कुछ नहीं बोले। अंकल ने कहना शुरू किया, “मुझे पता है कि वो मुझसे बहुत प्यार करता था। जितना मैं करता हूँ, उससे ज़्यादा ही। प्रतीक की मम्मी से अलग होना हम दोनों का फ़ैसला था। पर प्रतीक से अलग होना मेरा फ़ैसला था। फिर ख़ामोश हो गए। कहीं शून्य में देखने लगे। कुछ देर बाद बोले, “अनुराग, तुम जिससे प्यार करते हो ना उसे दुःखी नहीं देख सकते। और देखना भी नहीं चाहिए। तभी तो वो प्यार है।” मैंने एक नज़र बचाकर नेहा को देखा।

“अनुराग, क्या तुम अपनी माँ को रोते हुए देख सकते हो? उनके चेहरे पर दुःख की परछाईं देख सकते हो?” अंकल ने मेरी ओर देखते हुए कहा। मैंने जवाब नहीं दिया। मुझे इसकी ज़रूरत महसूस नहीं हुई। क्योंकि इसका जवाब ‘ना’ में ही था, जो वो जानते थे।

“तो बताओ, मैं प्रतीक को रोता-बिलखता कैसे देख सकता था?” मुझे उनकी बात समझ आ रही थी। पर शायद असली बात अब भी निकलकर आना बाक़ी थी।

“मुझे कैंसर है, तुम्हें नेहा ने बता ही दिया होगा। मैंने कभी प्रतीक या उसकी माँ को नहीं बताया। मैं ख़ुद एक डॉक्टर हूँ।”

“हाँ, आप डॉक्टर भास्कर वाले केबिन में बैठते थे।” मेरे मुँह से अचानक निकल गया। उन्होंने मेरी ओर देखकर कहा, “तुम्हें प्रतीक ने बताया होगा ना!”

“हाँ।” मैंने कहा। शायद मुझे उनकी बात को बीच में नहीं रोकना चाहिए था।

“हाँ, वो मेरे अच्छे मित्र हैं। उन्होंने बताया था कि प्रतीक एक बार उनसे मिला था। किसी लड़के ने सुसाइड करने की कोशिश की थी।” मैंने ‘हाँ’ में सिर हिला दिया। फिर उन्होंने सिरहाने रखा पानी का ग्लास उठाया और दो घूँट पानी पिया।

“मुझे पता था अनुराग कि मेरा बचना मुश्किल है। डॉक्टर्स सारी दुनिया से झूठ बोल सकते हैं, पर एक डॉक्टर से नहीं। तब मुझे नहीं पता था कि मैं चार साल भी जी पाऊँगा।

अगर प्रतीक को पता लग जाता तो उसका जाने क्या हाल होता। वो रोज़ मुझे देखकर जाने कितनी बार मरता। प्रतीक मेरे साथ रहता तो मेरी यह हालत बर्दाश्त नहीं कर पाता। वो मुझे रोज़ मरते हुए नहीं देख पाता। अगर वो मुझमें ही उलझ जाता तो अपने कैरियर पर भी ध्यान नहीं दे पाता। सो, मैंने तय किया कि मैं उसे अपनी बीमारी के बारे में कुछ नहीं बताऊँगा और अपने को उससे दूर कर लिया। ताकि समय के साथ प्रतीक को मुझसे नफ़रत हो और जिस दिन मैं मर जाऊँ तो उसे ज़्यादा दुख न हो।" कहते-कहते अंकल की आँखों में आँसू आ गए। मैंने देखा नेहा भी रो रही थी। दरवाज़े पर खड़ी नेहा की बुआ भी आँसू बहा रही थीं, पता ही नहीं चला कि वो कब आईं। हालाँकि उन्होंने मुझे नहीं पहचाना। मेरी आँखों में आँसू नहीं थे। मैं सारी बात सुनकर ख़ामोश था। अंकल ने दरवाज़े की ओर बुआ को खड़े देखा तो बोले, "यह भी जाने क्यों मेरे पीछे अपना वक़्त ख़राब कर रही है! यह भी जानती है कि मैं नहीं बचूँगा फिर भी...।"

बुआ उनकी बात सुनकर बाहर चली गईं। आइ वाज़ श्योर की वो बाथरूम में गई होंगी ताकि वहाँ दिल खोलकर रो सकें। मुझे अपने हाथ पर कुछ नमी-सी महसूस हुई, मैंने देखा पानी की बूँद थी। जो हालिया आँखों से टपककर हाथों पर झूल रही थीं। काफ़ी देर तक ख़ामोशी छाई रही। फिर अंकल बोले, "अनुराग अपनी आँखें पोंछो। क्या लड़कियों की तरह रो रहे हो! रोने के लिए तो ये दो ही बहुत हैं।" उन्होंने नेहा की तरफ़ इशारा करते हुए कहा। मैं बस उनकी ओर देखे जा रहा था।

"अंकल, एक बात कहूँ?" काफ़ी देर उनको टुकुर-टुकुर देखने के बाद मैंने कहा। उन्होंने 'हाँ' में गर्दन हिला दी। नेहा ने भी मेरी ओर देखा। शायद वो सोच रही थी कि मैं क्या कहने वाला था।

"अंकल, नेहा ने अब तक कॉफ़ी के लिए नहीं पूछा।" मैंने मुस्कुराते हुए कहा। अंकल भी मुस्कुरा दिए। आँसुओं के तुरंत बाद वाली मुस्कुराहट की बात ही कुछ और होती है। अंकल ने नेहा की ओर देखा तो नेहा कमरे से बाहर चली गई।

मैं उनके चेहरे में आए फ़र्क़ को आसानी से पढ़ पा रहा था। अपनी दिल की बात बताकर वो पहले से ज़्यादा अच्छा महसूस कर रहे थे। फिर नेहा के हाथ से बनी कॉफ़ी पीने तक ख़ूब बातें हुईं। जाने से पहले उन्होंने मुझे कहा कि मैं प्रतीक को इस मुलाक़ात के बारे में कुछ न बताऊँ और नेहा से कहा कि वो मुझे बस स्टॉप तक छोड़ आए।

"नेहा, तुम्हारे अंकल सच में बहुत अच्छे इंसान हैं।" मैंने नेहा से कहा। वो स्कूटी पर बैठी थी और मैं उसके पास में खड़ा था। अभी बस आने में देर थी।

"क्या तुम भी मुझसे इतना प्यार करते हो?" नेहा ने पूछा। यह कई फ़िल्मों में आजमाया हुआ सवाल था। हीरोइन पूछती है, "तुम मुझसे कितनी मोहब्बत करते हो?" फिर हीरो अपने हाथों को फैलाकर कहता है, "इतनी।" इससे भी जब हीरोइन संतुष्ट नहीं होती तो हीरो कहता, "जितने आसमाँ में तारे हैं, उतनी।" या फिर "जितना दरिया में पानी है, उतनी।" और हीरोइन हँस देती है। मैं इस सवाल के लिए तैयार नहीं था।

नेहा मेरी ओर ही देख रही थी।

“लो मेरी बस आ गई।” मैंने बस को आते देख कहा।

“ओके बाय।” इतना कहकर मैं बस में चढ़ गया। मैं उसके सवाल से बचना चाहता था। आधे घंटे बाद जैसे ही मैं बस से उतरा नेहा का फ़ोन आया। उसे पता था कि मुझे यहाँ तक पहुचने में आधा घंटा ही लगता है।

“तुमने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया।” उसने गंभीर आवाज़ में कहा।

“नेहा, इसका जवाब देना ज़रूरी है?”

“हाँ, है। मेरे लिए इसका जवाब सुनना ज़रूरी है। आख़िर पता तो करूँ कि मैंने जिसे अपना विश्वास दिया है, वो मुझे कितना चाहता है।”

“ओके, तुम बता दो कि तुम जवाब में क्या सुनना चाहती हो। मैं वही कह दूँगा।”

“अनुराग, मैं वही सुनना चाहती हूँ जो तुम फ़ील करते हो।”

“तो सुनो नेहा, मैं आज तुमसे उतना प्यार नहीं करता हूँ जितना तुम्हारे अंकल अपनी फ़ैमिली से करते हैं, शायद उसका आधा भी नहीं।” मैं बोले जा रहा था। मुझे नहीं पता था कि मेरी बात का उस पर क्या असर होगा। पर अंकल से मिलने के बाद मैं प्यार को समझने लगा था। मैं जो कह रहा था वो उसे चुपचाप सुने जा रही थी। “पर इतना ज़रूर तय है कि जब मैं उनकी उम्र का हो जाऊँगा तो मेरे प्यार की क्वांटीटी शायद उनसे कई गुना ज़्यादा हो जाए। हम जैसे-जैसे एक-दूसरे को जानेंगे, मिलेंगे, हमारा प्यार अपने-आप बढ़ता जाएगा और उसे पता करने के लिए तुम्हें किसी सवाल की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। वो तुम ख़ुद फ़ील करने लगोगी।” मैंने एक साँस में कह दिया। कुछ देर तक उधर से कोई जवाब नहीं आया। कहीं मेरी बात उसे बुरी तो नहीं लग गई। मैं रिएलिस्टिक फ़िल्में देखते हुए कुछ ज़्यादा ही रिएलिस्टिक हो गया था। कहीं वो मुझसे फ़िल्मी आंसर तो नहीं चाह रही थी। मैं इसी उधेड़बुन में था कि नेहा की आवाज़ आई, “अनुराग आइ लव यू।” और उसने फ़ोन रख दिया।

फिर उसका एक एसएमएस आया।

“डियर कैटू, वेन विल वी हैव कुल्फी टुगेदर?”

मैंने उस एसएमएस का जवाब दिया।

“वेनेवर यू विल बी रेडी फॉर हेविंग कैपुचिनो टुगेदर?”

———————

अंकल से मिलने के बाद मन कर रहा था कि मैं प्रतीक को बता दूँ। पर अंकल नहीं चाहते थे। सो, मैंने नहीं बताया। जब भी प्रतीक को देखता तो अंकल का चेहरा याद आ जाता। एक बाप का चेहरा जो अपने बेटे से बहुत प्यार करता है और यही प्यार उसे अपने बेटे से मिलने से रोक रहा था। कितना अजीब होता है प्यार। मैंने पिछले कुछ महीनों में जाने कितने ही तरह के प्यार देख लिए थे। अंकुर का प्यार। मसानी का प्यार। प्रतीक का प्यार। नेहा का प्यार। उसकी बुआ का प्यार और अंकल का प्यार। और मेरा...मैं नेहा से प्यार करता हूँ तो नेहा से मिलना चाहता हूँ, उससे बात करते रहना चाहता हूँ। प्रतीक है जो तस्नीम से

ख़ामोश प्यार करता है। अंकुर लव्ज ओनली व्हाइट ब्यूटीफुल स्किन। एंड मसानी...ब्लडी फकर...। हममें से हर कोई पाना चाह रहा था। पाना चाह रहा था उसे जिसे वो चाहता है, भले ही उसका साथ हो या उसका शरीर। पर पाने की ख़्वाहिश हर एक में थी। बट प्रतीक्स फ़ादर...उन्होंने हर उस व्यक्ति को अपने से दूर कर दिया जिसे वो चाहते थे। ताकि वो उन्हें इस तरह बीमारी से तड़पता देख दुःखी न हों। सेल्युट टु हिम....सेल्युट टु ग्रेट फादर...सेल्युट टु ग्रेट हसबैंड।

———————

हमेशा की तरह मैं नहाकर रूम में वापस आया। जब मैं नहाने गया था तब प्रतीक सो रहा था। रात को देर तक पढ़ने की वजह से अक्सर वो देर से ही जगता था। मैं रूम में दाख़िल हुआ तो वो एक सीरियस मूड से दरवाज़े पर ही खड़ा था। मैं अंदर आकर अपने बाल पोंछने लगा। मुझे नहाने में उतना वक़्त नहीं लगता था जितना बाल सँवारने में। घर पर पापा को यह बिल्कुल पसंद नहीं था। जब मैं छोटा था तो पापा नाई को घर पर ही बुलवाते थे और अपनी आँखों के सामने बाल कटवाते थे। नाई को ख़ास हिदायत दी जाती थी कि आधे इंच से ज़्यादा लंबे बाल न रहें, ताकि कंघी करने में वक़्त ख़राब न हो। ख़ैर, मेरे बाल सूखने से पहले प्रतीक ठीक मेरे सामने खड़ा था, एकदम सामने।

“तुम मेरे पापा से मिले?” प्रतीक ने बहुत ही धीमे और सामान्य स्वर में कहा। हालाँकि देखने से वो सामान्य नहीं लग रहा था। उसकी बात सुन मेरा चेहरा भी सामान्य नहीं रहा। मैंने तुरंत अंदाज़ा लगाना शुरू किया आख़िर प्रतीक को पता कैसे चला। मैं उसके सामने से हट गया ताकि झूठ आसानी से बोल सकूँ।

“कैसी बात कर रहा है?” मैंने तौलिया दरवाज़े पर फैलाते हुए कहा। वो एक बार फिर मेरे सामने आ गया।

“तुम मेरे पापा से मिले थे?” इस बार उसकी आवाज़ में ग़ुस्सा शामिल था। अब जवाब देना ज़रूरी था।

“अरे, तुमसे पता पूछ लिया तो क्या तुम्हारे घर चला गया। पगला गया है क्या?” इतना कहकर मैं दीवार पर टँगे शीशे के सामने आया और हाथ में कंघा उठाया।

प्रतीक एक बार फिर मेरे सामने आया और मुझे घूरने लगा। मैंने उसे नज़रअंदाज़ करने की पूरी कोशिश की। अगले ही पल एक ज़ोरदार आवाज़ कमरे में गूँजी और मेरे कान सुन्न हो गए। गाल लाल हो गए। आँखें पथरा गईं। ही स्लेप्ड मी। यस, ही स्लेप्ड मी। मैं सोच भी नहीं सकता था कि प्रतीक मुझे चाँटा मारेगा। पर वो मार चुका था, ज़ोरदार चाँटा। भूपी भी अपने कमरे से बाहर आ गया, यानी गूँज पूरे डिवाइन पैलेस ने सुनी थी। मेरे लिए यह इतना अप्रत्याशित था कि मैं कोई प्रतिक्रिया नहीं दे पा रहा था। यह बिल्कुल वैसा ही था जैसे कर्मा में डॉ. डेंग को थप्पड़ पड़ा था।

“तुम झूठ बोल रहे हो। आइ चेक्ड यॉर मोबाइल। यू ब्लडी प्लेयिंग विद माय इमोशन। हू द हेल यू आर टु मीट माय फ़ादर। वाय आर यू डुइंग ऑल दिस रबिश। तुम साबित क्या

करना चाहते हो कि तुम मेरा भला सोचते हो। गो टु हेल। मैं जैसा हूँ मुझे वैसा ही रहने दो।" प्रतीक ने बचा-खुचा ग़ुस्सा भी आधी अंग्रेज़ी में मुझपर उड़ेल दिया। मैं ख़ामोश खड़ा रहा। न मेरे शरीर में हरकत हुई न मेरे मुँह से बोल फूटे। बस एकटक प्रतीक को देखता रहा। भूपी भी कुछ नहीं बोला। प्रतीक कमरे से बाहर चला गया। मुझे सहन नहीं हो रहा था कि मेरे दोस्त ने मुझे थप्पड़ मारा। मेरी इच्छा हुई कि मैं उसे सबकुछ बता दूँ, पर मैं चुप रहा। प्रतीक के बाहर जाने के बाद भूपी मेरे क़रीब आया और मेरे कंधे पर हाथ रखकर कहा, "क्या हुआ?"

"अब तक तो कुछ नहीं।" मैंने कहा। भूपी मेरे उखड़े रंग को देख वापस अपने कमरे में चला गया। उसके जाते ही मेरा दिमाग़ एक बार प्रतीक के चाँटे को भूल इस बात पर केंद्रित हो गया कि आख़िर उसे पता कैसे चला! मुझे याद आया कि वो मोबाइल के बारे में बोल रहा था। मैंने मोबाइल उठाया और मैसेज बॉक्स खोला।

"विल यू प्लीज बाय हिम ए डेयरी मिल्क, ही लाइक्स इट।

प्रतीक्स फादर।"

ओह माय गॉड! यह तो अंकल का मैसेज था। प्रतीक ने नेहा का एसएमएस पढ़ने के लिए मोबाइल चेक किया होगा। हाँ, तो मिला मैं उसके पापा से! क्या गुनाह कर दिया! मिलना तो उसे ख़ुद चाहिए! ख़ैर जो भी, लेकिन थप्पड़! हाउ कुड ही स्लैप मी! मुझे याद आया कि आख़िरी थप्पड़ मैंने सोलह साल की उम्र में खाया था। मैं पूरी रात रोया था। पापा ने फिर उसके बाद हाथ नहीं उठाया।

मैं अगर कुछ देर वहाँ और खड़ा रहता तो शायद रो देता। मैंने अपना स्टडी मैटेरियल लिया और इंस्टीट्यूट चला गया। पूरा दिन लायब्रेरी में ही रहा। मेरा मन पढ़ने में भी नहीं लग रहा था। जैसे-जैसे कैट नज़दीक आ रही थी मैं पढ़ाई से उतना ही दूर होते जा रहा था। मैंने डिसाइड किया कि मैं दोस्तों की वजह से अपना समय बर्बाद नहीं करूँगा। इवन अगर प्रतीक के पापा ने भी मिलने बुलाया तो भी नहीं जाऊँगा। जब उनका बेटा ही उनकी फ़िक्र नहीं करता तो मैं क्यों अपना वक़्त बबार्द करूँ। आइ मस्ट कंसन्ट्रेट ऑन माय स्टडी। मैं तय कर चुका था। तभी एक आवाज़ आई।

"अनुराग, बाहर कोई लड़की आई है तुमसे मिलने।" लायब्रेरी में एक लड़के ने मुझे आकर कहा। मैंने किताब बंद कर बैग में डाली और बैग को कंधे पर टाँगे बाहर चल दिया। मुझे यक़ीन नहीं हो रहा था कि कोई लड़की मुझसे मिलना चाह रही थी। वो भी इंस्टीट्यूट के बाहर। मैं बाहर आया। इंस्टीट्यूट के गेट के ठीक सामने सड़क के दूसरी ओर कोमल खड़ी थी। आइ शॉक्ड। कोमल यहाँ कैसे? बिल्कुल वैसे ही जैसे हॉस्पिटल में नेहा मुझे देखकर शॉक्ड हुई थी। कोमल ने मुझे देखते ही हाथ हिलाया। मैं उसकी ओर बढ़ चला। मुझे आता देख कोमल मुस्कुराई। मैंने महसूस किया कि हर कोई आता-जाता कोमल को देख रहा था। मिनी स्कर्ट और टॉप में शी वाज लुकिंग डेम सेक्सी।

"क्यों चौंका दिया ना!" कोमल बोली।

मैं मुस्कुरा दिया। जिसका मतलब था, "हाँ।" मेरे लिए मुस्कुराना मुश्किल था। कुछ घंटों पहले ही मेरे बेस्ट फ्रेंड ने मुझे थप्पड़ मारा था। वो फ्रेंड जिसे मैंने कल ही कुल्फी खिलाई

थी।

"आइ विल नॉट से कि यहाँ से गुज़र रही थी तो सोचा कि तुमसे मिलती चलूँ।" कोमल बोली।

"मैं स्पेशली तुमसे मिलने ही आई हूँ। यू नो वाय?" इतना कहकर वो मुस्कुराई और फिर मेरे गाल पर किस करते हुए बोली, "अनुराग हैप्पी बर्थ डे। मैनी-मैनी हैप्पी रिटर्नस ऑफ़ द डे।" मुझे याद आया कि मैं प्रतीक को बताने ही वाला था कि आज मेरा बर्थ डे है पर उससे पहले ही उसने मुझे मेरा बर्थ डे गिफ़्ट दे दिया। एक चाँटा। उसके बाद मैंने अपना मोबाइल स्विच ऑफ़ कर दिया और मैं ख़ुद भी भूल गया कि आज मेरा बर्थ डे है। कोमल के किस का जरा-सा भी अहसास मुझे नहीं हुआ। बस, मैंने आस-पास देखा कि इंस्टीट्यूट में किसी ने देखा तो नहीं। फिर बोला,

"थैंक्स।"

मेरी प्रतिक्रिया बहुत ठंडी थी।

"मेरी ट्रीट कहाँ है?" कोमल ने कहा।

"क्या मैं तुम्हें ट्रीट किसी और दिन दे सकता हूँ?" मैंने टालने वाले अंदाज़ में कहा। पर जो टल जाए वो कोमल नहीं।

"ठीक है, तुम किसी और दिन दे देना।" इतना कहकर वो कार में बैठ गई और दूसरी ओर का दरवाज़ा खोलकर बोली, "बैठ जाओ।"

मैंने अचरज से उसकी ओर देखा और कहा, "क्या! अभी तो कहा ट्रीट फिर कभी।"

"हाँ, तो मैंने कब मना किया। तुम फिर कभी दे देना, आज मैं दे देती हूँ।"

मैं उसकी ओर देखता रहा। "अब सोचो मत, बैठो।" ऐसे में मना करना मुश्किल हो जाता है। मैं कार में बैठ गया।

"सो, अब कहाँ चलें?" उसने पूछा।

"जहाँ तुम चाहो।"

फिर हम एमआई रोड पर चंद्रमहल रेस्टोरेंट गए। हालाँकि कोमल ने कहा था कि ट्रीट वो देगी पर पैसे तो मुझे ही देने थे, यह बात मैं जानता था। कोमल के साथ कुछ वक़्त बिताकर अच्छा लग रहा था। सुबह की टेंशन अब कुछ कम हो गई थी। कोमल के मोबाइल पर पापा का फ़ोन आया, तब मुझे याद आया कि मैंने अब तक मोबाइल स्विच ऑफ़ ही कर रखा था। पापा-मम्मी ने जन्मदिन की मुबारक़बाद दी। खाना खाकर हम एक बार फिर कोमल की कार में बैठे थे।

"तुम्हें बर्थ डे गिफ़्ट नहीं चाहिए?" कोमल ने पहला गियर बदलते हुए कहा। वो वापस मुझे डिवाइन पैलेस ड्रॉप करने वाली थी। पर मैं डिवाइन पैलेस नहीं जाना चाहता था। प्रतीक का चेहरा नहीं देखना चाहता था।

"ओह!...बर्थडे गिफ़्ट....वाय नॉट, नेकी और पूछ पूछ। तुमने यह सोचा भी कैसे कि तुम बर्थ डे गिफ़्ट दिए बिना जा सकती हो?" मैंने कहा।

"तुम कभी यहाँ के फोर्ट में गए हो?" कोमल बोली।

“क्यों यहाँ का कोई क़िला मुझे गिफ़्ट करने वाली हो!” मैंने मज़ाक़ में कहा।

“मतलब कि नहीं देखा!” मेरी ओर देखकर बोली। “चलो, तो आज तुम्हें वहीं घूमा लाती हूँ।”

हालाँकि मैं कोमल के साथ सहज महसूस नहीं करता था पर आज मैं जितनी हो सके उतनी देर तक अपने-आपको डिवाइन पैलेस से दूर रखना चाहता था। ऐसे में कोमल को मना करने की गुंजाइश ही नहीं थी।

———————

“महल के इस कमरे को अंतःमहल कहते थे। यहाँ राजा की रानियाँ रहा करती थीं। राजा यहीं आकर उनसे रोमांस किया करता था।” कोमल क़िले के एक हिस्से में ले जाकर बोली और फिर मेरी ओर देखा।

“रियली!” मैंने कहा।

आइ वाज हेप्पी। मैं प्रतीक के चाँटे को भूलाने की कोशिश कर रहा था। वैसे भी अपने दोस्त का थप्पड़ भूलाना आसान नहीं होता।

“यस, एक राजा के कई रानियाँ हुआ करती थीं।” कोमल का ज़ोर राजा और रानी पर ही था।

“देन दे मस्ट बी लकी।” मैंने कहा।

“वाय?” कोमल ने मेरे नज़दीक आते हुए पूछा।

“यू नो वाट आइ मीन...,” मैं कहते-कहते रुक गया और फिर क़िले की दीवारों को देखने लगा।

“ओह दैट वे...समझी।” उसने बात को समझते हुए कहा, “देन यू कांट इमेजिन कि वो कितने लकी थे! उनके पास बहुत-सी कनीज़ें भी हुआ करती थीं, मन बहलाने के लिए।”

“तुम्हें तो बहुत कुछ पता है। गाइड क्यों नहीं बन जाती! कोमल गाइड।” मैंने हँसते हुए कहा। एक्च्युली आइ वाज नॉट लाफ़िंग, आइ वाज जस्ट ट्रायिंग टु लाफ़। मुझे हँसता देखकर वह मेरे पास आ गई। फिर अपना एक हाथ मेरे कंधे पर रख दिया। मैं थोड़ा असहज हो गया। “माय डियर अनुराग, नाऊ गेट रेडी फॉर योर बर्थ डे गिफ़्ट।” कोमल घूमकर मेरी आँखों में आँखें डालकर बोली। मैंने ख़ुद को उससे दूर करना चाहा, अपने क़दम पीछे लिए। हाय री क़िस्मत! पीछे दीवार थी।

“क्यों, गिफ़्ट नहीं चाहिए?” कोमल ने दूसरा हाथ भी मेरे कंधे पर रखते हुए कहा।

मेरे मुँह से एक शब्द नहीं फूटा। कोमल ने आगे बढ़कर मेरे गाल पर किस किया। आइ वाज हेल्पलेस। मैं मन-ही-मन कहा, आइ लव नेहा...आइ लव नेहा...आई लव नेहा। अगले ही पल फिर से रूई के नर्म फाहे।

शर्त लगा लो किसिंग दुनिया की सबसे टेंशन रिलीफ़ एक्सरसाइज है। कोमल इसमें परफ़ेक्ट थी।

“अनुराग डिन्ट यू लाइक योर बर्थ डे गिफ़्ट?” एक मिनट बाद जब वो मुझसे अलग हुई

तो उसने मुझसे पूछा। मैंने जवाब नहीं दिया। उसने ख़ामोशी को 'हाँ' समझा। फिर अगले 20 सेकेंड तक वो मुझे किस कैसे करें बताती रही और फिर एक लंबा किस। जिसने मेरी सारी टेंशन अचानक से हवा कर दी। आइ थिंक इट वाज माय न्यू कंट्रीब्युशन टु मेडिकल सांइस। इस टेंशन नाम की बीमारी से लाखों लोग पीड़ित हैं, जबकि वो एक किस से ठीक हो सकते हैं। बाय गॉड! मैं प्रतीक का चाँटा अब भूल चुका था। बात होंठों से हटकर शरीर के दूसरे हिस्सों तक आ गई थी। जब मेरे होंठ उसकी गर्दन के आस-पास आखेट कर रहे थे तभी कानों में एक आवाज़ आई, "अनुराग आई लव यू....आई लव यू....आई लव यू....थ्री टाइम्स।"

मैं जो भी कर रहा था अचानक रुक गया। ओह माय गॉड! यह क्या हो रहा है। शी लव्ज मी, आइ लव नेहा, एंड नेहा आलसो लव्ज़ मी। आइ किस्ड कोमल एंड आइ किस्ड नेहा टू। व्हाट्स गोइंग। आइ डोंट लव हर। देन वाय आइ एम किसिंग हर? मन कंफ्यूज़ हो चला।

"क्या हुआ?" कोमल बोली। उसके हाथ अब भी मेरे गले में थे और मुझे अहसास हुआ कि मेरे हाथ उसके टॉप के अंदर थे और कुछ तलाश रहे थे, इससे पहले कि वो तलाश पूरी हो पाती मैंने अपने हाथ बाहर खींच लिए।

"अनुराग...।" उसने प्यार से कहा। मानो वो मेरे इस व्यवहार से ज़्यादा ख़ुश नहीं थी। वो चाहती थी कि हमारे होंठ एक बार फिर उसी क्रिया में लग जाएँ। मेरे पास उसके 'क्या हुआ' का कोई जवाब नहीं था। नेहा ने तो कहा था कि कोमल के लिए किसी को किस करना बहुत नॉर्मल है। तो यह लव बीच में कहाँ से आ गया। "कोमल मुझे लगता है हमें वापस चलना चाहिए।" मैंने थोड़ी दूरी बनाते हुए कहा।

"हैं, क्या हुआ?" उसने थोड़ा पास आते हुए कहा।

"नथिंग। दस दिन बाद कैट का पेपर है। यू नो..." मैं कैट को बीच में ले आया।

"ओह! ओके ठीक है। चलो चलते हैं।" फिर हम वहाँ से चले आए। रास्ते भर हम दोनों लगभग चुपचाप ही रहे।

मैं रात को अपने कमरे में नहीं सोया। जब कमरे में गया तब प्रतीक खिड़की से बाहर की ओर झाँक रहा था। हमने आपस में कोई बात नहीं की। मैंने अपने-आपको अस्थायी रूप से भूपी के कमरे में ही शिफ़्ट कर लिया था। रात को नेहा का फ़ोन आया। मैंने प्रतीक वाला क़िस्सा उसे बता दिया। इवन यह भी कि उसने मुझे चाँटा मारा और अंत मैं मैंने कहा कि आज मेरा बर्थ डे है। "तुम मुझे अब बता रहे हो!" उसने यही प्रतिक्रिया दी थी। उसने कहा कि वो मुझे बर्थ डे विश नहीं करेगी। फिर उसने अंकल से बात कराई और अंकल ने बर्थ डे विश किया। वैसे मैंने नेहा को मना किया कि वो अंकल को चाँटे वाला क़िस्सा न सुनाए। लगे हाथ उन्हें भी मुझसे सहानुभूति हो जाती और वही मुझे पसंद नहीं।

रात को एक बार फिर नेहा का फ़ोन आया। मुझे लगा भूपी मेरे फ़ोन कॉल्स से डिस्टर्ब हो रहा है सो, मैं फ़ोन लेकर बाहर आ गया।

“कैटू, हैप्पी बर्थ डे।” उसने कहा।

“क्यों, तुम तो मुझे विश नहीं करने वाली थी ना?” मैंने कहा।

“हाँ, तय तो किया था। तुम बहुत गंदे हो। अपना बर्थ डे तक नहीं बताते।”

“अच्छा तो फिर अब कैसे...?”

“बीकॉज आई लव यू माय कैटू।” उसने बड़े प्यार से कहा।

“आइ लव यू टू। नेहा, मुझे कुछ कंफेस करना है।”

“कहो।”

“टुडे आइ किस्ड कोमल। वो आई मुझे आमेर ले गई और...। बट आइ लव यू नेहा।” नेहा ने मेरी बात ख़त्म होने का इंतज़ार नहीं किया और चिल्लाई, “व्हाट! तुमने उसे फिर से किस किया? अनुराग मुझे लगता है तुम उस दिन सही थे। यू डोंट लव मी। तुम्हें डिसाइड करने के लिए टाइम चाहिए। यह डिसाइड करने के लिए कि तुम मुझे चाहते हो या कोमल को। पता है मैंने आज ही अंकल को तुम्हारे और मेरे बारे में बता दिया। आंटी को शक था। उन्होंने तुम्हें शायद पहचान लिया था। ख़ैर, आंटी से तो मैं झूठ बोल गई पर अंकल को सब बता दिया। तुम्हें पता है कितना मुश्किल था मेरे लिए उन्हें बताना! पर हमारे रिलेशनशिप की ख़ातिर मैंने उन्हें बताया। लेकिन तुम...तुम अब भी कंफ़्युजन में हो।”

“आइ लव यू नेहा। इसीलिए तो मैंने तुम्हें बता दिया।” मेरे पास इसके अलावा कहने को और कुछ नहीं था। जो कि सच भी था। आइ डिडन्ट टेल हर दैट आइ वाज जस्ट डुइंग माय टेंशन रिलीफ़ एक्सरसाइज। नेहा ने फ़ोन काट दिया। मैंने दुबारा मिलाया, उसने फिर काटा। जब मैं बाज़ न आया तो उसने स्विच ऑफ़ कर दिया। हे भगवान, मेरे जन्मदिन के दिन यह क्या हो रहा है!

मैं नेहा को रोज़ फ़ोन लगाता रहा पर उसने मेरा फ़ोन रिसीव नहीं किया। फर्स्ट टाइम आइ रियलाइज्ड कि सच बोलने के कितने नुकसान हैं। मुझे क्या पड़ी थी कि मैं उसे बताऊँ। इडियट। न नेहा से बात हो पा रही थी, न प्रतीक से। कोमल से मैं बात करना नहीं चाहता था। टेस्ट की वजह से भूपी भी बातचीत में कम ही समय बर्बाद करता था। मैंने सबकुछ भूलने की कोशिश की। प्रेमिका फ़ोन न उठाए तो मन कहाँ कहीं और लगता है! डर लग रहा था कहीं उसे कोई कंधा न मिल जाए। जैसे गरिमा को अंकुर मिल गया था। मन तो हुआ कि उसके घर चला जाऊँ, जाके माफ़ी माँग लूँ। पर रिस्क था। मैं लगातार फ़ोन करता रहा। उसने नहीं उठाया। मैं सेंटी-सेंटी एसएमएस करता रहा। कोई जवाब नहीं आया। फ़ाइनली मैंने बहुत कोशिश के बाद एक बार फिर पढ़ाई पर ख़ुद को कंसन्ट्रेट कर लिया। मेरे अपने कमरे में मेरा आना-जाना कम ही होता था। मैंने अपने कपड़े भी भूपी के कमरे में ही लाकर रख लिए थे। वैसे भूपी ने एक बार हम दोनों के बीच जमी बर्फ़ को पिघलाने की कोशिश की थी, पर हमारी बर्फ़ उसके अंदाज़े से ज़्यादा ठोस और ठंडी थी।

एक स्टुडेंट की ज़िंदगी किसी चरवाहे की तरह ही होती है। जहाँ हरा चारा हो अपनी भेड़ें ले जाओ, चराओ फिर किसी दूसरी जगह की तलाश में निकल जाओ। तलाश, भेड़ों के चारे की। हम भी एक जगह से दूसरी जगह जाते हैं, अपने चारे के लिए। वो चारा जिसका आपकी नज़रों में रंग कुछ भी हो, पर आपके पापा की नज़रों में वो हरा ही होता है। फिर जब वहाँ चारा पूरा हो जाए तो किसी नई जगह। जयपुर का चारा हम चर चुके थे। आज वो दिन था जिसके लिए हम सब जयपुर आए थे। दिसंबर का दूसरा रविवार। आज कैट का पेपर था। पेपर दस बजे से था और सेंटर तक जाने में आधा घंटा लगता था। भूपी अंतिम समय तक मैथ्स के फार्मुले देख रहा था। शायद उसे हम सबसे ज़्यादा डर लग रहा था। दो घंटे हमारी क़िस्मत तय करने वाले थे। प्रतीक से पिछले दस दिनों से कोई बातचीत नहीं हुई थी। सो, पता नहीं कि उसकी प्रिपरेशन कैसी थी। हम लोगों ने ठीक नौ बजे घर से निकलना तय किया।

“यार रिक्शे से ही चलेंगे। सिटी बस बहुत टाइम ले लेती है।” मैंने भूपी से कहा। उसने गर्दन हिला दी।

“अंकुर कहाँ है, वो भी साथ ही चल देता?” मैंने पूछा।

“वो सुबह सात बजे से ही गया हुआ है। बता रहा था कि गरिमा को उसके हॉस्टल से साथ लेकर सीधा वहीं पहुँचेगा।” भूपी ने बताया।

“ग्रेट यार।” मैंने कहा।

प्रतीक हमारी बातचीत में हिस्सेदार नहीं बना। मैं पिछले कई दिनों से देख रहा था कि जब भी मैं भूपी से बातचीत करता वो कुछ नहीं बोलता और कई बार वहाँ से चला जाता। मैंने भी उसकी परवाह करना छोड़ दिया। इतने दिनों से नेहा का भी फ़ोन भी नहीं आया था, शायद अब हमारे बीच कुछ नहीं था। फिर भी मन कह रहा था आज तो बेस्ट ऑफ़ लक कहने के लिए तो फ़ोन ज़रूर करेगी। आख़िर मैंने ग़लती भी तो इतनी बड़ी की थी, इतना नाराज़ होना तो बनता है। मैं अभी यह सब याद करके एग्ज़ाम से पहले मूड ख़राब नहीं करना चाहता था। सोचना बंद दिया।

नौ बज चुके थे। भूपी अपने कमरे को लॉक कर रहा था। मैं अपने कमरे में अपना एडमिशन कार्ड ले रहा था। तभी मेरे मोबाइल की घंटी बजी। प्रतीक हाथ में लॉक लिए मेरे कमरे से बाहर निकलने का इंतज़ार कर रहा था।

यह नेहा का फ़ोन था। मैंने कहा था ना आज तो उसे फ़ोन करना ही था। भगवान तूने फिर सुन ली। तू है। शायद बेस्ट ऑफ़ लक कहना चाहती थी। मैंने अनुमान लगाया। ख़ुशी के मारे मैथ्स के कई फार्मुले भूल गया। कोई ग़म नहीं। प्यार करोगे तब समझोगे। ऐसे टाइम में एक फ़ोन क्या मायने रखता है। मैंने कॉल रिसीव किया।

“अनुराग, अंकल की तबीयत अचानक ज़्यादा ख़राब हो गई है। हम उन्हें हॉस्पिटल ले जा रहे हैं। तुम वहाँ पहुँचो।”

“हाँ, नेहा तुम चिंता मत करो, मैं पहुँचता हूँ।” फिर उसने फ़ोन काट दिया। सारे गिले-शिकवे साफ़। एक कॉल से सारा अपनापन लौट आया। राम जाने, अंकल की तबीयत

कितनी ख़राब है। ज़्यादा ही होगी तभी उसने मुझे फ़ोन किया, सारी नाराज़गी भूलकर। मेरा चेहरा मारे तनाव के लाल हो गया। मेरा शरीर तपने लगा। मैंने प्रतीक की तरफ़ देखा और मेरी आँखों से पानी बहने लगा। मैंने आँसूओं को बहने से रोका।

मैं कैसे जा सकता हूँ। मेरा तो टेस्ट है। पर मैंने तो उसे आने का कह दिया है। ओह माय गॉड! पता नहीं मोहब्बत में 'ना' कहने का मन क्यों नहीं करता। पर वो अब भी मुझसे उतना ही प्यार करती है। तभी तो उसने मुसीबत के समय सिर्फ़ मुझे याद किया है। बट...।

"अब चलो भी, क्या हुआ?" भूपी कमरे के अंदर आते हुए बोला।

मैं कुछ देर ख़ामोश खड़ा रहा। "अनुराग वाट हेपेन्ड?" भूपी ने मेरे पास आते हुए कहा। प्रतीक चुपचाप हाथ में ताला लिए खड़ा था।

"प्रतीक।" मेरे मुँह से निकला। इतने दिनों बाद मैंने उसका नाम लिया। शायद उसे भी विश्वास नहीं हुआ।

"प्रतीक तुम्हारे पापा सीरियस हैं। उन्हें अभी अस्पताल ले जाया जा रहा है। उन्हें तुम्हारी ज़रूरत है।" यह कहते हुए मेरी आखों से आँसू टपक रहे थे।

"भूपी, लेट हो रहे हैं।" प्रतीक ने ताले को दरवाज़े में लटकाते हुए कहा।

"उन्हे कैंसर है। पिछले चार साल से।"

"भूपी तुम चल रहे हो। हम लेट हो रहे हैं।" प्रतीक ने ग़ुस्से से कहा। भूपी अपनी जगह ही खड़ा रहा। वो कुछ तय कर पाने की हालत में नहीं था।

"उन्होंने तुमको इसलिए अपने से दूर किया ताकि तुम यह कभी ना जान पाओ कि उन्हें कैंसर है। ताकि तुम उन्हें अपनी आँखों के सामने तड़पता हुआ न देख पाओ। वो नहीं चाहते थे कि तुम उन्हें रोज़ तिल-तिल करके मरता हुआ देखो। उनकी वजह से अपना कैरियर न बना पाओ। इसलिए झूठा नाटक करके उन्होंने तुम्हें घर से निकाला ताकि तुम उनसे नफ़रत करो। और वो हर रोज़ आँसू बहाकर इसका प्रायश्चित कर रहे हैं।"

मैंने देखा प्रतीक की आँखों से लगातार आँसू बह रहे थे। वो मेरे पास आया।

"इतना ही प्यार करते थे तो इतना भी नहीं समझते थे कि अपने से दूर करके मुझ पर क्या बीतेगी? जब इतने सुख साथ में देखे तो अपने दुःखों से मुझे अलग कर दिया। आइ हेट हिम...," कहते-कहते वो बुरी तरह बिलखने लगा। मैंने उसे गले लगा लिया। "तुम सही कहते थे अनुराग। मैं उनसे नफ़रत कर ही नहीं पाया। आइ लव हिम। आइ लव हिम।" मैंने देखा भूपी की भी आँखों में आँसू थे।

"किस हॉस्पिटल में ले गए हैं?" उसने आँसू पोंछते हुए अपने रूँधे हुए गले से पूछा।

"एसएमएस के कैंसर वार्ड में। हम वहाँ टेस्ट के बाद चलेंगे।"

"नहीं अनुराग। उन्हें मेरी ज़रूरत है, अभी इसी वक़्त।"

"पर प्रतीक, कैट?"

"माय फ़ादर इज मोर इंपोर्टेंट देन ऐनी कैट।" एक बार फिर उसके आँसू टपकना शुरू हो गए। "आइआइएम में एडमिशन हो गया तो पैसे मिलेंगे, पैकेज़ मिलेगा। पर अभी जो हर एक सेकेंड मैं अपने पापा के साथ बिताऊँगा वो हमें ख़ुशी देगा, संतुष्टि देगा। वो जो मैंने चार

सालों में खो दिया है, उसे वापस पाना है। कोई आइआइएम मुझे वो नहीं लौटा सकता। पैसा कभी प्यार से बड़ा नहीं होता। आइ विल हैव टु गो।" कहते हुए वो बाहर की ओर मुड़ा और दरवाज़े तक पहुँचकर रुक गया। पीछे मुड़कर वापस मेरे पास आया और बोला, "आइ एम सॉरी यार, आइ स्लेप्ड यू। आइ एम सॉरी...!" इतना कहकर उसने मुझे गले लगा लिया। एक बार फिर हम दोनों की आँखों में आँसू थे।

"यू डोंट वरी। ही विल बी ऑलराइट।" अब तुम जाओ। टेस्ट के बाद हम वहीं मिलेंगे।" मैंने कहा।

"बेस्ट ऑफ़ लक!" उसने हम दोनों से कहा और तेज़ी से बाहर की ओर भागा। मैं और भूपी उसे देखते रहे।

"अब हम भी चलें।" भूपी ने कहा। मैंने एक पल को भी नहीं सोचा कि मेरी इस हरकत पर अंकल कैसे रिएक्ट करेंगे। नेहा की क्या प्रतिक्रिया होगी। मुझे उस पल जाने क्या हुआ कि मैं अपने-आपको रोक नहीं पाया। मुझे लगा आज अगर प्रतीक को न बताया और अंकल को कुछ हो गया तो एक बेटा ज़िंदगी भर अपने बाप से नफ़रत करता रहेगा।

———————

यह दो घंटे की एक लंबी जंग थी। यह जंग हमने लड़ी पर इसे जीता कि नहीं यह सब रिजल्ट पर निर्भर करता था। एग्ज़ाम हॉल से बाहर निकलते हुए अपने को एकदम टेंशन फ़्री महसूस कर रहा था। मैंने मेन गेट पर भूपी का वेट किया। थोड़ी देर में भूपी भी आ गया। उसका चेहरा देखकर लग रहा था कि वो पेपर से ख़ुश नहीं था। हमने आपस में पेपर को लेकर पूछताछ की। फिर मैंने कहा कि चलो हॉस्पिटल चलते हैं। भूपी ने कुछ देर वहीं रुकने की रिक्वेस्ट की। मैंने कारण पूछा तो उसने कहा कि बस रुको, अपने-आप पता चल जाएगा। फिर थोड़ी देर बाद बोला, "अनुराग, आर यू विद मी?"

"तुम जवाब जानते हो, फिर पूछ क्यों रहे हो?" मैंने लगभग घूरते हुए कहा। हालाँकि उसके सवाल पूछने से मुझे पापा की याद आई और फिर याद आया कि मोबाइल फ़ोन भी तो चालू करना है। ख़ैर, मेरी बात का जवाब भूपी ने कुछ यूँ दिया।

"यहीं रुको। मैं एक मिनट में आया।" इतना कहकर वो एक तरफ़ चल दिया। मैंने देखा उसके सामने इरशाद आ रहा था। मैं भी उसकी तरफ़ बढ़ गया। भूपी इरशाद के ठीक सामने खड़ा हो गया। अब तक मैं भी भूपी के पास पहुँच चुका था। भूपी में जितनी घृणा भरी थी, उसने सारी घृणा को इकट्ठा करते हुए इरशाद के चेहरे पर जमकर तमाचा जड़ दिया। आस-पास चलने वाले लोग रुक गए। इरशाद की तरफ़ से वापसी में कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। मुझे सहसा विश्वास नहीं हुआ कि भूपी में इतनी हिम्मत भी हो सकती है। इरशाद ऐसे खड़ा था मानो उसे साँप सूँघ गया हो। भूपी चिल्लाया, "यू ब्लडी गे!" और हम दोनों वहाँ से निकल आए। इरशाद की तरफ़ से एक बार फिर कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। पापा का फ़ोन आ चुका था। सोमदेव अंकल का फ़ोन आ चुका था और कोमल का भी। सब के लिए एक जवाब था, "अच्छा हुआ, बाक़ी तो सेलेक्शन होने पर ही पता चलेगा।"

———————

मैं एसएमएस के गलियारों से कैंसर वार्ड की तरफ़ बढ़ रहा था। एक अनहोनी का डर खाए जा रहा था। कैट का पेपर दिमाग़ से निकल चुका था। हर क़दम भारी होता जा रहा था। जैसे कि नेहा की बुआ के वज़न के बराबर के पत्थर मेरे पाँव से बाँध दिए गए हों। पता नहीं नेहा, उसकी बुआ और अंकल कैसे रिएक्ट कर रहे होंगे। कहीं प्रतीक के जाने से अंकल की तबीयत ज़्यादा ख़राब तो नहीं हो गई। ऐसा हुआ होगा तो पक्का नेहा मुझसे कभी बात नहीं करेगी। ये लव कहानी तो यही ख़त्म समझो। मैं अपनी ही उधेड़बुन में था। भूपी मेरे साथ ही था। वो अब भी कैल्कुलेशन कर रहा था कि उसके कितने सवाल ग़लत थे। वो सवालों की कैल्कुलेशन में लगा था और मैं रिश्तों की। मैंने प्रतीक को फ़ोन किया और पूछा कि वो कौन से वार्ड में है। फिर हम उसके बताए वार्ड की तरफ़ चल दिए।

अंकल बेड पर लेटे थे। प्रतीक उनके पास बैठा था। नेहा उस कमरे में नज़र नहीं आ रही थी और उसकी बुआ भी। यह एक कॉटेज था, वीआइपी कॉटेज। जहाँ हर तरह की सुविधा थी। हमें देखते ही प्रतीक उठकर आया।

“कैसे हैं अंकल?” मैंने और भूपी ने एक साथ पूछा।

“ठीक हैं। अभी सोए हुए हैं।”

मैंने एक नज़र अंकल पर डाली। वो सो रहे थे और चेहरे पर एक संतोष झलक रहा था।

“तुम्हारा पेपर कैसा रहा?” उसने पूछा।

“ठीक था।” मैंने कहा। फिर उसने भूपी की ओर देखा। अब तक उसकी कैल्कुलेशन पूरी हो गई थी। “यार शायद वर्बल में कट ऑफ़ निकालना मुश्किल है। अब तो वो ही जाने।” उसने ऊपर हाथ करके कहा।

“प्रतीक...कौन है?” अंदर से आवाज़ आई। किसी लेडी की थी। कॉटेज में दो कमरे होते हैं और किचन भी। मतलब घर टाइप।

“अनुराग और भूपी हैं आंटी।” प्रतीक बोला। प्रतीक उन्हें आंटी कह रहा था। मतलब कि उनके गिले-शिकवे दूर हो गए थे। नहीं भी हुए होंगे तो कम-से-कम प्रोसेस में तो होंगे ही।

“अनुराग! लेट मी सी दिस अनुराग।” कहते हुए एक महिला बाहर आई। यह नेहा की बुआ थीं। मैंने आगे बढ़कर उनके पाँव छुए और फिर भूपी ने।

“अनुराग, थैंक्स ए लॉट।” बुआ बोली।

“किसलिए!” मैंने कहा। वो मेरी और बड़े प्यार से देख रही थी। फिर उन्होंने मेरे सिर पर हाथ फेरा और बोली, “तेरे अंकल जो इस वक़्त हमारे साथ हैं, तो वो सिर्फ़ तेरी वजह से हैं। डॉक्टर कह रहे हैं कि प्रतीक से मिलने के बाद जाने अचानक उनमें बीमारी से लड़ने की हिम्मत आ गई है।” मैंने प्रतीक की ओर देखा फिर बोला, “क्या वो मुझसे नाराज़ नहीं हैं? मैंने उनसे बिना पूछे प्रतीक को बता दिया।” इतना कहकर मैंने नज़रें प्रतीक के चेहरे से शिफ़्ट करके आंटी के चेहरे पर केंद्रित कीं। सो, मेरे सवाल का जवाब भी आंटी की ओर से ही आया।

“तुमसे कोई नाराज़ कैसे हो सकता है! पता है, मिलकर दोनों बाप-बेटे ख़ूब रोए। अब

देख कौन कह सकता है कि यह चार सालों से आज ही मिले हैं। हममें से किसी में प्रतीक को यह बताने का साहस नहीं था। पर तुमने हिम्मत दिखाई। थैंक्स बेटा।" आंटी ने एक बार फिर सिर पर हाथ फेरा।

फिर आंटी ने नेहा को आवाज़ लगाई। "नेहा, अनुराग और भूपी के लिए कुछ कैंटीन से लाओ। वैसे अनुराग तुम क्या लोगे। कैपुचिनो?"आंटी ने मुस्कुराते हुए कहा। मैं आंटी की बात समझ नहीं पाया। मेरे चेहरे पर असमंजस के भाव देखकर बुआ मुस्कुराते हुए बोलीं, "मुझे नेहा और प्रतीक ने सब कुछ बता दिया है।" मैं शर्मा गया। "तो उस दिन भी तुम नेहा से ही मिलने आए थे!"

"कहाँ?"

"कहाँ! अभी बताती हूँ।" कहकर उन्होंने मेरा कान मरोड़ा, "आंटी याद आ गया। बरिस्ता।" मैंने हँसते हुए कहा। प्रतीक और भूपी भी हँसने लगे और मैंने देखा अंदर एक कोने में नेहा भी हँस रही थी। नेहा वाज़ रॉन्ग। हर बुआ इज नॉट स्ट्रिक्ट एट ऑल।

"नेहा, यू नो....तुमने मुझे बहुत परेशान किया। जब तुमने फ़ोन काट दिया तो मुझे लगा कि यह हमारी आख़िरी बातचीत थी।" मैं और नेहा सरस पार्लर में बैठे थे। अंकल को वापस घर ले जा चुके थे। प्रतीक ने अब अपने घर पर ही रहना शुरू कर दिया था। अब तक उसने मम्मी को नहीं बताया था। अंकल ने कहा था कि तबीयत थोड़ी ठीक हो जाए तब बता देना। कैंसर में क्या कम या ज़्यादा। अंकल की कीमोथैरेपी चल रही थी और भी बहुत कुछ।

"और तुमने कम परेशान किया क्या!" उसने मुँह बनाते हुए कहा और फिर दो सेकेंड रुककर बोली, "मेरी तो इच्छा थी कि तुम्हें कभी फ़ोन न करूँ। फिर सोचा मुझे ऐसा लड़का तो कभी नहीं मिलेगा जो किसी ख़ूबसूरत लड़की को देख न फिसले। क्योंकि ऐसे लड़के तो बने ही नहीं। फिर सोचा तुम कम-से-कम सच्चे तो हो। कम-से-कम मुझे बता दिया और उसके बावजूद भी यही दम भरते हो कि प्यार सिर्फ़ तुम मुझसे करते हो।" नेहा की बात सुनकर में अवाक् रह गया। कुछ बोलते न बना। भले उसने मेरी तारीफ़ की मगर बात मेरे लिए शर्मिंदगी की थी। मुझे पक्का पता है कि उसने यह मुझे शर्मिंदा करने के लिए ही कहा था। मैंने थोड़ी देर की ख़ामोशी के बाद तय किया कि मैं कुछ कहूँ और मैंने कहा, "नेहा, तुम जानकर हँसोगी या फिर इसे मेरी बेवक़ूफ़ी समझोगी पर कोमल को किस करने से पहले भी मैंने मन-ही-मन तीन बार यही कहा था...आइ लव नेहा...आइ लव नेहा...आइ लव नेहा...।" मैं जानता था मैंने जो कहा वो बेवक़ूफ़ी की ही परिधि में आता था पर ख़ुद को यह कहने से रोक न पाया। मेरी बात सुन पहले तो वो मुस्कुराई, फिर सीरियस होती हुई बोली, "जान लो अगर इस बार कोमल को किस किया ना...तो सचमुच ही..."

“प्रॉमिस, आइ विल नॉट किस कोमल।”

“व्हाट?”

“मतलब किसी लड़की को नहीं।”

“किसी को नहीं!”

“आई मीन तुम्हारे सिवा किसी को नहीं।” मैंने शरारत भरे लहज़े में कहा।

वो मुस्कुरा दी। “सो, वेयर इज माय कुल्फी?” नेहा ने कहा और उसके कहने के तुरंत बाद ही मैंने कहा, “...एंड वेयर इज माय कैपुचिनो?” वो फिर मुस्कुरा दी।

“जस्ट ए मिनट...” कुछ मिनट की संयुक्त ख़ामोशी के बाद हम दोनों ने एक साथ कहा और अपनी-अपनी जगह से उठकर काउंटर की ओर चल दिए।

कुछ देर बाद नेहा मेरे लिए कैपुचिनो लेकर खड़ी थी ओर मैं उसके लिए कुल्फी। नो स्पेस फ़ॉर कोल्ड कॉफ़ी।

———————

अब मज़े की बात बताता हूँ। एक दिन घर से ही फ़ोन आया। कैट के ठीक तीन दिन बाद ही। पापा ने कहा कि सोमदेव अंकल ने कोमल का रिश्ता भेजा है। वो मेरी राय पूछना चाह रहे थे। उनकी तरफ़ से ‘हाँ’ थी और मुझसे भी यही चाह रहे थे। तब मेरी समझ में आया कि क्यों सोमदेव अंकल के इतने फ़ोन कॉल्स आते थे और कोमल के मेरे साथ होने में उन्हें एतराज़ क्यों नहीं था। क्यों कोमल जानना चाह रही थी कि आइ एम वर्जिन और नॉट? शायद यह बात उन्होंने कोमल को भी बता दी थी। वर्ना यूँ ही अचानक प्यार नहीं पनपता। प्यार दो टाइप का होता है। एक जो किया जाता है और दूसरा जो हो जाता है। मुझे हो गया था और कोमल कर रही थी। शायद करवाया जा रहा था। ख़ैर, मैं पापा को कुछ जवाब देता इससे पहले पापा ने कहा कि आराम से सोच लो, कोई जल्दी नहीं है। अब तक मैं और नेहा मिलकर सबकी प्रॉब्लम सॉल्व करते आए थे, पर आज हमारी प्रॉब्लम का सोल्युशन हमारे पास नहीं था।

———————

भूपी आज वापस घर जा रहा था। हालाँकि हमने उसे कहा कि वो कुछ और इंस्टीट्यूट के टेस्ट दे दे। पर वो शायद हमसे और पैसे नहीं लेना चाह रहा था या फिर उसे विश्वास था कि वो कैट क्रेक कर देगा। मैं और प्रतीक उसे छोड़ने बस स्टैंड तक आए।

“कितना जल्दी टाइम बीत गया। पता ही नहीं चला।” भूपी बोला।

“हाँ यार, याद आएगी। ख़ूब मस्ती मारी है यार।” प्रतीक ने कहा।

“मुझे नहीं पता कि मैं तुमसे फिर कब मिलूँगा। पर तुम दोनों ने जो भी मेरे लिए किया है....आइ विल नेवर फ़ॉरगेट।” भूपी इमोशनल हो रहा था।

“पागलों जैसी बात मत कर। ज़्यादा इमोशनल होने की ज़रूरत नहीं है। बस तू कॉन्टेक्ट

में रहना। हाँ, और बात-बात में अपनी गर्दन हिलाना बंद कर देना, समझा?" मैंने कहा। इमोशनल तो मैं भी हो रहा था।

उसने एक बार फिर गर्दन हिला दी। "मैं घर जाकर सबको तुम्हारे बारे में बताऊँगा। मैंने दोस्त नहीं, भाई बनाए हैं।" कुछ देर रुका और बोला, "तुम दोनों कभी भीलवाड़ा आओ तो घर ज़रूर आना।" उसने नम आँखों से कहा।

"तुम्हारा घर मिलेगा कैसे?" प्रतीक बोला।

"मैंने एड्रैस दिया है ना!" भूपी ने कहा।

"हाँ, वो तो दिया है। अगर घर बदल लिया तो!"

"....तो मैं तुम्हें फ़ोन कर दूँगा।"

"और हमने फ़ोन नंबर बदल लिए तो।" एक बार फिर प्रतीक ने कहा। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि प्रतीक ऐसी बातें क्यों कर रहा था।

"तो बताओ, कैसे आएँगे तुम्हारे घर?" प्रतीक के तर्क ख़त्म नहीं हुए थे और भूपी चुप हो गया था।

"एक काम करो। यह रखो।" प्रतीक ने जेब से एक पैकेट निकाल कर देते हुए कहा।

"यह क्या है?"

"बस एक तोहफ़ा है। यह हमें तुम्हारा घर ढूँढ़ने में मदद करेगा।" भूपी ने प्रतीक की आँखो में देखा और कहा।

"प्रतीक, मैं इसे नहीं रख सकता। तुम लोगों ने मेरे लिए पहले ही..." प्रतीक ने भूपी को बीच में काटते हुए कहा, "ऐ...तू मुझे अपने घर बुलाना चाहता है कि नहीं।" प्रतीक की बात पर उसने एक बार फिर गर्दन हिला दी।

"तो इसे रख और इसे घर जाकर ही खोलना। समझा।" उसने पैकेट भूपी के हाथ से लेकर उसके बैग में डाल दिया। जाने से पहले भूपी से हम गले मिले। हम तीनों की आँखों में नमी थी।

"प्रतीक, तुमने अपना मोबाइल दिया ना उसे!" मैंने भूपी के जाने के बाद प्रतीक से कहा। प्रतीक मेरी ओर देख मुस्कुरा के बोला, "यू आर रियली इंटेलिजेंट। उसे इसकी हमसे ज़्यादा ज़रूरत है। वैसे भी जिस काम के लिए मोबाइल लिया था वो तो ख़त्म हो चुका।"

"व्हाट डु यू मीन...ख़त्म हो चुका!" मैंने इतना ही कहा। उसने मेरी बात का तुरंत जवाब दिया, "यस, मैंने पिछले कई दिनों से फ़ील किया कि मैं उन्हें प्यार नहीं करता। उसने मुझसे कुछ अच्छी बातें कीं, एक टीचर की तरह मेरी केयर की और मैं उनकी तरफ़ आकर्षित हो गया। जब से पापा से मिला हूँ तब से मैंने फ़ील किया वो आकर्षण भर था। जो उसने भी मुझे कई बार कहा। तब मैं उसे मानना नहीं चाहता था। अब वो आकर्षण ख़त्म हो गया है, अब मेरी केयर करने वाले बहुत लोग हैं। शायद ज़िंदगी में जो प्यार की कमी थी, वो मैं वहाँ पूरी करना चाहता था। अब जब परिवार वापस मिल गया तो.....!"

"तो सब कुछ ख़त्म!"

"नो यार, अब हम अच्छे दोस्त हैं, बहुत अच्छे दोस्त। तभी तो मैंने कहा कि मुझसे

ज़्यादा मोबाइल की ज़रूरत भूपी को है। कम-से-कम हम उससे कॉन्टेक्ट में तो रहेंगे। यू नो अनुराग, कम्युनिकेशन गैप बहुत दूरियाँ पैदा कर देता है। तुम तो सब जानते हो।"

"हाँ, मैं सब जानता था। सिवाय इस बात के कि मेरे और नेहा के रिलेशन का क्या होगा!"

दिसंबर ख़त्म हो चुका था। उस साल सर्दी थोड़ी कम ही थी या फिर यूँ कह लूँ कि रिश्तों की महसूस होती गर्माहट ने ठंड महसूस होने ही नहीं दी। नेहा और मैं लगभग रोज़ फ़ोन पर बात करने लगे। मैं अधिकतर इंस्टीट्यूट के एंट्रेंस टेस्ट दे चुका था। अब सब रिजल्टस् के इंतज़ार में थे। ऐसे में जयपुर में टिके रहना था तो सिर्फ़ नेहा के लिए। वैसे बता दूँ कि 23-24 साल का प्यार बड़ा कच्चा होता है। और ये जितना कच्चा होता है हम उसे उतना ही पक्का समझते हैं। हालाँकि इस बात का अहसास उम्र गुज़रने के बाद होता है। मेरा तो यह पहला प्यार था।

पापा का फ़ोन आया कि सोमदेव अंकल चाहते हैं तुम उनके यहाँ शिफ़्ट हो जाओ। अब जब कि एग्ज़ाम हो चुके हैं तो हॉस्टल में रहकर क्यों पैसे बर्बाद कर रहे हो? पापा को मना नहीं कर पाया। शायद मना करता तो पापा कहते कि उदयपुर आ जाओ। मैंने उनकी बात मान ली। फिर अपना सामान लेकर सोमदेव अंकल के यहाँ चला गया। अब जब कि पता चल गया था कि मुझे क्यों बुलाया गया है, तो सहज हो पाना ज़रा मुश्किल हो रहा था। कोमल आई थी मुझे लेने। अपनी कार में। मुझे उसी कमरे में ठहराया गया था, जहाँ पहली बार रुकवाया गया था। प्रतीक हॉस्टल छोड़ ही चुका था। मैंने उसे नहीं बताया कि मैं उसके पास वाले घर में ही रहने आ गया हूँ। वो अपने पापा के साथ बी 48 में रहता था और मैं बी 47 में। अब वो सिर्फ़ मेरा दोस्त ही नहीं मेरी गर्लफ्रेंड का भाई भी था। नेहा को मैंने ज़रूर बता दिया था। अब तो मैं और नेहा आस-पास रहने लगे थे। रोज़ शाम को मुलाक़ात हो जाती। जब ज़्यादा मिलने लगो तो बातें कम हो जाती हैं और थोड़ी-थोड़ी देर बार दोनों एक ही बात बोलते लगते हैं, "और बताओ..."

———————

कोमल से अब तक ज़्यादा बातें नहीं हो पाई थीं। पर अचानक आई नज़दीकियों ने उसमें एक दोस्त ढूँढ़ लिया था। सिर्फ़ दोस्त। हमें आपस में बातें करते देख सोमदेव अंकल और आंटी बहुत ख़ुश होते। शाम का वक़्त था। अंकल-आंटी इवनिंग वॉक पर गए हुए थे। मैं अपने रूम में था।

कोमल अपने फैमिली एल्बम ले आई।

“लो तुम्हें आज अपने बचपन की फ़ोटो दिखाती हूँ।” कोमल ने एल्बम को बिस्तर पर रखते हुए कहा।

“हम्म...दिखाओ।”

फिर कोमल ने एक सबसे पुराना वाला एल्बम निकाला। एल्बम जगह-जगह से फट चुका था। उसने आहिस्ता से पेज़ पलटने शुरू किए।

“ये कौन है?” मैंने अनजान चेहरे को देखकर कोमल से पूछा।

“मैं और कौन!”

“वाउ...तुम तो बिल्कुल बेशर्म हो।”

“क्यों?”

“कपड़े कहाँ पहने हैं, फ़ोटो में?”

“तीन महीने का बच्चा कौन-सा सूट पहन के घूमता है।”

हा हा हा। फिर दोनों एक साथ हँस दिए।

इतने में मेरे मोबाइल पर बीप की आवाज़ हुई। एसएमएस आया था।

मैंने मोबाइल उठाया। नेहा का एसएमएस था।

“क्या कर रहे हो?”

मैंने जवाब दिया, “कोमल के बचपन के फ़ोटो देख रहा हूँ।”

फिर नेहा का जवाब नहीं आया।

धीरे-धीरे उस एल्बम के सारे फ़ोटो देखते रहे और हँसते रहे।

फिर एक बार बीप की आवाज़ हुई।

“मुझे मिस कर रहे हो?”

मैंने जवाब दिया, “हाँ, कोमल में भी तुम ही दिखाई दे रही हो। किस कर लूँ क्या?”

तुरंत जवाब आया।

“ख़बरदार!”

मैंने जवाब दिया।

“लव यू।”

वापस जवाब आया।

“लव यू टू माय कैटू।”

मैं पढ़कर मुस्कुराया। कोमल ने मुझे देख लिया।

“क्या बात है, बड़ा मुस्कुरा रहे हो!”

“कुछ नहीं ऐसे ही।”

“एक बात कहूँ!”

“क्या?”

“तुम मुस्कुराते हुए अच्छे लगते हो।”

“अच्छा!”

“हाँ।”
“मैं भी एक बात कहूँ!”
“क्या?”
“तुम ऐसा क्यों कर रही हो?”
“कैसा?”
“तुम जानती हो, मैं क्या कह रहा हूँ?”
कोमल चुप हो गई। मैं उसके कहने का इंतज़ार कर रहा था। मैंने सोचा आज पूछ ही लूँ।
“करना पड़ता है।” कोमल धीमे से बोली।
“मत करो।”
“यह सवाल तुमने तब नहीं पूछा, जब मैं तुम्हें किस कर रही थी।”
“कंफ्यूज़ था।”
“मेरा भी यही जवाब है। थी और आज भी हूँ।”
मैं कुछ न बोला। तभी नीचे दरवाज़े पर घंटी बजी। कोमल नीचे गई। उसके जाते ही मैंने तुरंत नेहा को फ़ोन लगाया।
“हैलो।”
“देख लिए फ़ोटो।”
“हाँ, तुम क्या कर रही हो?”
“कुछ नहीं, चाय बना रही थी।”
“मुझे नहीं पिलाओगी?”
“क्यों, कोमल ने मना कर दिया क्या?”
इतना कहकर एक ज़ोर का ठहाका लगाया। अब इसमें हँसने वाली कौन-सी बात थी। हमेशा की तरह लड़कियों की हँसी अब तक मेरे लिए अबूझ थी।
“प्रतीक है क्या आस-पास?”
“नहीं, बाहर गया है।”
इतने में कोमल के आने की आहट हुई।
“चलो रखता हूँ, शायद कोमल आ रही है।”
“अच्छा सुनो...!”
“क्या?”
“लव यू।”
डिट्टो...बाय।”
कोमल ऊपर आ चुकी थी।
“कौन था?” मैंने कोमल से पूछा। कोमल कुछ घबराई हुई थी।
“बताऊँगी। पहले तुम क़सम खाओ मम्मी-पापा को नहीं बताओगे।”
“क्या?”
“वही जो मैं बताने जा रही हूँ।”

“नहीं बताऊँगा।”

मेरे कहने के बाद कोमल मेरे पास आकर बैठ गई और कुछ सेकण्ड की ख़ामोशी के बाद बोली,

“फिर से कंफ्यूज हूँ।”

“क्या हुआ?”

“तुमने मुझसे एक बार पूछा था ना कि मेरा ब्वॉय फ्रेंड वापस आ जाए तो मैं क्या करूँगी?”

“हाँ।”

“वो आ गया।”

“कहाँ?”

“नीचे।”

“क्या! मतलब सच्ची!”

उसने ‘हाँ’ में गर्दन हिला दी।

“अब कंफ्यूजन क्या है?”

“अनुराग, मम्मी-पापा चाहते हैं कि हमारे बीच कुछ हो...यू नो...हमारी शादी। तुम्हें तो पता ही है।”

“तुम भी तो यही चाहती हो, तभी तो...” मैं इतना कहकर चुप हो गया, वो सब समझ गई।

“हाँ, मुझे लगा जब तुम ही से शादी होनी है तो फिर क्या तब, क्या अब। मैं बिना प्यार की शादी नहीं चाहती। मम्मी-पापा ने कहा तुमसे ही मेरी शादी होगी। तो मैंने सोचा चलो तुमसे ही सही। क्योंकि जिससे प्यार किया वो तो ग़ायब हो गया। अब जो है वो भी बुरा तो नहीं। पर बिना प्यार के शादी नहीं कर सकती। इसलिए हरसंभव कोशिश की तुमसे प्यार करने की।”

“अब क्या लगता है।”

“पता नहीं। पर वो वापस आ गया।”

“फिर चला गया तो?”

“तभी तो कह रही हूँ, कंफ़्यूज हूँ।” कोमल की बातें सुनकर मन किया कि नेहा को फ़ोन लगाकर पूछूँ कि क्या तुमने भगवान से पूजा पाठ के बदले कोई डिमांड रखी थी? लगता है भगवान ने कान से रूई बाहर निकाल ली है। कोमल बोल चुकी थी अब मेरी बारी थी। मैं कह देता कि मैं नेहा से प्यार करता हूँ, तो कोमल का सारा कंफ़्यूजन तभी दूर हो जाता। पर मैं ऐसा चाहता नहीं था। मैंने कुछ सोचकर कोमल से कहा,

“एक बात कहूँ।”

“क्या?”

“दिल की सुनो। मैं भी अपने दिल की सुनता हूँ।”

“तुम मुझसे प्यार नहीं करते हो ना?”

मैंने 'ना' में गर्दन हिला दी।

"मैं जानती थी।"

"जानती थी! कैसे?"

"उस दिन तुम्हारे जन्मदिन पर जब मैंने तुम्हें आई लव यू कहा और जिस तरह से तुमने मुझे ख़ुद से अलग किया था, मैं समझ गई।"

"हाँ, वो तुमने जब आई लव यू अनुराग कहा तो..."

"वो मैंने जानबूझकर कहा। मैं जानती थी, तुम जिस टाइप के लड़के हो, ये प्यार वाली बात करने पर आगे नहीं बढ़ोगे और अगर फिर भी बढ़ते हो तो सच्चा प्यार करते हो।"

मैं ख़ामोश ही रहा। कोमल इतना सोच-समझकर कर रही थी, मुझे अंदाज़ा भी नहीं था। मैं तो बिना सोचे-समझे साथ हो लेता था।

"मैं चाहती थी मुझे बैड गर्ल समझकर तुम ख़ुद मुझसे अलग हो जाओ। मैंने कोशिश तो बहुत की पर तुम...यार तुम अच्छे लड़के हो।"

कोमल के बारे में मैं जाने क्या सोच रहा था। नेहा का कोमल के बारे में जो परसेप्शन था, वो भी ग़लत था। टाइम फॉर कंफेशन।

"कोमल, मैंने तुम्हें ग़लत समझा।"

"तो अब सही समझ लो।"

"क्या चाहती हो?"

"यही तो समझ नहीं आ रहा।"

"अब भी प्यार करती हो उससे?"

"पता नहीं। काफ़ी टाइम हो गया। मैं तो भूल ही चुकी थी। पर सच यह भी है कि उसके बाद किसी से प्यार हुआ नहीं।"

"मुझसे भी नहीं?"

"तुमसे तो कर रही थी, हुआ थोड़े ही था।"

"उससे पूछा, इतने दिनों बाद क्यों आया है?"

"मुझे तो उसे देखकर कुछ नहीं सूझा। बस उसे बैठक में छोड़कर तुम्हारे पास आ गई। अकेले में उससे मिलती तो गिल्ट होता। तुम्हारे सामने ही बात करूँगी।"

"चलो, पहले लड़के से तो मिलाओ।"

"नीचे चलो।"

मैं और कोमल नीचे आए। सोफ़े पर एक लड़का बैठा हुआ था। मैं पीछे से होता हुआ उसके सामने गया।

"ये अनुराग है। माय...माय..."

"फ़ेमिली फ्रेंड।" कोमल की लाइन मैंने पूरी की। मेरा परिचय कोमल ने करा दिया। कोमल ने मुझे निगाहों से थैंक्यू कहा। सब कुछ बहुत जल्दी में हुआ।

मैंने हाथ आगे बढ़ाया। उसने सहमते हुए हाथ मिलाया।

"मैंने अनुराग को हमारे बारे में बता दिया।" कोमल ने कहा। लड़का कुछ नहीं बोला।

उसके चेहरे पर बस अचरज के भाव थे।

“यू नो कोमल, आजकल के लड़कों का प्यार-व्यार सब एक ही जगह आकर ख़त्म हो जाता है।”

कोमल मेरी बात सुन कर चौंकी। वो तो मुझसे सपोर्ट चाहती थी। चाहती थी कि मैं उसे कंफ़्यूजन से बाहर निकालूँ। पर मैंने तो भड़काऊ बयान दे दिया था।

“लड़का अब भी कुछ नहीं बोला।”

“सब लड़के एक जैसे नहीं होते।” कोमल बोली। पता नहीं वो चाहती क्या थी।

“इसकी क्या गारंटी! यह तो एक बार छोड़ के भी जा चुका है।”

“आई डोंट हैव ब्लडी अंकुर काइंड ऑफ़ लव।” लड़का ज़ोर से बोला और आगे भी बोलना जारी रखा, “यह तुम भी जानते हो।”

“जानता हूँ।” हमारी बात सुन कोमल आँखें फाड़े बस देखी जा रही थी। यह लड़का प्रतीक ही था। जब वो अपने पापा के साथ यहाँ रहता था तब कोमल से उसे प्यार हुआ था। टीन एज़ वाला प्यार था, परवान चढ़ रहा था उसी दौरान प्रतीक को अपना घर छोड़ना पड़ा। अब जब घर वापस आया तो उसे लगा पुराने प्यार से मिलना चाहिए।

“तुम दोनों एक-दूसरे को जानते हो!” कोमल बोली।

“जिगरी है मेरा।” मैंने कोमल की ओर देखते हुए कहा।

कोमल को एक बार फिर आश्चर्यचकित होने का मौक़ा मिला।

“तू यहाँ कैसे?” अब पूछने की बारी प्रतीक की थी।

“यही तो वो हैं, जिनके यहाँ मैं आया करता था मिलने। पापा के फ़ैमिली फ्रेंड।”

“मैं भी कुछ बोलूँ?” हमें इधर-उधर की बात करते देख कोमल ने एंट्री ली।

हम दोनों चुप हो गए।

“प्रतीक, क्यों वापस आए हो?” कोमल ने प्रतीक की आँखों में देखते हुए पूछा।

“एक पुराने दोस्त से मिलने।”

“तो गए क्यों थे?”

“जाना मेरी ज़िंदगी का सच है, तो आना भी। यूँ जान लो एक आँधी आई थी जो मुझे अपनों से दूर ले गई। अब आँधी थम गई तो लौट आया हूँ। कोई हक़ नहीं जमा रहा हूँ, न पुराना रिश्ता याद दिला रहा हूँ। बस मन कर रहा था मिल आऊँ, सो आ गया।

“तुमने बताया नहीं कभी कोमल के बारे में?” मैंने प्रतीक से पूछा।

“क्या बताता। किन हालातों से गुज़रा हूँ, तुम्हें तो सब मालूम ही है। मैं तो भूला चुका था सब। वापस यहाँ आया तो लगा कि एक बार मिलना चाहिए। बिना बताए गया था, माफ़ी तो माँग ही सकता हूँ। जानता हूँ, किसी से अचानक बिना कारण दूर हो जाना कितना दुःख देता है। मैंने ख़ुद महसूस किया है।”

“क्या कोमल माफ़ करती हो इसे?” मैंने कोमल से पूछा।

“क्या फ़र्क़ पड़ता है। इतने सालों में तो मैं भी भुला चुकी।”

“यह तो और भी अच्छा है। तुम दोनों शुरू से शुरू कर सकते हो।”

कोमल कुछ नहीं बोली। प्रतीक कुछ नहीं बोला।

“एक काम करो आज शाम दोनों कॉफ़ी हाउस में मिलना और साथ में मिलकर कैपुचिनो पीना।”

दोनों बोले कुछ नहीं, बस मुस्कुराए।

“अनुराग यार, तुझमें कोई बात तो है। पहले मेरे पापा से मिलवाया और अब दोस्त से।”

“चलो तुझे बाहर छोड़ आऊँ। इससे पहले कि अंकल-आंटी घर में आ जाएँ।”

हम दोनों घर से बाहर आ गए और कोमल मुस्कुराती रही।

———————

“सुन, कोमल को मेरे और नेहा के बारे में कुछ मत बताना।” गेट से बाहर निकलते हुए मैंने कहा।

“क्यों?”

“बस कहा ना, यार फ़ैमिली वाला पंगा है। समझा कर।”

“ठीक है, तुम भी कोमल को तस्नीम के बारे में मत बताना।”

“सौदा कर रहा है?”

वो मुस्कुराया।

“अच्छा सुन, कोमल का फ़ोन नंबर दे ना, शाम का प्रोग्राम भी तो फ़िक्स करना है।” प्रतीक बोला।

———————

प्रतीक को छोड़ने के बाद मैं घर में आया। कोमल मेरा ही इंतज़ार कर रही थी। अब भी बिस्तर पर एलबम यूँ ही खुला पड़ा था। जैसे ही मैं कमरे में आया कोमल बोल पड़ी।

“सॉरी।” कोमल की आवाज़ में उदासी थी।

“क्यों?”

“गिल्ट हो रहा है।”

“या दुःख हो रहा है कि मुझ जैसे लड़के से शादी का ऑफर ठुकरा रही हो।” मैं कहकर मुस्कुराया।

वो मेरे सीने से लग गई। पहले भी लगी थी पर इस बार मामला अलग था।

“अपने दिल की सुनो। हम परिवार के कहने पर प्यार करने भी लगते तो क्या! अपना-अपना सच तो हम जानते ही थे।”

वो मुझसे अलग हुई और बोली, “मुझे नहीं पता प्रतीक के साथ दोबारा कुछ होगा कि नहीं, पर तुम जैसा दोस्त में कभी खोना नहीं चाहती।”

“ठीक है मिस कोमल। आज से तुम और अनुराग, दोस्त। अच्छे दोस्त। सच्चे दोस्त।”

वो मुस्कुरा दी।

“एक प्रॉमिस करोगे?”

“बोलो।”

“प्रतीक को कभी हमारे किस के बारे में...।”

“पागल हो क्या...कभी नहीं।” मैंने उसकी बात काटते हुए कहा। वो अगर यह बात नहीं कहती तो मैं कहने वाला था। आज पक्का भगवान मेरे साथ था।

“थैंक्यू।” कोमल बोली।

मैं भी मुस्कुरा दिया। वो भी मुस्कुरा दी।

दरवाज़े पर घंटी बज चुकी थी, अंकल-आंटी आ चुके थे। उनकी तो इवनिंग वॉक थी और यहाँ नए रिश्तों का सवेरा हो रहा था।

———————

हम सब डिवाइन पैलेस छोड़ चुके थे। हालाँकि अंकुर अब भी वहीं था। एक शाम गरिमा भी उसके साथ डिवाइन पैलेस आई थी। दैट नाइट...ही गॉट द चांस। पर उसे चांस के बदले डिवाइन पैलेस छोड़ना पड़ा। शायद बूढ़े ने गरिमा को वहाँ आते हुए देख लिया था। कुछ दिनों बाद मैंने जयपुर छोड़ दिया। वापस उदयपुर आ गया। नेहा कुल्फी मिस करती रही और मैं कैपुचिनो।

छः महीने में मोबाइल पर काफ़ी पैसे खर्च हुए। नया-नया प्यार बहुत ख़र्चा माँगता है। सारी पॉकेट मनी मोबाइल रिचार्ज कराने में चली जाती। मैंने सिंबायोसिस में एडमिशन ले लिया था। कैटू अब सिबु हो गया था। भूपी ने कैट क्रेक कर दी। वो आईआईएम इंदौर गया। बहुत ख़ुश था। फ़ोन पर बात हो जाती थी। उसने एजुकेशन लोन ले लिया था।

प्रतीक ने तय किया था कि वो जयपुर के ही किसी इंस्टीट्यूट से एमबीए करेगा ताकि अपने पापा का ख़्याल रख सके। सो, वो अभी पोद्दार इंस्टीट्यूट में है। उसने आरमेट में टॉप किया था। काश! कि वो कैट दे पाता। पर वो ख़ुश था। उसके पापा की तबीयत में कुछ ख़ास सुधार नहीं था। अब प्रतीक की मम्मी भी जयपुर आ गई थीं। नेहा की बुआ भी उनके साथ ही रहती थीं। कितना मेलोड्रामेटिक सीन हुआ होगा जब वो एक साथ मिले होंगे।

प्रतीक और कोमल अब रोज़ मिलने लगे थे। एक बार फिर पुरानी दोस्ती पनपने लगी थी। कोमल अपनी सारी पर्सनल बातें मुझसे शेयर करती। हम दोनों अब भी एक उलझन में थे कि घर वालों से क्या बात की जाए। हमने तय किया कि घर पर कहा जाए कि अभी हमें कैरियर बनाना है, शादी के बारे में अभी नहीं सोच रहे हैं। फिर वक़्त आने पर देखा जाएगा

कि क्या करना है।

बुआ ने नेहा के पापा को एनआईडी के लिए मना लिया था। उसने एडमिशन टेस्ट दिया था। सेलेक्शन भी हो गया। एनीमेशन में पीजी करना चाहती है। नेहा की बुआ ने प्रॉमिस किया था कि वक़्त आने पर वो हमारी मदद करेंगी।

कल नेहा ने ख़ुद की बनाई हुई एक एनीमेशन फ़िल्म मुझे मेल की थी। जिसका नाम उसने रखा था। कुल्फी एंड कैपुचिनो।

यह कहानी मेरी थी। मैंने तय किया था कि यहीं तक सुनाऊँगा। वैसे इसके बाद भी ज़िंदगी में बहुत कुछ हुआ। मैं जानता हूँ, प्रतीक और कोमल का क्या हुआ? मेरा और नेहा का क्या हुआ? प्रतीक के पापा का क्या हुआ? भूपी की ज़िंदगी में क्या मोड़ आया? पर आपको बताऊँगा नहीं। कहा था ना, कहानी मेरी है तो नियम भी मेरे ही होंगे। हाँ, आपको इसके आगे की कहानी सुनने की इच्छा हो तो बताना। फेसबुक पर और कहाँ! फिर किसी दिन ज़रूर सुनाऊँगा। अगर इच्छा नहीं हो तो...आइ डोंट केयर। आइ लव राइटिंग एंड इट्स नॉट ब्लडी अंकुर काइंड ऑफ़ लव।